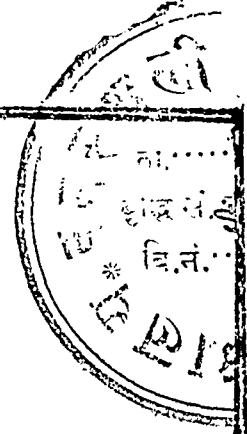


954.4264-92 6

MBB (H)



वंशभास्करमें

की

बुधसिंहचरित्र

जाकों

श्रीमन्महाराजाधिराजमहारावराजासाहि

वश्री१०८रामसिंहखहहदुरजीसी,श्रीसुआई

सी,आईई

की

आज्ञाते

कविस्वर्यप्रज्ञायावारचिलासिनीए

एकविचण्डीदानात्मजमिश्रएव

नेसुललित

कन्होंमें

बनायो

सोभवश्रीमन्महाराजाधिराज

हिवश्री१०८रघुवीररि

मूल्य १नाथयन्त्रा

विलाजिल्दरु२३

~~954.4234~~
~~M68X(H)~~

954.4234
M68V-B(H)

Acc. 10956

॥ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥ गीर्वाणभाषा
 शालिनी ॥ वन्देथाहंसाञ्जलिः प्रीतिपूर्
 वंचण्डीदानं स्वीयवपारमार्यम् ॥ हेत्वा
 रायप्रसुरद्वोरदावंतीव्रह्मैतंपण्डिता १
 ब्रह्मनाथम् ॥ १ ॥ प्रायेमिश्रिताप्राहता
 भाषा ॥ दोहा ॥ जुगलवानमुनिहंहु १
 १७५२ मितलिकमप्रब्रविबेक ॥ जरा
 भीरुतिथिपोसवदिबुद्धसिंहप्रभिसे
 क ॥ २ ॥ षट्पदी ॥ तीर्थसलिलसम
 स्तउचितनिजमस्तकसिंचियत्रोषध
 बिहितउपेतनिगममंत्रनपवित्रकिय
 हवनवस्तुहविरसनमध्यत्राज्यादिउक्त
 इत ॥ हुवसुमानगायकनविविधबंही
 नबिरुदरुत दियदानहिजनपूरुसुख
 लखिसुरीतिसुरपतिलजिय बुद्धियबज

तथतिवात्कारवलनखंडखुसकबजि
 य ॥ ३ ॥ पञ्कटिका ॥ बुधसिंहभूपकिय
 पंचव्याहसुतरवतरुसुताबुवलहियलाह
 ॥ उमोदकुमारिपहिलीषमाहिजयसिंहश
 नतकुजाविवाहि ॥ ४ ॥ रानीद्वितीयजु
 न्णमरकुमारिनृपकुर्मविष्णुधीदासुधारि
 ॥ वैशम्पतिश्चनुपमसिंहधीयफुल्लकुम
 रिचुंडाउतितृतीय ॥ ५ ॥ चंद्रकुमारिचो
 धीपुरमनायारक्षोरजगतनृपजासुभाय ॥
 आहाडीपंचमयुनगरीयश्चमिथागुमान
 दुमरीतरीय ॥ ६ ॥ जीवसबहालापुर
 पधारिकमव्यूहश्चजबराउलकुमारि ॥
 सुतदेवसिंहधीकलकुनामलिमभावतसिं
 हकुलालताम ॥ ७ ॥ कमजैवैसुतयेक
 हातजैहूजीरानीजहरजात ॥ अरुपयसिं

हतीजोप्रमानिचुंडाउतिउरपहितोबरवा
 नि॥ ८ ॥ उमोदसिंहचोथोकुमारअरु
 दीपसिंहहोउदार॥ तिमदीपकुमारि
 दूजीकनीसुतियतीजीनेत्रितयीजनीसु
 ॥ ९ ॥ पुनिचंद्रसिंहपंचमजुसोहिअम
 पंचमरानीजनितजोहि॥ कन्याबडीजुस
 रजकुमारिचौथीरानीभवजोबिचारि॥ १०
 ॥ व्याहीजयसिंहहिंजनकबुद्धअपेअ
 धीसहिंसविधिसुद्ध॥ दूजीकनीसुउमोद
 भ्रातमरुपतिविजयहिंदियमहमचात॥
 ११॥ बुधअनुजजोधकियचारिव्याहक
 न्यादुवविधिवसलहियलाह॥ जयसिंह
 रानकोअनुजभीमजोभूपवनहडाह्यासी
 म॥ १२॥ कन्यातदीयजालअकुमारिधव
 जोधसिंहवामांगधारि॥ अग्रजकेसंगहि

हुलहश्यापपरन्योसु उदैपुरमहश्यामाव।
 ॥ १३ ॥ राजा उतिजमुनाकुमरिनामज
 सिंहसुतादूजीललाम ॥ तीजीरानायतिमा
 दप्रताण ऊढा किय श्रमिजनकुमरिश्याप
 चोयी चंद्रायतिरामद्रंग इमचंद्रकुमरिपर
 न्यो श्रमंग ॥ इनमै पहिली कै इक सुताहि उ
 येदकुमरिजाग कहत जाहि ॥ १५ ॥ यहनि
 करन बिचवुसि राहवुथ सिंहदयी जयसिंह
 गेह ॥ चोयी तिय कै दूजी सुता सुइ हारुपकुसु
 रिमृतसिसुहि श्यासु ॥ १६ ॥ इनच उनमोहि
 तीजी निवारिपति संगजरी पदु निरिलना
 रि ॥ श्रुनुजा दुवदुव रिल श्रुनुज उक्त दुव
 जेच उवालाहिकाल पुक्त ॥ १७ ॥ दो ॥ श्रु
 रुमा कुसल कुमरि श्रु रु कल्यानादि कुमा
 रि ॥ श्रुमर विजयतिप नृप श्रुनुज चवेसिसु

हिमृतचारि ॥ १८ ॥ भावीसानुजभूपकी
 व्याहप्रजादिकवत्त ॥ वर्त्तमानपद्गराम्बि
 धिअबजानहुअनुरत्त ॥ १९ ॥ पद्दतिका ॥
 इमलियउबुद्धपद्दामिषेकथपिराज्यअं
 गवसिद्धकमएक ॥ सितरोमगुच्छहरि
 दुदिससीसकनकातपत्रभूषितमहीस ॥
 २० ॥ आवापतंत्रचिंतनउपेतसुभवलवि
 दग्धधीसरवसमेत ॥ पद्दुसंधियानविग्रह
 बिलासद्वेधासनआश्रयगुनप्रकास ॥
 २१ ॥ प्रभुमंत्रसक्तिउत्साहपूरसमचतुरूप
 यसामर्थ्यसूर ॥ सविचारव्यसनसप्तकनि
 षेधिवानैतवानबिनलेतवेधि ॥ २२ ॥ वि
 धिचारिहेतिकेविदविनोदचतुसंगचक्र
 साधनसमोद ॥ ज्युतधर्मनीतिअवसरजमा
 यलोकानुरागनयरीतिलाय ॥ २३ ॥ इत्या

दिराजयुक्तजोरज्यागिबुधसिंहबहियजघु
 अतिलक्ष्मिणी ॥ इव विदित किनिदिस
 दिरानहाकश्चकिबकिश्चरातिरुकिबइव
 वाक ॥ २४ ॥ इति श्रीवंप्रभारकरमहानं
 प्रहारे वसिष्ठायनेन व मराश्री बुधसिंहच
 रिनेप्रथमो १ मयूरः ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ दो ॥ उदयनैरजयसिंह नृपराणांश्च
 यमवस ॥ तासवासतनुजाचतुरभईइदि
 राश्चस ॥ १ ॥ पञ्जदी ॥ इवमंजुसुतारा
 नानिकेतउभेत्सुमारिसुभयुनउपेत ॥
 वयंरवंपंचहायनविधानसौंदर्यरूपयुन
 गनसमान ॥ २ ॥ लरिविताहिभूषजयसिं
 हश्चापउद्गाहकरणाचितायवाप ॥ लयि
 यवयविकरवनसवनिहारिविधिसहितक

नीव्याहनविचारि ॥ ३ ॥ द्वियदूतदेस
देसनपठायजंघालचतुरमतिचउउपाय
॥ मरुमालवडाहलशाल्वअंगटककेरल
कुंतलमगधबंग ॥ ४ ॥ जालंधरतज्जिक
कासमीरकल्लटद्रविडमेथिलसुवीर ॥
इत्यादिविसयउत्तमअपारतिनमांहिग
नपरयेस्त्रचार ॥ ५ ॥ कहिहेरदुबरममब
चप्रमानिजामातृवर्ययदयोअजानि ॥ भू
पालतथाभूपतिकुमारइनसूरराजगुनजु
तउदार ॥ ६ ॥ दसअब्दताववयरूपदे
खिवरवरनखवरिअनहुविसेखि ॥ अणि
रुद्रपट्टबुंदियसुथानबुद्धहिंसुनियतगुन
रूपवान ॥ ७ ॥ तासोंद्ररूपगुनअधिकभू
पकोउहोयताहिहेरदुअनूप ॥ सुनिबानि
चलियदिसदिसनदूतरखोजियअसेसदूप

कुलसपूत ॥ ८ ॥ कथितादिदेसलखि
नृपकुमारबुंदीपुरीहुचरचथचचार ॥ लखि
प्रकृतिसप्तश्रुतिसावधानबुधसिंहराज्यप
निर्वसमान ॥ ९ ॥ बुधधर्मनिपुनखुरली
विनादहयहत्थिचढनसहबहसमोह ॥ र
नवीरदानउत्सवउदारलावण्यललितमा
राचलार ॥ १० ॥ इमबुद्धसिंहलखिवितजि
वैरसानंदगयंचरउदयनैर ॥ सबकहिउदं
तप्रतिदेसदेसबुधसिंहकिन्निपुनिकिय
विसेस ॥ ११ ॥ कहिहमहुलखियजनप
दश्रनेकबुंदीससपनअन्यन्नराक ॥ कुमरी
वरत्वलायकसएवतत्रैवरचहुसंबंधदेव
॥ १२ ॥ बुंदीद्रकिन्निखसोविसेसइमस
सुरवअवनसुनिसुनिनरेस ॥ संबंधचिंति
तयहि विचारआत्मीयपुरोहितकियतया

र ॥ १३ ॥ संतोखरामनामासुविप्रतिहिं
 कहियतत्रगंतयविप्र ॥ दियसगभर्मलां
 गलिमढायसामजचतुष्कहयसतसुभाय
 ॥ १४ ॥ बरविबिधबस्त्ररत्नसमाजभृगना
 मिचंद्रघुसृणादिसाज ॥ इत्यादितिलक
 मंगलत्रसेसद्विजसंगदयेलखिकालदेस
 ॥ १५ ॥ श्रीकृष्णनामद्वकगणकराजसम
 धीतत्रिविधज्योतिषसमाज ॥ दायीचजन
 नभवजोद्विजेनदियसोदुपुरोहितसंगतेन
 ॥ १६ ॥ अरुकहियउभयतुमबुद्धिमानबुं
 दींद्रनिकटविचरहुप्रयान ॥ मिलिभारव
 हुआशिखअसदीयसविनयउदतपुनि
 फहिस्वकीय ॥ १७ ॥ सबवरुसगजहय
 नहिसुबेरकरितिलकनिवेदहुनालिकेर
 चीकारकरहिंजोतिलकविप्रतोलखहु

लक्षणैव द्विप्र ॥ १८ ॥ ज्योत्स्नप्रथमप्रा
 गामिहोह स्वीकारश्चत्रलिखितेह सोह ॥
 ग्रहसुनिद्विजबुद्धियप्राजगामजाहिरकि
 यश्चाशिरवपदललाम ॥ १९ ॥ सुनिस
 चिवद्विजागमसावधानसनमानियसाध
 नखानपान ॥ पुनिलहनु यस्तकतिपयवि
 हायबुर्दीन्द्ररचियसदबुद्धराय ॥ २० ॥
 संतोखरायलियबुद्धितामसाधीचबुद्धरि
 श्रीकृष्णनाम ॥ तिनपूषिअनामयदिय
 अरसोसइन्ह बुद्धियदेऊ विप्रईस ॥ २१ ॥
 लहिमिसलबैठिकहिसबनसारविधिसु
 नहुसभासगायनविचार ॥ चीतोखसोरजय
 सिंहराजतिनगेहलेहतनयासुजान ॥ २२ ॥
 ॥ बुद्धियनरेसकहंयहविवाहिसंबंधरच
 नसीसोहचाहि ॥ तुरकानसिंधुविचजे

सरोजतिनगेहउचितसंबंधमोज ॥ २३ ॥
 मटसचिवसबनसुनियहसुमंतहियहुल
 सिकह्योउचितहिउदंत ॥ लवजननयहै
 उज्वललसातज्यौजननयहैचंडासिजा
 त ॥ २४ ॥ स्त्रीकारसबहिबुद्धियसुबानि
 मानसअपुबुद्ध्याल्हाहमानि ॥ संतोखरा
 मइमलहिसुबेरकरितिलकनिवेदियना
 लिकेर ॥ २५ ॥ बरबरियबहुरिनिजअनु
 जजोधराणानुजकन्याकहिसुबोध ॥ बुव
 बंधुनकरिसंबंधरामदेरयोमुहूर्त्तसुभप्र
 थितप्रेम ॥ २६ ॥ संवतद्विपंचरुष्टिइंदु
 १७५२मानमेचकतपस्थनवमीविधान
 ॥ गणकनबिचारिसुभलग्नतत्थइकमा
 सअवधिअंतरसमत्थ ॥ २७ ॥ करिसी
 खतबहिद्विजवरसुजानकोटाप्रतिसत्वर

कियप्रदान ॥ चहुवानरामकोटाधिईसभु
 जमेदिवंदितनदियअसीस ॥ २८ ॥ अरु
 कहिल्लगुपुत्रीहेतरानतुमरोसुतमान्योसं
 प्रदान ॥ चहुवानरामयहसुनिसचाह ॥ उ
 पयमअपत्यकीनोउछाह ॥ २९ ॥ इमदुदि
 यकोटावरिउसंगसंतोरवरामगयउदयदंग
 ॥ सबकहिउदंतसांगोयअंगउपयमबि
 धाननिजकृतअभंग ॥ ३० ॥ बुधसिंहबि
 वेलाअलिउदारबिक्रोतसुभगपहुसबप्र
 कार ॥ तिनसौरचिउपयमनीतिबोधहुव
 अमुजवरियपुनिभीमजोध ॥ ३१ ॥ अबर
 चहुव्याहविधिजोअजातअहेत्रिरुव्य
 सुखसजिवरात ॥ उतहुवविवाहउपकर
 नएसइतसजिवरातपरिकरसप्रेम ॥ ३२ ॥
 इतिश्रीवंशभास्करेसहाचंपूसवरूपेदक्षिण

यनेनवमराशो बुधसिंहचरित्रे द्वितीयो मयूर
 खः ॥ २ ॥ ष. प. ॥ घमघमं कि घुग्घरनवा
 जिचल्लियमगजंपत। धमधमं कि नउबत्ति
 षजतत्तलादिनकंपत। तमतमं कि
 गजराजसुं डि सुरपथफूटकारत। मममं
 किभूरवननरोचिरबिरोचिबिगारत। बने
 तविहितरपुरलीरमतकमतवीरविरुद्व
 बलिय। बुधसिंहविदितबुंदियनृपतिसज्जि
 सानुजदुल्लहचलिय ॥ १ ॥ दो. ॥ बुद्धिबि
 दितकबिबिबुधलियभूसुरचारनभट्ट ॥ अयु
 नहुत्यागउमंगधरि। अनाहूतचलिथट्ट ॥
 २ ॥ सेवकजातिशिरोहिया। भारव्योमहूप्र
 ताप ॥ उदयनैरममहेयनृप। लैनचलहु
 संगत्राय ॥ ३ ॥ ष. प. ॥ कविप्रतापयह
 कबहुपत्तकुलभट्टउदैपुर। राजसिंहजंहरा

नहीरदासदुधीसरवधुर। इकरानीअभि
 सायपदकिपट्टपकुमारपर॥ तदनुमरायोता
 हिकुमनिवाहिकाइरानकर। तसअनुजकु
 मरसरदारतिममंतुबिनुहिलैविषमरुयो।
 तिहिअथप्रतापजावनतजिरुपुरहिउदै
 पुरपरिहरयो॥ ४ ॥ दो० ॥ जलहुउदैपुरको
 लजन। बंदीजिहिंपनबंधि॥ कयोसत्यम
 ममहुकुल। सत्यवचनयहसंधि॥ ५ ॥ वह
 कथचिंतिप्रतापतहं। नचलनअरजउचा
 रि॥ नृपतिकह्योहमलैचलहि। आपुनदे
 सजवारि॥ ६ ॥ हहुपूर्वयहहुकमकरिलि
 यनिजसंगप्रताप॥ भरिसकटननिजदेसभा
 व। रिरीकरीदनआप॥ ७ ॥ ष० ॥ इमसम
 सकरिअथ सुकविपंडितसनमानिय। अ
 षअरुहिसारीचहोदहाटकजुतदानिय।

बजिमृदंगदुंदुभियविजयमर्दलपणवान
 क॥ हेसाबृंहितहाकमहजिमतनितभया
 नक। रसरंगारागगायकरचतमनलबंदिभो
 गावलिय। बुधसिंहविदितबुंदियनृपतिब
 रविनीतसंक्रमिवलिय॥ ८ ॥ कुट्टिकुट्टि
 हयखुरनगिरिनपारवानगरदमिलि। बुद्धि
 बुद्धिचितिसंधिसिधिलभोगीससीसजिलि
 । तुट्टितुट्टितरुदुगमपृथुलपद्धतिहुवफहर॥
 कुट्टिकुट्टिआघातपटहरबपूरिदिगंतर। वि
 ल्यरियकथानकदिसविदिसविदितबनहु
 वनरनरन। बुधसिंहजातबुंदियनृपतिउद
 यनैरउपयमकरन॥ ९ ॥ गजनफरकिबह
 रकथरकिआकासविराजत। हरकिबोनि
 बमथूनरकिमहवघनसाजत। वरकिह
 डुभूदारलरकिफनमालनागइन॥ धरकि

धरकि निसदी हदरकि वृत्तिय आरातिन ।
 गहगहनसंक अंतर उपजिकरत मंत्र सचि
 वनकतिक । हडुन हमे सकुलरी तिय हस
 मिति व्याह उच्छाह इक ॥ १० ॥ गरद अ
 क अन्व दिय सरद धन कुमुदनाथ जिम ।
 गगन तोम तोमर न प्रहर पुंर वन कलापतिम
 । भजत भजत वनजंतुकटक अंतर थकि छु
 दृत ॥ विदित वीर वानैत विसिख विकिरन
 वपु फुदृत । इभपि द्वि अथ विरुदन सुनत भ
 नत देनरं कन विभव । संचरत सरनिशा गुज
 ससुरवर दतन की वजले बरव ॥ ११ ॥ उलदि
 उलदि दल अद पवन सज्जत प्रत्यामम । सु
 गम हरो लन सलिल दुगम चंदोलन कदम
 । आस पास इहिं चास वास मेवास प्रपत्नी ॥
 हेतुन हास हुलास वास सेतुन जसवची ।

कोटाधिनाथ सुतभीमकी मिलिबरातसंग
 हिहलिय । प्रतिगामगामबंधतकलसधा
 मधाममंगलबलिय ॥ १४ ॥ भागधेयमुष्मि
 यननिकरलैलैप्रतापनत । अ्यातजोरि अं
 जलियनात शिरभेटनिवेदत । कहतनाथ
 किंकरनपूतकरिअपोदनधानी ॥ मयधरदे
 हुमिलानमानिस्वीकृतमहिमानी । लखि
 भीतकहुंकदुल्लहललितमानुहारिधा रत
 मुदित । मनबढिउच्चाहअ्यावरिमनुजहोत
 निष्ठावरिपरमहित ॥ १५ ॥ दो० ॥ इमबरा
 तसुखसरनिचलि । पहुँचिउदैपुरवास ॥
 नटनगानपातुरिनिकर । बिधिबिधिरनिग
 बिलास ॥ १६ ॥ ष०प० ॥ पृथुलदारुपदुरि
 यरंगचित्रितफुलवारिन । कंधनरनरसकम
 लनजुअमरुअलनापिन । संसुअरिअमअरुअम

गोकुलरागनमुमावत ॥ चंडातकचलचरनघे
 रधुम्परधुम्मावत । श्रुतिजातितालबादनकु
 सलमोहतरसगीतनसुमति । अचरोहग्राम
 मध्यमउठतग्रामप्रथमअचरोहगति ॥ १७ ॥
 शुरिनेउरघंटिकनऊनकिसिंजितमहनाव
 त । विधिक्रमतालबहायबहुरिप्रतिलोमव
 नावत । मिलिसंक्रममुच्छन्नमोदनिकसं
 तनादमय ॥ कंदुकअहिगतिक्रमनचहत
 उतरतअलायचय । अचनइतंत्रबादनउदि
 तमादनमुदितनरेसमन । बसिबासअथाय
 सायकबिरकमनिजनिवासगावननटन ॥
 १८ ॥ दो० ॥ कोटाकीहुबरातवनि । मि
 तिमगसंक्रमिसंग ॥ पहंचेदुसहउदयपु
 र । महसहउदितउमंग ॥ १९ ॥ पद्धतिः
 ॥ अचलिमोहरानसनसुकवअइविधिजुत

जामातालियबधाइ ॥दलउतरिद्रंगद्विग
सरसमीप।दुतिबढिगअरतीकलसदीप
॥ २० ॥पधराइसमयमहलनसप्रेम।तनि
सुचितउचितउपहारतेम ॥बुधसिंहहिंव्या
हियरकिवरीति।बिंदाबयबाल्यसुप्रथि
तप्रीति ॥ २१ ॥परिनायसोदरहुजोधनाम
पुनिभीमपितृव्यकरामजाम ॥महुकम्बंस
भट्टबंधुवर्ग।परिनाइनामसालमकुसर्ग ॥
२२ ॥इत्यादिरानबरवरिअनेक।अदुरु
सतव्याहेलग्रएक ॥बुंदीद्रसंगविधिउचि
तसाजिदुल्लहससोत्तरसतविराजि ॥ २३ ॥
दो ॥अप्यनदेसनरेसकी।तनयाव्याहीरा
न ॥प्रेमरीतिअंतरप्रिया।सोहीरहियसुजा
न ॥ २४ ॥ताकेउरसुंदरसुता।हुवउमोद
कुमारि ॥सोदुलहनिवामांगविधिबुद्धसिं

हश्चवधारि ॥ २५ ॥ ष.प. ॥ कुमरीजेगोकुम
रनाम उष्मेदसिंह जिहिं । प्रियरानियसुत
जानिरानलगिराजदेन तिहिं । सत्रुसल्लनदि
नियनामगंगागुलगाई ॥ भावसिंहमगिनीसु
युधरानहिं परिनाई । अमरेसकुमरताके उदर
अथानभयोकुलपहपति । तुरकानतेजसंगति
प्रवलधरधरहिंदुनअनयरति ॥ २६ ॥ लखि
यहअमरकुमारराजलक्षुबंधवपावत । कु
ष्णिअनयउष्कनियजलकउपरभुवजावत
। हानिधरमहिंदूनलायधरधरइमलमौं ॥ अ
णुकेसाप्रितअनयभिदुरगृहपक्षयभमौं । अ
मरेसउदितअहवरचनबलबिसेसधनवि
दुकदिन । यहसोचिअयमातुलनिलयबुदि
यगहतिहिंसत्ररिवन ॥ २७ ॥ यहमाऊअ
धिराजदेतअनईनकपहन । तीनलकवत

बद्धमपायनिद्वहिमातुलसन । अरकुमारश्च
 मेरेसत्रायबेघमपुरत्रोसरि ॥ राउतअनुप
 मसिंहपग्घपलतिरुधीसरवकरि । बस्वसी
 सच्यारिचामरविरचिसंगरउचितअनीक
 सजि । पुरउदयजायघेरियप्रबलबुद्धितहे
 षानिनदबजि ॥ २८ ॥ सुसुनिरानजय
 सिंहपुत्रलघुसहितपलायो । किल्लाकुंभि
 लमेरुबसिरुवहकालबितायो । सुतहल्ला
 लखिसत्यमातगंगासकोपमन ॥ खेटक
 खग्गउचायत्रायडुड्डीगृहतोरन । पड्डिक
 हिअनुपमसिंहपहंतुमभटवरधारतथर
 म । समुग्गवहुकुलनयबिनयसनजोचौडा
 घरतुमजनम ॥ २९ ॥ यहसुनिअनुपमसिं
 हसुमिरिनिजपुबपितामह । अथपमित्तो
 चलबुद्धिअवसुबदल्योडरदुसह । साजि

अथ नो सत्यसमुखप्रतिमद्वेधायो ॥ चो
 सरचत्वार उ दयनैर लुह्नननहिंपायो । समुग
 यकुमार अमरेसकहं तुल्यसुभट एकत्रजुरि
 । कुलधरमथंमिसुतजनककै सुनय सामहि
 न्नीबहुरि ॥ ३० ॥ दो ॥ रहैतखतजयसिं
 हनृप । तोलो अमरहिं अथि ॥ राजसमुद्रत
 डायलत । राजनगरगहथयि ॥ ३१ ॥ इम
 गंगापहितेसमय । पुण्यपतिव्रतपाय ॥ मे
 द्विषु अतुपमसिंहभट । लियखपुत्रसमुगाय
 ॥ ३२ ॥ गंगासमगंगा कही । सुधरमसलिय
 सुजान ॥ भीखमसमकैसै कहों । अनईअ
 प्पर अमान ॥ ३३ ॥ लहिप्रसंगकछ
 यैह कहों । चोडाकीनयबल ॥ जाहिसुमि
 रिअतुपमभयो । गंगाबचअनुरत्त ॥ ३४ ॥
 ष० प० ॥ इहसमयचीतोरानल स्वपति

खेतलसुत । तरुनकुमरइकतासनामचौं
 डानयजयजुत । नृपरनमलरद्वोरगेहतन
 यामंडोवर ॥ चौंडासौंसंबंधकरनश्यायेतस
 कगर । सुनियत्रानलखपतिकहियतरु
 ननकौंहेरतजगत । यहजनकबैनसुनिसु
 निकुमरकियमनतिहिंभ्याहनविरत ॥ ३५ ॥
 कहिचौंडाकरजोरिसुनहुमरुवरसुजाता ।
 ब्याहपिताकोरचहुवहैकन्यामममाता । य
 हसुनिमरुबासीनकह्योलिखिदेहुअप्य
 कर ॥ रद्वोरनकोभागिनेयचीतोरपट्टपर । य
 हसुनतलिखितनिजहत्यकरिमरुबासिन
 सौंप्योकुमर । लखपतिदुरानहैमंदमतिब्या
 हिलइयवहबृद्धवर ॥ ३६ ॥ कुब्जदिननके
 अंतगरभरद्वोरिग्रहनकिय । समयअंतसुत
 जनमिनाममुक्कलविप्रनदिय । लखपति

अजतिन दिनन काल कंठीरवमास्यो ॥ चों
 डारसौरद्वोरिहृदि पीहरबलधास्यो । बुलवाय
 तातरनमल्लपुनि जोधभ्रातची तोरगढा ति
 नहत्थहारकुंचियअरपिकिला करियप्रपं
 चदह ॥ ३७ ॥ नारिबुद्धिरद्वोरिसुज्जिनहि
 परिमफलाफल । तबसुरवरनमलकहियत
 जेचोडाजबयहथल । यहसुनिचोडारान
 जुत्तिनिकरयोभीसमधुर ॥ मुलकडोरिमेवा
 रयायोमालवमंडूपुर । पारवनदावलग्योत
 बहिजोधरनमल्लमंत्रजपि । करिभागिनेय
 सुकलकदनथिरहिलेनची तोरथपि ॥ ३८ ॥
 इकरानअनुचरियनेहमंड्योजोधसम ।
 इकदिनआसवधानजोधबुल्ल्योमतिविभ्र
 म । सुकलकोअबमारिदुगादलदेसकोस
 हपि ॥ इकमासकेअंतलेहियजिनेंमनीस

रि ॥ यह बत्त डारि दासिय दर्द मुक्कल की मा
 ता श्रवन । सुनि सोचित बहिर द्वोरि को चो
 डा श्राय उचित मन ॥ ३६ ॥ पत्र मंडि प्र
 च्चन दूत मंडु व पठ वायो । सुनि चो डा स जि
 सेन अद्दर जनी गढ श्रायो । करि हल्ला चहि
 कोट थस्यो बीराधि बीर बल ॥ कुमार जो थ
 मजिक डिग मारि लि नो नू पर न मल । मुक्क
 ल हिं पट्ट गदिय अरि पिर हित टस्थ जगज
 सलियउ । हिंदवान बत्त धारहु हृदय कर
 हुजे मचो डा कियउ ॥ ४० ॥ दो ॥ वह चो
 डा करि चिंत मन अ नु प म ध र म वि चारि ॥ कि
 यो साम सुत जन कके । निज पुर लूट निवा
 रि ॥ ४१ ॥ राज अ न य म न ठा निके । राज दे
 न ल गि जा हि ॥ ता की वर सो दर स्य सा । बु
 द्धने सहिं व्या हि ॥ ४२ ॥ ती जी रानी की

सुता। भीमहिं दइय विचारि ॥ भ्रातभीमकी
नंदनी जो धिसिंह प्रवधारि ॥ ४३ ॥ मुहुक
महरसालम प्रथ। सुभटसुता परिनाथ ॥
बहुरिसीरख डेरन दर्इ। सबहिन मोद सुना
य ॥ ४४ ॥ दुल्लह डेरन आय किय। विहि
त नित्य सुचि होय ॥ गोरन प्रसन निमंत्र
कों। रहेरान मग जोय ॥ ४५ ॥ रान के फमं
डत बहुत। प्रात प्रात प्रलसाय ॥ गोरन
दिवस प्रतीत है। समय निसीथ सुप्राय ॥
४६ ॥ म. प. ॥ सुयहुरान जय सिंह म द्विमा
दक सराग मन। भंगि प्रक भुज्ज सुप्रमित
दुव बीस पहीसन। प्रियरानिय प्रप्यनिय
मोनपगधारि नित्य भल ॥ प्रसन प्रप्य
प्रहरहिं फेरख तरितु हि प्रंब फल। इमाम
नमा तुला निय प्रक दसमी निस ससि के

उदय। चहुवानसिविरसीसोदचलिमानु
 हारिगोरनसमय ॥ ४७ ॥ मिलिउपेतस
 नमानरावशनां अन्नंदरजि। चहिगयंदच
 हुवानस्वसुरमहलनप्रथानसजि। परिक
 रसहपरिपंतिअसनकिन्नोअधिराजन ॥
 अतिसुखडेरनआयसयनमंडियप्रमोद
 सन। जयसिंहरानतीजेदिवसजनकदोस
 मेटनजहर। परतापमहडेरानप्रतिमुदित
 आयमंडियमहर ॥ ४८ ॥ दो. ॥ अग्गैरा
 नांराजसौं। रुद्रोभहुप्रताप ॥ अबजय
 सिंहप्रसन्नकिय। आयपटालयआप ॥
 ४९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहान्वेषुस्व
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
 रित्रेतृतीयो ३ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ष. ष. ॥ दिनचउत्थदीवानबुल्लिरघुप ।
 तियपुरोहित । अरुचारनभ्रानंदभट्टपर
 तापबुद्धबित । चारिलकवनिजचलनद
 म्भारवज्जुरसंगदिय ॥ हयबरइक हजारद्वी
 यदसमन्तेदतिय । सिरुपावउच्चदादसस
 हंसकतिविधिपूरवनसंग किय । मंगनन
 भागधनपतिमनहुँदैनत्यागइमहुकमदि
 य ॥ १ ॥ दिनपंचमदुसमृपनसजियचीतो
 रसमागम । पिकरव्यो दुगासुप्रथितसमरज
 हंहुवअप्रकबरसम । पुसिमदिनकरिगोठि
 फागकोतुककिह्यापर ॥ होरियउच्चवडा
 निबहुरिश्रायेपत्तनवर । अतित्यामउऊ
 लसुनिसुनिसुजस हररिवेराजजयसिंह
 जिय । विधिउचितपुज्जिबरवरनिहविर
 हिरससुंदियसिकरदिय ॥ २ ॥ चलिब

रातप्रतिपंथमीमकरजोरिभ्रातधुर। कोल
 प्रतिकियसिकवत्रयत्रायउबुंदीपुर। दि
 यमिलानसबसेनजैतसागरतडागतद॥
 दइवजोगनिससमयत्रगिलगियडेरन
 पट। सरसेतुपथ्यगृहपिहितइकभजिरुत
 त्यबरबरनिरहि। हुवचारहसमडेरनसहि
 तमनुजतुरंगहुकबुकदहि॥ ३ ॥ इहिंदा
 रुनउतपातदानसतदीयसविधिय। सु
 इसमयनिजनगरद्वारउत्तरप्रबेसकिय।
 पुरजनमंगलयुद्धविबिधउच्छाहबधारे॥
 हट्टाचत्वरचोकसउधप्राकारसिंघारे। दिधि
 निगमसाधिबरबरनियमनीराजितगृहग
 मनकिय। कहुदिननत्रंतजवनेसकेचर
 नत्रायफरमानदिय॥ ४ ॥ दिह्लियप
 तित्रवंगतपतइकचत्रतीनदिस। दिह्लि

नदह्ननकाजचडिगअतिबलअतीवरि
सा। पहिलेरेवापारनामनिजनगरवसायो
बहुतबरसरहितत्यकबुकअरिअमलउ
आयो॥ हाजरिसमस्तहिंदुवतुरकजीनअ
वरसिसमुकल्यो। तुरकानतहरजालमज
हरलोपिलहरकाहुनकल्यो॥ ५॥ दो०॥
कावलसुबाकालवसि। सुनिअनिरुद्धज
हर॥ अणसेवनअंतरसमुक्तिबुल्लियबुद्ध
हजूर॥ ६॥ अणहदीतवअवरंगकेअतिज
बहुद्रियआय॥ सिरधरिसाहनबंदगीचल
हुकहोहितआय॥ ७॥ जायसमुखफर
मानकेकरिसलामलियकेलि॥ उपज्येच
लनप्रपंचअब। देनहुकमकोपेलि॥ ८॥
सुनिकरगारपरिकरसबहि। मिलिइकत
दियमंत॥ स्वामिबालसेवाकठिन। अलो

चहुमतिच्यंत ॥ ६ ॥ इहिं च्यंतरच्यवरंग
 सुत। जेरोच्यालमसाह ॥ बंदीगृहतेकब्दि
 चल्थो। चिंतिच्यगरचाह ॥ १० ॥ फद्धति
 का ॥ हुवपुत्रपंचच्यवरंगधाम। सुलतानमु
 हुम्मदप्रथमजाम ॥ सुतदूजोच्यालमसाह
 एह। सुततीजोच्यजमपितुसनेह ॥ ११ ॥
 सुतचोथोच्यकवरनामधार। हुवकामबरव
 सपंचमकुमार ॥ जेरेसुतद्वैमनकरिउदास।
 बंदीगृहदारेबिसमवास ॥ १२ ॥ सुलतान
 मुहुम्मदमरियतत्य। च्यालमबच्योसुच्य
 युहिसमत्य ॥ याकेहुपुत्रहुवप्रथमच्यारि।
 च्यार्येबयजुबनकेदडारि ॥ १३ ॥ केदहि
 मैयायेपलितकेस। च्यपमानितदीनहुसो
 बिसेस ॥ बरसावधिपावैदगलइक्क। परि
 हुसहदहैजूकारुलिक्क ॥ १४ ॥ नहिवप

६

नन्हाननहिअसनदुष्ट। जृकानजनितस
 हियतअरिषु ॥ इकसमयदुकवअरजीक
 राय। जोमहरनयोमिलिदगलजाय ॥ १५ ॥
 अवरंगहुकमपठयाअनेह। उलटाकरिधा
 रहुदगलएह ॥ इकसमयमित्योसरदावि
 सारि। तिहिंछेदनदुरिकाहितउचारि ॥
 १६ ॥ पुनिकहियसाहभरिकोपभार। सि
 रसैहै फोरहु नहि हथ्यार ॥ इमकुपितसा
 हसुतसीरसआहि। इकसमयसभासोंकहि
 यचाहि ॥ १७ ॥ जोमिलहिं हमारेहुकम
 आजा। तोपावहिआजमसाहराज ॥ जो
 मिलहिंरुदाकेहुकमपाय। लहिहैतोआ
 लायसाहआय ॥ १८ ॥ सुनतहिइमआ
 जासकहियएहु। वंदीगृहबासीमोहिदेहु
 ॥ यहसुनतसाहहियबढिबिरवाद। कोषारु

नञ्चाजमप्रतिजगाद ॥ १६ ॥ सुतज्येषु
ममायसधरतसीस । वहकैदीअरुतुमतरव
तईस ॥ यहकहिबुलायआलमउदास । नि
कस्योतजिकारागृहनिवास ॥ २० ॥ करिणु
सलबपनमंजुलकराय । अतिदिव्यवसन
धरि आमआय ॥ लखिसाहचिप्रहि
यसौंलपेदि । बुजदुवगहिलीनींभुजनभेदि
॥ २१ ॥ चिरकालकंठगदगदबढात । दुब
घांहुवअशुनअधिकपात ॥ तहंदियउरी
फिअवरंगसाह । अकबरपुरसूबाजुतउच्चा
ह ॥ २२ ॥ बारहहजारमनसुबलिखाय ।
दियसीखआगराहितबढाय ॥ लहिसीख
चलनमनकरिविचार । हुतचदिगसाहआ
लमकुमार ॥ २३ ॥ रेवाउलंधिअतिदल
अमान । पुरआयअवंतीदियमिलान ॥

अथर्वो अथर्वतिसूत्रापधारि । कछुकामपीर
 अथर्वनद्वारि ॥ २४ ॥ दुर्लकैदजोगवहर
 हियसैसा । अथर्वकरियत्रायपूरनसुदेस ॥ रंवेरा
 तर्लदिवसुविबिधनाम । कमिमगगअथर्वग
 रापुरजगाम ॥ २५ ॥ नृपविष्णुसिंहअथर्व
 रनाथ । निजवंससुभदहरिसिंहसाथ ॥ अथर्व
 वरंवाहुकमजोलहिजहर । अथर्वत्रायसाह
 अथर्वलमहजूर ॥ २६ ॥ सो ॥ अथर्वोइकअथर्व
 वरंवाको । सीमसमीपबिचारि ॥ विष्णुसिंह
 नृपसोइकम । अथर्वभारनजटवारि ॥ २७ ॥
 विष्णुसिंहनृपसुभदनिज । लियहरिसिंह
 दुलाथ ॥ कियउबिहाजटवारिपर । संगरसे
 नसेनपयाथ ॥ २८ ॥ फ.प. ॥ हरियसिंहक
 अथर्वहजाथजटवारिबिटिलिय । बहजट
 नसिरकहिरवनितरवहुनप्रविष्टकिय ।

वहलंबापुरनाथवंसरवंगारसंगसजि ॥ से
 वनश्यालमसाहश्यायकूरमनरेसरजि ॥ दे
 दलमिलानजमुनापुलिनसंचरिश्यामस
 लामकरि ॥ हरिसिंहसहितठडुमिसलरचि
 श्यंजलिश्यालबधरि ॥ २६ ॥ दो० ॥ हरिसिं
 हहिंश्यालमदये ॥ रीमिखिलतहयराय ॥
 कूरमपतिकेकथनकरि ॥ जहकदनहित
 लाय ॥ २७ ॥ इमश्यालमकाठकेदसन ॥
 श्यकबरपुरद्रुतश्याय ॥ कूरमनिजताबीन
 करि ॥ वासरकबुकबिहाय ॥ २८ ॥ यहड
 दंतभटसचिवसुनि ॥ नृपहिंश्यालयवयजा
 नि ॥ श्यरुदकिवनश्यवरंगको ॥ सेवनकूरप्र
 मानि ॥ २९ ॥ श्यालमप्रतिपुरश्यागरा ॥ पठ
 ईश्यरजलिरवाय ॥ लेहुहमहिं कहिसाह
 सों ॥ निजसेवनमनलाय ॥ ३० ॥ इतिश्री

महाभारते महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायनेन व
 राशौ बुधसिंहचरित्रे चतुर्थे मयूरः ॥ ४ ॥

उक्तं ब्रह्म ॥ यद्द्वैविनती सुनिश्चालमत्तत्त
 यत्ता प्रतिद्वैश्वरजीलिखितत्त ॥ इहां नृप
 हरमज्योभटभाव ॥ र्हैममसंगहिबुंदियरा

व ॥ ५ ॥ यद्द्वैसुनिसाहपठायनिदेस

मसंगहिबुद्धनरेस ॥ दयोतवश्चालमपत्त
 यथाय ॥ स्वसंगबलापतिबुद्धबुलाय ॥ ६ ॥

भयोदलबन्धिसमस्तनमोद ॥ बन्धो लखि
 लग्नप्रथानविनोद ॥ दयेबुद्धदानवि

रीति ॥ प्रवासिनहेयतजेनयनीति ॥ ७ ॥

मनीकुलदेवियपूजनमोद ॥ नयेहरियाय
 नलेचरनोद ॥ कियेसविधानप्रवासिकुल

र्म ॥ लखेसुभसाकुनलग्नसधर्म ॥ ८ ॥ किते

भटमंत्रिनश्चायसश्चपि ॥ इहां गृहराजनि

बाहनयपि ॥ दयेतिन्हग्रामपटागजबा
 जि। दयोभुजभारविचारविराजि ॥ ६ ॥
 सजीतबबुद्धबलापतिसेन। दिव्यैमदतारक
 अय्यद्विजेन ॥ रहेनिजअलयसोदरजोधि
 । चलयोदलहीतप्रभंजनरोध ॥ १० ॥ खु
 लेउडिकुंभिनकंधनिसान। तिरोहितद्वैर
 विरेणुवितान ॥ हरोलनहाकनकीबनबो
 ह। बडेगजअचतलंगरलोह ॥ ११ ॥ रहीहु
 क्किपीतपताकनपंति। मरातबमाहियभा
 सिगभंति ॥ अकब्रपुत्रदयो लहिकाज।
 बज्योवहराजतदुंदुभिराज ॥ १२ ॥ मलंग
 तफांदतुरंगनजूह। चलेउडिनेवतिनादु
 रुह ॥ चलयोदरकुंवनर्येचहुवान। दयेम
 थुरापुरजायमिलान ॥ १३ ॥ दईसलइक
 सअष्टकगाय। समानहिहाटकहनमिलाय

॥ विधीरितयों बहुधा करिदत्त। अकक्षरप
त्तनअप्रायप्रपत्त ॥ १४ ॥ मिलेक्रमअालम
साहहज्जर। कियोसनमानकद्योहितपूर ॥
हन्थोंहमहृषाअवंतियजेन। रद्योतुमरोह
यमहकलेन ॥ १५ ॥ करैपलटाहमहृतसम
त। लहोहमकूंमजिरिद्विनज्ञात ॥ करीसुनि
योंअरजीनरनाह। मलीकरिहैसबज्यानपना
ह ॥ १६ ॥ परररपीतिउमसनमान। रहेइम
क्रमअोचहुवान। उहांदिनवित्ततकेअव
रंग। सुनीसुतअालम किन्तिअमंग ॥ १७ ॥
इतेविचसोरसुन्योसुलतान। बढेसिखलु
पतसाहनअान ॥ तबैसुतअालमकोजव
नेस। दईसुलतानसहारिसुपेस ॥ १८ ॥
यहैसुनिअप्रायसअालमसाह। सजेदलहिं
हुदमिञ्जसिपाह ॥ भयोविधिसौंचतुरंग

प्रयान । गये दर कुंच धरामुलतान ॥ १६ ॥
कुविग्रहमेतिरचो नयराज । भजे सिखति
तिरिज्योँ डरबाज ॥ दफे करि देस प्रजादुरव
दंद । रहै इम अलमतत्थ अमंद ॥ २० ॥ र
वै दुव भूपनसोँ अति प्रीति । सबै दल कोँ सुरव
आदर नीति ॥ करै दिन इक नदी जल केलि ।
चले चढि नाव प्रवाहन पैलि ॥ २१ ॥ रज्जु
व भूपति सेवन लार । सजेँ जल कुकुट बेधिसि
कार ॥ कही तँहँ करम सोँ सुत साह । करो हय
सोँ दुहितानिज ब्याह ॥ २२ ॥ कही तब कू
रमयोँ कर जोरि । बनेँ दुहिता जब होय बहोरि
॥ सुताइ क अहि सुतो करि नेम । दई बु यसि
हहिँ पुबक प्रेम ॥ २३ ॥ कही बु यसि हहिँ
आलमतत्त । करी तुम सोँ इन ब्याहन बत्त ॥
कही तब बुँ दिय राव सहास । कही इन जो सु

भईकथतास ॥ २४ ॥ यहैसुनिजंपिगत्रा
 लमसाह । तलोहमहीकरिहैं तवव्याह ॥ क
 रोसुनियो बुधसिंहसलाम । कद्योनिजत्रा
 अरहैसिरकाम ॥ २५ ॥ यहैसकचोवनस
 चह १७५४ साल । नईकथव्याहवनीबसिका
 ल ॥ भईनयद्वादसहायनबुद्ध । सजेरुरली
 नयसायनसुद्ध ॥ २६ ॥ द्योलखिबुद्धहिं
 बीरसिमाह । परमानदोंकसुत्रालमसाह ॥
 कहीतवयो करिबुद्धसलाम । लद्योपुरदोंक
 बढ्योसमनाम ॥ २७ ॥ परंतुकद्योहमरो
 हकसेस । तलोकरियेपुरपहनिषेस ॥ गईय
 हपहनिपुरबकाल । बढ्योजबजहनबैरक
 राल ॥ २८ ॥ सुनीअवरंगदुरवूनपुकार । कि
 योसुतत्राजमकोसुलत्यार ॥ द्येसंगबुद्धिय
 नैअनिरुद्ध । वन्योसमयोधुनगौरिप्रबुद्ध ॥

२६ ॥ रहेतिहिं कारनद्वैदिनगेह । नकाबलये
 पहुँचेतियनेह ॥ भईतुरसीइहिंकारनआय।
 समासरबेदहसत्रह २७ ४ ५ पाय ॥ ३० ॥ ल
 इतबपहनिसाहउतारि । दईनृपरासहिं काम
 बिचारि ॥ छुटीतबकीअबसेवनपाय। दई
 इनआयसनाहमंगाय ॥ ३१ ॥ जम्योनिजदो
 कपरगनराज । बच्योमहँदीपुरइकअकाज
 ॥ लरेमहँदीपुरकेकखवाह । तजीसुरतानधि
 नातिनराह ॥ ३२ ॥ भईमहँदीपुरतोपनभा
 रा। लयेसबजीति कियोगद्वार ॥ रज्जुइपदो
 कजिलाकरवाय । रहँमुलतानसुबुंदियरा
 य ॥ ३३ ॥ दो० ॥ हुदभूपनकोबरसइकाग
 योरहतमुलतान ॥ सेवतआलपसाहकों ।
 इमकूरमचहुवान ॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभा
 स्करेमहान्चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवभराशो

बुद्धसिंहचरित्रेपंचमो ५ मयूरवः ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दो० ॥ इकानबावअमीरखां । अमीरकहि
 अवरंग ॥ अयोदेभुजभारनिज । सूबाकाब
 लसंग ॥ १ ॥ तोटकसू ॥ इतनेवहरवानअ
 मीरसखो । अवरंगयहेसुनिसोकपर्यो ॥ क
 हिसाहअमीरसखो जितनेहमभोगलहेअब
 दुकरयने ॥ २०२ ॥ लहिकाबलसाहयहेस
 मयो । उतदिल्लियराजसुदबिलयो ॥ तबसा
 हहियेतसअनबसी । धरकाबलअलमको
 बरवसी ॥ ३ ॥ इनहमुलतानजमायजिला
 । लियकाबलकायकमानचिला ॥ रतुसगर
 दरदरदनछमये । सरितासमिपक्षतिपंकग
 ये ॥ ४ ॥ सरवानसुरंगम १७५५इकसमा
 । सुतसाहचढयोइसमासअमा ॥ अतिअ

खभेरिनकेगरजें । पविपातकिपबयदैदरजें
 ॥ ५ ॥ खुलिदण्डपताकनपंतिलसी । रसना
 जनुकालियकीनिकसी ॥ बहिकोरनफोज
 हरोलचली । बहुजंगउछाहसिपाहबली ॥
 ६ ॥ बहुवानरकूरमसंगचलें । बरबीरपटा
 नगुमानकलें ॥ मनमेंबलमोदरजरुनमें । उ
 रगतसदागतिसेलनमें ॥ ७ ॥ धनुपहिस
 खेदकरवगकलें । बहुहानहियेहनमानब
 सें ॥ इमहिंदुवमिच्छचलेनकों । छविनिंदत
 महवकेधनकों ॥ ८ ॥ सननंकियप्रोधनव
 तवहें । हननंकियहीसदिगीसदहें ॥ रननं
 कियकोचकरीकरकें । फननंकियनागफटा
 लरकें ॥ ९ ॥ गननंकियगोनधराथमकें
 धननंकियनेउरहैछमकें ॥ रुननंकियम
 कवरभारभिरें । रननंकियनालनश्चमि

रिवै ॥ १० ॥ ठननंकियकुंभिनघंटघसैं ।
 भननंकियभेरियहरहसैं ॥ बजिश्यारबश्चर
 वकूहचली । बहुभांतिश्रनीकरमैरबुरली ॥
 ॥ ११ ॥ भटकेकशिभागनक्षवश्चरै । कर्मने
 तबिहंगनबेधकरै ॥ ऊपटायतुरंगनबाहब
 रै । श्रिसिमगाउदगाकितेविरचै ॥ १२ ॥ भट
 केकबंदूकनलच्छयलहे । बहुवारकटारगहा
 निबहै ॥ करटीननवीनधटाबहुधा । बरबी
 नश्रनीनश्रकासमुधा ॥ १३ ॥ खुरतालन
 खेहवितानजुर्यो । नदतालनपंकिलनीर
 युर्यो ॥ हुलसेइमकाबलकीधरपै । हलश्रा
 लमकेजयसंगरपै ॥ १४ ॥ ष० ष० ॥ श्रुतक
 सारितउल्लंघिकटकश्रालमबद्धिधायो । का
 बलपतिप्रतिपत्रप्रथमलिखवायपढायो ।
 मरतहिरवांनउमीरछिद्रतुमतकतनिहायो

॥ दिल्लीयथांनांखंडिअमलअपनउपचा
 खो। अबछोरिपहुमिअवरंगकीकरनजो
 रिलगाहुचरन। दिल्लीससेनजानहुहुसह
 इकइकलकवनलरन ॥ १५ ॥ काबल
 पतिदलबन्दि समयबलवानसोधिमति
 रहिअपुननिजगेहसेनपठयोअलमप्र
 ति। आयसेनअतिवेगभिरनतुरकनम
 नवडे ॥ लटाबधअभिधानअद्रिभांटा
 रुकिठडे। इतउमंगिसाहअलमचमूली
 मासंगरसज्जहुव। तिनदिननभालदिल्ली
 सकेविधिमंडो जयपत्तधुव ॥ १६ ॥ इत
 तोपनचुरिपंतिइकतोपनउत्तरकैली। इत
 परिमितआहारइकबकरउतचकैली। इत
 लाखनबहुरंगउतसुअपुतहिइकरंगी ॥
 इतबलबुद्धिअपारउतसुबपुजीरअभंगी।

दिक्षियसुहागइतभारपरिउतगरलगीग
 ज्ञनिय।दुवदलनजुद्धजालमजुरिगपरि
 गरीरपातकिपविय॥ १७ ॥ गिरिनचूरहय
 रदुरनमगगउच्चटधरपद्म।खुंदिकमठरबुष्प
 रियउरगफनमालथरत्थर।दिकपालनउर
 संककंकगिद्धन परबज्जैगहकिचिल्लगोमायु
 भारभीरुनगनभज्जै।दुवदलनबीरबत्थ
 नबिलगिमनहुमित्रचिरकालमिलि।वि
 धिच्यारिहेतिउडुतविसमधारनधारप्रहार
 मिलि॥ १८ ॥ बजिआयुधरनरीठफूटिह
 नपल्लुहुँ।कवचखंडअसिकरकितर।
 किअंत्रावलितुहुँ।सरनसोकसननंकिपर
 तरुरिदंडपताकिन॥ जुकतबीरधनथायम
 नहुँपामरमदछाकिन।इमविरचिमुक्तआ
 युथकलहअवअमुक्तगहिद्वोरिहय।करि

हल्लदुदलगिरिसिरचढि । जुरिजुरिजंपत
 जयतिजय ॥ १६ ॥ दो० ॥ बुंदियपति ।
 प्रामैरपति । दड्डेहयप्रसवार ॥ प्रालमग
 जप्रारुहिरह्यो । उत्तरिप्रवरप्रपार ॥ २० ॥
 उतइतनै नहिं बढिसके । ततउतनै नहिं क
 म्म ॥ इकापहरवहगिरिरह्यो । बाजीगरको
 दम्म ॥ २१ ॥ ष० प० ॥ तबदुवदिस तजिह
 यनचढिगगिरिसिखरमहामद । कहिकरी
 मरवतुरकहोतहरिहरहिंदुनरद । बुद्धनृपति
 कोबंधुराजसिंहहकुनजायो ॥ नामसुअनु
 पमसिंहतबहिमधुसुवनचलायो । दसस
 हंससेननिजसंगकरिनृपपिल्ल्यो गिरिवि
 कटपर । मिलिबत्थलुत्थिकटिकटिपरतम
 नहुविबंधवबंधिघर ॥ २२ ॥ दो० ॥ बुं
 दियदलप्रामैरदल । पबुयचढिगिरिसाय

॥ कलहभिरेमतकाबली। उततैबदिअति
काय ॥ २३ ॥ ष. ०५. ॥ पहरइकदिनसेस
बहुरिअलमदलपिह्यो। दुदिसच्चोहचकि
लोहबीरबत्यनबलदिस्यो। उडतफुहिना
गोदयंत्रजावकसमलोहित ॥ यपिधावत
विनुमत्थहोतअच्छरिगनमोहित। बाहु
लसिररुकंककटकटकतफरतमुंडभेजनभर
कि। खिलखिलतमि तजुग्गिनिजदिय
किलकिलातकालियकरकि ॥ २४ ॥ घ
दियदोयदिनरहतजोरदिसियदलजि
त्यो। कल्योकटककाबलियविसामप्रत
यानलवित्यो। गोपीनाथवतंसपरयोअ
नुपममधुनंदन ॥ माधवहरगुम्मानदोयह
हनिदुञ्जन। इत्यादिबहुतअलमचमूं
पञ्चयपरकटिकटिपरिय। करितत्यबहुरि

अथपनअमलकाबलदलहनिविजयि
 य ॥ २५ ॥ इमअलमलहि विजयसीम
 काबलकरिपद्दर। विष्णु सिंहबुधसिंह
 सहितरहितहं बहुबच्छर। सु। सुतको
 जयसुजससाहअवरंगसुखकिन्नी ॥ ना
 मबहादुरसाहरीदिअलमकहं दिन्नी।
 इमजीतिबहादुरसाहवहरमिकाबल
 सखारह्यो। चद्रवानबहुरिस्करमइनहुप्रेम
 परसपरनिबह्यो ॥ २६ ॥ खटरुपंचहय
 इक १७ ५६ सालागमसक विक्रम। सु
 किजुबनकबुलकबुधभूपतिबयउत्तम
 बुदियतैबुलवायअप्यअंतहपुरलिन्नी
 ॥ साहबहादुरसंगजंगजित्तनजस किन्नी
 मुलतानसतासगपनमयोतवर्तैनुपअ
 मेरपति। बुधसिंहहितुमंडतविनयगिन

तरिद्धजामातगति ॥ २७ ॥ दो० ॥ खर
 वकबंधसुताहुयह । व्याहोपूरवकाल ॥
 संततित्रिक किंभयो । तुंढाहरधरपाल
 ॥ २८ ॥ पुष्वप्रसवपुत्रियप्रकटि । नामसु
 अमरकमारि ॥ जयसिंहसुदूजेप्रसवती
 जे विजयविचारि ॥ २९ ॥ कन्याअरुपह
 प्रकुमर । अंतरहायन नि ॥ नृपअयसदो
 ऊरहत । पुरअमैरप्रवीन ॥ ३० ॥ विजय
 सिंहलघुपुत्रअरु । कबुपातुरिगनसंग ॥
 इमकाबलअमैरपति । रहतबुद्धरसरंग ॥
 ३१ ॥ इतिश्रीवंशाभास्करे महाचंपूखरूपे
 दक्षिणायने नवभराशो बुधसिंहचरित्रेष
 षोमयूरवः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
 ष०प० ॥ श्रीतिखसुरजामातसाल मिय

मंडतप्रति। गृहविधिदुवप्रवनीसजात
आवतदेरनप्रति। क्रूरमपतिकेसंगपानया
सवनृपलग्यो ॥ नञ्चनबाहनगानमानता
नमनपग्यो। जिनदिननपातसाहनस
भाजातनसायुधइकजन। लेजातसबहि
केवलफलकबिनुबुंदियहिंदुवजवन ॥ १
॥ अग्यैअकबरबेररावसुरजनयहरकबी
कसिकटारइहिंहेतुरहेबुधसिंहसमकबी।
बसुसायकहयइंदु १७५८ जेवथीखमरनर
तो॥ साहबहादुरधामआमअवसरनृपध
तो। जवनिकाद्वारलंछेजुगलतीजेद्वारस
मीपभुव। पहुंचतनरेसबुधसिं प्रतिजवन
इकमदभेरहुव ॥ २ ॥ वहेजवनअर्था। इय
साहआलमकोकिंकर। सहसाभिरनप्रसं
गवक्योअप्रियकुवादपर। रानिकुबैनसंभ

रियकुणिमारीयकलारिय॥ कालखंजहि
यचक्खिअथपपहुंरीअनियारिय। रीठ
कविदारिनिकसीबुवतमनहुंविज्जुमानि
कबमत। कैलियसहीयपरकीयकोवाता
यनकरजावरत ॥ ३ ॥ पटवेएकआका
रअथुतहत्थनचतुरायत। सातफेरसंभु
दितसिन्नतोएनवनिचायत। कृतविष्ठाति
कुंकुमियनीरजलजंत्रननञ्जं ॥ उड्डिसीर
आमोदरागगायकबहुरञ्जं। मोहतयुला
वमल्लियमहकिइंद्रविभवसोहतअजव।
दिह्मीससुवनजहंथितमुदिततंहंनृपय
हडारियराजव ॥ ४ ॥ जहंजमीनजीज
ननसेनसंकुलिनहिंसुज्जत। तीनसहंस
लुकवारपरिधिचोकिथबाहिंसुज्जत। सहं
सतोपसावातजालचहुंसिसुजंजीरित ॥

मंडनकेतुः पेटपौनः कंदतपथपीरित। अस्
वारः अहो निसपंचसतप्रतितोरनजामिकर
हिग। बुंदियनरेसबुधसिंहकीतंहं प्रकृषि
पदिसबहिग ॥ ५ ॥ चूकचूकचूहं कोद
कूककडूतकटारपरि। बहतभीरुचलदिच
लगिरततुरकानगरबगारि। सारिजवनदुम
रावचुवतपदिसथकिठडो ॥ साहबहादुर
संकगंजिचाहतरनगडो। सुतसाहहिंतुभा
खीसबनअनिअरजउपरअरज। कुरणप
हिसदोसअलमकह्योगुनहअपिहेरिय
गरज ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कहिअलमसाग
सहन्यो। नहिबुंदियपतिदोस ॥ रबलक
इलाहीकुबचसुनि। कोनहिरंगतरौस ॥
७ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रवज्रा ॥ अौर
झिरेवमप्रविचार्यकृत्यं बुद्धीन्द्रमाहय

समक्षमाशु ॥ अश्वारथनीवाऽनुजनिं द्वि
गीषुर्हिस्त्रीभरम्पुपुजे बबन्ध ॥ ८ ॥ शा
लिनी ॥ भोजान्चारं रत्नसेवान्तथैवन्दिल्ली
शत्रुं शत्रु शल्यञ्चभावम् ॥ कृष्णञ्चदाऽव
निकाशालमृत्सुं सृन्वोरङ्गिः शुद्धभावन्द
धार ॥ ९ ॥ प्रा. मि. ॥ हो. ॥ यह उदंत
दिस दिस उडिग । जस बुद्धियपतिजगि ॥
इसकाबलसूयाश्रवनि । लगनस्वामिमह
लगि ॥ १० ॥ कूरमपतिको लयुकुमर ।
विजयसिंह रुचिरंग ॥ जावतश्रवसरश्चा
मके । स्वजनकजाभियसंग ॥ ११ ॥ बाल
वेसकोतुक विरचि । लगि छोनियकहुला
ह ॥ पुष्पकयाय हिन्दो निपुर । सेवतश्चालाम
साह ॥ १२ ॥ कूरमपतितत्यहि मरिय ।
लयुपुतरहियसमीप ॥ पहलहियजयसिं

हनृपपुरप्रामैरप्रदीप ॥ १३ ॥ हरिगीत
 म् ॥ लहिपहनृपजयसिंहयो बयप्रब्दहा
 दशमैतहो । भदमंत्रिबर्गबुलायके कहिको
 नमंत्रप्रवैयहो ॥ करिके समस्तन मंत्रभा
 रियकालदेसप्रमानिये । अवरंगसाहस
 मीपसेवनमे सबैसुखजानिये ॥ १४ ॥ यह
 प्यिके जय सिंहले दलदेसदक्खिनको ग
 यो । दरगाहसाहसलामके मिलथानप्रप्य
 नपैग्यो ॥ बुलवायसाहसमीपप्रोदुबह
 त्यअंजलिसंगह्यो । करिहै कहाअबजेरतू
 इमब्याजकोपितहै कह्यो ॥ १५ ॥ जयसिं
 हयहसुनिउच्चर्यो ममभागअजउदोतुह
 करइकथंभतसाहजोनरसर्वउपरहोतुह
 ॥ अवरंगयहसुनिमोदमनिरुखोरिआय
 सप्रप्यो । नृपमानकेकुलमानसो जयसिं

भूपतिहृभयो ॥ १६ ॥ बयबालअरुबच
 द्दहतो नृपमानसो हसिवाय है । यहसिवा
 ईजयसिंहनृपअबनामएहकहाय है ॥

यह बत्तअंकरुधानसतरुइकसंवत
 १७५६ मैमईपहुमीसइक हिरत्तअवक
 छुहोतजातनईनई ॥ १७ ॥ दो० ॥ हिंदु

नकीपहुमीप्रिया । भोगीतुरकनअथाय । ज
 हांगीरजारहिंमरत । रतिरसअवनअथाय

॥ १८ ॥ कछुअवरंगहुतरुनपन । भोगीस
 कतिनिहारि ॥ अबयहजरुजईफभो ।

नित्यनईयहनारि ॥ १९ ॥ ष० प० ॥ सर
 ससिहयइक १७१५ सालभ्रातदाराहनि

जिहो । जित्तिथोलपुरसमरतरबतअवरं
 गबइहो । बसुरुवेदमितवरसपातसाहीनि

रथाही । युनखदहयससि १७६३ सालअ

५

यत्र बसमय इलाही । इक दिन बुलाय सुत
 प्राजम हिं करि हस्य अवरंग कहि । जंयतनि
 माजमम सिर अलग करहु पुत्रतरवारिगहि
 ॥ २० ॥ दो० ॥ भुगिजग बयसाह अवाल
 यो मृत्युनिज जोय ॥ जान्यो दिलर बमैर है जो
 निमाज बध होय ॥ २१ ॥ म० प० ॥ सुनिआ
 जम यह सकुचि वत्त मन सोधि विचारिय ।
 इहि उद्यम संधान होत संदेह जिय न हिय ।
 कहत साह कबु अर करत कबु ॥ दु० ॥ सय
 ॥ यह दृढ करि उच्चरिय होय मोसौ नय है नय ।
 जो चहत अप्यमम सुरव जनक तो यह हुकम
 अलीक करि । दिल्ली समेत अकबर नगर
 सब अप्यहु महर धरि ॥ २२ ॥ दो० ॥ सुन
 साह अवरंग इम । प्रिय सुत प्राजम है न ॥
 अकबर पुर दिल्ली अरपि । सब सुन सब से

न ॥ २३ ॥ ष. प. ॥ कियञ्चाजमयहमंत्रसा
 हपरिहैश्चञ्जीरन। मैदिलियपुरजायबै
 दिगहियप्रपंचण। साहबहादुरसुतश्चञ्जी
 मसंजुलहनिसंगर ॥ कामवरनसपुनिश्चञ्जु
 जमारिडुकचत्रतपौंधर। यहसौचिसीरवदि
 क्षियलई। अजमउचितश्चनीकसजि। च
 दिचलियचाहिगहियगरज। तबअवंग
 वाइतजि ॥ २४ ॥ साहबहादुरसुतश्चञ्जी
 मअमिथाननेकनर। पूरअपुरपदनांसुरहत
 अवरंगहुकमवर। कछुककाजतिनदिनन
 साहिधुह्योश्चञ्जीमवह ॥ वंचिपितामहपत्र
 चलयोइकिवनदरकुंरह। रवटमिजलरकिव
 अककरनकरमैनपुरीसुश्चञ्जीमरहि। उतम
 मयपायअजमचलयोदिसियअयससा
 हलहि ॥ २५ ॥ प्रथमसाहकैपुत्रमयोसुर

तानमुहुम्मद । काराग्रहसंकटियमस्योदुरव
 पायमितंबद । दूजोअलममाहसोहुकारा
 एहडास्यो ॥ जबअजमजच्चोसुतवहिहुत
 साहनिकार्या ॥ अजमयहेसुतीजोतनयता
 हिसाहहितकरिचहैं । सुतकामवरवसदी
 योसुपैसाहहुकमअतिनिबहैं ॥ २६ ॥ तुर
 कनकैन्हिनअवधिचंडालइकलव । का
 मवरवसयहकुमरभयोगशिकापिचंडभव ।
 याहिसाहकरिरीरुधरादकिवनसबाधुर ॥
 भागनगरअप्योरुबहुरिदिनोबीजापुर । पंच
 मोंपुत्रअकवरप्रकटिअतिजुबनउद्धतव
 त्यो । परघरनतकिमंडतअनयकुपिसाहव
 ध्यहिकत्यो ॥ २७ ॥ दो० ॥ अकवरमारकुज
 नकमुनि । भजिमारुधरअप्य ॥ रद्धोरिनहकि
 रक्खयउ । पुनिभयगयउपलाय ॥ २८ ॥ ॥

इति श्री कंभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणा
यले क्वमराशौ बुधसिंहचरित्रे समनो ७ म

यूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

गी० भा० ॥ अत्रुष्टुभ्युम विपुला ॥ सिंहाव
लोकिनीयाथा । प्रबन्धेषु प्रबध्यते ॥ योज
नीयोऽन्वयो वाक्य महावाक्यावसानयोः

॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अथ तथा कथ
यामि न कोप्यऽभूज्जातिशाह निदेश परा

यूरवः ॥ स्वशरणं सचिवार्थयथामनामक
वरोगतवानपि धन्वनि ॥ २ ॥ प्रा० मि० ॥

फहलिका ॥ अथै नरे सजसवंतनाम । उज्जै

नजगतजिभजिगधाम ॥ हवजनकरुकि

अप्रवरंसाह । तवजाययंदमंग्योगुनाह ॥

३ ॥ खजुवापुरसंगरसाहकीन । रूजाभ

जायनिजभ्रातदीन ॥ तत्पुत्रकबंधतजिस्वापि
 प्रीति। अवरंगहसमलुहियप्रनीति ॥ ४ ॥ अ
 नकोसजमाननलूटगानि। मरुधरमजिअ
 यउत्रासमानि ॥ तबसाहमरुस्थललियउ
 तारि। जसवंतनिमज्जिग विपतिवारि ॥ ५ ॥
 बहुअब्दमरुस्थलबिनुबिहाय। पुनिदुखि
 तअप्रायलगिसाहपाय ॥ सकुदुंबरचियदि
 स्त्रीनिवास। बहुकालरुचिसेवाबिसास ॥
 ६ ॥ दैसाहबहुरिधरधन्वराज। काबलधर
 पठयोत्रानकाज ॥ नहिसोहसर्धासुवासम्हा
 रिबहुकालरह्योउद्यमबिसारि ॥ ७ ॥ दिस
 विदिसपरनदबीजमीन। सुनिअलसकोप
 पुनिमाहकीन ॥ रनवासहुतोदिल्लीसुसाह।
 अटक्योजरिफोजनइहिगुनाह ॥ ८ ॥ इक
 रानीधारतगमअसा। इवअजितसिंहजनि

जठरजाम ॥ दलसाहहवेलीफिरिदुरंताश्रं
 लहपुरयेर्योनदुरवश्रंत ॥ ६ ॥ रानिनपँहं
 पठयोहुकमसाह । सुतजन्मसुन्योँनृपकेउछा
 ह ॥ सोदेहुसोँपिजोमुलकचाह । लैहँ विसा
 सिश्रववाहिँसाह ॥ १० ॥ जसवंतजोधपुर
 जोम्यनाँहि । सुतदेहुमयेजोश्रत्रश्रंहि । रन
 वाससबहिँसुनियहनिदेस । उमरावबुलाये
 निजश्रसेस ॥ ११ ॥ श्राहूतसबहिरद्वोर
 श्राय । करिमंनतत्तरानिनकहाय ॥ पठयेनृ
 पकाबलदेसधाम । सोँपेनसुधारतसाहका
 य ॥ १२ ॥ सुतजोभयोसुनहिँगुप्तश्रत्य । श्र
 वताहिसाहिँमंगतसमत्य ॥ भाखतइहिँदेहो
 धन्वराज । श्ररुकोपलखतहरसतश्रकाज
 ॥ १३ ॥ नतयचितनाँहितुरकनविसास । छे
 लहोनलगेबहुश्रासयास ॥ श्रबकाठिकुम

रजिहिंतिहिंउपाय। कछुचुनिजिवाबहुध
 न्वजाय ॥ १४ ॥ प्रच्छन्नजन्योऽप्यप्यनप्यप
 त्य। तसमातिकहहुभोयहअसत्य ॥ तहंभ
 हियभटगोइंददास। कापालिकबनिलिय
 कुमरपास ॥ १५ ॥ महियरघुनाथसुपतिल
 वेर। सजिदुर्गदासरद्वारफेर ॥ एवनिसहाय
 दुवभटअमान। कुमरहिंनिकासिगयइष्ट
 थान ॥ १६ ॥ कियजंगअवरसुभटनअष्ट
 ह। लरिहड्डारानीतजियदेह ॥ इमभावसिंह
 भगिनीसुभाय। निरबाहियतिलवतस्वर्गपा
 य ॥ १७ ॥ जसवंतकुमरकसिकंददेस। ल
 हिकालक देवेबदलिबंस ॥ लिनछन्नसाह
 सौंधन्वजाय। इकविप्रगेहरकव्यो छिपाय ॥
 १८ ॥ मरुधररहोनरद्वोरराज। हिजगेहकु
 मरवसिदुखदराज ॥ दिल्लीसौसाहनहुकम

पायमरुधररनवासुश्रुत्वरश्याय ॥ १९ ॥
 वहिमिलतमातसुतविपतिवास।तपउग्र
 सहलश्रुवरंगनास ॥ इहिंश्रुंतरनृपजसवं
 तश्रुत।वसिकालभयोकाबलवसंत ॥ २०
 जसवंतसुवनतबहुबुलाय।इनकुपितजा
 नरकरोदुराय ॥ नृपश्रुजितसिंहजसवंत
 जाय।अच्छरहेइमविप्रधाम ॥ २१ ॥ ग
 जसिंहजननयैहंनसहोत।भटदुर्गदासह
 कव्योउदोत ॥ नवयुनरुसप्तइक १७ ३६श्रु
 छमान।जर चंतभूपकियदेहदान ॥ २२ ॥
 तिनदिननयहेश्रुकवरकुमार।मरुदेसगयो
 मयसाहमार ॥ रद्वोरनहिंनश्रुसेसमत्य ॥
 श्रुवरंगरबूनिरकरैवसुश्रुत्य ॥ तबतिनहुद
 योश्रुकवरनिकारि।इसानगयोवहबल
 निचारि ॥ श्रुकवरसुमर्योपुरइस्पहान।सु

रहैं प्रति इक्क बतीस जवान । परैं लंगिगोल
 क कोस प्रमान ॥ ललकृत आजम केदल
 लार । हली इमडा किनिदोय हज्जार ॥ २६
 चली गज पंच सहस्रन पंति । भयंकर कञ्ज
 लप ह्वय भंति ॥ लगेँ भगनिद्रि करेणुनलो
 भा । डगेँ डग डाकन छकत दोभ ॥ २७ ॥
 मरोरत साखिन जुत्थप मत्त । परीणत व्या
 लरिसावनरत्त ॥ बडेबपुभद्रमृगादिक बं
 स । सजेगुडसाजन अंत कअंस ॥ २८ ॥
 बहैं फटकारत सुंदिन व्योम । प्रभापरिपद्य
 कजुबनजोम ॥ अहारत इच्छित पैन अणु
 घात । जनेजलपीवन कौं घटजात ॥ २९ ॥
 उडैं जिमकंदुक अंदुकपाय ॥ जरे निपदी
 नखुलेसमजाय ॥ घुमावतजेसिरवीतन
 घाव । पय प्रतिमंडल अंगदपाव ॥ ३० ॥

कसेमरुतूलकलापककंध। वरत्तननइ
 हवहनबंध ॥ जरीकुथजेवरजोतिचमक
 । उयोअसिताचलपैमनुअक ॥ करैपथ
 पंकिलदानप्रवाह। लगेतनतोमरचुकात
 राह ॥ सिरीमनिहाटकमंडितसीस। मनी
 अहमंडलभर्मगिरीस ॥ ३२ ॥ करैनभचा
 रनचंचलचोट। उडेफटिफेटकपाटरुको
 ट ॥ यदाधनमद्वकेअनुकार। हलेगिरिजं
 गमपंचहजार ॥ ३३ ॥ जुरेहयमंपतजास
 ललकख। तरारननिदतमारुतलकख ॥ ज
 रेवरजेवरपखवरजीन। तरेगतिनीरकिमं
 डतमीन ॥ ३४ ॥ धपैधरिधोरितअदिक
 थाव। परैछितिपातुरिकीगतिथाव ॥ प्रबजु
 ललासननासनपौनबदानटकेजिमधुंफ
 लगीन ॥ ३५ ॥ बनावतनालनधुमिबि

भाग । मनोगतिमप्यनमप्यतमाग ॥ उडैंग
 जगाहमलंगतत्र्यच्छ । प्ररोहिगजानिअ
 पाकृतपच्छ ॥ ३६ ॥ चलैनिजछाँहजऊक
 तचिन्न । यलैबरघुम्परमानसमित्त ॥ पटीप
 र्पूरलगावतलीह । मनोमतगोतमपाठक
 जीह ॥ ३७ ॥ थरकृतघुम्मतनीरकिथा
 ल । फलंगतचित्रकतैबढिफाल ॥ लसैंगल
 यालनमालउदोत । सुचंदनचापकिपत्तम
 पोत ॥ ३८ ॥ उडैंगुकिनइदुतंगनअंग ।
 कमाननडारतकंठकुरंग । कडैछिपिहत्थिन
 मैधपिधाव । बनेंजनुबारिदविष्णुसलाव
 ॥ बहैछितिछेकतबत्थनघल्लि । कसीसल
 कंधरअँडउरुल्लि ॥ कुसानुगजेपदकैजित
 जाय । रहैलखिलोभपतंगहुपाय ॥ ४० ॥
 घमंकियपकरघुग्घरनह । छमंकियनेउर

भेक किमह ॥ दिसा बिदिसा बढि हिं कृत
हेस । सजे जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
॥ दुरे पल दे कुलटा जिमिदिदि । चलै चर
ज्यो परिपत्रिय पिदि ॥ खलीनन लेहनम
अतुरत । सदा जय सूचक जे जव जत ॥
४२ ॥ बनै चकरी सकरी बिसिखान । महा
याति द्रोपदि के पदमान ॥ बडे तरु साखन
द्वै कठिजात । बर छिन पै उडिलंघत बा
त ॥ ४३ ॥ भिर खुर भोगिय भूमट भेर ।
फिर राज फेदन तै चक फेर ॥ सजे इम आ
जामके दल संग । तरे मय जामल लकरव
तुसंग ॥ ४४ ॥ क्रमेलक जुबन बेग बिसेस
। बनै जिन तै घर हेस बिहेस ॥ बजावत ग
खन हल्ल वितंड । चलै धरिप बय पिदि प्र
चंड ॥ ४५ ॥ भरेस लजे दल डेर नभार । ह

लेजुरिद्युमतसद्विहजार ॥ सजेबरवेसरबी ।
 ससहस्र । तथासकटावलितीससहस्र ॥ ४६ ॥
 जनांननकेजनवाहनजुत्त । सजे ।
 सिविकारथइकप्रयुत्त ॥ चलीभुवडोरि
 नमप्यतफोज । उहेहुवआयप्रवीरनओ
 ज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेतिसमान
 । दिसाबिदिसाफहणयनिसान ॥ सहस्र
 कपंचनकीबजलेब । चलीपृतनारचिजे
 वरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगन
 गैनाबडभुवपकरलकरलेन ॥ बिभा
 गनबंदतसत्रुनबंस । उमीरनबीरनके
 वतंस ॥ ४९ ॥ हरोलनचंडनकीबनहा
 क । करैमंगलुहनबाजिकजाक ॥ चलेइम
 दिस्त्रियपैरचिदाव । उमंगतआजमओ
 उमराव ॥ ५० ॥ हो ॥ इतआजमइस

सजिकटक । प्रभुबनि किन्नप्रयान ॥ उत
अलमसुनिउज्जल्यो । सावनमुदिरसमा
न ॥ ५१ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचंपू
सहस्रे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंह
रित्रे नवमो ६ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
७०५ ॥ अलमसाहवकीलहुतेअवरंग
निकटजिन । समयसाहअनसानपत्रलि
खिअन्नप्रपंचिन । जतुगुटिकाबिचरकिव
वूतकरिबेसदिगंबर ॥ काबलधरमुकलि
यअनिअट कियरेवापर । उनमलहोयस
रिताउतरिगतिसवेगकाबलययो ॥ निद्रि
तजगायअद्वियरजनिअलमप्रतिदल
अणयो ॥ १ ॥ सुहोदेकगारहिंअनभगा
तधुनभगी । अणनिवारिनिंदरियपिकिव

पच्चयदवलगी। घरफुहाजरिफुहिफुहिहिं
दुवमिलिआवत ॥ आजमअनयसिचान
परतदिल्लियपारावत। बंधहुप्रपंचमंडहुवि
हितयहनबेरफिरिआयहे। विनुजतनगये
लवलवबहुरिदूजेकलपदिसवायहे ॥ २ ॥
निप्रशाणी ॥ अदीकेयरियारपेचरफत्रलगा
या। धूजिथरत्थरनाजरुअकोधचलाया ॥
साहबहादुरसेनसेबजेरजगाया। जिनके
येसुखनिंदतेपरलोकपलाया ॥ ३ ॥ जि
नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अन्न
दुंहीअपपनानहिछत्रपराया ॥ येसुनिबे
गमअपपनीकरयेचिउडाया। जिकेकंतक
हावतेवहबासरआया ॥ ४ ॥ लायसि
लगीभकवरोंतुमनिंदलुभाया। येसुनि
आलमजगिकेअवरोधउठाया। कुमारबं

चिप्रपंचके बुधसिंहबुलाया। नैनमिलाया
 नेहसे दुजभारमिलाया ॥ ५ ॥ बंससता
 केबीरलूकहियो बिरुदाया। हिंदूभूपहराम
 केसबफोरिमिलाया ॥ दिल्लीकेकुचकुंभपे
 करआजमलाया। जोरजनानेजारकानहि
 जालपचाया ॥ ६ ॥ अबतेरेदुजदंडपेर
 सबीरबहाया। बाजीमेंअोरनरद्यापणप्रा
 णलगाया ॥ हारिसुगानहूरहेजितेजसमा
 या। योसुनिराबउछाहकेकरमुच्छमिलाया ॥
 ७ ॥ मुद्रिसहारीसंभरीरससत्तउडाया।
 थाईबीरउहकाइकेबकधाया ॥ ज्योकेद
 लकनउज्जकेभटसंजमजाया। कैगोरीसु
 रतानपेसजिकरुधकाया ॥ ८ ॥ ज्योसं
 थासुरजंगपेसतसत्तसुहाया। केद्रोणान्द
 ललेनकोकपिराजकसाया ॥ पीवनपारा

रहें प्रतिशुद्ध बतीसजवान। परें लगिगोल
 क कोसप्रमान ॥ ललकत आजमकेदल
 लार। हलीइमडाफिनिदोयहजार ॥ २६
 चलीगजपंचसहस्रनपति। भयंकरक
 लपहयमंति ॥ लोमगनिदुकरेएनलो
 भा। दुर्गडा डाकन बकतबोध ॥ २७ ॥
 मरोरतसारिनजुत्यपमत्त। परीणतव्या
 लरिसावनरत्त ॥ बडेवपुभद्रमृगादिदुबं
 स। सजेगुडसाजनश्रंतकश्यंस ॥ २८ ॥
 बहें फटकारतसुंदिनव्योम। प्रमापरिपश्य
 कजुबनजोम ॥ अहारतइच्छितपेनअ
 घात। जनेजलपीवनकौंधटजात ॥ २९ ॥
 उडें जिमकंदुकश्यंदुकपाय ॥ जरेत्रिपदी
 नखुलेसमजाय ॥ धुमावतजेसिरबीतन
 घाव। पथप्रतिमंडतअंगदपाव ॥ ३० ॥

कसेमखतूलकलापककंध। वरत्तननड
हवहनबंध ॥ जरीकुपजेवरजोतिचमक
। उयोअसिताचलपैमनुअक ॥ करैपथ
पंकिलदानप्रवाह। लगेतनतोमरचुकत
राह ॥ सिरीमनिहाटकमंडितसीस। मनो
अहमंडलभमगिरीस ॥ ३२ ॥ करैनभवा
रनचंचलचोट। उडैफटिफेटकपाटरुको
त ॥ यदायनभइवकेअनुकार। हलेगिरिजं
गमपंचहजार ॥ ३३ ॥ जुरेहयं पतजाम
ललकरव। तरारननिंदतमारुततकरव ॥ ज
रेवरजेवरपकरजीन। तरोगतिनीरकिमं
इतमीन ॥ ३४ ॥ धपैधरिधोरितअादिक
धाव। परैछितिपातुरिकीगतिपाव ॥ प्रवज्ज
तलासननासनपौनबटानटकेजिमगुंफ
लगेन ॥ ३५ ॥ वनाचतनालनभुमिबि

भाग । मनोगति मप्यनमप्यतमाग ॥ उडैंग
 जगाह मलयतत्र्यच्छ । प्ररोहिगजानिअ
 पाकृतपच्छ ॥ ३६ ॥ चलैनिजछाँहजकुकु
 तचित्त । थलैबरघुमरमानसमित्त ॥ पटीप
 रपूरलगावतलीह । मनोमतगोतमपाठक
 जीह ॥ ३७ ॥ थरकृतधुममतनीरकिथा
 ल । फलंगतचिचकतैवढिफाल ॥ लसंगल
 यालनमालउडोत । सुचंदनचापकिपन्नग
 पोत ॥ ३८ ॥ उडैंगुकिनइदुतंगनअंग ।
 कमाननडारतकंठकुरंग । कडैँछिपिहत्थिन
 मैधपिधाव । बनैँजनुवारिद बिज्जुसलाव ३९
 ॥ बहैँछितिछेकतवत्थनधसि । कसीसत
 कंधरअँडउरुसि ॥ कुसानुगजेपटकैँजित
 जाय । रहैँलखिलोभपतंगहुपाय ॥ ४० ॥
 घमंकियपकरघुधरनह । घमंकियनेउर

भेक किमह ॥ दिसा बिदिसा बडि हिं छत
हेस । सजे जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
॥ दुरे पल दे कुलटा जिमि दिदि । चले चर
जे परिपत्रिय पिदि ॥ खली नन लेहन मे
अनुरत्त । सदा जय सूचक जे जव जल ॥
४२ ॥ बने चकरी सकरी बि सिखान । महा
गति द्रोपदि के पदमान ॥ बडे तरु साखन
दे कडि जात । बर चिन पे उडिलं घत बा
त ॥ ४३ ॥ भिर खुर भोगिय भूमर भेर ।
फिर राज फेदन ले चक फेर ॥ सजे इम आ
जम के इल संग । तरो मय जामल लफव
तुरंग ॥ ४४ ॥ क्रमेल क जुबन बेग बिसेस
। बने जिन ले घर देस बिदेस ॥ बजा बल ग
हन हल्ल थितंड । चले धरि पबय पिदि प्र
चंड ॥ ४५ ॥ भरे सल जे हल डेर नभार । ह

लेजुरियुम्मतसद्विहजार ॥ सजेबरवेसरबी ।
 ससहस्र । तथासकटावलितिससहस्र ॥ ४६ ॥
 जनांननकेजनवाहनजुत्त । सजे ।
 सिविकारथइकअप्रयुत्त ॥ चलीभुवडोरि
 नमप्यतफोज । उदेहुवप्रायप्रवीरनअप्रो
 ज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेतिसमान
 । दिसाबिदिसाफहरायनिसान ॥ सहस्र
 कपंचनकीबजलेब । चलीपृतनारचिने
 वरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगन
 गैनाबडभुवपकरलकरलेन ॥ बिभा
 गनबंदतसत्रुनबंस । उमीरनबीरनकेअप्र
 वतंस ॥ ४९ ॥ हरोलनचंडनकीबिनहा
 क । करैमगलुहनबाजिकजाक ॥ चलेइम
 दिस्त्रियपैरचिदाव । उमंगलअजमअप्रो
 उमराव ॥ ५० ॥ दो ॥ इनअजमअप्रो

सजिकटक । प्रभुबनिकिन्नप्रदान ॥ उत
 आलमसुनिउकल्यो । सावनमुदिरसमा
 न ॥ ५१ ॥ इतिश्रीवंशभास्करमहाचंपू
 स्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशोबुधसिंहच
 रित्रेनवमो ६ मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
 म०प० ॥ आलमसाहवकीलहुतेअवरंग
 निकटकजिन । समयसाहअवसानपत्रलि
 रिखन्नप्रपंचिन । जतुगुटिकाविचरकिव
 दूतकरिबेसदिगंबर ॥ काबलधरमुकलि
 यअनिअट कियरेवापर । उनमत्तहोयस
 रिताउतरिगतिसवेगकाबलगयो ॥ निद्रि
 तजगायअद्वियरजनिआलमप्रतिदल
 अणयो ॥ १ ॥ सुलोदेकगरहिंअभया
 तसुवभरगी । अबनिवारिनिदरियपिखिव

पबयदवलगी। घरफुहाजरिफुहिफुहिहिं
दुवमिलिआवत ॥ आजमअनयसिचान
परतदिल्लियपारावत। बंधहुप्रपंचमंडहुवि
हितयहनबेरफिरिआयहे। विनुजतनगये
लवलवबहुरिदूजेकलयदिसायहे ॥ २ ॥
निशशाणी ॥ अहीकेधरियारपेचरपत्रलगा
या। धूजिथरत्थरनाजरुअवरोधचलाया ॥
साहबहादुरसेनसेंबरजोरजगाया। जिनकं
धैसुखनिंदतेपरलोकपलाया ॥ ३ ॥ जि
नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अबउ
हैंहीअप्यनानहिबत्रपराया ॥ यैसुनिबे
गमअप्यनीकरअंचिउठाया। जाकोकंतक
हावतेवहबासरआया ॥ ४ ॥ लायसि
लगीभकरोंतुमनिंदलुभाया। यैसुनि
आलमजगिकैअवरोधउठाया। कगारब

विप्रयन्त्रके बुधसिंह बुलाया निनमिलाया
नेहसे बुजभार मिलाया ॥ ५ ॥ वंससता
के वीर लूक हियो विरुदाया । हिंदू मूपहराम
के सब फोरि मिलाया ॥ दिल्लीके कुचकुंमप
के जम मलाया । जोर जननेजार कानहि
जात पलाया ॥ ६ ॥ अन्तेरे बुज डंड पर
अबीर बलाया । बाजीमें अोर नर्यापण प्रा
लाया ॥ हारि बुगान हारहे जिनै जसमा
या । यो सुनिरा वरु हाहके कर मुच्छ मिलाया ॥
७ ॥ सुद्धि सहरिसंभरी रससल उडाया ।
थारि वीर उडका हके हक थाया ॥ ज्योके ह
लकन उडाके मट संज मजाया । कैगोरी सु
रतानपै सजिक न्हध काया ॥ ८ ॥ ज्योसं
मासुर जंगपै सल सल सुहाया । कैदोराच
ललनके कपिराज कसाया ॥ पीवनपारा

वारके घटजातघुमाया । कैबनसुत्ताबिंदि
 कैमृगराजजगाया ॥ ६ ॥ कैकाकोदरचंप
 तैफनफेलबनाया । सैरकिधौंसाबातमैह
 वदुंगमिलाया ॥ जमकाश्रंवलजानिकैक
 हिपावदबाया । यौंसुनिबत्तैसंभरीभनजंग
 लगाया ॥ १० ॥ सोकसिलगासाहकाक
 हिबैनसमाया । यौंसिरजोलीकंधपैसुरवश्य
 पकुमाया ॥ गहीज्यांनपनाहकीहमबीरसि
 वाया । धर्महरामीसेरहैकोऊनकहाया ॥ ११
 अगौंपंडवजित्तिकैकुरुवंसनसाया । राबन
 किनीरामसौंसोहीफलपाया ॥ पापनपक्की
 होनदेदलहोहुसिबाया । अँचौंआजामकंठ
 मैंधरिचापअथाया ॥ १२ ॥ यौंसुनिसाहसि
 राहकैतवअमबनाया । भावीभूलसुनायकै
 तजबीजलगाया ॥ सेनानीसंभरकियाचतु

रंगसजाया । बहु प्रात प्रयानकौ फरमान बढा
 या ॥ १३ ॥ जंगनगारौ नदहूँ धरका बल (
 झाया ॥ सिंधूरागरन किया बढिसोर सिवाया
 ॥ डैरौ डैरौ सज्ज है नर बाजिक साया ॥ जौ लग
 तीजे जामका धरियार बजाया ॥ १४ ॥ किम
 जघैरौ धल्लिके चैरौ गरहाया ॥ काहु व्याज प्रप
 चकै बिरुदाय मिलाया ॥ अंगरु मालौ मंजि
 करजरंग उडाया ॥ है है मनके मानके संजाव
 खिलाया ॥ १५ ॥ केजल देगौ पायके सुरब
 लोम लगाया ॥ अंगौर किवगजीनके विस
 वास बहाया ॥ ऊपिमहा उलकंध पैगति बंदर
 आया ॥ जंगी होदन मंडिके गुड नद बनाया ॥
 ॥ १६ ॥ घाय घस्वारी घोरज्यौ धलि घंट फि
 लाया ॥ चापतु पक्षौ आदिके सबहे लिसजा
 या ॥ बंधि वरतौ सज्जके बड बाक लगाया ॥

फोजोंनायकभारणसिरतेरेआया ॥ १७ ॥
 योंकहिकंधायपिकैरनरंगरचाया जंगीअं
 दुकडारिकैआलानभुराया ॥ बरीबाहिर
 बाकतैरचिडाकडगाया।केकमलंगोंतुंगके
 धुजदंडमुकाया ॥ १८ ॥ मेघाडंबरकेकसे
 सिरअंबरलाया।केकहवहोंसज्जहूगल
 गज्जमचाया ॥ योंनमअंबरअभ्रभूपरिमान
 गिनाया।हत्थीआलमसाहकेरनराहसजा
 या ॥ १९ ॥ लकवतुरंगोंलेनपैबरसाजब
 नाया।देतरवलीनोंदोरपैनचिकंधनमाया
 ॥ जंगपलानोंडारिकैकसितंगमिलाया।
 घोरघमंकीपकरवोंछोनीतलछाया ॥ २० ॥
 रंगबिरंगेराहकैगजगाहलगाया।छोरिदुब
 गोंगानतैचरबाहिरलाया ॥ तुक्तिमलंगों
 तुंगपैरबिरुक्तिनुभाया।तोपहजारतीर

कैचहकालचलाया ॥ २१ ॥ डारिदवाली
वीरजेसजिजंगलुभाया । साहबहादुरस
ज्जुहैअबबाहिरआया ॥ बारनपहअरो
हिकेफरमानलगाया । कुंचनकीबोंबुद्धिके
हरवल्लबढाया ॥ २२ ॥ एतेमानबिहान
काथरियारबजाया । पाथरकाबोंमडिकेच
हिबीरचलाया । छोनिमचकीभारकेफनना
मडुगाया । चिकेदिग्गजचिकरैउरकल्पभ
याया ॥ २३ ॥ अ्यानसमाधीछोरिकेमन
चित्रबढाया । तद्दिनधूरिवितानकेघनमान
पिथाया ॥ सारहपुषियकासलीजिमबहर
छाया । दक्षिथरिलीपकरवरोइकअथोयलरवा
या ॥ २४ ॥ सेलोअंबरठकियानभचार
रुकाया । छंडेबातमपेटकेफीलोफहराया
॥ ताराउत्तरिपोदकीसुभसोनबताया । दक्षि

नभारद्वाजनैद्रुतलामदिरवाया ॥ २५ ॥
 योंदरकुंचअनीकनैलाहोरनिराया।पंजाबी
 दलबुल्लिकेकडुतत्यमिलाया ॥ अलम
 साहसिपाहयोंसजिसेरसिवाया।दिल्लीके
 सिरदावपैकरिचावचलाया ॥ २६ ॥ इति
 श्रीवंशमास्करेमहांचंपूस्वरूपेदक्षिणायने
 नवमराशोबुधसिंहचरित्रेदशमो १० म
 यूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
 गीर्वाणभाषा ॥ वसन्ततिलका ॥ लाहोर
 नामपुरतोपिकृतेप्रयाणे।मेघानुकारकृत्
 हादुरशाहचम्वा ॥ अयातमाशुदलमी
 शितमागरातो।जीमस्यभूतयुतमाविवि
 दःस्वसूनोः ॥ १ ॥ उपजातिः ॥ शुत्वाव
 रङ्गङ्गुतकायहानमयासमागत्यमनोजषु

र्याः ॥ तत्रत्यभूतिर्द्रविणादिरात्तादुर्गञ्च
 सञ्जीकृतमागरायाः ॥ २ ॥ स्वास्थ्यंगृहाणे
 तिविचार्यवसर्जहीहि तत्सोदरचक्रचि
 न्ताम् ॥ विरच्यतेऽत्रापिमयाप्रयत्नः प्रल
 द्यतेचाजमशाहमार्गः ॥ ३ ॥ आग
 यतान्द्रागभवतापि विद्वसेनाभृताबुद्धिर्नृ
 पेणसाकम् ॥ न्यस्यात्रशुद्धान्तमुरवांविभू
 तिञ्जात्पोरिपुञ्जजिवसीमिजयः ॥ ४ ॥
 शुद्धमाकृतभाषा ॥ गीतिः ॥ इत्थं पत्तंरौ
 ऊणं अद्मलिहिअंजयायमेणसमम् ॥
 साहबहाउरजोहाहरिससमड्डा जिईसवो
 ह्नुया ॥ ५ ॥

(१) इतिपत्रंशुत्वाअजीमलिखितञ्जयागमेनसमम् ॥ शाह

बहादुरयोधाहर्षसमृद्धाजिगीषवोभूताः ॥ ५ ॥

(१)
 जहससमाणरित्तेबुहोमेहोपरूढशालिके
 ॥ अथवादिनकरुदि
 हलपहिअगणे ॥ ६ ॥ (२) वारोअमिअसजे
 मिलिअोधन्तरीछुहाइसमम् ॥ अथ
 वाकुणवसरीरेअबोपञ्चागयागयाअस्तु
 णो ॥ ७ ॥ प्रा० मि० ॥ अ० प० ॥ कियउच्चाहइ
 मसाहबच्चिकरारचूरासम। बुद्धिनृपति
 बुधसिंहकक्षीतदुदंतविहितक्रम। इकइ
 कसंजोगहोतजिहिंबिधिरकादस ॥ इम
 अजीमगढलेतदइवदीसतअप्यनवस
 । अथवाहमहरसूचकयहेअवनबीचअरिभ
 यअटक। आगरअोरपइतिउदितकअसडे

(१) यथाशुष्यमाणक्षेत्रेचक्षोमेघः प्ररूढशालिके ॥ अथवादिनकरुदि
 तोनिशिदिइमूढे विहूलेपथिकगणे ॥ ६ ॥ (२) वारोगेअसाधोमि
 लितोधन्तरिः सुधया समम् ॥ अथवाकुणवशरीरे अहहप्र
 त्यागतान्प्रसवः ॥ ७ ॥ —

गहंरुहुकटक ॥ ८ ॥ यहप्रपंचअनुकूल
 पिकिरिबुधसिंहचमूपति। कियफोजनदर
 कुंचमंडिबूहनविदग्धमति। सेनमध्यसुर
 तानहहुभरनाहहरोली ॥ सुवनसाहकेती
 नवामदाकिवनचंदोली। जयसिंहअनुज
 दूरमविजयलधुवयलखिबुपसंगलिय। इ
 हिंक्रमउपेतदक्षतअवनिचलिसवेगचतु
 रंगिनिय ॥ ९ ॥ काकोदरकलमलतफनन
 पुंकरिपलटावत। कद्रूहियअकुलातल
 खतपुत्तहिलचकावत। त्यांबिनताउरति
 कवपुषुचिलतदासीपन ॥ यहकोतुकअप्रद
 भूतफैलिकरुपधरफोजन। संकरसमाधि
 तजितजिसहजकारनलखतविचारकरि
 नवमालहेतुकहिकहिइनहिगहकिमोद
 बाठतगवरि ॥ १० ॥ मिजलइकासाहस

नत्र्यगचोकीत्रिसहस्रन । अरिन छन्नउप
 चारप्रबलविसत्र्यादिपरकवन । निधितून
 अन्ननिदानमगमैदानमुकामिक ॥ स्वगभृ
 गतरुउद्यानजातसोधतद्वमजामिक । प्रति
 दिसजिहानखलभलपरिगमनद्रुबज्जभुव
 फोरिहे । पापिननिदानत्रायकिप्रलयछ
 लिसमुद्रहदबोरिहे ॥ ११ ॥ कमठभंगगि
 लिअंगप्राननारिनपरिबुद्धिय । भिरिहम
 ल्मभुवभारपिद्धिपावकघसिउद्धिय । मगिद
 मंगबढिहालजातकच्छपपतंगजरि ॥ दरि
 तदारिदंतुलियटिकतसूकरतुंडाकरि ।
 आतंकसुरनउतपातइहिंकंपतजगकार
 नकहिय । बुधसिंहमनहुँआगमविजय
 अकूपारआहूतिदिय ॥ १२ ॥ अहिक
 च्छपभूदारहुहिनदिगजदिगपालक । भू

लोकरु तिमभुवरबहुरिसुरलोकविशालक
 इतसमस्तअतलादितिमहिसागरइत
 आसहिं ॥ इकहिं परिआयासअवरआ
 तंकउपासहिं । संकितबिनासधुञ्जतस
 कलचकितचेतमूलनभजिय । प्रियजिय
 इतेननारिनपरिगमदननेहनारिनतजिय
 ॥ १३ ॥ इमअपनीकदरकुंचआयउत्तरिबुं
 वानन । संभरपतिबुधसिंहमंत्रमंडियप्रपं
 चमन । सनियरानाउत्तिआदिअपनअंते
 उर ॥ कामविपिनब्रजबीचतत्यरकिय
 शुद्धातुर । सजिकुंचबहुरिआलमसहित
 नृपतिआयअकबरनगर । मिलतहिअ
 जीमसंबोधिमुहजडितपिकिवबीरनज
 गर ॥ १४ ॥ तेरीबेरअजीमन्यायरद्वारि
 सहियदुरव । तेरीबेरअजीमयालबन्धो

सुसबनसुख । तेरीबेरअजीमपट्ट दिह्लिय
चढिपानी ॥ तेरीबेरअजीमजन्योँअोरनतुर
कानी । इमतिहिंसिराहिबुंदियअधिपस
बदलदुगसम्हारिलिय । मिलिसुतहिंसा
हमंडियमहरकहितुमबिजयप्रपंचक्रिय
॥ १५ ॥ कछुकालरहितत्यसेनपिकिव
यसेनापति । दलसारथदुवलकवतोपह
ज्जारबिबिधतति । सवालकवतुकरवारजं
गपकरजिन्हडारिय ॥ दुवदीननबरबी
रबरसिगजगामबढारिय । इमसहसदू
कअचतनिगडबहुनिसानफहरानिबनि
। इमसबसम्हारिबुंदियनृपतिप्रतिजवने
सप्रयानभनि ॥ १६ ॥ दो० ॥ अंतहपुर
धनआदिसब । राजबिभवरखितत्य ॥
त्रंबकडकबज्जिगबहुल । संगरपढतसम

त्थ ॥ १७ ॥ अप्यनदलरुअजीमदल
 । सबरकत्तसम्हारि ॥ करियकुंचतजि
 आगरा । रोपनजाजवरारि ॥ १८ ॥ इ
 तिश्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणा
 यनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे एकादशो
 ११ मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 दो ॥ मेचकफागुनसाहमरिइनसुनिम
 धुअवदात ॥ आवत बित्तेमासदुव।अ
 वआषाढप्रभात ॥ १ ॥ आजमकछु
 कबिलंबकिय । साहबहादुरभाग ॥ इल
 निवाहिआतपदिनन।आवतभुवअनु
 राग ॥ २ ॥ तपतजेठदिनकरदुसह।
 आजमकदकदुरंत ॥ चलतपंगुजयचं
 द्रजिस । बसुधाललदबंत ॥ ३ ॥ इमप

तोगवालेरपुर । आजमबिभवउपेत ॥ स
 जि किस्माबनितादिसब । रकिवयतत्थनि
 केत ॥ ४ ॥ ष० प० ॥ अग्रजअवरंभी
 यसाहदाराअभिधानी । ताकीतनयाब्या
 हिलईअजमअभिमानी । यहअग्रंभीइ
 कबरपकरिबंधीपरहहुन ॥ तबअनिरु
 द्धनरेसजित्तिअनीभुजदंडन । दीदारब
 रवसजाकेउदरताहिनगरगवालेरधरि । उ
 ततैउफानसागरउपमअप्रायोअजमको
 पकरि ॥ ५ ॥ अकबरपुरइनतजियतजि
 यगवालेरनगरउन । एदकिवनसम्मुहुरुवे
 सुउत्तरपरअरुन । इमअप्रावतहुवकल्ल
 मिलेजाजवदिनअर्थै ॥ रहिसुकामबह
 रातिकलहउगतारबिकर्थै । हुवदलप्र
 पातसोहतसहजमनहुसिंधुबीचिनभरि

ग । बहुल उदीचिः प्रावाचिके प्रबल बात
 भेद कि परिग ॥ ६ ॥ दो० ॥ सकच उख
 टसत्रह १७ ६४ समय । असित
 षाह ॥ दिय मुकाम दुबदलन इम । मिलि
 जाजव गहिगाह ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥
 दैदल मुकाम बुंदिय नरेस । किय मंनपि
 किव अप्रिदल बिसेस ॥ रति बाह बाह
 रोकन विचारि । निजदल प्रबंध बंधियनि
 हारि ॥ ८ ॥ परवरैत सहंस द्वादस प्रवीर
 । सजिथपिसेन बाहिर सधीर ॥ निजमह
 रनपंडित जै तनाम । तिनमां हि मुख्य करि
 रकवताम ॥ ९ ॥ यह बैरि सल्लकुल भव
 अप्रमंग । निजबंधु जैत दिय सोधि संग ॥ क
 हिनेह बचन सनमान कीन । अबकाकादि
 ल्हीत व अप्रधीन ॥ १० ॥ जोरचहिं सचुरति

वाहजाल । तोमेलिचासभेजहुउताल ॥
 इमभाखिछबीनां कियतयार । हयजेतसंग
 द्वादसहजार ॥ ११ ॥ दलपरिधिजायति
 नचक्रदिन । क्रमइमप्रबन्धचहुवानकिय
 ॥ पुनिकहियनीतिसाहहिंप्रबोधि । सुख
 सैनकरहुअबकालसोधि ॥ १२ ॥ निसजा
 मरहतनिंदहिनिवारि । पिकवहुबिहान
 रनभटप्रचारि ॥ सुनिसाहसैनमंडियसतो
 स । भूपालबुद्धमुजहुवभरोस ॥ १३ ॥ स
 बसाहहसमडेरनसम्हारि । नृपसिखिरअ
 यकटिपटनिवारि ॥ लियसबहिफोजना
 यबबुलाय । समुमायकहियअगमसुना
 य ॥ १४ ॥ अगौप्रमादसमुपेतसुत्त । पा
 हुवदलमास्योदोनपुत्त ॥ निससुत्तसाह
 गोरियअनीक । कइमासइककियकादि

लीक ॥ १५ ॥ तसमातअसनअल्पहि
 विधाय । सज्जहि समस्तसोवहुसुभाय ॥
 करितीनस्वस्वपरिकरविभाग । कहहुत्रिजा
 जामजयरकिविराग ॥ १६ ॥ गजहयनदे
 हुविश्रामबंधि । अमपिकिवअल्पआहा
 रसंधि ॥ वपुमंजिसजहुहयगजबहोरि ।
 जंगीपलानसंधानजौरि ॥ १७ ॥ निसर
 हतजायतजितजिनिकाय । पतनासुरका
 ननदेहुपाय ॥ बुलियविदग्धतोपनचला
 क । करिविद्विददलहिंमंडहुकजाक ॥ १८ ॥
 पंद्रहहजारपायकतुरंग । अरिपिसाहतो
 दनअभंग ॥ इममंडिव्यूहजायिकअनूप
 । चहुशानअसनकिर्नोचमूप ॥ १९ ॥ द्रुत
 युनिअप्रोहिहेवरदिवान । सबठिगफिर
 किर्नोसावधान ॥ इमसिविरपिकिविनिज

थानआय । सुरवसयन किन्नय बलसुभाय
॥ २० ॥ यहसुनिअनीकबृहनविबेक ।
आजमहुधायिजामिकअनेक ॥ इमफिर
सुकामहुबदलअमान । दुवधौनिघातव
जतनिमान ॥ २१ ॥ रनमाहताबउदित
दुओरचकिचौकिपरतजिनलखिचकोर ॥
बदिदुबलचंद्रजोतिनविकास । पुसिमम
यंकषुदुबिफुरिपास ॥ २२ ॥ दुहुँओरबा
जिगजरवदुरंत । दुवसेनउच्चडेनदिपंत ॥
दुहुँओरसूरजामिकदुरुह । सजिसजिअने
कविचरतसमूह ॥ २३ ॥ दुहुँओरलखत
प्रच्छन्नदूत । दुबदलनकीदुओरवअभूत ॥
मंडनऊपेटमअतदुओर । सिंधुवअपलापदुव
दिससजोर ॥ २४ ॥ दुहुँओरकरतजामिक
दुराव । दुहुँओरबुबीनालखतदाव ॥ दुहुँओ

रबाजि फादत दुबंध । दुहुं श्योर वंति गज्जत
 महंथ ॥ २५ ॥ दुहुं श्योर सुइसेलन चमक
 दुहुं श्योर थं पकवर घमक ॥ दुहुं श्योर सररु
 रन उवाह । दुहुं श्योर होत हरि हर इलाह ॥
 ॥ २६ ॥ दुहुं श्योर सुतर जं घाल जात । दुहुं
 श्योर चास पल पल दिरवात ॥ दुहुं श्योर करत
 बहुरीतिदान । दुहुं श्योर होत विधि जुत विधा
 न ॥ २७ ॥ गुन जा भरति हु बहु म अतीत ।
 मह किय सुजंग श्योर भगीत ॥ निदहि निवा
 रि बुंदिय नरेस । करि नित्य वंदि प्रमुदरि केस
 ॥ २८ ॥ जासिकेन साह श्योर लम जगाय । बु
 धसिंह तव हिलिय द्रुत बुलाय ॥ कहि उचि
 त संनमं दुहुं नरेस । अब नहि बिल बहु वस
 असेस ॥ २९ ॥ सुनिवृप उवाच नय कहु
 सनम । अब होत जंग विधि विधि अधर्म ॥

बहुतेपकरतदूरहि विनास। बीरहुसकै नय
हृदरिनास ॥ ३० ॥ लैजातसबनधरिसि
स्तथोर। मनसां हिरहतसुभटनमरोर ॥ तस
मातप्यदलपिद्विदूर। रहिछन्नकालकहु
हुजूर ॥ ३१ ॥ हमसुभटजुद्धपडितहरो
ल। विधिसबनिदाहिनयधर्मबोल ॥ मधि
दलसमुद्रभुजमंदराग। निजबलरूपानर
विचंडनाग ॥ ३२ ॥ जयरत्नकड्डिजलन
जरूर। द्वैरव्यातनिवेदहिं निजहजूर ॥ इहिं
नीतिछन्नसाहहिं निकासि। बलसजियश्रु
पहियजयबिकासि ॥ ३३ ॥ इलचहन
बेगदैनिजनिदेस। विधिकरिबिहानसं
ध्याबिसेस ॥ साजउनुहुचहनश्रायसप्र
सारि। नरगजतुरंगकलकलनिहारि ॥ ३४ ॥
दो ॥ दुवदलइमरवलभलपरिग। गहकि

६

नकीरियगान ॥ किलकनकीवनहुवकहर
 ।पहरपलानपलान॥ ३५ ॥ भुजंगप्रधान
 म् ॥ जगीसेन दोऊरहीजामरती । बजेबंब
 मेरीबहीहल्लवती ॥ दुहं प्रोहं सुहं कनि
 त्यमंडं । दुहं प्रोहं संसारतं प्यारखंडं ॥ ३६ ॥
 दुहं प्रोहं गंगोदकं प्रंगमं । दुहं प्रोहं गी
 तादिगीतादिमं ॥ दुहं प्रोहं बानलनगो
 वं ॥ दुहं प्रोहं केटीपसत्राहसं ॥ ३७
 ॥ दुहं प्रोहं जालीदवालीनहारं । दुहं प्रो
 रधारालधारालधारं ॥ दुहं प्रोहं सिंघनड
 आहजगं । दुहं प्रोहं बाजीनपंजीनलंगं
 ॥ ३८ ॥ दुहं प्रोहं मंडालमंडालगजं ।
 दुहं प्रोहं हिंजीरजंजीरबजं ॥ दुहं प्रोहं
 उखलनेजाकरं । दुहं प्रोहं केजोरशोनी
 मचकं ॥ ३९ ॥ दुहं प्रोहं धानुकवटंकार

पूरे । दुहं प्रोरदेरवै लगी लोमहरै ॥ दुहं प्रो
 रमै दूतहै भूतमिहै । दुहं प्रोरबेतालखेत
 लखिहै ॥ ४० ॥ दुहं प्रोरकेभीरु उद्भाव
 मंडै । दुहं प्रोरकेबीरबानै ततंडै ॥ दुहं प्रो
 रबहीनकोसोरबड्डै । दुहं प्रोरतोपै द्रगवी
 नचड्डै ॥ धरै कुंतबडुकतुहै वरञ्ची । दुहं प्रो
 हंकिहत्थीरखुलै सज्जकञ्ची ॥ वही
 सैनदोकवही जंगचाहै । श्वाची उदीची
 घटाज्यो उमाहै ॥ ४२ ॥ दो० ॥ बुंदियप
 तिसन्नद्वबनि । नयनिकासिनिजसाह ॥
 दलसारधदुवलकवले । चढ्यो तुरगजय
 चाह ॥ ४३ ॥ उतप्रजमप्रारोहिगजले
 दलसम्भुहप्राय ॥ मुलकप्रलयप्रगमन
 महुं । उदधिसत्तउफनाय ॥ ४४ ॥ इति
 श्रीवंशभास्करमहाचंपूस्वरूपे दक्षिणाय

नेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे द्वादशो मयू

रः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

दो ॥ सकचउखटसत्रह १७६४ समय ।

मिलिचउत्थिसुचिमास ॥ अमितपकरउ

मातअरक । बहिदलविजयविलास ॥ १ ॥

सुतादाम ॥ बहेदलतोपनको करिअपुका

। मिलेमदउद्धतसंगरमया ॥ इतेविचको

तुकजांगअच्छक । उयोउदयाचलकेसिर

अच्छक ॥ २ ॥ लख्योरबिहीउनबंदिबि

सेस । भयोतबतोपनपुषनिदेस ॥ पलह

निपिकिबहुमालनसैन । लगीहुहुंअपौरअ

लातनदेन ॥ ३ ॥ मिलीतहतीनहजार

नअग्नि । बहीअफलेतहुहुंदिसहग्नि ॥

भयोनमधूमितधुंघुरिभान । लगेहुगामीच

नदेवविमान् ॥ ४ ॥ परेऽप्यगोलकविद्यु
 तपात । जुरेनरगैवर है उडिजात ॥ उगह्व
 तफेरहिं फेरश्चरुवंड । चलै चटकारिनके
 मितचंड ॥ ५ ॥ सुजंगमके सिरनञ्चतमु
 म्मि । धरै फनतै फनघायनधुमि ॥ नचेजि
 म कन्हर कालियकंध । वनै इम छो नियतंड
 वबंध ॥ ६ ॥ लगेडगममान्प्रद्विनश्रुंग
 गिरै जिनतै म्मगभ्रामितभुंग ॥ निवाननश्च
 कुलितुहतनीर । पखो इम आतपश्रीरबम
 पीर ॥ ७ ॥ तजै बहिबीचिनसागरसीम
 । भ्रमै प्रलयानिलमै जिमभीम ॥ जुरो दि
 वदबिकुहृतमजगि । अलातलगेजनु
 प्रेतनप्रगि ॥ ८ ॥ परै इगवउतसोरप्रका
 स । लखै इनहूइतफेरउजास ॥ दुहू दिस
 यौलखिमारतदाव । भयोदुहुं घां इमसोर

असाव ॥ ६ ॥ सज्यो बलिधूमसुरालयसंग
 । अज्ञौ नमबहलरजिहिरंग ॥ गिरि विच
 गोलक गोलक फेट । अर्नो पवित्रै पवित्रं
 दुचपेट ॥ १० ॥ गिरिजमत्यश्चिनश्चिन
 बूट । कटै पविपानकि अद्रिनकुट ॥ गिरि
 गजकुंडु गोलनगोन । गिरितरु लालकि
 पश्यपान ॥ ११ ॥ लरयो रविदुगातज्यो
 तमलाल । किते अषुसुसुत अहिकका
 ल ॥ विहानकुकोकनलमि वियोगा वि
 नानरजानतजामिनिजोग ॥ १२ ॥ परं
 जगंडनगोलकपात । करैजसुभसूकजाति
 नरव्यात ॥ परं दुर्दु अरतुपकनपंथ । स
 अरवभाष्टकज्यो हरिमंथ ॥ १३ ॥ चहुदि
 सचंड चलयोरजचूर । पर्योरजतचलनो
 उडिपूर ॥ जदीजदजूटहु पंकिलजात । ल

तोपनकोमगटारि ॥ ३० ॥ इमकहायबुंदिय
 आधप।मंड्योतोपनजंग ॥ इहिअंतरदूतन
 कद्यो।भोज्ञाजमअसुभंग ॥ ३१ ॥ बलहिअ
 चारतभटनविच।होहत्थियआरुह ॥ गोला
 लगीदेजरदगयो।महाअनयरतमूह ॥ ३२ ॥
 अबताकोसुतसज्जहुव।तथासचिवनृपती
 न ॥ नरउरपतिदतियानृपति।काटापतिइक
 कीन ॥ ३३ ॥ ष०प० ॥ सुनतरहबुंदीसमंत्र
 निजदलसहमंडिय।अरिआजमउडुतहिल
 रनतससुतहरोललिय ॥ अरकजामअवरोस
 तोपचल्लतत्रिजामगय ॥ अबहयदेहुउठाय
 जानिहरिहत्थजयाजय।इमकहिनेरससुम
 टनउचितहयनहंकिसमुहहलिय।नीरद
 उदीचिदिसतैमनहुंचंडपवनदफिवनचलिय
 ॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वहृष्ट

क्षिणायने नक्षत्राशौबुधसिंहचरित्रे त्रयोद
 शो मयूरः ॥ १३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 नराचम् ॥ उठाय जंगम्यो तुरंग बुद्धसिंह उष्यो
 मची कजाक हड्डु हाक बीर बाक बित्ययो । म
 हागमीर थीर बीर नीर बीर ज्यो मिले । हमल्लो
 कभुमिलो कर बंदर बंदु ह्वै खिले ॥ १ ॥ अनंकि
 तंति सिंधवी अलापराग मुक्तयो । अनंकि जी
 नपकरि नपे नगोन रुक्तयो ॥ खनंकि धार
 द्वै प्रहार अंगभंग उल्लटै । अनंकि सवाससेसकी
 फनालि फुकरै फटै ॥ २ ॥ अनंकि बानले उ
 डान आसमान ह्वयो । अनंकि धं दजंग जीम
 नागती मन ह्वयो ॥ अनंकि रचरं चतै प्रलं च चा
 पटं करै । अनंकि पच्छुरि मच्च गिद्धनी जरफ
 रै ॥ ३ ॥ चली नली कृपानसान सुद्धराव बुद्ध

की ॥ अरीनजुद्धकी उमंगराजरंगरुद्धकी ॥ म
 थ्योअनीकसंभरीकअजमीकअंगव्यो। च
 लैकुचक्रभीगिभोगभोगपैभम्योभम्यो ॥ ४ ॥
 अहारखगाधारमारलुत्थिलुत्थिपैपै। चिरे
 बितंडगंडगंडखंडखंडहैऊरे ॥ दिसादिसान
 मैकपानबिज्जुमाननिकरवसी। भिरैगरूरपूर
 सूरपिकिवहरहुलसी ॥ ५ ॥ सुबाजिसोक
 अोकअोकभीरुलोकमगाय। लैनिद्यालस
 खपातइकरीठलगये ॥ ऊरेससुंडगेसुसुंडकं
 धबंधतैकटै। अलैसुरुंडगोलकुंडफादिमुंड
 उच्छटै ॥ ६ ॥ छिकैबिछेकवानकेपलान
 हानबित्यै। गिरैउलहिसूरपिकिवहरसूर
 ऊगरे ॥ जमातिजुगिनीनकीपिबंतपेयप
 त्तकै। किलकिबीरबावनीफिरैअमत्तरत्तकै
 ॥ ७ ॥ चलैसमगाखयाकेकदारपारनिक

१०० ॥ सुबीरसीससंचयी गिरीसदुल्लसैहसै ॥
 बरारि बारि जंत्रज्यौं बुलकि घाय उबकै ॥
 अनीक नारिके छइल्ल खोह छाकमै बकै ॥
 ८ ॥ तुरै विमानमुक्ति दानकुकि मुक्ति
 के करी । बजंत हेति हेतिकै मनोकि इंदु च
 जरी ॥ जरै बितंडु पिद्विं डु अद्रिकूट ताल
 ज्यौं । बहंतरत्तखालके बिसाल तालनाल
 ज्यौं ॥ ९ ॥ सिलगिसोर और और जा
 लजोर संक्रयौं । भयो निसान ध्वान जो दि
 सा हि सान मै भ्रम्यौं ॥ पिधाय भानुरेनुको वि
 तान व्योम वित्थयो । लखे परै न अप्यपार
 अंधकारयौं भयो ॥ १० ॥ चल ज्वलीम
 हीरसेन आजमी खल बली । कल कली
 फिषा काल ज्वालकी फल जली ॥ गिल
 लसुद गिहनी फिकारि फिकरी फिरै । सि

गेकुवकंजनपुंजलसात ॥ १४ ॥ भज्योससि
 भीरुकभालहिं चोरि । रहैरजलेतसुधासब
 चोरि ॥ अकंजसकंजभयेइमईस । समात
 तसादमयोभरसीस ॥ १५ ॥ महानदर्यौल
 हिरवेदसमाज । निमीलतनैलसमाधिकव्या
 ज ॥ जलंधरबंचितचंद्रियअग्गा । लरैंधव
 संकिमहाभयलगा ॥ १६ ॥ भयोयहविग्र
 हसंकरभौन । गिरैपृतनाइतगोलनगौन ॥
 थरथरभुमिजथाजलथाल । बर्यौरनलोए
 नर्यौबिकराल ॥ १७ ॥ सिलगहिंतज्जहिं
 गज्जहिंसौर । लरज्जहिं बज्जहिंसिंधुहिलौर
 ॥ भजैगजसंगरलंगरतोरि । महाउतराउतल
 वतमोरि ॥ १८ ॥ दिसाबिदिसाजगिजार
 तज्वाल । मनौकुहुउज्जदसंधनमाल । चले
 उडिसौरसिखाचमकाल । परैजिमभइववि

ज्जुवपात ॥ १९ ॥ भ्रमैकदि सुडि गिरै उडि
 भाग । मनै जनमे जय अवर नाग ॥ पराव
 लि गिपुन की प्रजरात । जतायुक अजज्यो
 गिरिजात ॥ २० ॥ उडै अज रंडन रंड अका
 स । रचै जिम उद्ध हिके कियरास ॥ जरे राजपि
 द्विपता कनजूद । कियो दवल गिब अद्रिन
 कूद ॥ २१ ॥ कहै पुरजा जव हो अथ कोस ।
 दयो चहुँ या तउ संगति दोस ॥ तयो समर
 यन तोपन ताप । चह्यो नम जायल जायदि
 वाप ॥ २२ ॥ दो ॥ इम तोप नरत होत इत
 इत को तू हल आस ॥ रवि दुपहर लौ चहि
 रुक्यो । तकन तुमुल लमास ॥ २३ ॥ इहिं अ
 तर दुव दिस अतुल । घुरत तोप निर्घात ॥
 साह बहादुर भाग मन । बज्यो उत्तर बात ॥
 २४ ॥ ष० प० ॥ पलटत उत्तर पवन दाहती

पनइतदगिय। उडुतपिकिविअनीकिला
 यसत्रुनउरलगिय। आजमगजआरुह
 हुतोनिजकटकहरोली॥ गेलालगिलेगय
 उपारिदलमध्यप्रतोली॥ इमतोपजलकआ
 जमउडतनिजदललखिखरभरनयो। शीदा
 रबरवसतससुतहुसहद्वैनायकहरवलभयो
 ॥ २५ ॥ आजमसुतइमकहियमरनमंगल
 भदसंगर। करहुसोकजिनबीरधरहुपायनल
 जलंगर। इमविसासिसबसेनअगगड्डोआ
 जमसुत॥ गतिअंगदपयगडिमरनमंड्योज
 नूनजुत। दैपुनिनिदेसतोपनदगननृपनवा
 बहलकारिसब। शीदारबरवससज्ज्योदुजन
 गुमरटेकमंडलगजब॥ २६ ॥ दतियापति
 राउत्तनामदलपतिबुंदलह। नरउरपतिग
 जसिंहबंसकधवाहसमेलह। रामसिंहच

कुवनिअनयआकरकोटापति ॥ लगिबुंदि
 अथरलोयगिनतभोरोनकालगति ॥ सचिव
 नइतेनआजमसुवनगजारुढहरवल्लगहि।
 इममंत्रअवहिआजमउड्योसुवनसासअ
 वसेसरहि ॥ २७ ॥ इमआजमउडुतहिसुव
 वरुड्योचदि सिंधुर। दगततोपदुहुंओरउगत
 वीरनरसअकुर। इहिअंतरजयसिंहनगर
 अमैरनेसर ॥ निजनकीषमुकालियबुइभू
 पतिप्रतिआतुर। गृहविधिकहायप्रच्छन्नग
 अजाभिपतुमएखलजवन। कुलस्वसुरदारि
 मंडुहुकलहहोततोपसालकहवन^{२६} ॥ दो०॥
 बुंविद्यपतियहसुनिबिनय। प्रतिउत्तरपठ
 वाय ॥ अरअप्यनसंबंधधन। यंहरनदंडुअपा
 व ॥ २६ ॥ तातैतुमसाहसतजहुंबयनयस
 अविचारि ॥ वचहुबामदकिवनबदलि।

लंतकंकस्थारखगधारधारतैरिवै ॥ ११ ॥
 उडैदुप्रोरबीर्योंतुपकतोपत्यौचलै ॥ जरे
 दुकूलकेहदीहकारिसमुहेहलै ॥ छिकैबि
 लंडकालगंडरवानविहनीधसै ॥ गिरिंद्र
 खामकीगुफामहामुनिंद्रज्यौबसै ॥ १२ ॥
 सिलगिअगिकीसिखाचमकिगेनलो
 चढौ ॥ विमानअच्छरीनकैउछाहदाहयौ
 बहै ॥ उडैअलातअोकअोककोकसोक
 संकुलै ॥ खुलैसमाधिईसकीधृतीदिगीस
 कीडुलै ॥ १३ ॥ उदीचिवातकेप्रपातसेन
 आजमीचली ॥ हरोलचंडबुद्धकीकरालकु
 डकीहली ॥ डरातडकडिंडिमिडमंकिडा
 किनीनकी ॥ १४ ॥ बिकुत्तघत्तरत्तकीब
 छकिछिछिउच्छलै ॥ चलैकिजंत्रजाव
 कीसिखाकिपावकीचलै ॥ हबकिधाय

नसैउभंगिसाकिनीनारिनाकिनीनकी वृदि३

नहके कपोलभाय उच्चरैँ पलहिकहिके उल
 हिहकहकपैँपरैँ ॥ १५ ॥ दो० ॥ लरतमर
 लचहुँ हिससुभद । मिलिपयभत्तमिलाप ॥
 कछुकछुतोपनदगनक्रम । धपतइ कश्चिसि
 थाप ॥ १६ ॥ प्र०प० ॥ कोटापति वारनबढा
 यरस वीर अथायो । बरखत बानन बिंदुनिनि
 हुनीरद्वनि अथायो । सुंडिबीचइहिँसमय
 घायगोलालमि शल्यो ॥ इभपोगरउडिजा
 तचकित चिकारिभजिचल्यो । गजभजतकु
 द्विवर वीर गतिकहिँ असियदारुनकलह । ह
 यमेधचरनडारतहलियपरनमंडि अतिको
 पमह ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटिसकूपानी
 चंडचलानी घेरघलानी सेनघटा । तडैँर
 चिताली अगुगिनिजाली भूरिभटाली करत
 कदा ॥ काली किलकारैँ वीरबकारैँ चंडचिका

रैकुंभिकरै। अतिपानइसारै बोधबिसारै
 मुंडनमारै प्रेतपरै ॥ १८ ॥ असवारउल
 है कंकटकहै पूरपलहै सूरसजै। पन्नगफन
 फहै अवनिउ छहै बंबबिकहै बंबबजै ॥
 बुंदीपतिवारी कालकरारी तेगदुधारी बेग
 चली। कोदेसअबाहनउग्रउछाहनमंडि
 महारनबीरबली ॥ १९ ॥ गिद्धीगहिअंती
 अबाउडंती जोकफिलंती चंगनिभा। सूरम
 सिरछायारचनरचायाबेसबनाया छत्रवि
 भा ॥ सुंडिनभरिफुंके भैरवभुंके चोसद्विचुंके
 नचनसा। हल्लीसकमंडै तालिनतंडै रवाय
 अखंडै बीरबसा ॥ २० ॥ गद्गद्बुद्धिबानी
 भटनभयानी धारधपानी मारमचै। बालन
 लगिठल्लरिके असिकल्लरिरावसुकल्लरिभा
 वरचै ॥ कटिहडुकरकै पिप्फपरकै तेकतरकै

एक उडैं । चोटन असि चंडैं खंडैं खंडैं चोरि वि
 लंडैं गिरत गुडैं ॥ २१ ॥ विनुमत्य दुबाहेसं
 सुलिराहे चंडिय चाहे उद्विपरैं । डोलैं गजडा
 रेफुहिनगारे पत्यहगारे बत्यपरैं ॥ गजदंत
 उपरैं कोपकरारैं मीरनमारैं बीरबढे । कटि
 धाररूपाननगातसुगाननबीरविमाननके
 कचढे ॥ २२ ॥ जुमिनिजयजपैंकातर
 कपैंबाजि विरुपैंबेगबली । लुत्थिनभुवछा
 वैंबीरबढवैमिञ्चुनमावैंछोहछली ॥ कोटे
 सविनाहय छंडिमहागयरुद्विबडेरयरारिरु
 प्यो । गजबाजिगहमहकूहकहकहकहत्रंबत्र
 हत्रहलोकलुप्यो ॥ २३ ॥ हो० ॥ कोटाप
 तिकिलकतपर्यो । आलमदलसिरआय
 ॥ करिसुसंधचंडासिकुल । तुह्यो असिनअ
 याय ॥ २४ ॥ म०प० ॥ तजिमतंगभुवकु-

द्विकडिप्रसिवरथकिकुप्यो । नटमलंगनचि
 अंगरंगअंगदजिमरुप्यो । रतनभोजरविम
 लमगउज्जलकरिमानी ॥ तिलतिलधार
 नतुहिभयोअमरनअगवानी । पैतीसबं
 ससिरवतअकटधारततदपिनधमधर ।
 चंडासिबंसरनयजिचलनननसिकषीपि
 कषोनिडर ॥ २५ ॥ अकष्योकछुचिल्ह
 निजकछुकगिद्धिननिजकिर्नो । कछुकल
 ह्योविसकंठकछुककालियलगिलिर्नो ।
 खायकछुकखित्तालडमरुधरितालडका
 स्यो ॥ भरिवजुगिनिकछुभागबहुतअ
 नुराभाषढास्यो । अदिअदिहड्डुफगुन
 उपमकटिकटिफोजनउफर्न्यो । कोरान
 रसकटिकटिअसिनबटिबटिबहुपेस
 कबर्न्यो ॥ २६ ॥ दो० ॥ कोटापसि

श.

पयारवंडुनजोरिचतउप्यरनरुंडन । सजि
 सुंडिनउच्छीसपंजुकंदुकनृपमुंडन । गुडप
 करवरगहीरुबंधिनहुअंतबरत्तन ॥ इहि
 मंचकआरुहमातकालियअथप्रमनः
 लेतिहिपिसाचबाहकबहतमहतउच्छा
 हकमहमहत । जितजितसुगंधतिततित
 सजवराहिरमिदुहेरतरहत ॥ ४ ॥ मदन
 कहुं कहुं मिरत कहुं ककारित आकंदत । कर
 मकहुं क कक्षरत गिरत गज कहुं क चिह्नर
 त । कहुं कअथकटिपरत कहुं कघायलमद
 सुमन ॥ कहुं कबंधउदिलरत कुहुं कुण
 पनकहुं सुमन । कहुं ककमेदकवलनकर
 त कहुं सिधानगरत मपद । कुक्षत फिरत
 डाकिनिकहुं कल गिजरंत पावकलपद
 ॥ ५ ॥ कहुं कनेन कटिपरत कहुं ककटि

भौं हें फद कृत । उत्तमग कहुँ उडत गहत हर
 उडमोदगत । कालखंज कहुँ कदत बुद्धि बुक
 न कहुँ बुद्धत ॥ कहुँ फुल्लत हिय कंज मधुपमा
 नस उडि उडुल । करपय विभिन्न तरफत क
 हुँ कमन हुँ मीन जल तुच्छ मत । दीदार बख
 सबुध सिंह दुवरसिक प्रान बाजिय रमत ॥
 ६ ॥ रुहिर रंग बढि ब हत छेद छत्तिय
 पिचकारिन । डफमदल डिं डिमिय तानमं
 डत सिवतारिन । पातगुस्ज पुटलिय पुह
 पप्रंगार प्रकासत ॥ खगार खग मिलिर ब
 रत बूर प्रब्वीर बिधासत । जुगिनि जमाति
 पन नारि जिम प्रालापन मुकि उच्चरत ।
 दीदार बख सबुध सिंह दुव कलह फगको
 तुक करत ॥ ७ ॥ पद्मि ब्रुत्र कटि परत
 जरत चामर ज्वालानल । बरत बीर प्रच्छ

रियुः परत हेति न क्लसानु क्ल । कोसन क
 लहदुरंत बाढ असिबर इक वज्जत ॥ ब
 हु निषंय विकवरत चापतुहत सरसज्जत
 । तर फत प्रमत्त हिंदुवतुरक आलमदल
 जालमजम्यो । नववय रिवल्हार बुंदिय
 नृपति आजमसुत बढि अंगम्यो ॥ ८ ॥
 ॥ लोटकम् ॥ धरसंगर आजमपुत्तध
 वर्यो । राज उपरलोहन बाक छक्यो ॥ द
 तियापति प्रादिकरीन चढे । बहु अगाप्र
 बीर उमीर बढे ॥ ९ ॥ रसघोर निसानन
 खानरच्यो । विदिसान दिसान क्लसानुम
 च्यो ॥ मिलिसूररुरै परपैनमुरै । जिमतक्कि
 यसहिय बादजुरै ॥ १० ॥ स्वगधारनधा
 रसमार रिवरै । फलभोजन चोसठिसंगफि
 रै ॥ नटके बटके भटके लटके । फटके नरुरै

बटकेबटके ॥ ११ ॥ किलकारतभैकरि
 भूतमिलैँ । हलकारतखित्तरपालखिलैँ ॥
 उमडेअसि बिज्जुवअंकनसे । घुमडेदल
 भद्वकेघनसे ॥ १२ ॥ गहिभैरव नर्त्तक
 कीगतिकों । मिलिबंचतकालियकीमति
 कों ॥ करितुंडससुंडससुंडकसैँ । बनिआ
 खुगसंकरअंकबसैँ ॥ १३ ॥ सुतजानिप्रचुं
 बनईससजैँ । भयधारितबैँ किलकारिभजैँ
 ॥ छहजोजनफोजनभुमिछई । अतिपाउ
 सजानिघटाउनई ॥ १४ ॥ पवमानदिगुत्त
 रकोप्रसह्यो । सुमनोँघनपोसकहोयसह्यो ॥
 चहुँघाँतरवारिनकीचमकैँ । तिदिपैँ मनु वि
 ज्जुवकीदमकैँ ॥ १५ ॥ मिलिभूरवनओ
 जइरम्मदलों । लगिसिंजितददुरकेनदलों ॥
 बहुँऊंडसुरोहितचापबनैँ । तनितारवहुँदु

भिडोलतने ॥ १६ ॥ करकावलिहडुनखं
 डकिरे । फटिदोपउडेबकपंतिफिरे ॥ चमके
 जोइरिणालौचिनगी । उदसोनितबुद्धिऊ
 रडुसगी ॥ १७ ॥ रनजाजवपाउसयेबिर
 च्यो । मुगलानचुहाननदावमच्यो ॥ भटख
 गानकेकटिसुडिभ्रमे । अहिज्योजनमेजय
 अउरमे ॥ १८ ॥ करकेकटकवलिकोच
 कटै । फरकेकठिकालिकबक्षफटै ॥
 रवारिनहडुनुद । छरकेछितिचिचिनरन
 छुद ॥ १९ ॥ लटकेअसवारतुरवारलरे
 पदकेगहिइकहिइकपरै ॥ चटकेकटिदो
 पनकीचटके । छटकेभटबाजिनलोहडुके
 ॥ २० ॥ गटकेपलमिद्वनिधितमिले । रवट
 केअसिरुप्यारिखंडखिले ॥ अटकेकिरका
 वनपायअरे । भटकेभटगज्जहिछोहभरे ॥

॥ २१ ॥ लगिकोसनजंगनकीलरसैं। वर
 खानरप्रंगनकीवरसैं ॥ सननंकतप्रोथन
 प्रानसैं। अननंकतप्रायुधप्रगिर्गैं ॥ २२
 तननंकततेगनकीतरकैं। थरकैंननंकतलो
 हथकैं ॥ रनहीतमुहरतभानरह्यो। बलतैंब
 ललोहसुमारबह्यो ॥ २३ ॥ दो० ॥ बलब
 ललोहसुमारबहि। घोरमचिगघमसान ॥
 आजमसुतप्रधारभो। चंडकिरनचहुवान
 ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ घटियदोयरबिरहतप्र
 थितआजमसुतपिह्यो। नरउरदतियानृप
 तिठानिहरवलदलठिह्यो। कुक्परिगचहुं
 कोददुक्दुक्कनदलतुहत ॥ हरनमोहहुला
 सद्योहसूरनअसुछुहत। निजसाहभागरन
 रीतिनवप्रबलनीतिफलपक्यो। बुंदियन
 रेसपावकबिसमतूनआजमदलतक्यो

॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटानिभफोजनभो
 धमसान । उलें जवनेसदतें चहुवान ॥ बजें
 असिहडुनअहुविदारि । किर्योतरु कहहि
 कूरकवारि ॥ २६ ॥ अस्योदतियापतिममु
 हआय । पस्योमरिबीरलयोफलपाय ॥ रुथो
 गजरिहडुकूरभराज । सज्योइतहडुनकोसि
 रताज ॥ २७ ॥ बढीबुधभूपतिकीहतबाह
 कटेभटअोरभज्योकछवाह ॥ धरानभसंगर
 संकुलिधुंधि । लयो नृपआजमकोसुतरुंधि
 ॥ २८ ॥ रुपेइमजाजवहैदलरारि । करैअ
 सिअरिलोअनकारि ॥ महानटनअतमुंड
 नमोह । करैकिलकारतकालियकोह ॥ २९
 ॥ कुकैबिहसेचउसहुिनहुंड । रनेअलिवार
 नचैबहुहुंड ॥ अरैइकतैइकबत्थनआय ।
 परैगजपछयज्योअविषाय ॥ ३० ॥ अरथर

भुमिचलच्चलथान । लम्योअहिभोगनरौ
 लचकाम ॥ कुलालकचक्रभयोभ्रमिकच्छ
 । बरकृतसूकरदडुविलच्छ ॥ ३१ ॥ लगे
 अतलादिककंपनलोक । इतैअकुलातत्रि
 विष्टपशोक ॥ रमैपलचारहुआरुनरंग । स
 बैडमसूचतसोनितरण ॥ ३२ ॥ चढ्योगज
 आजमपुत्तसचाव । धप्योनृपसमुहउद्धत
 धाव ॥ कमाननअचतकाननकानि । तको
 इमभारतवाननतानि ॥ ३३ ॥ लगेसरह
 तिनहुइमलीन । मनें बिलसप्यकिसंवर
 मीन ॥ स जैबजिपन्नसायकसोक । उडे
 लभाजिमअंबरशोक ॥ ३४ ॥ चलैअसि
 कुंतबरच्छिनचोट । असूरदुरैबहुहत्थिन
 शोट ॥ उडेबहुअंबरअगिअलात । जरी
 गिरिगिद्धनिचिल्हनिजात ॥ ३५ ॥ फिरे

रश्मिफेरवफेरनफाल । विबुल्लतकंकउडँ वि
 कराल ॥ कमानफटँरुहटँकमनेत । पलान
 कडँउलहँपरवेत ॥ ३६ ॥ हरँकडँमानल
 रँकडँहकि । जरँकडँमुच्छपरँकडँजकि ॥
 बरँकडँहरँकडँबाह । गिरँकडँभीतधरँक
 डँगाह ॥ ३७ ॥ रुलँकडँमत्तखुलँकडँरो
 स । डुलँकडँहत्थिडुलँकडँहोस ॥ बकँकडँ
 प्रेतलकँकडँबीर । धकँकडँज्वालहकँकडँ
 धीर ॥ ३८ ॥ चढँकडँबाजिबढँकडँचाव ।
 पढँकडँबदिकढँकडँपाव ॥ धमँकडँस्वास
 नमँकडँधूल । अमँकडँगिह्रमँकडँभूत ॥
 ३९ ॥ मरँकडँरीठजरँकडँमुड । ररँकडँ
 रासमरँकडँरुह ॥ बरँकडँप्रोथसजँकडँ
 बाह । लरँकडँभीतभरँकडँलाह ॥ ४० ॥
 ररँकडँशुमिहसँभटसग । त्रसँकडँरोय

कसैँ कहुँ तंग ॥ चटैँ कहुँ सोनघटैँ कहुँ चेत ।
 हटैँ कहुँ पिकिवरटैँ कहुँ हेत ॥ ४१ ॥ बहैँ
 कहुँ संगिरहैँ कहुँ बैर । खहैँ कहुँ भिटिचहैँ क
 हुँ सैर ॥ चबैँ कहुँ उट्टफबैँ कहुँ चोट । अर्बैँ क
 हुँ मिच्छहबैँ कहुँ ओट ॥ ४२ ॥ जिलैँ कहुँ
 वारखिलैँ कहुँ सुमि । मिलैँ कहुँ घुम्मिमिलैँ
 कहुँ सुमि ॥ लनैँ कहुँ मोहबगैँ कहुँ लोह । द
 गैँ कहुँ तोपजगैँ कहुँ द्रोह ॥ ४३ ॥ गिनैँ कहुँ
 घायबनैँ कहुँ गाय । हनैँ कहुँ दोरिभनैँ कहुँ
 हाय ॥ चिपैँ कहुँ सोनलिपैँ कहुँ चैल । छि
 पैँ कहुँ भज्जिदिपैँ कहुँ छैल ॥ ४४ ॥ तनंक
 तचापप्रतंचनतुहि । खनंकतरवगासुसुहि
 नखुहि ॥ सनंकतबाननप्राननसंकि । अनंक
 तपकररोचिभमंकि ॥ ४५ ॥ बहेपणवान
 कनहबिहद । महाबलबुद्धरच्योअवमह ॥

पर्यो अरिसेन उपक्रम पूर । सज्यो इमसंभरपुं
 ॥ ४६ ॥ ये इत्ये इ नञ् हिं उट्टिकबंध
 । मल्लप्रहिं देकरतालमदंध ॥ निरादिनजा
 दिनहिन्म अ नंत । भिरै गजतै गज भत्त भ्रमंत
 ॥ ४७ ॥ अरै बहु वीति विना असवार । उल
 हाहिं सुहाहिं जीन अपार ॥ गिरै इभपालक
 दारितगत । मरौ तरुलै कपिनिंद प्रमत्त ॥
 ४८ ॥ पलाकिन होत सुदंड प्रपात । बडे तरु
 तालसकी सकिवात ॥ किरै बहु मस्तकल
 स्तकफदि । गिरै गुन तुदि किरै धनु फदि ॥ ४९
 शरवरै विरवरै सर छोरि निरवंग । जथा । ॥
 बहुभीम भुजंग ॥ इ ली अ सिधे बुन बुद्धि अ
 पार । किरै मलया चलनाग कुमार ॥ ५० ॥
 बहु परिवातन कुलसवेग । त्रिमीसकि संमि
 र सुदि सलेग ॥ अरै कति अश्वन मंडि नियु

इ । करै तुमुलाहवकेमटकुद्ध ॥ ५१ ॥ परैफ
 दिदुंदुभिमेरिनप्र । गरजाहें केनरमंडिगरुह
 ॥ परैरिबग्ग कबीरुपलान । कटैरुप्रोयह
 यच्छटकान ॥ ५२ ॥ रचीइमसंभरजाजदरा
 रि । हनीअरिसेनघनीहलकारि ॥ घटागज
 मध्यसुदैघनघाय । लयो नृपअजमपुत्तनि
 राय ॥ ५३ ॥ भयो जबहीअसुअजमभंग
 । सबै नृपतत्यटरेतजिसंग ॥ भज्यो इकभूप
 रुदैहनिभिंदि । लयोअबअजमकोसुतबिं
 टि ॥ ५४ ॥ चढ्योगजहोअबहारिबिचारि
 । रचीसुतअजमबाननरारि ॥ सुसंभरहे
 तिसबैबरसाय । द्योअरिनिबलपारिदवा
 य ॥ ५५ ॥ हुतीहयलकवचमूहमगीर । भ
 योअवसाननइकहुभीर ॥ रच्योजिहिंवि
 ग्रहभुग्गनराज । बचैवहतिनिरिच्यो लहि

बाज ॥ ५६ ॥ फितूरदफैकरिमंडलफेरि। घ
 नीनिजसेनलयोगजघेरि ॥ कियोतउबानन
 जंगकराल। कहालगजोरकरैलहिकाल ॥ ५७
 अथर्मनहोतसहायकअंत। लगेबुधआयुध
 मर्ममिलंत ॥ भयोसुतआजममोहिबिभान
 चलयोसमलंगहिलैचहुवान ॥ ५८ ॥ दो० ॥
 घटियइकुरिविलरविरहत। घल्लियसंभरघत्त ॥
 आजमसुतइभपालसह। मोहितभयउप्रमत्त
 ॥ ५९ ॥ इभसमेतलैतिहिंप्रधिय। उमडियु
 कामनआय ॥ साहबहादुरद्विगसजव। पत्रवि
 जयपठवाय ॥ ६० ॥ सरिताइकद्विगसजत
 हो। सफरनबडिससिकार ॥ आयेडेरनवि
 जययुनि। कहतबुद्धजयकार ॥ ६१ ॥ इति
 श्रीवंशाभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेन
 वसराशौबुधसिंहचरित्रेपंचदशो१५मयूरवः

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 दो० ॥ आजमदलअबलगबज्यो। पृथक
 लोभगतिपाय ॥ अबटारटारिसबउत्तरेअल
 मदलबिचआय ॥ १ ॥ ष० प० ॥ चरमाच
 लरबिचढतचित्तप्रमुदितनिसचारन। आ
 जमसुततजिमोहबडुरिबुल्ल्योथितबारन।
 कोजित्योदलकोनसुसुनिइनकहियकुसी
 लित ॥ जित्योअलमसाहकटकवाकोतुम
 कीलित। दीदारबरवसयहसुनिदुचितहोदा
 सोंसिरहनिमरिय। अतिलोहछकितइभपाल
 हू। परिप्रमत्तअसुपरहरिय ॥ २ ॥ दो० ॥
 जिहिंउप्परआजमसुवन। मरिगफोरिउत्तमं
 ग ॥ बारनवहसोनितबमत। आयुधधेदितअं
 ग ॥ ३ ॥ आजमसुतमृतसुनिअधिप। इभ

सुसम्हारियअनि ॥ कोटिइकजेवरकहिय
 । पृथकसुधरियप्रमानि ॥ ४ ॥ स्वचरभेजि
 निजसाहडिग । कथसबविदितकहाय ॥ आ
 जमसुतगतअसुभयो । प्रभुअप्यनजयपाय
 ॥ ५ ॥ कोटिइकजेवरकह्यो । सोथितफी
 लसमेत ॥ आयसबसिप्रातकिअबहि ।
 अरुं सबनमेत ॥ ६ ॥ ष० प० ॥ सुनिबु
 द्दोदितसाहस्वासनिजदासरिनायो । मंडि
 विविधमनुहारिकथितअतिनम्रकहायो ।
 बलतेरेबुंदीसडुमंडिआजमपरआये ॥ काब
 लजेतेकहियबैनकरिसत्यबताये । अबध
 रियरुलितुमअमितअतिबपुविसल्यकरि
 विधिबिहित । सेनासम्हारिमंडुसयन । आ
 बहुआतनेसइत ॥ ७ ॥ दो० ॥ तबयहसु
 विसन्नाहतजि । निजबपुसत्यनिकारि ॥

कियविधानभिसकनकथित।सबदलप्रथमस
 हारि ॥ ८ ॥ क्रमसबसायंकृत्यकरि।संभरमंडि
 यमैत ॥ श्रीमानिसाश्रगमभयो।इहिंश्रतरतिहिं
 श्रैत ॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिभानुछपासुजि
 हानछई।मिलिकंजविरंजहुसोकमई ॥ बि
 बुधालयअत्रारिघंतबजे।सुरभीनखबच्छनमे
 लसजे ॥ १० ॥ दिनमूकनधकनहकदई।चि
 तचकनचौकितजीचकई ॥ चिलकारिनधि
 गलिकाचहकी।निधिसीनिसचारनधारनकी
 ॥ ११ ॥ चहुंश्रैरनचौरनचायचढे।बहुजारन
 दारनमोदबढे ॥ दिनचारभयारप्रगारदुरे।कवि
 व्योमनछत्रनचित्रदुरे ॥ १२ ॥ जुरीहीपनिवा
 सनभासजगी।दहनोदयचुल्लिनहेतिदगी ॥
 रचिगायकगोरियगानरहे।गनिकानउमंमिनु
 जंगगहे ॥ १३ ॥ रसपीयस्वकीयनहीयइडापर

कीयनतीयनपीयतजे ॥ भयमुद्धनवोढनचि
 त्तभरुयो । ह्रियहृच्चयमध्यनबोधहस्यो ॥ १४
 ॥ बसिप्रोढनकेलित्रपाबिसरी । क्रुधधारिअ
 धीरनशरिकरी ॥ छमिअगसधीरननाहछले
 । चहिचावविदग्धनशवचले ॥ १५ ॥ रसभूदि
 स्वदूतिनऊतिरची । वयचारिनलच्छितिका
 नवची ॥ कुलदालजिगेहसनेहक्रमी । जिय
 येमुदितानसुप्रीतिजमी ॥ १६ ॥ अनुपुषस
 याननभीतिअरी । पियसंगसहेदनभेटपरी ॥
 परभोगदुखीनसरवीपरवी । हियरूपरुप्रेमव
 तीहरवी ॥ १७ ॥ पतिप्रोषितकानबिलाप
 परुयो । क्रुधमानंसरवंडितिकानकरुयो ॥ दिनटे
 कनिवाहिअवेहरिता । तजिमानउठीकलहं
 तरिता ॥ १८ ॥ उमिबिप्रसलब्धनसोकडि
 ल्यो । मनसेटसहेदनआनिमित्यो ॥ उतकंठि

निपुच्छिनिदानः प्रली । लखयोमगबासक
 सज्जलली ॥ १९ ॥ भरदर्पः प्रधीन इनामपज्यो
 । अभिसारिनिबेसनयो उपज्यो ॥ बहुगंधकु
 बेलनको विकस्यो । ससिहूबुदे गिरितै निरु
 स्थो ॥ २० ॥ सारिकेवसिः प्रोषधिपोषलह्यो । ग
 हकायचकोरनमोदगह्यो ॥ भुवपै इमहोत निसी
 यभयो । रसप्रेतनहासनयोरचयो ॥ २१ ॥ धित
 निदप्रजाव्यवहारथके । निमसंजमइंद्रियजो
 गिनके ॥ गतियाभतिरत्ति सुबित्तिगई । भलप्र
 समुहरतवेरभई ॥ २२ ॥ बिरुदारववंदिनको
 विथस्यो । क्रमजगितहां नृपनित्य करुयो ॥ च
 कतैकसिः प्रायुधजोमल्लयो । चढिबाहरुसाह
 हजूरचल्यो ॥ २३ ॥ इतः प्रागमप्रातलुर्भेः प्रह
 के । चटकीरचनायुधहूचहके ॥ दिरुप्राचिय
 प्रारुनरंगदिपी । लगिः प्रंबरभूमिसुरोचिलि

६

पी ॥ २४ ॥ लघुदिद्विन छत्रननिद्विलहैं । चि
 लज्यौं लजिभोगनरानचहैं ॥ भजिकैं तम-
 युफानभयो । जिमतत्वलहैं गृहदंदजस्यो ॥
 २५ ॥ दुतिप्रजररइतै दमक्यो । चढिअक
 दौं । चमक्यो ॥ छकमैतिहिं बेरनरेस
 यो । गतिअर्जुनसाहसमीपगयो ॥ २६ ॥ दो०
 ॥ साहबहादुरतिहिंसमय । बैगोआपबना
 य ॥ नजरिनिआवरिलेतनिज । परिकरतैं
 अपाय ॥ २७ ॥ सुनिआगमबुंदीसको । दारु
 अटाचढिदेखि ॥ प्रमुदितआयोतर त
 । लोभविजयहियलेखि ॥ २८ ॥ मनोहरम् ।
 रतिमै नरेसआयअंदरप्रवेशहोत । उमडि
 कीवकीनीसूचनाअछूतीहै । जायकरि
 रिनिआवरिसिललेत निकटबुलायसाह
 बरवसीदिहूतीहै ॥ देऊहाथहियसोंलगायसु

सिकाय कद्यो मरदबलीतैरारवी खूबमजबूती
 हे दिल्लीपुरगादीमें लहीजो यहवादीवीरमहा
 रावराजाशवरीसपूतीहे ॥ २६ ॥ पादाकुलक
 म् ॥ महाराजराजाइमअकव्यो धूपहिं छिनक
 लायहियरकव्यो ॥ पुनिबरवसीसकरीदिल्लिय
 पति । राम नृपति वह सुनहु रक्खिरति ॥ २७ ॥
 कोटादिकचोखनगढदीनें । कहतनामजेसबह
 मचीनें ॥ कोटाबुद्धरि म्हरापट्टनि । गागरोनि
 तीजो दुर्गानमनि ॥ ३१ ॥ साहाबादसेरगढथा
 नक । अरुबडोदचेचत अभिधानक ॥ छबडा
 अरुगौरदुर्गावर । यंचपहाडपडापडगनगर ॥
 ३२ ॥ मधुकरगढकेथोनप्रमानहु । खेटअंत
 एरंडबरवानहु ॥ मांगरोलबारोयेकुबनर । अं
 वाअरुकनवाससुभगधर ॥ ३३ ॥ गढसुकुंद
 दीगोदरुअनता । रामगढसुकुंजैडुनानता ॥

आदोनीसांगोदप्रत्यावा। भीलबातचाचरनि
 ब्यावा ॥ ३४ ॥ सीसवालिघाटीघाटोली। र्वै
 राबादमऊगतजोली ॥ नरसंगढकोकिलपुर
 ल्यौबर। बासथौणमोहीसुवफावर ॥ ३५ ॥ से
 रगढरुछींपाबडोदसह। देवीखेदरींछवाअरिद
 ह ॥ परावादिगागविरटलाई। अठरोईरुवका
 अरिअरि ॥ ३६ ॥ खाताखेरीबहुरिबरवानहु।
 भालतोरुनारैलोमानहु ॥ काकुरनीकूंडीरुखा
 लपुर। एप्रपुदियआसन्यआनिउर ॥ ३७ ॥
 साहसिकखडेनदिनीजब। विनतिनृपकर
 जोरिकरीतब ॥ कूरमनृपजयसिंहहरामिय।
 वैसेवकर्मगीतसजामिय ॥ ३८ ॥ तातेतिं
 हिंसंबंधअरजयह। आजमदोसआहिजरव
 सीवह ॥ जोआयसतिहिंढिगतोजऊं। सेव
 ककरिअपनससुजाऊं ॥ ३९ ॥ सुनियहअ

रजसाहकछुअकर्वै। तवसंबंधमहरहमरकर्वै
 ॥ पुरअमैरसुतोफिरिपावहु। अबतवसंगम
 लेंढिगआवहु ॥ ४० ॥ यहसुनिनृपकूरम
 ढिगआयो। अहरघायसिकतवहपायो ॥
 तीरएकनुजसव्यलग्योतस। जाजवरनइक
 कंठलहनजस ॥ ४१ ॥ सोजसभयोबुद्धसरना
 गत। अकिकूरमपायेकेवलछत ॥ तिनसिक
 तजायरुनृपतक्यो। करिमनुहारिमोदहियअ
 क्यो ॥ ४२ ॥ कहीबुद्धरिनृपनेहकहाई। आ
 जमबसिअमैरबिहाई ॥ आलमसेवाअब
 हिअराधहु। स्वसुपजोरदुल्लभसुखसाधहु ॥
 ॥ ४३ ॥ डेराअबआलमदलमंडहु। रबमिक
 छुदिननबिपतिदुरवरवंडहु ॥ कूरमकाँलेसं
 गयहेकहि। चाहुवाननिजदलआयोचहि ॥
 ४४ ॥ अप्पनढिगकछवाहउतारे। सालक

जापिपबिनयसम्हारे ॥ विधिइहिंकदनअ
पूरदबिन्यो । जाजवरनदुल्लभनृपजिन्यो ॥

६५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेद
क्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रेषोडशो

१६ मयूरः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

ब०प० ॥ अरतसाहअवसामंनमंडियरद्वो

रत । अवनीसाहअवनीसमूढतससुतप्रभा

दयन । इहिअंतरयहपिकिवेअनिबंधन

अणारसन ॥ पदतरवतजोधपुरनृपहिंरकव

दुनिसंकमन । यहमिसलअवृउपजायउर

द्विजगृहतेतवआनिद्रुत । नृपअजितसिंह

रकरव्योतरवतसवनतत्यजसवंतसुत ॥ १

॥ दो० ॥ इतअलमहिबिजयअरु प्रभुप

नसत्यप्रणानि ॥ मृतजरवमिनआजमभद

६

न। नृपनहरामीजानि ॥ २ ॥ इहिंअंतरमरु
 धरखवरि। फुहंचीविबिधपुकारि ॥ रद्वोर
 नजसवंतसुव। दयोतरवतबैठारि ॥ ३ ॥
 ष० प० ॥ यहसुनिआलमसाहकहरहिंदुन
 परकुप्यो। प्रलयरुद्रजिमप्रबललज्जधीर
 जसबलुप्यो। दियआयसतिहिंबेरनगर
 आमैररुनरउर ॥ कोटाफत्तनबदुरिपुरीदति
 यारुजोधपुर। आमैरआदिचउराज्ययेआ
 जमदोरवउतारिलिय। रद्वोरहुकमबाहिरर
 हतधन्वसीसअमरखधकिय ॥ ४ ॥ समर
 जित्तियहसाहरहियचउमासभुसावर। इसद
 समीअवदातअनखिमारवधरउपर। पीर
 नजारतिकरनबुस्त्रिअजमेरबहानों ॥ करि
 फोजनदरकुंचआयआमैररहानों ॥ बुधसिं
 हहितुजयसिंहतबकहियएहपरिनयसमय

। इतसाहसंगअनबधिगमनबहिनिभईइत
 उचितबय ॥ ५ ॥ दो० ॥ साहजेरकरिजोधपु
 र। करिहैदकिवनजेर ॥ वेगनपुनिआवनब
 नै। व्याहनकीयहबेर ॥ ६ ॥ लगीहमरीरवा
 लसै। रजधानीरनरोस ॥ अंतहपुरसामोदम
 ह। रकव्योभदनभरोस ॥ ७ ॥ तातैहैदिनसि
 करवै। बहिनीलेहुबिबाहि ॥ संगहिअैहै
 साहहिम। चितबहुरिभुवचाहि ॥ ८ ॥ बुदि
 यपतियहसुनिकहिय। सुनहुअरजममसा
 ह ॥ सुलतानजुसंबंधमो। जानतज्यानपना
 ह ॥ ९ ॥ कूरमनृपयातैकहत। सहरनिकट
 सामोद ॥ हैदिनअंतरलगनहै। बिरबहुव्या
 हबिनोद ॥ १० ॥ तातैजोआयसलहोंआ
 ऊंकरिउदबाह ॥ हैदिनकीयहसुनिमुदित
 । सिक्खदईतबसाह ॥ ११ ॥ संभरकूरमसि

कवले । आये दुहुं सामोद ॥ बनि दुल्लह बुध
 सिंह नृप । सहिलगन सविनोद ॥ १२ ॥ जामि
 बडी जयसिंहकी । अमरकुमरि अभिधान ॥
 बुंदियपति हिय हितविरचि । व्याही बिहित
 विधान ॥ १३ ॥ इत आलम अजमेरपुर । ष
 हुं च्योगज बगरूर ॥ बुंदियपति आमेरपति
 । आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥ ष० प० ॥ इम
 आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि । र
 चिमारुन परीस हल्यो दर कुंच अलस हरि ।
 अजितसिंह सुनि एहन मित मरु देसनरे सुर
 ॥ बेग आय कर बंधि पर्यो पायन अल्हनपुर
 । इमसाहध न्वकिय निज अमल सत्थर किरण
 सवंत सुव । उपरि उफान सागर उषम दक्षि
 नपरगज्योगरुब ॥ १५ ॥ रहिकुछु दिन अ
 जमेर सज्जि संभर सेनापति । दक्षिनपरदर

कुंचगङ्गाधरिचलियजनकगति ।

त्तोरहेठ दस उर मिलानदिय ॥ यैहं

सप्रनतिमनुहारिपराविय । हिंदवानसीसमि

अमहुकमतामेकुलराननदस्यो । अ

दपिनिकसतनिकटप्रनतिद्वयपठवनप

स्यो ॥ १६ ॥ दो० ॥ अपररानअप्यनअ

ज । तरवलसिंहअभिधान ॥ देवसिंह

पुरप । दुवपठयेसनिदान ॥ १७ ॥ इक

नेकपअरिहय । साहकाजदियसंग ।

बाजिअहुपानहित । इमपरवायअभंग ॥

१८ ॥ अ०प० ॥ अट्टबाजिगजइकमेर

मेरुपठये । तरवलसिंहअरुदेवलेरु स

रदुनअपणे । बाजिअरिबुधसिंहहेतन

अनिबेदिय ॥ मंडिविबिधमनुहारिजानि

मियप्रमेदिजिय । पुानकहियसाह । ह०११

प्रमुहय हत्थिय पठये डुलसि । मिलवाय हमहिं
 यहमेठ अन्न विदित निवेदुह समय बसि ॥ १६
 ॥ दो० ॥ सुनिसंभरतिन्हसंगलै । जवनइस
 हिंगजाय ॥ मिलवायेदसत्तरमित । क्रमस
 लामकरवाय ॥ २० ॥ सीसोदन अकवीस
 बहि । लुतिजुकहाईशन ॥ आलम अंगीका
 रकिय । लुतिरुमट सनिदान ॥ २१ ॥ बुंदिय
 पतिकरि सिक्खतब । लैतिन्ह डेरनप्राय ॥
 नृप कूरमरदोरहू । लिन्ह उभय बुलाय ॥ २२
 ॥ अजितरिंहजयसिंहको । इकसंभर अन्न
 लंब ॥ पुच्छियमंत्र नैसप्रति । कहिकहि कि
 त्तिकदंब ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ बदहु नृत्त बुंदी
 सप्रायरुक्ततहम आतुर । लियउ कुपिजव
 नेस छिनि आमैर जोधपुर । नहिनिबाहि अ
 वसकत विभव गजवाजि विमन अति ॥ श्री

तसफरजिमसाह ॥

। सुनियह नरेस अक्विय उचित वासर कछु

धीरज बहदु । सेवन बढाय कछु

मही सुनिज निजग हदु ॥ २४ ॥

को हुकम साहद लमो हिं सवन सिर । सीसो

दन यह पिक्वि जानि जा मिष जग जाहिर ।

सुमट राउत्त देव सिंह ह बेघम पति ॥ सभर

प्रति कर जोरि विहित अक्विय यह ।

। करि नेह गेह पावन करु मंजु बिबाहदु

मम । सुनियह नरेस स्वीकार किय सिक्व

मं गिय साह सम ॥ २५ ॥ दो० ॥ दस

रकी सिक्व दिय । साह विहित सनमान ॥

अजित सिंह जय सिंह सो । तब अ

दुवान ॥ २६ ॥ बेघम व्याहन जात हम ।

लुमरहि साह समीय ॥ मनन गिनदु

महर।उरविचारिअवनीप ॥ २७ ॥ ष० ष०
 ॥ सुनिकूरमरदोरदुहुनअकिवयसनेहसधि
 ॥ साहकितवकेसंगअबहुजैहरेवाबधि।इहिं
 अंतरकछुहोयततोरहिहेंसंगतिसर ॥ नहि
 तोअहेंसुररिआप्यकरियोकछुउपर।यहसु
 निवरेसपुनिउच्चरिययहउचितनतुमकों
 अबहि।जोलींविवाहिआऊंसजवतोलींषु
 निरकवहुहितहि ॥ २८ ॥ दो० ॥ इमप्रबोधि
 बुंदियअधिप।मनजयबुबनमत्त ॥ इसउर
 तेंदरकुंचकरि।पुरबेद्यमहुतपत्त ॥ २९ ॥ पुत्ती
 अनुपमसिंहकी।फूलकुमारिअभिधान ॥ देव
 भ्रातसविनयदई।बुद्धहिंविहितविधान ॥
 ३० ॥ बानतर्कमुनिइंक्क १७६५ सक्क।पु
 सिममाधवमास ॥ चुंडावतिव्याहीचलुर।बुंदि
 यपतिसविलास ॥ ३१ ॥ इतिश्रीवंशमास्करे

महान्द्रूपस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुध
सिंहचरित्रेसप्तदशो १७ मयूरवः ॥ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

ष. य. ॥ चोवनगढजबसाहदयेजाजवरन
जिलत । कोटाहतिनमाहिंनृपहिंदिनींअति
विलत । जयउद्धतचहुवाननाहिंसमक्षिसमा
चारयो ॥ आतनभुवलरिलेनप्रथमदलउतहि
हकारो । कग्गरपढायलिरिअप्यकरकेधम
सनबुंदियनगर । करिलेहुप्रथमकोटाअमल
भटमंत्रियसम्मलिसमरं ॥ १ ॥ यहकग्गरदुत
अचिसंनमंडियइतबुंदिय । जोधराजपरधानव
निकनयवृद्धप्रपंचिय । धावरगंगारामसूरसु
भटनइकालकरि ॥ कोटाउपरकटकबेगमंडि
यलीरनयदि । सुहकम्मवंसकनकेससुतजोगी

रामहिं मुख्य किय । यह वीरधीर हड्डु सुउमंमि
 चलि सहरि चतुरंगिनिय ॥ २ ॥ दो ॥ को
 दापति जाजव मरयो । तासत नय नृप भीम ॥
 बैरु तरुन लै षड्बल । सो नत जत निज सीम ॥
 ३ ॥ बालकृष्ण निज व्यास प्ररु फले चंद्र काय
 त्य ॥ बुंदिय पट्टये भीम नृप । करन साम नथ क
 त्य ॥ ४ ॥ आर्य दुंदुंन किन्नी अरज । कोटाइ
 कान लेहु ॥ मुलक और सबही नजरि । निज गि
 नि धरहु सनेहु ॥ ५ ॥ नाथा उति नृप मात तव
 । अरजन मन्त्री एह ॥ हिंदुन के दिन पत्तरे ।
 उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥ तम कित ल्य हो
 ऊस चिव । पच्चे निज पुर पत्त ॥ मकली भूष
 नि भीम सो । रन मंडहु अनुरत्त ॥ ७ ॥ इत बुं
 दिय ते उमंडि दल । चमलि उत्तरि चंडु ॥ गजन
 जो गिय राम गो । भिरत अब्रामुज दंड ॥ ८ ॥

सुक्तादाम ॥ सज्योउतभीममहादलसूर।
 सज्योइतजोगियरामगसूर ॥ कर्चोदियरे
 दमिलेहुवभ्राय । दयेदलदोउनबाजिउगाय
 ॥ ६ ॥ बजीरनरीठमचीधमचक्र । चलञ्च
 लक्षेनियलगिलचक्र ॥ खटक्रियहहु
 नहहुनरकग । मचक्रियपचयलेडामग
 ॥ १० ॥ बडेबलभीमकरीहतवाह । कदे
 बहुहुदियसेनसिपाह ॥ तिलसिलतुहि
 गस्यामियकाम । पख्येकनकाउतजुगिय
 राम ॥ ११ ॥ दयोसबबुदियसेनबिगारि ।
 जयोदुपभीमहजारनमारि ॥ उतैसुकबध
 रुकूरमनत्य । गयेहुवमेकलजालगसत्य ॥
 ॥ १२ ॥ तथापिनसाहभयोअनुरत्त । चलो
 दरकुंचनजातउमत्त ॥ वहेसरितातबसाह
 उतारि । फिरेहुवभ्रायतिडेरनजारि ॥ १३ ॥

उदैपुर द्वै दर कुंचनपत्त। मिल्यो नृपराज इहाँ
 अनुरत्त ॥ इतै दुलही नृपबेधमव्याहि। च
 ल्यो जवनाधिप सेवनचाहि ॥ १४ ॥ लये
 अयरा निनसंभरसंग। मिल्यो जवने सहिंधा
 रिउसंग ॥ गयो दर कुंचन दक्खिनसाहास
 जेदलसबलसूरसिपाह ॥ १५ ॥ इति श्रीवं
 शभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवम
 राशौ बुधसिंहचरित्रे अष्टादशो १८ मयखः
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दो० ॥ कामवरसनिजभ्रातहो। दक्खिन
 धरखवार ॥ भागनगरबीजापुरप। इव
 तिहिंसिरहुसियार ॥ १ ॥ विक्रमनृपपर
 मारभो। उज्जइनीपुरईस ॥ तापिन्धेनृप
 भोजभो। धारानगरअधास ॥ २ ॥ इतल

गहिंदुल्लभ्यो हस्यो । क्विचिद्वितरनद्योम ॥

इनपिच्छैन्नयथरमतजि । लमोकेवललो

म ॥ ३ ॥ सुध्वीराजबुहाननुप । जयचंद

हरद्वार ॥ इनलगहककुशुनुसरी । हिंदुन

थरमहिलोर ॥ ४ ॥ तिनपिच्छैत्तुरकान

द्वव । निजनयथरमनियान ॥ पीठिनककु

अंतरपरत । छंदीतिनहकुरान ॥ ५ ॥ इ

तवुंदियपतिअद्वरिय । केटाउपरकोप ॥

इतआलमरनअकुरयो । लाजथरमकरिलो

प ॥ ६ ॥ कामद्वरवसआलमअनुज । अ

गैतिहिअवरंग ॥ प्रागनगरबीजापुरह । सु

बादियहितसंग ॥ ७ ॥ ष० प० ॥ तुरक

नदिनविपरीलआयआलमतिहिउपर ।

थरदक्विनथमचकसजिसबीजापुरसगर

। बुधसिंहहिबुलईसविरविआलिकोपव

दास्यो॥ कामवरवसकौपकरि मुद्धु आगसवि
 नुमारयो । वृष्केदये छलकरि कुविधिलिय
 बीजापुरभागपुर । सूबासहारिसज्जियअ
 मलअलामअनयउमंगिउर ॥ ८ ॥ इतकु
 रमरद्वोरआयविरहितअतिआतुर । मिक
 लजासनपुररिउररिहुवपत्तउदेपुर । इहवा
 रीदिसइकुहुतेबहुराजुविनायक ॥ आयरा
 नअमरेसतत्थमिंद्योबल्लतच्छक । तीनहि
 नरेसकेकानलजिमनप्रसअवत्यनमिले । रा
 नहिनिहारिभूपनहुहुनरवृविद्यहियपंकज
 रिले ॥ ९ ॥ दो० ॥ अयौसनप्रतापसे । म
 येअरतिनमीव ॥ आयसहअहिअहलो ।
 साहनकोजिनसीम ॥ १० ॥ साहसिकंदर
 जुलिकपन । अरुगजनगोरीस ॥ अयोहि
 हुनजिनिके । मयेप्रबलहुइस ॥ ११ ॥

तिनतैँअबलगनहितक्यो।सीसोदन
 साह ॥ यहकुलराउलबपको।रकैँहिंदुन
 राह ॥ १२ ॥ पुरआमैररुजोधपुर।
 पटसरसाय ॥ आलमतैँअबतोरिकैँ।उम
 उदैपुरआय ॥ १३ ॥ अमरान
 दकरि।भिरुयोसनपुरवआय ॥ १४
 यसिंहकछु।चरननहत्यचलाय ॥ १४ ॥
 पकरिहत्यहियलायतब।कहियरान
 स ॥ अणलिमैँपावनभयो।
 सेस ॥ १५ ॥ ष०प० ॥ इममिलाअकॉरे
 नआयतिनसहितउदैपुर।महलन
 दमंडिउभयबुल्लेअवनीसुर।बाहिर
 लंघिरानसम्मुहपुनिआयो ॥ करिजुहार
 सीसरकिबबहुमोदबढायो।
 निजसंगकरिहुलसिखासपरिसर

उमगव बुल्लि निजनिज उचित करनमंतरक
 त्तकिय ॥ १६ ॥ बहिनी बुद्धहिं व्याहिइत ।
 देवसिंहतरवतेस ॥ बेघमतेइतआयके ॥ भिं
 ल्योराननरेस ॥ १७ ॥ दिलखुसालप्रासा
 दके । गोखमध्यपगधारि ॥ बैठभूपतितीन
 हीचेरोगहरडारि ॥ १८ ॥ मध्यरानअम
 रेसअरु । कूरमनृपदिसवाम ॥ दक्षिणदि
 सरद्वारनृप । इमरहिसज्जिगसाम ॥ १९ ॥
 चप्पई ॥ कूरमपतिकरजोरिकहियसीसेद
 नृपतिप्रति । तुरकनकोनहितोरभयोसब
 जोरमंदगति । राजकुलतुमरोसुहदहिंदुनइरु
 रकवें ॥ जोखादिल्लियजारप्रबलआनन
 तुमपकवें । साहसोतोरिहमआयइतरज
 धरमसाहसपरखि । हिंदुनहकारिहिंदुन
 अवनिहिंदुनपतिभुगडुहरखि ॥ २० ॥

॥ दो० ॥ इत बुह्यो रद्वोर नृप । हमरा वरे सु
 भह ॥ सुमाहु आयवित्त भुव । लहि दिह्लि
 यपुर यह ॥ २१ ॥ सुक्का दाम ॥ यहै सुनि
 शन कही अप्तरे स । नमै पुर दिह्लिय जो ग्य
 नरे स ॥ सुनै हम दिह्लिय को दस तूर । रही
 सब सांजालि साह हजर ॥ २२ ॥ प्रवे सत
 सा सु यइ कन आन । राजै सब बाहिर वार
 सलाम ॥ जहाँ बिनु आय सबु ह्लि सकेन ।
 नमै इ कट कनि हरत नैन ॥ २३ ॥ जहाँ
 नाहि वैठ कु कु व दुहह । तर जत तं दिन
 को वन जहह ॥ चलै सब वैदल आन न अप्त
 गा । प्रसूजि म मनि वलो ट ल पग्गा ॥ २४ ॥
 पटा वत नारिन को न वरोज । उठा वत पन्न
 नको हत अप्त ॥ वजा वत बं वन जा वत
 नार । सजा वत पुनि न ब्याहि सिंगार ॥ २५ ॥

॥ सुनो यह साहनको दसहर । हलै सबहि
 हुनयुजि हजर ॥ प्रमुपनमिच्छनभोम
 हिरह । लिख्यो विधिहिंदुनगोविनलेह
 ॥ २६ ॥ रुकोउ करै इमहिंदुवराज । धि
 तबजातिअसयनभाज ॥ हनैतसमातन
 दिखियहोस । दहै शरकरनही निरयोस
 ॥ २७ ॥ रुजोहुह वैउनकोमतएह । धि
 तब दिखियही यहमोह ॥ रजुतुमसाहउष
 पनराज । उदैपुहीतब दिखियआजो
 पुरानुपकुरममानजु किल । पधारिसुभ
 रिहैतुमलिन ॥ अवेहुह अयनज्यो
 सहोय । जया करिये बल कालहिंजोय ॥
 ॥ २६ ॥ बहोपुनिकुरमभूपवतंत । भली
 सबही करिहै भगवंत ॥ अवेकरिहिंदुन
 इकातअत्य । सजेपुनिआलमपै निजस

त्य ॥ ३० ॥ दो ॥ रिं दुवना करानके । इक
 परंतु यं हं प्रार ॥ आलमते हम तो रि के । लि
 यउ रावरो जोर ॥ ३१ ॥ देस दुहुन के खाल
 से । प्रार न लोन उपाय ॥ तो हम जिने पुल
 कनिजे जो दल दे हु महाय ॥ ३२ ॥ जिनि
 पुलक पुनि कटक सजि । हे दुवरान हजर ॥
 दकिवन पर दर कुंच करि । जितहिं सा हजर
 र ॥ ३३ ॥ रानक हिय कछु दिन उभय । रह
 हु प्रत्य मह जानि ॥ पुनिजे जो भवित ल्य
 हो । लोहे सब हि प्रमानि ॥ ३४ ॥ वादिन डे
 रान नि करव दिय । दो उन ले कहि एह ॥ इक
 इक गज हे हे प्रार व । दो उन अपि सनेह ॥
 ३५ ॥ अतर यान पुनि बुलिके । इना डिग
 र करे रान ॥ तब दे उन कर प्रो डि कहि दे
 हु प्रप्य कर दान ॥ ३६ ॥ रान तथापिन

पानदिय । पानदानगहिहत्थ ॥ जिहिअंतरक
 रहुहुनके । संग्रहिधरियसमत्थ ॥ ३७ ॥ होऊ
 रूपहुमपानलै । निजनिजडेनअप्राय ॥ हुजे
 दिनकियगोदितव । रानअमरसभाय ॥
 ॥ ३८ ॥ होऊरूपबुल्लियबहुनि । पतिपरियव
 हुंअरे ॥ करियअरजतहंशनप्रति । पुनिकूर
 मरहुने ॥ ३९ ॥ इकाथालबिचअपनी । ह्य
 सहभोजनहोय ॥ अबतैसंततएकता । कर
 हुनसंसयकोय ॥ ४० ॥ सुनिबुल्लयोभहरान
 को । इहमनगंगादास ॥ सगताउतपुरबानसी
 पतिकबुरोसप्रकास ॥ ४१ ॥ कूरमपतियह
 सके । पुरुरवनअगोकीन ॥ तोहकुलउज्जल
 यहै । मोनहिधरमबिहीन ॥ ४२ ॥ अ० ए० ॥
 अगोअकबरसाहलैनगुजरातनुप्रार्थे । भगव
 तसिंहरुमानपितासुतउभयपराये ॥ दरकुंवन

इन्द्रो रिजोर जिनीशुजरधर ॥ पलटेपुनिसु
 तजनकमिजलपंचककेअंतर । भगवंतसिंह
 आयोप्रथमदिल्लियजावतरानधर । जिनदि
 ननछत्रानाउदयधारतहिंदुनधर्मधर ॥ ४३
 ॥ नृपभगवंतहिरानजायसम्मुहयहलायो । उ
 नहूर्भोजनकरनरानजुतप्रसभरचायो । दियउ
 नरतवशानदेततुरकनतुमपुत्रिय ॥ हय ॥ १०६९
 अकलंकधरमहुंइंनजातजिय । तसमातसुन
 हुवेउनअसनइकथालनाहिनउचित । यह
 सुनिनरेसभगवंततबपृथकजिम्भिवुल्लोवि
 दित ॥ ४४ ॥ पद्धतिका ॥ नृपसुनहुपंचवा
 सरविहाय । सुतमानइहांअहेसुभाय ॥ वा
 सोनरेसुहेहठप्रमत्त । सुल्लहुनमुल्लिअैसीकु
 वत्त ॥ ४५ ॥ यहकहिनेरेसभगवंतवत्ताद
 रकुंवनदिल्लियनगरपत्त ॥ दिनपंचकअंत

रकुमरमान । भिंद्योपुनिसम्मुहजायगान ॥
 ४६ ॥ मिलितासविरचिअतिमानुहारि । पुनि
 रानस्वयहृतिनजुतपधारि ॥ रचिगोठिबिबि
 धव्यंजनरसाल । बेदाख्योमानहिंपृथकथा
 ल ॥ ४७ ॥ रहिरानदिदिपरुसनलगाय
 । तबकुमरमानबुख्योहिताय ॥ तुमकोइ
 उचितबैठननृपाल । मुज्जैदुवमुज्जनइक
 थाल ॥ ४८ ॥ तबकहियरानराजाधिरा
 ज । एकासनव्रतमेकरियअज ॥ कूरमत
 थापिबुख्योनिहोरि । सागसनहोतअलद
 कछोरि ॥ ४९ ॥ हमरोइवअगामसमय
 पाय । हेइकथालभोजनहिताय ॥ इमप्रस
 भपुंजमानहिंनिहारि । पदुरानउदयबुख्यो
 प्रचारि ॥ ५० ॥ तुमलोभधारिलियजवन
 रीति । हमरेधरहिंदुनधर्मनाति ॥ तुमअध

मज्जापिदुहिताकलत्र । तुरकनसमपिदुव
 सचिवतत्र ॥ ५१ ॥ अकलंकयहैइकलिं
 मञ्चैः । तस्यपालसंगभोजनवर्नेन ॥ यहसु
 नतमानकुप्योकराल । बुद्ध्योसुउद्विक्कि
 छोरिखाल ॥ ५२ ॥ तुमलियनपरितुरक
 नप्रसंग । कछुदिननअंतरेहैवसंग ॥ यह
 कहिद्रुतदिल्लियमानजाय । अकबरहिं
 अत्यन्तान्योकुपाय ॥ ५३ ॥ बहुबरसर
 हियचितोरसंग । रावनतथापिअंड्योस्वर
 ग ॥ विनुकललहियबरसनदियलि । छि
 लिहिततथापिकेपीनछति ॥ ५४ ॥ यह
 कुलवहैहिनिजनयउपेत । दुहितादितुमसु
 तुरकानदेत ॥ इकपालनअसनतानेवर्नेन ।
 मरहमनिअंकमिअनर्नेन ॥ ५५ ॥ यहसुनि
 कबंधकछपाहसय । रसमिसमयजानिरोस

नदिरवाय ॥ करजोरिकहियवुवनृपनफेरि
 । हिंदुननेरसतुमधर्महेरि ॥ ५६ ॥ हमकि
 यअधर्मगिनिबिभवहानि । मस्जीसुकरहु
 भठहमहिमानि ॥ अमरेसरानयहसुनिउ
 दार । बुह्योसुव्यावहारिकबिचार ॥ ५७ ॥
 ममगेहओरनहिं तुमहिंदेय । इकबत्तसुन
 हुदुवनृपअजेय ॥ सोंपहुजोनिजकरलि
 खितसुत्थ । अबतैनदेहितुरकनअफत्थ ॥
 ५८ ॥ तोदुवसुतासुदेउनबिबाहि । देसहु
 लेदेहेअरिनदाहि ॥ सहभोजनतो नहिउचि
 तआहि । पत्रावलिजिम्मतहमसदाहि ॥
 ५९ ॥ तुमडारिजतबिहरबिसाल । नमज
 तितमध्यधरिकनकथाल ॥ इमसुज्जतत
 रकनराधमान । इत्यादिहेतुसहअसनहो
 न ॥ ६० ॥ करिलिखितदेहुजो कथिलचा

हि । तोर्देहिं सिकव पुत्रिन विवाहि ॥ दुक्नु
 पनय है सुनि असन किन्न । रान सुपरुसावन
 रहिय भिन्न ॥ ६१ ॥ नृप दुव सिमाय इम
 सिकव अपि । डेर नइन आयरु मंत्र षपि ॥
 यह उभयसाहसौ तोरि आय । करि लिखित
 देन इतइन कहाय ॥ ६२ ॥ अब करहिं सा
 ह कुमहर अजेय । तसमातरान कथितहि वि
 येय ॥ यह सोधि लिखिय नय दुहुन आदि ।
 तुरकनन देहिं अबतै सुतादि ॥ ६३ ॥ क
 हि है जु सान थारि है सुसीस । इम लिखितदा
 निदुव भुव अथीस ॥ यह लिखित रान कर
 दियत आय । प्रभुरान सुनत बिस्वास पाय ॥
 ६४ ॥ दुहिता बुहुन व्याहन विचारि । विर
 चिय विवाहि उच्छ्व बहारि ॥ कूरमनरेस
 यह समय पाय । प्रच्छ्व नरान प्रतिकथ कहा

य ॥ ६५ ॥ संग्रामसिंहपट्टपकुमार । मुहिता
 सजामिदैंहोउदार ॥ सुनिरानबहुरिपच्छीक
 हाय । इकलिरिवितप्रोरअप्यहुलिरवाय ॥
 ॥ ६६ ॥ याकैजुपुत्रजगदीसदैहिं । बहुरमुख्य
 राजअमैरलैंहिं ॥ अमैरईससुनियहउ
 पाय । लिखिस्वकरपत्रदिन्रौषठाय ॥ ६७ ॥
 दुहितास्वकीयजनिहैसुपुत्त । अमैरपहल
 हिहै ॥ यहलिरिवितरानबंचिरुबिचारि । नि
 जपुत्तिउचितकूरमनिहारि ॥ ६८ ॥ दो० ॥
 निजपुत्तियसंबंधतब । कूरमसनक्रियरान
 ॥ जिनकाकासुतपुत्रिका । दियरद्वोरहिंदा
 न ॥ ६९ ॥ चंद्रकुमारिकूरमलहिय । कृष्ण
 कुमारिरद्वोर ॥ इमबिबाहिदुवभुवअथिप
 । जचियसिकवइनजोर ॥ ७० ॥ हाटक
 दोलाजंत्रतब । दुहुनराननृपदिन्न ॥ दुहु

नतुल्यदायज अपरि । कुसलसिकवतव
 किन्न ॥ ७१ ॥ सत्तसहस्रनिजदलसबल ।
 करिदुवभूपनसंग ॥ रागसिकवदेसनदर्श ।
 आवनीलेन अभंग ॥ ७२ ॥ तवदुवभूपति
 सिकवकरि । बहिचल्लियवरजोर ॥ छोनी
 दबतसाहकी । उमंडियसंभरअपौर ॥ ७३ ॥
 दुवदुवद्रमदरकुंचकरि । संभरउपरजात
 ॥ नारनोलसय्यदसुनी । रुमाबिलुहनबा
 त ॥ ७४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूख
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशोबुधसिंहचरित्रे
 ऊनविंशो १४ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 ७०५ ॥ जाजवसंगरजितिसाहअतिग
 हसम्हारयो । संभरपिक्खिसहायधराजि

त्तनमनधास्यो ॥ इसनअलीसय्यदनबाब
 आदिकसम्मतकरि । जित्तिसजवजोधपुर
 धायदकिवनसाहसधरि । कूरमकबंधअव
 नीपइतअमरगानपुत्रिनपरनि । पृतलाप्रचा
 रिलुहनप्रथमपत्तेलगिसंमरसरनि ॥ १ ॥
 दो० ॥ नारनोलपुरसेनपति । इसनअली
 केभ्रात ॥ घिंसीखानरुनूरदी । तहंपत्तीयह
 वात ॥ २ ॥ ष०प० ॥ इसनअलीसय्यदन
 बाबसुभटनअग्रेसर । नारनोलकेफोजदा
 रताकेसोदरभर । घिंसीखानरुनूरदीनतिन
 बत्तसुनीयह ॥ लुहनसंभरनगरसुपहुशूर
 मकबंधसह । सजितबहिसेनबादससह
 सरुमानगररकवनचलिय । इतनृपनलुहि
 संभरसहरकहरकालवेहालकिय ॥ ३ ॥ दो०
 ॥ पुरहिंलुहिदुवनृपकढत । सय्यदपत्तेअ

खानरुनरदी । दुवसथ्यदलियमारि ॥ सह
 समरदुहंशोरके । करियथोररवगफारि ॥ ९ ॥
 इमहरमरद्वोरनृप । पुरसंभरजयपाथ ॥ दि
 लीगहिदोवनदई । लहंगोअंदरलाय ॥ १० ॥
 सोरहा ॥ निजनिजदेसनअप्राय । दुवनृप
 संभरलुदिके ॥ थानादियेउवाय । अलम
 केकरिकरिअमल ॥ ११ ॥ दो ॥ इतको
 टापतिभीमदिय । बुंदियकटकबिगारि ॥
 जुज्योजुगियरामहद । मारिभरदतरवा
 रि ॥ १२ ॥ धावरगंगारामपुनि । सेनानाय
 कहोय ॥ कोटाउपरउपरयो । उत्तरिचम
 लितोय ॥ १३ ॥ कायथदासीरामविय ।
 पंचोलियपरधान ॥ मंत्रिबनिकहरिरा
 मकिय । गुजरकुमतिगुमान ॥ १४ ॥ अ
 लीखानअभिधानइक । जवनरुदिसखान

ह्यि ॥ पंच सहस्रपतिरकवयो । खमगपता
 कनरुह्यि ॥ १५ ॥ यहसुनिकगरभीमनृ
 प । धावरुह्यि भूठवाय ॥ बाबाधावरहमहु
 कौ । रकव्यहि बुदियराय ॥ १६ ॥ जन्मिधा
 वरनीतिजड । गुज्जरगहलगमार ॥ बाबा
 कहिकहिजा लिरवत । भिरैनसोरनमार
 ॥ १७ ॥ दैमिलानबहु दिनरह्यो । लबधाव
 रनयहिज्ञ ॥ अलिथरवानकोहकचढ्यो ।
 दोयमारु दिनतिज्ञ ॥ १८ ॥ पञ्जिका ॥
 लहिसामयभीमतब कियरपाय । बहुबिल
 रुहिल्याहेतपठाय ॥ अकिदयधाकप्रति
 बरुह्येन । हकदेहुनतो अबहमलरैन ॥
 १९ ॥ धावरुहिकहियथहअलिथरवान ।
 जलदियकुमन गुज्जरप्रजान ॥ बुदियर
 टलुह्यिरुहियरुहु । जिलिसबहिजवन

हकवित्तदेहु ॥ २० ॥ जोवित्तनलोहय
 करभटारि । सबयाहिदेहुभरनाँवसारि ॥ सु
 नियहकुमंत्रदुर्मनसिपाह । चहिचहिसम
 स्तलगिघरनराह ॥ २१ ॥ तुरकनदियथा
 वरकेदघनि । यहखबरीदेसदकिवनहु
 पनि ॥ सुनित्पतिबुद्धप्रायसपदाय । न
 हिलेहुमूढधावरबुलाय ॥ २२ ॥ बहुदिन
 तबधावरकेदलिन्न । हरिरामसाहपुनिअ
 रजदिन्न ॥ तबहुकमपायजवननचुकाय
 । हरिरामलियउधावरबुलाय ॥ २३ ॥ को
 टानेरसइमरवगगारि । द्वैबरकटकदिने
 बिगारि ॥ इलकामबरवससोदरहिगारि ।
 निजअमलदेसदकिवनविथारि ॥ २४ ॥
 दरकुंचउतरिरेवादुरंत । उज्जेनिआयकरि
 आतअंत ॥ गिरिबरमुकुंददरमध्यहोय ।

पुरप्रहनिचम्भलिलंधिलोय ॥ २५ ॥ ल
 कवेरियगिरिहरकडिसुभाय । अजमेरपीर
 भित्तनचलाय ॥ सकसत्तकमुनिइक
 १७६७ मानअजमेरआयदिनोंमिलान
 ॥ २६ ॥ तबबुद्धसिंहप्रतिकहियसाह । इ
 रमकबंधकिनोंएनाह ॥ संभरहिंलुहिलिय
 स्वस्वदेस । तसमातजंगमंडुनरेस ॥ २७ ॥
 कहिभूपजियतअवरंगसाह । हिंदूनकि
 यउसासननिबाह ॥ यहआहिमुलकहिं
 हुनअसेस । विनुनीतिअमलकरनोंनबे
 स ॥ २८ ॥ फरमानदेरुदोउनबुलाय । अ
 बहीनहिंरुक्कडुहुनआय ॥ अवरहुअ
 नायकियभुमिभाज । तिनसबनसमप्य
 दुस्वस्वराज ॥ २९ ॥ यहकहिपठायफर
 माननस । संभरहुलिरियबुवनरुपनपत्त ॥

हमकहिगुनाहसबकियउदूर। आवहुनिसक
 तुमअबहजूर ॥ ३० ॥ यहसुनिकबंधकूरमत्त
 लाय। अजमेरसाहमिंद्योसुआय ॥ लबकहि
 यसाहगिनिअप्यतोर। संभरदुहनलुहियस्व
 जोर ॥ ३१ ॥ कूरमकबंधलबकहियएह। निज
 स्वामिनिमकरकदोसनेह ॥ आजाअधीनअब
 उभयआहिं। जहंस्वामिकामतंहंलरनजाहिं ॥
 ३२ ॥ आलमसिराहितबदुवनरेस। दोउनलि
 स्वायदियस्वस्वदेस ॥ दतियादिराजअकरहु
 लिरवाय। सहदेससबनदिनेबुलाय ॥ ३३ ॥ इ
 महिंदुनृपनविस्वासिसाह। गहिनीतिसबन
 अपियगुनाह ॥ दिनकषुबितायअजमेरदंग
 । अबआयतरवतदिल्लियउमंग ॥ ३४ ॥ इति
 श्रीवंशभास्करे महावंशस्वरूपे दक्षिणायनेन च
 मराशौ बुधसिंहचरित्रे विंशो २० मसूरवः ॥

कटअजीम ॥ ११ ॥ विनुविक्रमअरुनीतिवि
 बु । रहतपिकिवदिह्नीस ॥ दकिवनकावल
 दोहुदिस । सीमादवियसरीस ॥ १२ ॥ इतअ
 लमतेँसिकवले । चितद्वच्छतघरचाव ॥ चलि
 यमनोहरद्रंगतेँ । बुंदियदिसबुधराव ॥ १३ ॥
 ष० प० ॥ इक्षकनफटानित्यनाथकउलन
 आचारिज । हरिहरधरमहदायकरतअधम
 नमतकारिज । छात्रबहुततससंगसुभटहय
 गयसिचिकासह ॥ जावतदकिवनदेसवृष
 हिंमगमाँहिँमिल्योवह । गजमुखहपुरोहित
 नृपतिकोऊलमगसेवतरहत । तिहिँजाय
 नाथभिँदयोत्वरितपरियपायकिनियकहत
 ॥ १४ ॥ दो० ॥ नित्यनाथकोँगुरुवनमि ।
 गजमुखनृपहिँगअप्राय ॥ सिद्धमन्निगोरक
 रस । महिमाकहियवनाय ॥ १५ ॥ याँतेँस

सकतिप्रसन्नप्रति । याहिसकतिबरदिद्ध ॥ देम
 नबंछितयहकरत । सिस्यहुकोसमसिद्ध ॥ १६ ॥
 अनुष्ठानजपहोमप्ररु । मंत्रजंत्रमतिमंत ॥
 कहैंजाहिभसमहुकरैं । कहैंजाहिमुवकंत ॥ १७
 ॥ कियनृपराजमुखकथितसुनि । नाथनिकेत
 प्रयान ॥ बुंदियकोबिगरनसमथ ॥ प्ररुभावी
 बलवान ॥ १८ ॥ नित्यनाथदिग्गजायनृप ।
 पयपरिकरियप्रनाम ॥ कहियसिस्यभोकोक
 रहु । धरहुभेटधनधाम ॥ १९ ॥ लकरवरुपय्य
 नकरसुलभ । जैसेग्रामअनूप ॥ गहहुदच्छि
 नाछत्तगिनि । रहहुइहांगुरुरूप ॥ २० ॥ नित्य
 नाथयहसुनिकह्यो । हमदक्खिनबसवान ॥
 गुरुमृतसुनिद्रुतजातहैं । नरहैंनासनिदान ॥
 २१ ॥ हमभवदीयपुरोहितहिं । सुख्यमंत्रदे
 जात ॥ यातैंसिच्छालेहुतुम । देहुयाहिवसु

ब्रात ॥ २२ ॥ यह कहि मनु गज मुर वहि दे ।
 गयो कन फटा देस ॥ ब्रत बुंदिय डिग कुंच करि ।
 आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥ जब कावल नृप बुद्ध
 हो । तब निज सो दर जोध ॥ चढित रंड गुन गो
 रि दिन । किय जल के लिकु बोध ॥ २४ ॥ सुभट
 सचिव अनुचर सकल । बैठे पोतन तत्थ ॥ न
 चिया वत पातुरि निकर । श्रुति स्वर तारन सत्थ
 ॥ २५ ॥ गज इ कर्लिंग प्रसाद इक । इहि अंत
 र मय मत्त ॥ निज दायज आयो हु तो । उदयने
 रते अत्त ॥ २६ ॥ बहु बारन प्रतिदान बक ।
 जल पीवन तं हं आय ॥ ताल पि किय पोतन ति
 रत । कुण्डिल्यो अतिकाय ॥ २७ ॥ सत्थ स
 कल आपान थित । किन्नो ककुन उपाय ॥ नि
 ज पोत हि पकरी निदुर । एते मे गज आय ॥
 २८ ॥ धादु ब्रात निज संम हो । तास भयो इक

वार ॥ एतेविचउलटायइम। बोरीनावसुबा
 र ॥ २६ ॥ नियतिजोगसबतिरिक्कदिय। अ
 सुवसुत्वरितअवेरि ॥ धाइभातअरुअण्य
 दुव। खसतनिकासेहेरि ॥ ३० ॥ निकसन
 खिनगुज्जरमरिय। असुनिजकछुअवसेस ॥
 सोचउत्थितसमातसो। पत्तोमृतपरदेस ॥
 ३१ ॥ अनुजरानजयसिंहको। भीमसुतायह
 तास ॥ जोधनारिसहगमनकरि। पत्तीदिव
 पतिपास ॥ ३२ ॥ यातेपुरप्रविसतअबहु।
 सोदरसुचनसमाय ॥ मलितथापिसंबोधि
 न। इमपुरदियनृपअप्राय ॥ ३३ ॥ सुनिमूरहिं
 आवतसुभट। सचिबूससुपेत ॥ बुंदियपुर
 सननिकसिसब। सम्भुहअप्रायसहेत ॥ ३४ ॥
 नगसैलगढलालतट। रहिनृपअंत्यमिला
 न ॥ प्रातपुरहिंप्रविसतअकटि। गृहगृहमंग

लगान ॥ ३५ ॥ कोटारन निजमटमस्यो । जु
यिाय रामनिसंक ॥ ताको सुतसालमलयो ।

गजारुह नृप शंक ॥ ३६ ॥ इम आलमकेपे
सरहि पंद्रहबरस बिहाय ॥ हयखत सत्रह

१७ ६७ महसित । प्रबिस्यो बुंदिय प्राय ॥ बुं
दियपुर प्रबिसत समय । सउन किद्वमगरुह

॥ विधवा बालरजस्वला । पिकवीसमुह बुद्ध ॥
३८ ॥ इत्यादिक असउन विविध । मनमन्नेन

हितत्त ॥ प्रबिस्यो उत्तरद्वारपुर । जाजवजय
उनमत्त ॥ ३९ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महान्वं

पूरुवरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंह
चरित्रे एकविंशो २१ मयूरवः ॥ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ७०५० ॥ बुंदियगाहिय वैठि बुद्धिगजपुरव

हपुरोहित । मन्त्रियुरुवसुनिमंत्रकउलमाण
 चाद्योचित ॥ लकरवसुपेयनमुलकहत्थिसि वि
 काहयअपिय ॥ गदियतकअधिकारबरत
 सिगजमुखगुरुथापिय । आचारअधमअह
 रिरहिय पंचमकारनमुदितमन । बुंदीसबुद्धि
 विगरीवि विधि कउलकम्मलमोकरन ॥ १ ॥
 जबकावलबुंदीसुहुतोआलमअनुगामी ।
 तवहिरानजयसिहमायोपरलोकसुनामी ॥
 तासतरवतअमरेसरहोरानांकुबुबच्छर ।
 पत्तोवहपरलोकसुनी बुंदिययहसंभर । ले
 सिक्खतवहिपटरागिनीरानाउतिपीहरग
 ई । उमेदकुम रितत्थाहिअचिरभावीबसि
 असुबिलुमई ॥ २ ॥ दो० ॥ पटरागिनिपंच
 त्वइम । लयोउदैपुरजाय ॥ च्यारिलकरवसु
 द्राप्रमित । रह्योतहाँतसराय ॥ ३ ॥ इहिअ

तरबुंदीसप्रति । सगपनहितसरसाय ॥ पुरम
 नायरद्वोरके । नारिकेलद्रुत-प्राय ॥ ४ ॥ सो
 सगपनस्वीकारकरि । नारिकेललियफलि ॥
 पनपरंतुलगिकउलमत । प्रथितवेदमतपे
 लि ॥ ५ ॥ रहतचक्रपूजानुरत । विधिनय
 धरमबिसारि ॥ आलसमयप्रमादकरि । वि
 गरीरजसम्हारि ॥ ६ ॥ इहिअंतरलाहोर
 तै । दिक्षियप्रायपुकार ॥ सूबाविचदलबं
 विसव । सिरवमिलिकरतबिगार ॥ ७ ॥
 वावकमतअनुयासिसिरव । अजितसिंहति
 नईस ॥ सोमंडतआपुनअमल । सूबारवंडि
 सरीस ॥ ८ ॥ ४०५० ॥ सुनतरहदिलीसिअ
 वरुदिसकटकअगजित । सजिचक्षियहु
 लसाहराहउदुतजयरजित । सबहिपुत्रनि
 जसंगदुरम बेगामसबहाजरे । तीनलकरव

तुक्वारभारसतपंचतोपभरि । संक्रमितसाह
 आलमसबलक्रमप्रवेसलाहोरकरि । वहअ
 जितसिंहसबसिरवनहनिदंडिखाडे लिनीप
 करि ॥ ६ ॥ दो० ॥ आसितकरिसबसिरवन
 तै । नानकपंथपुराय ॥ मुंडितडड्डीमुच्छकरि
 । दंडिदयेनिकसाय ॥ १० ॥ सालमारउपवन
 निकट । रह्यो कुरुकदिनसाह ॥ अबअभाग
 लुरकानको । उलदीकरतइलाह ॥ ११ ॥ ष०प०
 ॥ कलिजुगभूपनकुमतिनिलयनारिनभरि
 करै । रहैइकअनुरत्तअवरजारनतबचकरै ।
 योहीआलमसंगनिकरनारिनअतहपुर ॥ ति
 नमैबोगमइकलज्जलंधियकामातुर । सहैस
 नसिपाहजामिकरहतुरुकततोहुनकामरथ ।
 निसदीहजारइच्छतनिलजसरमाजिमसारद
 समय ॥ १२ ॥ दो० ॥ गायकआवतगानगृह ।

सिखवननारिनगान ॥ तिनविचपिकव्योरूप
 वर। गायकइहकजवान ॥ १३ ॥ बनेताहिक
 हायकै। रकव्योचिकनदुराय ॥ प्रतिसीरापल
 टायपु नि। लिन्नोरतिबुलाय ॥ १४ ॥ दिनर
 क्वेमंजूसथरि। रतिनिकारैताहि ॥ योबेगम
 दिल्लीसकी। चिपीकलायतचाहि ॥ १५ ॥
 पिकिवसएरिनइहक^{निस}अकवीआलमअगम ॥
 सुनलप्रसादीसाहयकि। लयोलासयूहमम
 ॥ १६ ॥ साहायमेवगमसुनत। बनेसंगलगा
 य ॥ जायसउचसंकानिलय। आईताहिदुरा
 य ॥ १७ ॥ पादाकुलकम ॥ इहिअंतरआल
 यतहंआयो। तियजुबनतसकरनहिपायो ॥
 लबनचायसोतिनहमलास। सउचगेहदियह
 नइसारा ॥ १८ ॥ सुलरिवसाहअकिवयवेगम
 सन। मैविरकमदअज्जबिकलमन। यहसुनि

गायकमिञ्चुविचार्यो । खंजरदोरिमाहहियमा
 स्यो ॥ १६ ॥ शीतकफारिपारकहफुटो । छिनअंत
 रआलमअसुखुटो ॥ नियतिजोगइमलेहुनि
 हारै । दिल्लीसहिं गायकइनिडारै ॥ २० ॥ गायक
 हुनारिनगाहिमास्यो । साहकुविधिमरिसुजसवि
 गार्यो ॥ अंतहपुरतव्वजिगाअचानक । इतउत
 रुदनरागउरअनक ॥ २१ ॥ ष० प० ॥ कुरमहार
 अंगारतोरिभूरतलोवाकरि । कारिफारिबंगरिनपर
 तलुहतउदुतपरि ॥ मोजदीनपहपकुमारयहसु
 निद्रुतधायो ॥ सुत्तोकुमरअजीममुदताकहं हनि
 आयो । लघुभातदोयतिनसिरनिलजपिल्ल्योह
 लहलकारिकै । दोउनमरायगाहियलईअजाम
 अनयविचारिकै ॥ २२ ॥ दो० ॥ आलममरन
 अपुबहुव । फुटीदिसदिसवत्त ॥ मोजदीनअय
 घातहनि । बैगीतरवतप्रमत्त ॥ २३ ॥ ष० प० ॥

आलममृतसुनिअजितसिंहमरुदेशानरेसुर
 । करिकेजनदरकुंचआयअजमेरनिडरउर।
 लित्रोविंदुलिदुग्गसाहथानांहनिसंगर॥ सू
 बादक्षिसजोरभयोविदुसंकगबभर। इततकि
 चिददकिवनअवनिमरहट्टनबलमंडयो। जित
 तितउगायदिल्लियअमलहलिकातरपनछं
 डयो॥ २४॥ दो०॥ मतिप्रमादआलममर
 त। दिल्लीतियवरजोर॥ तकीमारिकटाच्छ
 दृग। सहरसिताराओर॥ २५॥ ष०प०॥ दे
 देसदेसमचिदंगचंगभूरवनचमकाये। पुरपुर
 धादिप्रपातपयनयुधरधमकाये। अलसओ
 सअन्यायहावभावनविसतारता। आसवपान
 अपारमारआतुरदुगमारत। गनिकानविभव
 अधिकारगतचंडातकधुम्भरचिय। दिल्लीय
 नयोदुलहनिवनियसहरसिताराबरनप्रिय

॥ २६ ॥ दो० ॥ मौजदीनइतभातहनिबेहि
 तरवतबनिबीर ॥ निलजदूरकिर्नोअनखि
 ।आलमसाहवजीर ॥ २७ ॥ ष० प० ॥ हुसन्नअ
 लीआलमवजीरकरिदूरकुसिकरबन । जुलफ
 कारखानामअवरथप्योलखिहुकवन । तजि
 पत्तनलाहोररचियदरकुचंगेहरुव ॥ अतिज
 वदिल्लियआयपट्टपायोसुपरमसुख । आसव
 विपानअनुरत्तअतिहठप्रमत्तत्रयभातहनि
 । गनिकानसंगगीदररहतदिल्लियपादपदीम
 बनि ॥ २८ ॥ दो० ॥ नायकलाडकपूरहुक ।
 गायकगहिरगुमान ॥ तासलालबीबीबहि
 नि । अधिकरूपगुनआन ॥ २९ ॥ पहहुर्मत
 कौकरी । मौजदीनबसहोय ॥ गलबाहीछिन
 छोरिके । कन्नसुनेनहिकोय ॥ ३० ॥ पादाकुल
 कम् ॥ नारिनसंगफिरतकांतारन । नारिनही

३१ ॥ अहल विकारन ॥ इक दिन बाग रीअसवा
 री ॥ अजर संगत था सब नारी ॥ ३१ ॥ पान कापि
 साम अति किन्नी ॥ साम चहन सासन पुनि दि
 दौ ॥ अहिले लाबसिके लि बिहाई अपर अह
 संध्या अब अह ॥ ३२ ॥ मौजरीन अति पान
 लिफ्तो ॥ रह से लाल बीबी अनुरत्तो ॥ सोधि
 तास सिविका बिच सोयो ॥ जावत खिन काह
 नहिं जोया ॥ ३३ ॥ असवारी के सम अचान
 क ॥ इन उत बजे चहन के अचानक ॥ कहि कहित्व
 रादरो मन किन्नी ॥ सब हर मन सिविका कसि दि
 न्नी ॥ ३४ ॥ लैले चले कहार नृजानन ॥ जोपत फि
 रत साह को सब जन ॥ भटन लाल बीबिय द्विग
 भास्यो ॥ खोजन तब तहं जाय निकास्यो ॥ ३५ ॥
 खोलि बध सिविका इक नाजर ॥ अन्यो साह
 भटन के अंतर ॥ अति अचेत सिविका बिच

डार्यो । बुद्धिं राजसमस्तविचार्यो ॥ अर्द्ध
 तबदिस्त्रियप्रसवारी । मनजितसाहसं हृदय
 मारी ॥ दैवधिकारविभवसुखदायक । गुरुमं
 त्रीकिन्नेसवपायक ॥ ३७ ॥ इतदिस्त्रियहृदय
 मविप्रनय । इतबुद्धियप्रवनीस ॥ साहबह
 दुरमिचुसुनि । सोचिद्रुद्धयोसीस ॥ ३८ ॥
 इति श्री वंशभास्कर महानंभूषणरूपे दक्षिणाय
 नेन वसुधाशौच्यसिंहचरित्रे द्वाविंशो ३३ म
 यूरकः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ मतिविगारमं नवाममत्त । सजि
 विधिरहितसमा ॥ आलसपरप्रसिकम
 यो । राजकाजतजिरज ॥ १ ॥ ५० ५० ॥ इ
 सनप्रतीसय्यदनवावइकर्मचरत्रियइत ।
 मोक्षं नकोमत्तजानिचिंतियप्रपंचरित ।

पूरवपुरपठनां सुसाह पूरुकप्रजीमसुत्र ॥ त
 वपत्रन मिलिताहिभिरतत्रान्योदिल्लीभुव ।
 रनमोजदीनतासानकिरचिभजिदिल्लियअंद
 रगयो । लमिपिदिसाहपूरुकसजवआयता
 हिहनिअंकुरयो ॥ २ ॥ दो० ॥ सकनवरवट
 सत्र १७६६ समयविक्रमह कनबह ॥ मोज
 दीनकोमारिके । बेंठोपूरुकपह ॥ ३ ॥ जुलफ
 का रवांरचिवतस । हन्योसोहुहमगीर ॥ स
 यदपूरुकसाहकिय । हुसनअलीसुवजीर ॥
 ४ ॥ पलटीगदियतीनदूम । बरसडककेमां
 हिं ॥ आलमपिच्वैमोजदी । अबयहपूरुक
 आहिं ॥ ५ ॥ बुधनृपकेयाहीवरस । मथोकु
 मरकुलमान ॥ कछवाहीराबीउदर । देवसिंह
 अमिधहन ॥ ६ ॥ होतजनमदिसदिसदये ।
 लकरवनद्रम्मलुदाय ॥ जातकरमअरुदानजप

।सबविधिपुत्रसधाय ॥ ७ ॥ कुमरजनसञ्जा
 मेरपुर। सुनिजयसिंहनरिंद ॥ पठयेकुलपहि
 रावनी। दसहयदोयकरिं ॥ ८ ॥ मासतीन
 री। कुमरबह। बोरिगयोनिजदेह ॥ बिगारिवा
 ममगबुद्धमति। आलसगहिय ॥ ९ ॥
 श्रे सो आलसप्रवरगत। सुन्योनपिकव्योरं
 च ॥ सातोंप्रकृतिसमहारिनहिं। बिगरतस
 बहिप्रपच ॥ १० ॥ पुरभनायसंबंधमो। तिहिं
 परलगनलिवाय ॥ रद्वोरनकोरववरिदिय।
 आवतबुंदियराय ॥ ११ ॥ बिप्रपुरोहितनि
 जबिबुध। नामभवानीदास। महडूकेसोदा
 सपुनि। कुलचारनमतिकास ॥ १२ ॥ येदुव
 भूपतयारकरि। पठयेनगरमनाय ॥ लगनबे
 रहमआयहै। दिन्नीराहकहाय ॥ १३ ॥ दि
 जचारनदुवजायकै। भाखिलगनरहितत्य ॥

इत नृपको आलस अधिक । उपजत विवि
 ध अनत्य ॥ १३ ॥ वहे लगन नृप चुकि कै ।
 हू । लगन दिखाय ॥ लगन पंच इम चुक्यो
 व्याहनग । भनाय ॥ १४ ॥ द्विज चारन प्र
 तिद हिय तब । पति भनाय करि रीस ॥ अब
 तुम सिर कन्या हनौ । कै आनहु बुंदीस ॥ १५ ॥
 तब चारन तत्था रह्यो । द्विज आयो नृप पा
 स ॥ बुल्यो अब मरि हो नतो । व्याहहु आल
 स वास ॥ १६ ॥ यह सुनि द्विज संकोच करि ।
 गो नृप नगर भनाय ॥ पर नि सुतार दोर की ।
 विविध त्याग बदाय ॥ १७ ॥ बुंदिय दिम पु
 नि कुंच किय । अति आलस अलसात ॥
 आल आत मगमो हिरुकि । बहु मुकाम रहि
 जात ॥ १८ ॥ चलत रुकत रुकि चलत इम ।
 नगर गलपुर आय ॥ तहं तडाग अंतर उत

रि। कटकमुकामकराय ॥ १६ ॥ ब्याहोमासत
 पस्यविच। साह्योअलससुगाढ ॥ रहतमालपु
 रतालविच। आयोसिरआषाढ ॥ २० ॥ ष. ष.
 गरज्जिमेघघनघोरओरउत्तरसनआये। अधि
 कमंडिआसारविहितसंभरवरसाये। आयोज
 लजबतालतबहिस्यदनभगायइक ॥ तिहिं
 उपरथितहोयरह्योबहुदीहआलसिक। मा
 लपुरसचिवयहसोधिमनकूरमपतिप्रतिपत्र
 दिय। उनकहियनीरपरिवाहमगकहुहुतबयह
 इनकरिय ॥ २१ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥
 इत्थंसवसोइयसेकूपीटे। रणस्थितोमालपु
 रेतडागे ॥ बहून्यहानिह्यवसत्यमत्तश्चिकि
 योविन्दुमतीक्ष्णीशः ॥ २२ ॥ अनुसुप्त ॥
 तत्रैवफूरुदेशाहे। जालेभदसहस्रभृत् ॥ स्वा
 मिदर्शनसाकांक्षो। जैत्रसिंहःसमागतः ॥

॥ २३ ॥ बंशास्थः ॥ ततो नृपः श्रावणिके समा
 गते । बुन्दीं समागत्य विषुप्त बुद्धिभूत् ॥ अल
 प्रमा ० चिरक्रियेश्वरो ॥ वसधया पूर्वमव
 स्थितः पुनः ॥ २४ ॥ प्रा० मि० ॥ दो० ॥ इतम
 रु नृप प्रजमेरलिय । तब विग्रहद्वबरक ॥
 रूपनगररद्वोरनृप । राजसिंह कियटेक ॥
 २५ ॥ मरुभूपतिसौं नहिं मिल्यो । हठ पूरव
 हमगीर ॥ साहहिं गिनिभानेजसुत । भौवह
 दिस्त्रियभीर ॥ २६ ॥ याकै अरु मरु इसकै । व
 नी नहिं जब बत्त ॥ तबरजधानी संगलै । दि
 स्त्रियपुरवहपत्त ॥ २७ ॥ बुंदियहूतव आयव
 है । राजसिंहरद्वोर ॥ नहिं किनो सतकारतस ।
 बुद्ध अलसबरजोर ॥ २८ ॥ राजसिंहनिजपु
 त्रि का । सगपनहित कहिबत्त ॥ सोहू नृपमं
 नी नही । अलसनारि अरु रत्त ॥ २९ ॥ पाव

अनादरतवगयो । कोटापुररद्वोर ॥ कन्याप्री
 महिं व्याहिकै । जुरिमंड्योद्वकजोर ॥ ३० ॥
 रूपनगरपतिरीतिइहिं । भीमहिंतुकरिसं
 त्र ॥ निजरजधानी । दिस्त्रियगयउस
 तंत्र ॥ ३१ ॥ मरुनृपके वनिवनिपिसुन ।
 अनयसाहसौं अक्वि ॥ साहलगतभाने
 जसुतयातै अहररकि ॥ ३२ ॥ फुदति ॥
 इतवैडिपहफूरुदसिताव । की सचिवसु
 रयसद्यदनबाव ॥ फरमानदेसदेसनपठा
 य । सतकारपुषसवनृपबुलाय ॥ ३३ ॥ बु
 धसिंहपासनतिसहितत्र । निजहत्यमंडि
 पठयोसुपत्र ॥ द्रुतसदलअयसत्रुन लि वारि
 । चाचावरचहुमधधरमहारि । ३४ ॥ सोह
 नपत्रमन्थोनरेस । विधिजोगराजबुहुन वि
 सेस ॥ कियचत्रमहलपिचसततवास ॥ अ

वसुमतसंनिहवसनउ रास ॥ ३५ ॥ दो० ॥
 चारनकेसोदाससौं । इकदिनअकियबुद्ध ॥
 मरुनृपजीअपन मिले । सुरैसाहसौंजुद्ध ॥
 ३६ ॥ बुंदिद्यतजिउतहमचलहिं । विआव
 हिंइतवेग ॥ ततोअभयमगमाहिंमिलि । ध
 रदत्ताहिं हितेग ॥ ३७ ॥ महडकेसोदासत
 वा । यहसुनिगोअजमेर ॥ मरुनृपसौंमिलिके
 कसो । आबनहिंकरहुअवेर ॥ ३८ ॥ हेरत
 होअरुनृपयहाहि । कोरुमिलहिंसहाय ॥ या
 नेहुतदरकुंचकरि । बुंदिद्यतरफचलाय ॥ ३९
 कुंचतीजमरुनृप करिय । चढ्योतथापिनबु
 द्ध ॥ तबआलसुअचेतगिति । फिलो कबंध
 यहुकुद्ध ॥ ४० ॥ दिखीपतिफरमानइत ।
 नहिंमलेबुंदीस ॥ यानेअनखविचारिउर ।
 रचीसाहहरीस ॥ ४१ ॥ रूपनगरपुरभूपको

तबहीलगोदाव ॥ संभरकोमरुपतिसहित।
 चरच्योपिसुनचवाव ॥ ४१ ॥ ष० प० ॥ रूपन
 गरपतिकहियसुनहुममवत्तसाहसुत। मरु
 पतिअरुबुंदीसजुरतमिलिउम। मंत्रजुत
 । कोटापुरपतिमरदवाहिबुलहुकरिअहर
 ॥ दैतिहिंहुंदिद्यदेसप्रबलपिलहुतिनउप
 र। क्रमनरेसजयसिंहकंहंखदलिखायहि
 यपीतिचकि। उज्जैननगरसूवाअरपितल
 पठाबहुनीतितकि ॥ ४२ ॥ सुनतगहदि
 लीसपत्रलिरिभीमबुलायो। माराबहु
 हिमिलिरुबहुतसतकारबदायो। दैतिहिंहुं
 दियदेससाहपिल्योदेउनपर। इहितलक
 दाअयसेनसजियहितसंगर। इतसाहमे
 निअमैरदलअयसिंहहिंहुंहुहुहुमदिय
 सूवासम्हारिउज्जैनपुरकरहुजाहममहर

क्रिय ॥ ४३ ॥ दो० ॥ सुनिहूरमउत्तेनदिस
 । करिदरकुंयचलाय ॥ पूरसबल नासहि
 त । बुंदियनिकस्योआय ॥ ४४ ॥ सभरसम्म
 ह नायकै । आन्योपुरहिं रि । रकव्यो
 बुदिनप्रीतिरस । मंडिबिबिधमवुहारि ॥ ४५ ॥
 अंतेउरकववाहको । अंते रन्निचआय ॥ म
 लिननंदभाउजमुदित । रहीहृदयहरवाय ॥
 ४६ ॥ उपालमकूरमदये बुद्धनेसहितत्य ॥
 मनेनहिंकरमानतुमकिर्नोवहुतअनत्य ॥
 ॥ ४७ ॥ कोदापुरपतिमीमअव । बुंदियलि
 नलिस्वाय ॥ तुमप्रमलवहछिप्रतपि । करि
 हैबिग्रहआय ॥ ४८ ॥ यतंमममलआ
 य । सजहुभातदुवसाम ॥ अथिलसत्यमे
 दीनपरि । वहेद्रोहनिरुम ॥ ४९ ॥ लवअ
 मन्तनपद हिद्यफिरि । यहुमेहकीरारि ॥ अ

रही मैं हम समुझि हैं। लिनी विविध विचारि ॥
 ५० ॥ सकञ्चर रिखिसत्तससि १७७० फगु
 नदादसिस्थाम ॥ कञ्चवाही उरकुमरहुवभा
 वतसिंहसनाम ॥ ५१ ॥ भागिनेय हितहर
 खकरि। करिथ कुंचकञ्चवाह ॥ पङ्कचावन बुंदी
 सह। चढ्यो तुग हितदाह ॥ ५२ ॥ चढतवा
 जिप्रासादसिखुल्यो विकट उलूक ॥ काक
 नकंकन कुकुरन। किय फेरंडन कूक ॥ ५३ ॥
 यह असकुन चितेन चित। चह्यो चढिचहु
 वान ॥ कूरमकौ पङ्कचायकौ। मुरस्यो अलस
 अमान ॥ ५४ ॥ नाथा उतनगराज को गु
 ढानाम इकगाम ॥ मातुल कुलचहु नानको
 किनेतत्य मुकाम ॥ ५५ ॥ सकञ्चर रि
 खिसत्त इक १७७० फगुन मेचकभूत ॥ को
 टापतिलै दलकढ्यो। बुंदी परमजबूत ॥ ५६ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचंपूचरूपे दक्षिणा
 यने नवमराष्ट्री बुधसिंहचरित्रे त्रयोविंशति
 तमोऽक्षमयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 प्रहृषदी ० ॥ पोतनचम्पलि चायघायवज्जि
 गनिरानयन । पकरघंटघमंकिवेगहलि
 यहयवारन । माधानी सबसगभिरनअवर
 हुअनेकधटा ॥ संहंसबीलहयसज्जिभीमआ
 यउ बटउ बट । निसघटियदोयरहतेनिड
 रलरनयेरि बुंदियलई । प्रातहि पुकारबुंदीस
 प्रतिभयबिहालहाजरिभई ॥ १ ॥ सुनतर
 हबुंदीसचलियचडिवाजिमुद्धमन । खबरि
 इलेबिचआयघेरिलिन्नाअरिपत्तन । तब
 हिरूपटारिवामलंघिअसतोलीभूधर ॥ आ
 असुरधपुरकरियरक्तदंलादरसनवर । गज

मुखहपुरोहित कहियतबमैंतो जावतलरन
 रन । भीमसौंमिंदि दिखरायभुजनगरद्वार
 चिहोंमरन ॥ २ ॥ यहकहिगजमुखआय
 प्रबिसिपच्छिमपुरतोरन । दक्खिनतोरननि
 जनिकेततहेंजायरचोरन । भरिभरिबाहत
 तुपकपिकिव नृपभीमकहाई ॥ देखनकैतु
 मवंचुमिलहुकरिबंधलराई । गजमुखहुपाय
 तबलोभगतिमंदजायभीमहिंमिल्यो । पकराय
 तबहिलिनीं निपुनगुरुतामदतबद्विजमिल्यो
 ॥ ३ ॥ दो० ॥ गजमुखकौंपकरायइम । तोरन
 अररनफारि ॥ आयतरखतकीदिसअरि । बुदि
 यअमल बिथारि ॥ ४ ॥ इतनृपसौंसालम
 कह्यो । मरनउचितइहिंजुद्ध ॥ जोनरुचततो
 लरहिंहम । हमहिंसिकवअबसुद्ध ॥ ५ ॥ य
 हकहिसज्ज्यो जायगह । निजपुरकरउरनाम

॥ नृपसुसुरथपुरतैमुररि । गोमेवारनगाम ॥
 ६ ॥ मेवारहिंपुनिदाहिने । करिगोमालवदेस
 ॥ सालकभित्तोजायतहं । पुरअमैरनरेस ॥
 ७ ॥ इहिअंतरउनियारपति । नरुववंससंग्रा
 म ॥ नैननगरकेगामकति । दबेतकतकुकाभ
 ॥ ८ ॥ कारतैगजमुखहुकठि । गोमालवनृ
 पपास ॥ तवहिअनादरतरजिनृप । अंतरभो
 जुउदास ॥ ९ ॥ छिन्धिअखिलअधिकारत
 स । द्विजसिवदासहिदिइ ॥ कउलमगागुरु
 सिरकहर । कोपविगारिअबकिइ ॥ १० ॥ को
 दापतिबुंदियमुलक । इतसमस्तअपनाय ॥
 अनायत्तकरउरसमुक्ति । येस्योसालमजाय
 ॥ ११ ॥ बुंदियपुरअवरोधतै । रानियविपति
 विरत्त ॥ इकबेधमअमैरइक । पुरभनायइक
 पत्त ॥ १२ ॥ अवरलोकअवरोधके । विभव

सचिवतिहिंवार ॥ सबबेधमपुरसंचरे । देव
 सिंहकेद्वार ॥ १३ ॥ रवरचरुपये अहसत ।
 अपिनित्यतिन्हएव ॥ इकहायन बुंदियबि
 भव । दुभरनिबाह्यो देव ॥ १४ ॥ इतनृपमाल
 वजायकै । लिनेंतुरगअनाय ॥ बेधमपतिप्र
 तिमोलकी । हुंडियदि नपठाय ॥ १५ ॥ देव
 सिंहवहबचिदल । गिनिसगपनव्यवहार ॥
 दिनीहयसोदागरन । मुद्रातीसहजार ॥ १६ ॥
 बिपतिबीचइमबंदगी । चुंडाउतकियचाहि
 ॥ अप्पनसिररुनकियअधिक । बुंदियबि
 भवनिबाहि ॥ १७ ॥ इतकरउरपुरभीमनृप
 । रह्योबिंटरनरत्त ॥ अट्टारहअहअंकुर्यो ।
 मुखोनसालममत्त ॥ १८ ॥ पलपलबिचगो
 लनपरिग । प्राकारनबिचपंथ ॥ सबकरउरतो
 पनसिलगि । हुवभ्राष्ट्रकहरिमंथ ॥ १९ ॥ मुहु

कमकुलउमरावदक । सुरवसिंहहचहुवान ।
 सुत्रहिदेंदरविभवपद । कियकसायपरिधान
 ॥ २० ॥ वहअनिच्छविचरतफिरत । कोटा
 दलविचअाय ॥ मिलिगदियतजिभीमनृप
 । दयोताहिबैठाय ॥ २१ ॥ कद्योभीमकरजो
 रितव । मोसिरकरहुनिदेस ॥ सुरवसिंहदुयह
 सुनिकह्यो । चढियरजाहुनरेस ॥ २२ ॥ तव
 हिकहंसुरवसिंहके । वहचढिबुंदियअाय ॥
 नलो किलोकरउरनगर । लेतोद्रुतहिधुराय ।
 २३ ॥ पादाकुलकम् ॥ कोटापतिसुरवसिंह
 कथितकिय । जान्यो लोकन सालम जितिय
 ॥ कूरमपतिइतअंनविचार्यो । जामियबुंदिय
 हीननिहार्यो ॥ २४ ॥ अमररानकेपहुउदैए
 र । लसतरानसंग्रामधरमधुर ॥ तिहिंप्रतिद
 नजयसिंहपदायो । स्वकरमंडिसतकारसिवा

यो ॥ २५ ॥ हेनृपतुमभीमहिंसामुगावद्गु । बुद्ध
हिंबुंदियदेसदिवावद्गु ॥ यहमोसिरत्रैसानक
रद्गुअब । तुमरोद्गकमभीमस्वीकृतसब ॥ २६ ॥
तबहिरानयहपत्रबिचास्यो । क्रमपतिसंको
चसम्हास्यो ॥ निजकाकातरवतेसबुलायो ॥ बुं
दियभीमसमीपपठायो ॥ २७ ॥ तबहिआय
तरवतेसभीमप्रति । अक्वियबिबिधरानकी
बिन्नति ॥ बुंदियतजिनिजगेहपधारद्गु । मोसिर
यहत्रैसानबिचारद्गु ॥ २८ ॥ यहसुनिभीमक
स्योधरिगबहिं । बुधनृपतैंबुंदियनहिदछाहिं ॥
जमीसमस्तसाहकीजानौं । तजिहौंतेहैहैहैर
कानौं ॥ २९ ॥ यहकहिसिक्वदईतरवतेसहिं
। तजतभीमनहिंबुंदियदेसहिं ॥ तबदेसहिं
सालमलमिलुहन । कोटापतिथाननकरिकुह
न ॥ ३० ॥ दो० ॥ मेबावतलामंतहर । इनहु

नमहितेग ॥ बुंदियद्विगपुरजेतगढ । लुद्विय
 आयसवेग ॥ ३१ ॥ तिनपरपठयोभीमनृपाधा
 इक्ष्वातभगवान् ॥ वानैजायधनावपुरकिर्नोहद
 यमसान् ॥ ३२ ॥ मेवावतसामंतहर । मरेबहुत
 करिजंग ॥ धाद्वभ्रातभगवानकै । धायविल्लो
 अंग ॥ ३३ ॥ इतिश्रीवंशाभाकरेमहाचंपूस्व
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
 चतुर्विंशो २४ मयूरवः ॥ ३ ॥ ३
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
 पक्षतिका ॥ संग्रामरानसादरकहाय । सोभी
 मनाहिंमन्नियसुभाय ॥ तकसीरतासमेठन
 विचारि । कोटेशउदयपत्तनपधारि ॥ १ ॥ सी
 सोदधिंदिसंग्रामरान । दिथभीमतत्यकछुदि
 नपेलान् ॥ अहालसीसइकटीहत्राय विंठ
 दुधूपपरिवदबनाय ॥ २ ॥ प्रासादतासके

हेदुपास । इकनदियः प्रायकिर्नोतमास ॥ कोटे
 सकुजसकारिकाहिकुवन्त । बुल्लियसालमजस
 च्छिबरत्त ॥ ३ ॥ सोसुनतभीमकरसुच्छि
 ल्लि । लैसिकवः प्रायबुदियउमल्लि ॥ रद्वोरसुम
 दजयसिंहनाम । सालमसिरपिल्ल्योजयसका
 म ॥ ४ ॥ दलसँहँसबीसलैतबदुरुह । जयसिं
 हबिबिधसजितोपजूह ॥ करउरसुजायविंदि
 यसजोर । इकमासरहियघमसानघोर ॥ ५ ॥
 करउररजपूतनइमउपेत । सरपूरसरधिजिम
 सोभदेत ॥ जयसिंहपुरसुतुदृतनजानि । मन
 सोधिः श्रेयसामहिँप्रमानि ॥ ६ ॥ सालमसमी
 पलिरिवदलपठाय । अबसामहमहिँतुममि
 लहुः प्राय ॥ अरुतुमरेसुतसौँहँअजेय । ममदु
 हितासगपनहैबिधेय ॥ ७ ॥ सालमकहाय
 तबदनअनीक । परतोरनअंदरमिलनठीक ॥

मनीय है इर द्वोर तत्प । पुर द्वार गयो लै तु च्च स
 त्य ॥ ८ ॥ उत्तै लें चिहिसालम सदल प्रायार द्वो
 रलिय उ अंदर बुलाय ॥ सालम सु मिल्यो जा
 लम जनून । इव घटिय अद्वैक बुद्धन ॥ ९ ॥
 दो ॥ बीस सैं हंसदल तैं बचै । ग्रै सो कर उर होन
 ॥ यहै न जानै कूं मिल्यो । भीरु कबंधमि स्योन ॥
 १० ॥ सालम सुत परताप सौ । स्त्रीय सुता संबं
 ध ॥ करि बुंदिय गो कुंच करि । सुजय सिंह हत
 संध ॥ ११ ॥ जायो जुगिय राम को । अंकुरि क
 रर राम ॥ जेर न दोह बेर भो । भावी मिटै सुकन ॥
 इत करम कहि संभरहिं । उज्जयिनी हम जाल ॥
 जालो सुम अत्य हिर हहु । हम करि है भुव हात ॥
 १२ ॥ यह कहि वह उज्जैन गो । सुबापति सरसा
 य ॥ माम नाम काय थिया । रह्यो सु बुंदिय राय
 ॥ १४ ॥ इत मरु पति निज मदन पुच्छि लखि

समयमंत्रकिय । मिलिअप्यनकूरमनअप्य
 संभरपुरलुहिय । अबकूरमपतिहुहिभयोसू
 बासिररखामी ॥ एकाकीअप्यनहिरहेदिल्ली
 सहसामी । अवरनउपायसुक्रुतअबहिउचि
 तअप्राहिदिल्लियगमन । सुंदरबिवाहिसाहहि
 सुतारहेसदासिरकूरमन ॥ १५ ॥ दो० ॥ अमर
 लिखाइउदयपुर । मेदिरीलिवहसुद्ध ॥ पुत्रिनसं
 दैपुद्धमिपुनि । लमीरखवनलुद्ध ॥ १६ ॥ निज
 तनयातबसंगले । यहकुमंत्रउपजाय ॥ अजि
 तसिंहदिल्लियगयो । परयोसाहकेषाय ॥ १७ ॥
 तबहिंदुनजिमतासकी । सुताबिबाहोसाहा
 अजितसिंहकोइकूठे । किन्नेमाफयुनाह ॥
 १८ ॥ साहवनायोसय्यदन । यालेदेहमगीर ॥
 हुसनअलीइच्छितकरे । कहिबेमात्रवजीर ॥
 ॥ १९ ॥ तिनसोसाहुदुदबिरहत । समुहसज

लनसत्थ ॥ हुसनअलीकेहुकमकों ॥ मिहनको
 नसमत्थ ॥ २० ॥ हुसनअलीकहिमुकल्यो ।
 यहपरुभूपतिपास ॥ संभरपुरभाईहनें । बैरवि
 मंगोतास ॥ २१ ॥ यहसुनितबमरुपतिगयो ।
 हुसनअलीकेगेह ॥ करनजोरिअरुसपथकरि ।
 अकवीतिहिअतिगह ॥ २२ ॥ मैकूरमबरज्यो
 बुद्धत । साहसतदपिसम्हारि ॥ जयसिंहहिंपु
 रलुहिगो । आतराबरेभारि ॥ २३ ॥ सपथवृथा
 करिहुम मिल्यो । सय्यदसोंमरुमोर ॥ सय्यदत
 बसागसगिन्यो । जयसिंहहिवरजोर ॥ २४ ॥
 जयसिंहहुअहसबसुन्यो । मरुपतिसय्यदमेल
 ॥ तबउज्जइनीनीतितकि । अंकुरिरहियअठे
 ल ॥ २५ ॥ इहिंविचदकिबनदेसकी । पत्नीअ
 निपुकार ॥ मरहहेलुद्धतसुलक । करिकरिबि
 दिधविगार ॥ २६ ॥ ष०प० ॥ हुसनअलीस

य्यदनवाब दक्खिनपुकारलहि । पुरअवरंगा
 चादचल्योदरकुंचविजयचदि । सारधलकरव
 तुरंगसंगमतदोयतोपसजि ॥ आवतघनजि
 मउमडिबबनिकरंबतनितबजि । उज्जेननिक
 ट्ठप्रायोजबहि कूरमपतिडुकनीतिकरि । पैती
 सकोसदरकुंचगोदुलहनिव्याहनव्याजदरि ॥
 २७ ॥ दो० ॥ सरत्रिकोस उज्जेनतै । इकचहुवा
 ननगाम ॥ तिनतनयासगपनकियउ । कूरम
 सौंसहसाम ॥ २८ ॥ वहसगपनमनचिंति
 अरु । सय्यदगिनिबरजोर ॥ विरु हिलगन
 व्याहनगयो । कूरमकुलसिरमोर ॥ २९ ॥
 गीर्वाणभाधा ॥ वंशस्थः ॥ लग्नं विनोद्वाहचि
 कीर्षयागतो । नीतिस्थप्रामैरपुस्यभूषणिः
 तत्तस्यपत्नीखलुचाहुवा राजा । पलङ्कयाया
 बलयान्यधारयत् ॥ ३० ॥ आ० मि० ॥ दो० ॥

कूरमकोपरिनायइम।सथ्यददकिवनपत्त॥
 नवबरतब उज्जेनपुर।आयोपरनिउमत्त॥३१॥
 ष०प०॥नवबरआयअवंतिजानिसथ्यदद
 किवनगत।लिरिबिनातिमुक्कालियसाहकू
 रुकहजूरतत।बुंदीपतिआयत्तस्यामिआय
 सलुप्योकिन॥आलमकेअतिसोकनाहिंकर
 मानलयेइन।बुंदियलिरवायवरवसहुइन
 हिंसिरसबहुकमदहायहे।फरमानदेरुहुस
 हुबुधहिंअबहुजूरहुतआयहे॥३२॥दो०
 ॥यहसुनिसाहनबादइक।नामदलावरवान
 ॥लिरिवतपदाजुतमुक्काल्यो।कूरमअरजम
 खान॥३३॥आयदलावरवानतब।कूरमस
 चिवसमेत॥बुंदीलेहुतमीमसो।अप्रीइन
 हिंसहेत॥३४॥अथमसाहकियरवालसे।
 बुद्धहिंतदनुसमाधि॥कोटाकेउठवायकै।था

नांनिजइनथपि ॥ ३५ ॥ सुताभनायअधी
 सकी। रानीजोरद्वोरि ॥ सुतानामसूरजकुमरि
 । हुवताकैगुनगोरि ॥ ३६ ॥ सकअंबरहयसत्त
 इक १७७० । अमारुफगुनमास ॥ कोटापति
 बुंदियलई । गिल्योसुदुज्जरयास ॥ ३७ ॥ स
 कजालेमहयसत्तइक १७७२ । अगहनदाद
 सिस्याम ॥ आईपुनिबुंदीसकै । बसुधाकुलटा
 बाम ॥ ३८ ॥ बुल्लिसचिवबुंदीसके । फेरिबु
 इनृपअन ॥ देबुं । दीदिल्लियगयो । जवनदला
 वरखान ॥ ३९ ॥ अवरदेसबुंदीसकै । आयो
 सबहिवहोरि ॥ भीमनगरवारामऊ । द्वैधरग
 नांनछोरि ॥ ४० ॥ तदनंतरफरमानपुनि । पठ
 येसाहजर ॥ बुद्धसिंहजयसिंहनृप । बुल्लेउ
 भयहजर ॥ ४१ ॥ ष० प० ॥ फरमाननहुने
 लिसज्यो कूरमनरेसजब । बुंदीसहिं बुलवाय

कही आहत उ भय प्रब ॥ रापिक वहु फरमान चल
 हु दिल्ली हम सत्ये ॥ लैहें साहरि गाय मुकुट हें हें
 अपरि मत्ये ॥ क्रम नरे सयह कहि चढ्यो बुदीप
 तित दपिन चढत ॥ आलस अचेत मति मंद
 अपति पल पल प्रति चलिहें पढत ॥ ४२ ॥ सुन
 तरह जयसिंह आसु बुंदिय दल आयो ॥ जाहि
 पडु हें कहिय साल सजि मोद सिचायो ॥ अब
 नृजान आरु हहु चल हिंधरि रबंध मृत्यु हम ॥
 निज असु सपथ दिवाय राह अकि वय नृप कूरम
 ॥ लंको चता सच हुवान तव चढितु रंग तिन सं
 गहु व ॥ इहिरीति चोरि मालव अवनि दिल्ली
 यचल्लिय भूपदुव ॥ ४३ ॥ दो० ॥ कहि मुकुंद
 दर उतरे ॥ चम्मलि पहन ओर ॥ लकवेरिय गि
 रिलियके ॥ आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥ क
 हुदिन तत्थ मुकाम करि ॥ चर मुकालि हित

तसिंहजाजवजयी । आथोसरसासपाह
॥ ५१ ॥ वैरिसल्लकुलउद्धरनहडारनह
पगीर ॥ बलवनपतिआयोबहुरि । अभ
यसिंहअतिवीर ॥ ५२ ॥ पुरवातोली
पतिप्रबल । अमरसिंहअभिधान ॥ इंद्र
सल्लकुलउद्धरन । चायमिल्योचहुवान ॥
५३ ॥ मिल्योआनिउद्धतगुमर । चंडसमर
चहुवान ॥ सेरसिंहसामंतहर । भजनैरीपु
रमान ॥ ५४ ॥ नाथाउतनगराजह । नग
रगुहाकोनाह ॥ पुनिदूजोनिम्मानपति ।
आयोमिलनइहाह ॥ ५५ ॥ दो० ॥ सब
लमिलेउमरावसब । इमस्वामीढिगआ
य ॥ सबहि सिराहेसरपन । जयसिंहहुज
सगाय ॥ ५६ ॥ सबनकहोदिल्लीसदि
य । इंदियलिखितलिखाय ॥ तेकगरपि

केवैहमद्दु। तबइनदिनदिखाय ॥ ५७ ॥
 पिकिवपटासबहिनकह्यो। कूरमनृपहिंसि
 राहि ॥ मऊनगरबारोंमुलक। एनपटाबि
 चआहि ॥ ५८ ॥ कूरमतबमुसिकायक
 हि। दुवहमदिल्लियजात ॥ अबलैहैकहि
 साहसों। सैनमुलकवसुआत ॥ ५९ ॥ इ
 मकहिअवरनसिकवदे। चलेउभयनृप
 तत्य ॥ सालमसिंहरुजैतसी। सुभटलये
 दुवसत्य ॥ ६० ॥ इमहुवनृपअमैरपुर। इ
 रकुंचनचलिआय ॥ जापियसालकपी
 तिजुत। रहेकहुकदिनराय ॥ ६१ ॥ तहं
 करउररनरीफतकि। सालमहिनबरबसी
 स ॥ नैननगरकोपरगनां। सबदिनोंबुंदी
 स ॥ ६१ ॥ सालमकेइकतमई। पडुमिह
 मनवलकव ॥ कतिकनतवर्योइकह्यो।

बनिहै कबहु बिपकव ॥ ६२ ॥ मुक्तादाम
 ॥ करी इम सालमकौ बरवसीस । गयेपुनि
 दिखियद्वैश्रवनीस ॥ उभैहितसंगगयेपु
 निआम । सजीनृपदेउनसाहसलाम ॥
 ६३ ॥ अनामयदेउनकोजवनेस । सिता
 धरपुच्छियप्रीतिबिसस ॥ उभैनृपअप्यन
 अप्यनश्लोक । सिराहहिंपायरबरेहतसी
 क ॥ ६४ ॥ उभैभटसालमजैतसमत्थ ।
 शुलायउरहुसभाबिचतत्थ ॥ नकीबनकी
 इतमामउमल्ल । परीलकरीइकसालमह
 ल ॥ ६५ ॥ इइपुनिसाहसमरुत्तनपिकुव
 रहीनृपकूरमकीअतिनिकुव ॥ रहैइम
 दिखियद्वैनरनाह ॥ सदाखिलिबलशुला
 वतसाह ॥ ६६ ॥ लयोनृपकूरमसाहरि
 माय । असबकहैसुकरहितपाय ॥ सुसा

६

हवसालमकों करि मुद्ध । पठायउ बुंदियपे
 तव बुद्ध ॥ ६७ ॥ सभादिन इक्क बडीर चिसा
 ह । बुलायउ आम सबै नरनाह ॥ अयो जय
 सिंह हूरु मईस । गयो बुध हड्डन वंस अथी
 स ॥ ६८ ॥ गरबत साहन केस सुरत्त । गयो
 मरुईस अजित हुतत्त ॥ गयो नृप संभरभी
 मम हंध । गयो पुनिरूप पुरे सक वध ॥ ६९
 ॥ गये इम हिंदु व मिच्छ असेस । गयो वहि
 लैत हं बुद्ध नरेस ॥ सलाम करी कासि पाहि स
 ठल्ल । लई नृप बुंदियपट्ट मिसल्ल ॥ ७० ॥
 गये तदनंतर सब हि आम । सजी हित पूर
 बनम सलाम ॥ बिले व कू करे आय
 उभीम । लक्यो हिय हेत रची त सलीम ॥
 ७१ ॥ सिरे लखि बुद्ध हिं मुद्ध रिसाय । जसो
 मनसो हिं सुक्यो मिटि जाय ॥ रहु उदिसा

हसामस्तनसिकव । रहीतेंहंबुद्धबलापति
 तिकव ॥ ७२ ॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ मालि
 नी ॥ इयउ अयउराप्रोतत्यसङ्गाभरस
 एरवदुजयसीहंपेसिअणोहपत्तम् ॥
 जायिकुण्डपसान्प्रफूरुअोलुवधीए । व
 सइएणएतदोमेपइएचिलऊडम् ॥ ७३ ॥
 एयमयजयसीहोतंबुद्धएणपत्तं । समय
 बलविएमीणीइएकलुबुद्धिम् ॥ दडवड
 हिगयोसोसाहअामम्मिकुम्पो । कहिउज
 वराणाहंपूरुअंराणवत्तम् ॥ ७४ ॥ प्रा
 मि ॥ अ० प० ॥ अंगोअकवरसाहलि
 यउचिरोरुगुगवर । पच्छोअपियबहु

(१) इतः उदयपुरात् तत्र सङ्गाभराणां नरपतिजयसिंहं प्रेषितं स्तैह
 कम् ॥ यदि करोति प्रसादं फरुं खः तव कन्यायां वसति ननु तदा पत्त
 नं चिन्तय ॥ ७३ ॥ नयमयजयसिंहः तखलुद्वारापणं समयबलविवेकीनीत्या
 एउरवुद्धिम् ॥ अंगोअनेसोसाह कामे इर्मकर्यायितुं यवनमाथं फरुं खं राणावार्ताम् ॥ ७४

रिद्योतवर्तेवह उज्जर। साहहुकमबिदुरा
नजायस्वच्छंदबसे किम ॥ यातेपठइअ
त्यअरजसंग्रामसिंहइम। अण्डुनिदेस
बसवायअव चित्रकूटहैहमरहै। सतपंच
सुभटपरवैतमम कथितकहोतहैनिबहै
७५ ॥ दो० ॥ नजरिद्वअ करिहैकितो। यह
कहीजबसाह ॥ तवाहिइअअयलकवमि
ता। अकवेकूरमनाह ॥ ७६ ॥ अ० प० ॥ सु
निसुरानमुकालियनजरिहुंडीअयलकरव
न। कूरमकिनीनजरिसाह पिकवीसुमोद
सन। लियउपटालिखवायरहीमहुअरहुअ
वसेसह ॥ अरजइक पुनिकरियनगरअ
मैरनेसह। बुद्धसिंहभीमबिअहबिरचि
छिज्जहिलरिलरिपरसपर। दोउनमि
लायअवअण्डुतभेटिवइरमंडहुअह

६

॥ ७७ ॥ श्री ॥ सुनलराहकोदेससों ॥ दि
 श्रीसाहकहाय ॥ करहुमेलबुंदीससन ॥
 जयसिंहहदिगजाय ॥ ७८ ॥ जोतुमधि
 श्रीहुकमलाहि ॥ सोसबपच्छो देह ॥ उम
 यभातरकनजुरि ॥ सुनयसामकरिलेह
 ॥ ७९ ॥ हरिगीतम् ॥ बरजोरआयससा
 हकोसुनिमीमपीनुतधीभई ॥ जयसिंह
 केवनरुपडेरनुजायलिनलिमंडई ॥ कछ
 बाहकहिबारां मरुअब शोरिइनलिरिदि
 दीजिये ॥ बुंदीससों मिलिसामकेइकथा
 लामोजनकीजिये ॥ ८० ॥ तवसाहश्री
 कछथाहईमनमेंनइकतजानिके ॥ कीदि
 सतजिअहदेसदीनों लैरवकगरदानिके
 ॥ करिअसनइकाहियालश्रीभूपाल
 नयहितवित्थरयो नृपमीमउपरशोर ॥

ओमनमाहिंदौरवभयो जस्यो ॥ ८१ ॥ सक
 तीनहय रिसिइंदु १७७३ मैयह बत्ततीनन
 केमई । इहिं बीचजनकी पुकार अपारदि
 लियउत्तई ॥ इकनेर थूहनिईसजहसुनाम
 चूडामनिरहैं । धनजोर ओमन जोर जोर नजो
 रफोजननिबहैं ॥ ८२ ॥ तबसाहजहपुका
 रपैक छवाहभूपतिपिल्लयो । बुंदीस बिनु
 सबसंगनृपकारिसेन संचय ठिल्लयो ॥ इन
 जाय तोपनमालकैर चिजाल थूहनि बिंदई
 । इतसाह बुंदियनाह बुल्लिरुसान बत्तसुस
 च्छई ॥ ८३ ॥ बुधसिंहसनपठाय विन्न
 तिचित्रकूटबसावहीं । क्रियभेट दस्यत्रिल
 कवओ अपनो निदेस उठावहीं ॥ नयमंद
 हडुनरिंदयो सुानकुम्मकानिहुनां करी ।
 जयसिंह उक्तप्रपंचजानतहयहे कथउच्चरी

सिंहयहसुनिसाहसौलहि सिंकरवधूहमिसं
 क्रम्यो । जलघोरसिंधुहिलोरज्योदलजोरज
 दनपैजभ्यो ॥ निखिफत्रबुदियजोघसोहर
 कीसुतानृप बुलई । उमेदकुमरिसु नामजोप
 रिनायकूरमकौदई ॥ ८८ ॥ कोदिसभीमहु
 अप्पनीतनयासुतत्यबुलायकै । बरजेरकू
 रममेरकौदियपीतिसहपरिनायकै ॥ एक
 अग्निहयरिखिदुंदु १७७३ हायननेरशूहनि
 जंगमै । कबवाहइमहुवब्याहकीनेवीरसुनि
 रसरंगमै ॥ ८९ ॥ करियाहकूरमनाहयोपु
 नितावजहनपैदयो । हरिमंथप्राध्करानज्यो
 तरकावतोपनकोभयो ॥ उ डिकोटअहनध
 हयोंगहवहजहनकैपरे । कडिबेग बगहि
 तेगवेसबसेनसमुहहैमरे ॥ ९० ॥ जयसिं
 हशूहनितोरिकैइमजहचूडामनिहन्यो । अरु

बदनसिंहहिंसकिसरनेअपजयचकउफ
 न्यो ॥ जिहिंदनसिंहनिकेतसरजमस्रजद
 सुपुत्रभो।जरबंदिकेंसिरसंदिनेभुवफोजल
 करवनजुचभो ॥ ६१ ॥ द्वैकोटिश्रामदमुलक
 दबिरुतावसाहनपैदयो।धरिबीसकोटिस
 कीयकोससरोससबुनकोजयो।लरिश्राग
 गलहिमारिदिल्लियसाहकोसनलुहिके।
 कियभरतपुरनिजराजधानीजंगमिच्छनजु
 हिके ॥ ६२ ॥ गढभरतपुरकुमेरडिगधरु
 वैरयेचउनिर्मये।अैसानसिरश्रामैरकोभु
 ह्योनजोहुइतेभये ॥ वाकेजवाहरमस्रपुत्र
 सहायसरहुजाहिले।बैंगसुपरुपतिविजय
 सिंहहुइकगदियताहिले ॥ ६३ ॥ जिहिंपु
 अनातियएभयेतिहिंसरनकूरमस्वीकृत्यो।
 गढफोरिशूहनितोरिसबनृपजेरिदिल्लिय

संचर्यो ॥ रसराहसंरुधिराहसों मिलि साहसो
जय अप्ययो । सिरमोरभूपसमस्तमैं वरजीर
कूरमयोंभयो ॥ ६४ ॥ कचवाहसाहउभैहि
इकगिनिव्याजभीमविचारयो । जामातपर
रचिघातजडनृपसस्त्रमंत्रसम्हारयो ॥ पुररु
पनगरनरेसअरुमरुदेसपतिदुवबुल्लिकैं ।
मिलिइकसम्पतिमंत्रमंडियभूपतीननभु
ल्लिकैं ॥ ६५ ॥ लिखिपत्रसय्यदपैततखिव
नदेसदखिनमुकाल्यो । इतसाहकीहित
चाहसों कचवाहभूपतिउज्जल्यो ॥ जयसीह
यहकछुदीहमैं अधिकारअप्यनपा होव
निकैं वजीरसमस्तमस्तकचंडघातचलायहे ॥
६६ ॥ रहनोंतुमैंजुवजीरहैअरुबंधुबैरनि
बैरनों । तोबेगआवहुतेगमंडिछुमंडिकूरमये
रनों ॥ इतपिकिवयहदसजिसय्यदसेन

सम्पद उष्यस्यो । सजि अग्रगतोपन मगग कोप
नलज्ज लोपन संवह्यो ॥ ६७ ॥ उज्जैन आ
यह साहकों लमंडि दूतन अग्रप्ये । हम आनि
पूरब देससों तुम पह दिस्त्रिय थप्ये ॥ जय
सिंह नृपमम भ्रातमार कताहि निज हियला
यकै , मम तुल्य अदर अदर्यो सुदये अग्र
पुलायकै ॥ ६८ ॥ कबु आसनहि बिसवा
सहै अब वास आयरु अकिबहो । रनचाय आ
यम पायमै निज बंधु बैर नर किवहो ॥ सुनिमा
हयह निज भातसों सब बात सय्यदकी कही ।
तब बात अकिबयथात यह जयसिंह उपर
हैसही ॥ ६९ ॥ तिहि देह सादर सिक्खसों
आमैर नैर पायकै । तब चूक अग्र्य माहि
नाहि लरै जु सय्यद आयकै ॥ सुनिमा हयह
कबु वाहसों हिलचाह अकिबय सर्वही । तुम

जाहु देसहिं सिकवले-अतिफैलसय्यदको
 ही ॥ १०० ॥ जयसिंह-अकियभोवकी-सुभो
 जुदीनहिंमारिकैं। तैहसु-आवलबेरयेसबदोर
 उतरिकैं ॥ तसमातसज्जुसेनससुहस
 सुसय्यदमारिहैं। सबहिंदुपायनलायहिंदुस
 थान-आनबिथारिहैं ॥ १०१ ॥ कहिसाहतु
 हजाहुजो-अतिजेरसय्यदजानिहैं। एनितुम
 हिंभुलिप्रपंचकरितिहिंमारिबैप्रमानिहैं ॥
 तबकहियकूरमरानहितफरमानजोबहनिर्म
 यो। चीतोरदुग्गबसायबेहितसोससुब्रहुका
 भयो ॥ १०२ ॥ बुंदीसबैननचिंतिलबयहसाह
 नाहिंनस्वीकरी। कहुओरमंगदुरानहितदेहैं
 सुयहपुनिउच्चरी ॥ आमैरपतितबरह-अकिय
 यरामपुरनिखदीजिये। करिमानभूपतिरानस
 र्वसमान कीजिये ॥ १०३ ॥ दो० ॥ मालव

धरप्रंतरसुलक । नगरग्रामपुरनाम् ॥ चंद्राउत
 रीसोदतेंहें । स्वामिनामसंग्राम ॥ याकेपुरुखन
 अग्गप्रतिसेयेदिल्लियसाह ॥ कियेसुभट
 तबरखकहि । राजबरखसिहितराह ॥ १०५ ॥
 तबतें बुंदियजोधपुर । पुरअभैरसमान ॥
 नमानितसीसोदह । सेवतरहिसुलतान ॥
 १०६ ॥ गिनकुलयहसंग्रामनृप । रद्योपुररिल
 हिकाल ॥ चिद्रयहैतकिगहनचिति । कहिकूरम
 भूपाल ॥ १०७ ॥ ष० प० ॥ कहिकूरमकरजो
 रिसुनहुमभवत्तसा श्रुत । रामपुरपसंग्राम
 रहियअबपुररिजोरजुत ॥ जनपदलेकुउतारि
 रहैसु रैन काना । रानहिंदेहुलिरवायरचहिं
 सेवनयहरना । सुनियहलिरवायफरमानदि
 य । करिसमुद्रजयसिंहकर । रानतुमदखिगढरा
 मपुरसज्जहुनेनसुभटवर ॥ १०८ ॥ दो० ॥

रामपुरीं लिरववायइम । रानअरथहितराह ॥
 सजवसिकरकरिसाहसों । नीचतुरकब्रह
 ॥ १०६ ॥ जमिपडेरनआयकहि । चलहु
 करिसिकर ॥ इहोंसमयकबुआरभो । रहेंनरा
 जसतिकरव ॥ १०७ ॥ य. य. ॥ सुनलएहबुंदी
 सरियु कूरमप्रतिउत्तर । तुआयवतलहिसि
 करवसजवसज्जितफदतिपर । हमहिंसिकर
 अबहां कबुकअंतरपरिजेहें ॥ चलहुअप
 तसमातसिकरवलहुतहमअहें । जयसिंहसु
 सुनेआमैरपुरआयकटकबहुसज्जकिय । इ
 तसदलआनदिस्त्रिउमंडिहुसनअलीअन
 खातहिय ॥ १०९ ॥ अबसुरसाहकोभूढअजितअ
 मिधानधन्वपति । रूपनगररद्वेएजनकमातलबि
 मंदमति । याहीकोजामातभीमकोटेसामसुत ॥
 बंधुबग्नयजानिबीचडारियबिसासजुत ।

कहिसाहसामसय्यदविरचिराजकाजनिबह
 हुसकल । नदियउडारिसय्यदश्रवनउनस
 वफोरियमंत्रबल ॥ ११२ ॥ एतीनहिप्रव
 नीपलचिगप्रतिभुमिलुभाये । बदलिसाहसौं
 च्छन्नअधमसय्यदविचअये । साहहिंदैविरु
 वासइककवसरजुरिइकत ॥ बैठेकनरहस्यसा
 हपंचमकीसम्मल । तबसाहतीनभूपनफक
 रिबंधिजाहि कीपम्यकरि । मखतूलपासिगल
 गरिकैमारिगिरायउगारिलरि ॥ ११३ ॥ हरिगी
 तम ॥ सकवेदहयरिखिइंदु १७७४ हायनमास
 फगुनगोरमै । हनिसाहत्रयनरनाहसय्यदचा
 हहुवप्रतिजोरमै । परिकूकदिसदिसुहुरमखा
 नननारितोबहउच्चरै ॥ आतंकसय्यदकोअ
 तीविसुद्रव्यगोपनहकरै ॥ ११४ ॥ लैसबनहुस
 नद्रअधन्वधरेरुधीगृहमैधखो । मरुईससुनि

वसुजुत्तपुत्तिय बुल्लिलोमहि अहस्यो । सत्रवि
 त्तमुकालिधन्वदिय तनयासुर्यो मरुईसने । अ
 रुभीमसय्यदसौं कही बुधसिंह वैरचै घने ॥
 ११५ ॥ जयसिंहजामिप हैय है तुमसौं हू छल
 करितोरि है । तसमातमारुं ह्याहिसबमिलि
 जोर छलयह जोरि है ॥ सुनि एहसय्यदफेरिफे
 जनबह बुंदियबंधयो ॥ अवननीनतीनन अण्य
 ले बुधसिंह डेरनपैंगयो ॥ ११६ ॥ बुंदीसयह
 सुनिसेन सज्जिरुसेन समुह संकम्यो । तबजे
 त अक्खिय घोरयह अति जोर सय्यदको जम्यो
 । लाहोर तोर नहोय नृप तुमज हू कूरम देसमै । ह
 मधीरग्नहमगीर जुज्जहिं बीरजारु बेसमै ॥ ११७
 ॥ यह कहत आतुर प्राय खल दल जानि बहल
 लुं वये । बजिबीर आनकयो अचानकराग सिंधु
 वलगये । बजिडैरु डिंडिमडक श्री बहरक अण्य

६

करकई । अहिभोगलेतलचक्रप्रोधरनीसुध
 कनधकई ॥ ११८ ॥ परिप्रोरप्रोरनरोरदिल्लिय
 जोरजालमजंगभो । हटनारिहटनलगिपहन
 अंगरंगविरंगभो ॥ प्रजरातजातबजारबीधिन
 योंअलातसुउच्छरे । जिममासबाहुलदरसपै
 नेहासकारकईजरे ॥ ११९ ॥ अकासधूमहधू
 लिधुंधरिधानभासनलुप्ययो । बजिकंकगिद्ध
 सिदानपच्छतिरारिसय्यदरुपयो ॥ अनिरुद्ध
 सुबलबलेगकारतमीरमारतनिक्कल्यो ॥ कुलबै
 रिसल्लजजैतसिंहसुसेनसमुहउज्जल्यो ॥ १२० ॥
 पुनिजोधराजप्रधानकरुजआयएरनअंकुरे । ल
 हिरोककोकनसोकभोपुरलोकओकनमैदुरे ॥ क
 मनेतफोजनमैपयोभटजैतहुहुहकारिके । रननैर
 दिल्लियकीरहीलियजालरंघनिहारिके ॥ १२१ ॥
 लरवारिनागिनेजैतकीबिसमोहसत्रुनकोदयो ।

दलजुद्धजाव प्रबुद्धै नृप ताव तोरन लंघयो ।
 निकसाय स्यामिय संकरै वनि ओद तोरन पै अरुयो
 । वजिह करन धमचक्रयो विनु मत्थ जै तलरुयो
 परयो ॥ १२२ ॥ परि बीर सत्रह संगके दलजाम
 इकासुरु कयो । लरि जोधकै परि जोध ऊरुज स्वा
 मिरुन सब बुद्धयो ॥ लाहोर पइति भूपक ठिक
 छवाह जनपद संक्रम्यो । इत जीति संगर धीरस
 यद जोर दिल्लीमें जम्यो ॥ १२३ ॥ किय साहना
 मरफील दोलामास छह बिचसो मरुयो । तब ओर
 किय दुवमास बिच तजि सोह संवर संचरुयो ॥ त
 ब किय मुहुम्बद साह साह सुबाह सय्यद की भई
 । यहयोँ चहायन मैँ साहन धापि दिल्ली मुग
 ई ॥ १२४ ॥ ष० प० ॥ सक बसुरवट हय इंद्रु
 १७६८ मरिग आलन ओरंग सुव । गुन ह तरि
 हनि मोल दीन पारु कवट पट्ट । किय मरिग देव

सुताहिहनि सकचउहत्तारि ॥ पचहत्तारियहमर
 तप्रवर कियसोदुगयोमरि । सय्यदवजीरपुनि
 मंत्रसजिआलमनातीजानिजिय । तक्कतरफी
 लकदरहतनयसाहमुहुम्मदसाहकिय ॥ १२५
 ॥ दो० ॥ सकसरहयसत्रह १७७५ समय । सय्य
 दय्यपिसुलाह ॥ पुरदिल्लीकेपहपर । धस्योमुहु
 म्मदसाह ॥ १२६ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा
 चंद्रसूर्ये दक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहच
 रित्रेपंचविंशोमसूखः ॥ २५ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
 प० प० ॥ इतकूरमसुहआयसेनसय्यदडरस
 जिय । लिखितरामपुरपत्ररानअंतिकमुहु
 लिदिय । मुलकरामपुरदक्षिअमलमंडहुहुत
 अथन ॥ दलपुनिसजहुदुरंतमंतबलवंतथ
 थिमन । हमसीसधातसय्यदतकतआतता

यिदलदर्यप्रति । जोपरहिं कामतो इतसज्जव
 पिह्नुदलचित्तोरपति ॥ १ ॥ दो० ॥ यहकहा
 यसजिदलअतुल । इतकूरममतिमान ॥ गाम
 सुटोडाभीषकैँ । दिन्नैँ आनिमिलान ॥ २ ॥ इहिं
 अंतरकूरमसुन्यैँ । दिस्त्रियजामिपजंग ॥ लंघि
 पहरवदअसनलिय । पुनिसुनिकुसलप्रसंग
 ॥ ३ ॥ दि स्त्रीतैँ इहिंविचनिकसि । रनकरिबुंदि
 यनाह ॥ मिलियअनिजयसिंहसौँ । दोडाअ
 धिकउछाह ॥ ४ ॥ कोटापतिअमैँलियउ ।
 सोपुरमुलकछुराय ॥ इंद्रसिंहसोपुरअधिप ।
 निकस्योप्रानबचाय ॥ ५ ॥ गोरबंसअवतं
 सयह । सोपुरपुरअधिराज ॥ आयो मिलिबुंदी
 ससौँ । कूरमदिगभुवकाज ॥ ६ ॥ उद्दुरः ॥
 इतउदयपुरपतिएस । संग्रायसिंहनैँस ॥ पुर
 रामपुरलहिपत्त । सजिसेनपिस्त्रियतत्त ॥ ७ ॥

तिनरामपुरलियघेरि । कियरारिखगगनखेरि ॥
 तबरामपुरनरनाह । संग्रामसिंहसचाह ॥ ८ ॥
 करबंधिनैरबिहाय । पयसानलगियआय ॥
 तबरानलखिनतएस । दियमंडिअद्वहदेस ॥
 ९ ॥ लहिअद्वभुवतबरव । दुबरानकोउमराव
 ॥ भुवअद्विद्विनियरान । धितचारिपुरजुतथा
 न ॥ १० ॥ जिन्कोदजीरनद्रंग । सजिकुकुटेधर
 संग ॥ लियनैरमीमचिनाम । कियतत्यसेनमु
 काम ॥ ११ ॥ भुवअद्वलैइमरानदियफेरिअ
 प्पनअपान ॥ भुवअद्वपतितिहिंरदिव । लिय
 बंदगीरसचकिव ॥ १२ ॥ खटसत्तहयइक
 १७७६ मान । लियरामपुरइमरान ॥ इतजेर
 सय्यदकिन । गहिहत्यदिल्लियलिन ॥ १३ ॥
 निजपतिमुद्रुमदसाह । ताकीनकछुजियचाह
 ॥ कोदेसअरुमरुनाह । कियदेदुबुल्लिसुलाह ॥

॥ १४ ॥ तुमजायनिजनिजदेस । सज्जङ्घनीक
 विसेस ॥ रवगमारधारनरेरि । लैहैं बकूरमधेरि ॥
 १५ ॥ दुवसालजामियमारि । अप्पैर बुंदियधारि ॥
 रहिहैं निरंकुस होय । पिच्छै न कंठककोय ॥ १६ ॥
 मरुईस सुनियहवत्त । मरुदेस आयउमत्त ॥ लमि
 सेनसज्जनअंध । कइवाहसीसकबंध ॥ १७ ॥ इ
 तमीमभुमिउमंग । ब्रजआयगोकुलद्वंग ॥ गुरु
 गोकुलस्थ विचारि । लियमंत्रबल्लभधारि ॥ १८ ॥
 दो० ॥ बल्लभमतचहि मंत्रलहि । रजततुलाकि
 यदान ॥ इवसेवक ब्रजनाथको । कोटापतिबहु
 वान ॥ १९ ॥ पादाकुलकम् । कृष्णादास निजन
 मकहायो । नंदगामकोटालिखवायो ॥ सेरगढसु
 थपियवरसानो । इननामनअवहार चलानो ॥
 ॥ २० ॥ कोटकोटअंतरकोटापुर । कियब्रजनाथ
 निवेदितआतुर ॥ दानरुद्धिजमेजनबहु कियो ॥

चिकनमां हिर हनों पुनि निन्नो ॥ २१ ॥ दुस्योकि
 लवडेरनके प्रंदर । बाहिरनाथो पंद्रह वासर ॥ रोग
 रोग कहि मृत्यु उडायो । कोटापुर सुनिसेक प्रधा
 यो ॥ २२ ॥ माधानी मिलिचाहि जुद्धचित । सावधा
 नकोटा किय सज्जित ॥ द्वारन अरलगाय थीरधु
 व । बुरज बुरज सिर मरन मंडिहुव ॥ २३ ॥ जान्यो
 मृत भीमहिं सुनिअहें । बुंदिय कटक छिनिगढ
 लेंहें ॥ सोहि मई साल म सुनिधायो । लुटनकोटा सु
 लकलगायो ॥ २४ ॥ दिखीत नृप साल बिहत्तरि ।
 साल म पठयो मुख्य सचिव करि ॥ इहिंत बन्ने सो
 राज अवेस्यो । फिस्यो समुजि विनु फेस्यो फेस्यो ॥
 २५ ॥ अबयेंहें साल बहत्तरि अंतर । मृत मृत सु
 निभीमहिं बालिसवर ॥ बुंदियतें चढि बेग कुबुडी ।
 रुपि साल मकोटा धरुडी ॥ २६ ॥ विनु नृप आय
 सद्रोह बहायो । मार लूट करि फैल मचायो ॥ सुसु

निभीमगोकुलसनचल्यो । गिनिसागसमुच्चतक
 रघल्यो ॥ २७ ॥ कोटापुरफत्तो निसबेला । द्वारआ
 यसुभटन दियहेला ॥ रकुल्लहुअररजियतहमआ
 ये । प्रातसबहिकरिहैमनभाये ॥ २८ ॥ यहसुनि
 अजबसिंहमाधानी । प्रेमसुवनबानी पहिचानी
 ॥ हसितबआयउद्वारकन्हहराअररखुल्लिभूप
 हिंलियअंदर ॥ २९ ॥ बंटियघरतबकुसलबधा
 ई । इमसुभीमवहरत्तिबिताई ॥ प्रातहिकदकअ
 चानकसज्यो । गहिगुमानसालमसिरगज्यो ॥
 ३० ॥ पुरआटोनिहुतोवहसालम । पहुंच्योभीम
 जोरिदलजालम ॥ सालमदलहिंपिकिवदित्यर
 सह । सबनसुनायभीमअकवीयह ॥ ३१ ॥ लवंग
 मम ॥ सालमदलबहुसज्जिमुलकनिजमारयो ॥ अ
 प्पनअबइहिंसेतलरनललकारयो ॥ बुढनिय
 तिबलवानतलोहसजितिहै । कोटापतिसकुदंब

नतोयं हं विन्तिहें ॥ ३२ ॥ दि० ॥ अर्जुननातीहड
 हो। पुरबडोदपतिपास ॥ तिहिं अकवीनृपमीम
 सौं। उलदीयहकिमआस ॥ ३३ ॥ भीमकहियजि
 लैविनीं। अप्पनजिबतरहें ॥ अप्पनबिजुयहड
 ग्रहै। लैहें बुंदियअन ॥ ३४ ॥ यहकहिबाजिनब
 यालै। पस्योभीमपविपात ॥ खरकोननमनुचुणत
 रिदन। घल्लीसिननथात ॥ ३५ ॥ मरुभाषा ॥ डिंग
 लभापेत्येके ॥ अस्यत्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धंगीतना
 यकमरुदेशीयं छंदः ॥ गीतेष्वपिसुप्रसोगीतः ॥ धूम्र
 ल्वागैर्लुभाणोंडाणोंसंपातिरूपराभडोंलेतांलाणों
 बागैर्भूपरालगीलीहअधायोरबागैर्बीसभागै
 ऊपरअप्रायोसालमेसनागैर्धूपराभीमसीहघटा
 बीजघादकीउतोलैरवागोंबीरघांचैरदात्रंबादकी
 बागोंघोलैनागोंराडिदेकावीराघरैघटाविहंग
 रादकीदोलैफदासेनालिरोलेकादकीफाडिका

डि ॥ डाँणां प्रोक प्रोक जांगी जैतरा रुडाया डाकी
 तोक चं चं केवाणां । बुडाया वीर ताल पाँणां जोक सं
 प्री प्रसं रों के उडाया प्राँणां बाँणां सोक परवाँ के उडा
 या बुँदी वाल काटी पूँ छं डाले कि सोर दू जै दाटी को
 पिसेना फटा फाटी मैक टार पंजाँ साजि बैन तेय भी
 मरी रूपा दी तैय प्रामें वं चै रेगी जोगी रामरो नपाटी
 गया भाजि ॥ ३६ ॥ प्रा० मि० ॥ दो० ॥ प्रहिसाल
 मद्रमभा जिगो । फोज फटा लु फटाय ॥ ब्याधिस
 हत कृमि बेर की । प्रतिजव बुंदिय प्राय ॥ ३७ ॥
 कोटे सहु द्रुत पि द्विलगि । लिनी बुंदिय घेरि ॥ सठ
 साल मइ क दी हलरि । गोमजि प्रायु धगेरि ॥ ३८
 जायो जुगिय रामको । प्रायो नगर कलाय ॥
 कोटापति इत लु हकरि । बुंदिय दिन्न जराय ॥
 ३९ ॥ फगुन बिसद चउ त्थिस क रस हय सत्र
 ह १७७६ मान ॥ बुद्धि भीम बुंदिय लई । इमके

रीनिजःप्रान ॥ ४० ॥ सबहिदेसबुंदीसको।
 अडरभीमप्रपनाय ॥ लूटमाहिंबहुद्रव्यलै
 इमपुनिकोटाःप्राय ॥ ४१ ॥ पादाकुलकम्
 ॥ अवरहुभीमदेसबहुचिनें। चउदहसहंस
 गोंमनिजकिनें ॥ अगोंलिखितकूरमहिं
 प्यो। सोसबलुपिलोमहियथप्यो ॥ ४२ ॥
 हुलसिहअकिखयसुभटनहित। अबब्रजना
 थकरहिंसबहुच्छित ॥ रनजयसिंहबुद्धलरिया
 रहिं। वसुमलिःप्रानअमोघविथारहिं ॥ ४३ ॥
 इकपुत्रहिंबुदियगढअप्यहिं। थिरइकूहिंकोटा
 गढथप्यहिं ॥ इकसुतहिंसोपुरगढदैहें। हमउ
 ज्जेनराजअबलैहें ॥ ४४ ॥ तदनंतरसय्यदप्र
 तिकगार। पढयोद्रुत लिखिभीमअप्यकर ॥ इ
 तदलसजवसज्जिहमःप्रावत। उततुमःप्राव
 हुकूदकःप्रावत ॥ ४५ ॥ पकरिबुद्धजयसिं

हविपकरवन। लैहैपहुमिमारिभटलकरवन।। य
 हलिरिबसंगरभीमउमाद्यो। चमुसजिसहंसवी
 सजयचाद्यो ॥ ४६ ॥ दो० ॥ इतसय्यदसोंसि
 कवलहि। अजितसिंहमरुप्राय ॥ जहंसुभट
 नएकत्तजुरि। अकियमंत्रउपाय ॥ ४७ ॥
 ष०प० ॥ मिसलअहुउमरावजबहिरद्वोरइक
 जुरि। अजितसिंहप्रतिअकिवअनयकिनों
 तुमअंकुरि। कूरमपतिसोंतोरिअप्यसय्यदचा
 द्योउर ॥ अजगईअमैरकलिहैहैसुजोधपुर
 स्वामिकोंमारिसय्यदसबलकानिनरकरवहिअ
 प्पनी। तसमातजौरिजयसिंहसोंधन्वपहुमिर
 करवहुधनी ॥ ४८ ॥ दो० ॥ कूरमसोंसगधनवि
 रचि। मरुधरबुल्लहुताहि ॥ रुचिरसुताअबरा
 वरी। विधिजुतदेहुविवाहि ॥ ४९ ॥ मरुपति
 सोंयहमंत्रकरि। पठयोसुभदनपत्त ॥ नहुधरम

रु. वं. भा. बु. च. कलीजखांकी दिल्लीपरचढाई २४६ मयखः २६

मसजिकवचधारनकरि । बरदुलहनिरहोरि
लईबरि ॥ ५६ ॥ दो० ॥ इकनबाबकलीजखं
। इहिअंतरलहिकाल ॥ दकिवनसन आथोदु
सह । दिल्लीपरचिजाल ॥ ५७ ॥ ष० प० ॥ इ
सनअलीसय्यदवजीरसुनिरहबंदिजर । नाम
दलावरदानसुगलपिह्योपतिहिउपर । नरउ
रपलियजसिंहसंगसहसेनदयोसजि ॥ कोटा
पतिप्रतिपत्रत्वरितलिरववायगब्तजि । मार
इकलीजरखानहिंमरदखानदलावरसंगरहि
जयसिंहजेरपिह्येकरहिंयहकरिजेरकलीज
अहि ॥ ५८ ॥ दो० ॥ सुसुनिमीमसिरधुवि
के । दियदलअधिकबुराय ॥ जान्योतपजय
सिंहके । अंतअप्यनोअथाय ॥ ५९ ॥ बुडूबीर
नसंगले । तबयहभरनविचारि ॥ समुहरखान
कलीजसो । रचनचलोअबरारि ॥ ६० ॥ रखा

नदलावरभीमप्ररु। नरउरपतिकवचाह॥
 दरकुन्दनचलिभितये। सत्रुनसबलसिपाह॥
 ६१ ॥ मेकलजकिपारइक। तटिनीकोढीनाम
 ॥ तीननखानकलीजसौं। सजियतत्यसंग्राम
 ॥ ६२ ॥ य०प० ॥ सल्लीजुरिदुवसेनहुलसिजु
 ज्जनबढिहल्ली। कादंविनिचल्लीकिवाढयम
 कतधनवल्ली। दिद्विजुरतहयदपटिमिलेरन
 रसिकमहाभट ॥ तबवज्जिगतारवारिभीरुभ
 जिगवटउबट। गिह्निनिचानसंकुलिगगन
 रविमयूरवप्रवरोधकिय। खुरतारमारजवधार
 रदुदिसदिसपुहविदरारदिय ॥ ६३ ॥ लगो
 जिमजिमलोहछोहतिमतिमउरछायो। धायो
 जिमजिमधीरवीरतिमलिमप्रकदायो। जिम
 रवादितजैपालमथलअन्ननहुतदुज्जर ॥ इम
 कलीजदलअतुलमथ्योसायुधसयसंभर।

हैदराबादभटबहुलहनि । चिरप्रच्छरिरसच
 करवयो । भूपालभीमकोटेससिररुद्रमालननर
 करवयो ॥ ६४ ॥ हृत्पीभज्जतहृत्चक्षुहृत्पीहृत्वर
 रयचंचल । हृत्कहतपयचारवन्धोरवयकारम
 हाबल । तोमरतुहततेगतेगतुहतकरिकलिय ॥
 कलियकहतकरदशोरक्षतियप्ररिघतिय । दे
 रयो कलीजजीवनदुल्लपमिलतभीमभद्वबुदि
 र । जिमजिमस्वसीसरजरजरचिय तिमतिमधु
 न्नियसंपुसिर ॥ ६५ ॥ दो० ॥ मुनिहृत्सत्तरु
 इक १७७७ सक । जेठरुपुसिमदीह ॥ पर्योद
 लावरखानरन । सहितभीमगजसीह ॥ ६६ ॥
 नरउरपतिजाजवभज्यो । पर्योइहांतजिप्रान ।
 मारिहजारनभीमजिम । पर्योभीमचहुवान ॥ ६७
 ॥ ष० प० ॥ सुनिकोटापुरभयउभीतमरताहिनि
 जभूपति । थाइभ्रातभगवानहुतोबुंदीसुजानि

शु. नं. भालु. च. हुसनअलीकोजयसिंहजसोंदेष २५२ मयखः

हति । बुंदिय बिच बुधसिंहअनफिरवायसोधि
उर ॥ अणनसब धाना उवायअयउकोटापुर
। सुनिखवरिएहमतिमंदसठ सालमअयऊला
यसन । वनिमचिवमुख्य बुंदिय बुदुरिराजका
जलमोकरन ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ तनयतीनवृष
धीमर्क । जेठोअर्जुननाम ॥ अमररानभानेज
यह । तबमूपतिहुवताम ॥ ६९ ॥ स्यामसिंह
अथमसुवन । लघुसुतदुरजनसाल ॥ राज
लोभनिसदीहरखि । कहतरहकाल ॥ ७० ॥
ष० प० ॥ हुसनअलीदूतसज्जिछोहदूरमसि
रधायो । साहमुहुमदकोचढायअमैरचलायो
। सय्यदअतिवरजोरसाहदुम्भनइहिंकारन ॥
चिंततरहतउपायमनिनिहचैतिहिंकारन । त
दनामसुहुमदरकानइकदरानीतक्योभवलार
चिपंनसाहतासौरहसिमायोसय्यदछेदिछल

॥ ७१ ॥ दो० ॥ लब पच्छे दर कुंच करि । हुसन अलीकों मारि ॥ बनित्तंत इम साहह । पुर दिलिय पगथारि ॥ ७२ ॥ बरस ती न नृपकै बच्यो । याव तसिंह कुमार ॥ चुंडा उति उर प्रथम भो । एप्रसिंह सुरवकार ॥ ७३ ॥ हुमर बधाई जो धपुर । पत्तीस मर पास ॥ जयसिंह हुत त्यहि सुन्यो । सय्यद सत्रु विनास ॥ ७४ ॥ सुनत कुंच जयसिंह किय । बिनरयो सय्यद बैर ॥ सोपुर बुंदिय नृपन सह । आयो पुर आमैर ॥ ७५ ॥ संभर किय दुंढा हरहि । बसवानि बसथ बास ॥ अनाहू त जयसिंह गो । साह मुहुम्मद पास ॥ ७६ ॥ अहु सलहय इक १७७८ सक । चित्त महार करि चाह ॥ अकबर पुर सूबा दियउ । कूरमप तिकों साह ॥ ७७ ॥ फदतिका ॥ पुनिकहिय साह कछवाहराय । क्यों नां हिं अत्र बुंदी सअ

य ॥ जयसिंह कहिय सालस नरेस । आबाहर
खल पुनि नहिं आसेस ॥ ७८ ॥ कोदिसमीम
करि जोरदाय । बारां मऊ सुलिनै छुराय ॥ बिन्दु
खरच नौहिनि बहत प्रबास । जर कोस सत
हिहुवन दूजास ॥ ७९ ॥ सतपंच सुमटसादी
सुमंत । मस संग दिय सुहाजरि रहंत ॥ सुनि
साह दयो अपर रयनि वारि । औसी आने कदिय
दुष्मटारि ॥ ८० ॥ चूडा मनि सुत मुहुकस ज
द । इन दिन न बुद्धि रिलगो कुबह ॥ करिल्ल
मुलक सिरया लिघत । मरुई सरन मरुदेस
पत ॥ ८१ ॥ जयसिंह बदन जही रहैत ।
बहु भुवदिवाय सुहनि समेत ॥ हैसाह हितु
मुहुक महशाम । यालें पलाय गय धन्धाम ॥
८२ ॥ लबसाह कहाइ नरेस । आतुर गहि
भेजहु जहरास ॥ मथ्यो नहुक मयह मरुगही

स। रचिसाह मुद्रुम्भद सुनतरीस ॥ ८३ ॥ इत
लहिप्रमाद अलस अनंत। बुंदीसगामबस
वाबसंत ॥ तँहँ किय अनीतिलोकन अपार।
दबिय अनेक परकीयदार ॥ ८४ ॥ ताडनरुलू
टतर्जुनबिधाय। पत्तनप्रजासुकियदुरित्त
प्राय ॥ पुरजनसबलहितबदुरव अपार। कू
रमप्रतिदिल्लीकियपुकार ॥ ८५ ॥ सुनिक
हियभूप कूरमहसंत। बसवासुगाम अपबहू
बसंत ॥ कहिपुनिवेजामिप अस्मदीय। सह
नोंसमस्तदुकवहुगरीय ॥ ८६ ॥ तुयमोंहिं
अबहुजोपरहित्रास। तोकहहुजायबुंदीस
पास ॥ ममदिगजो अँहोबदुरिभज्जि दिँहों
निकासितोताडितज्जि ॥ ८७ ॥ यहकहि
पुरवासिनसिकवदिन्न। कूरमद्रमजामिपहि
तहिकिन्न ॥ मन्योनहुकमडतमरुनरेस। बल

सजिप्रसाहतिहिं सिर विसेस ॥ ८८ ॥ मरुपि
खिद्वदुदुरखानमीर। पिह्योपुनिकूरमपति
प्रवीर ॥ इमदुवचलायमरुदिसप्रमान। मरु
पुहुसुनिसमुहदियप्रयान ॥ ८९ ॥ मयखररु
रबनिमरुमहीप। सजिआयमनोहरपुरसमी
प ॥ इतलससेनमारनउपाय। जयसिंहबहा
दुरखानआय ॥ मरुइसअतुललरिवसाह
सेन। सजिगोतजिडेरनप्रपुप्रैन ॥ सकुअं
कसतहयइइ १७ ९३ बीन्। रनछोरिलगाई
मालिनीच ॥ ९१ ॥ सुनिसाहकटकअति
जवचलाय। रद्वोरविभवलियनुहिआय ॥
संभरविनुकहुलरतहुसुन्योन। मजिमजिगो
संभरछोरिभोन ॥ ९२ ॥ अगौजबअपलमगो
चलाय। अल्हनपुरलगी। पयनआय ॥ पुनि
अमरुखानकरलिरितदिन। सोमेदिसाहजा

मात किन्न ॥ ६३ ॥ अरु बहुरिसय्यदनमिलिन्न
धम्म। जामात साहहनि किय कुकर्म ॥ पुनि अरु बहुर
तीयरन समय पाय। पृतना तजि कानर गोपलाय ॥
॥ ६४ ॥ जयसिंह बहादुर लगिय पिदि। इनरचिय
मंत्रगृहजायनिदि ॥ रघुनाथ सच्चिदरद्वोरसर्वामि
लिकहिय राजगय अण्यगर्ब ॥ ६५ ॥ अरु बंभिपर
दुअरब साहपाय। जोयहन देहु कुमरहिं पठाय ॥
भटसचिव मंत्र इमत ब विचारि। जयसिंह नरे
सहिं वीचडारि ॥ ६६ ॥ सुत अण्ययासिंह पहप
सामत्य। पठयोपुर दिखिय कुम्भ सत्य ॥ रघुना
थ सच्चिददिय संगताम। लहि साहजाय बल किय
सलाम ॥ ६७ ॥ गृहजाहु कुमरसह कहिय साह
। आवत हम मड कुरन उवाह ॥ तज कुम्भ कहिय
यह गिनत अणन। याको न दोस जन कहि अणन
न ॥ ६८ ॥ पुनिकहिय साह जोयह अणन। तज

नकहनुहु तमहम प्रसन्न ॥ यहसुनिउबावक
लनाहरीस । इहैज्जुकमधरिहै सुसीसा ॥ ९९
॥ प्रह्लादएहलुमहरिप्रमान । मरुपतिहिरल्य
कसिपुवसमान ॥ यहसीससाहसेवनबहंत ।
चितजनकहहिंनयातिनहंत ॥ १०० ॥ प्रह्लाद
बलकूरमसुनाय । इमअभयसिंहहितरिसउ
डाय ॥ कहिसाहहमहिंजोगिनतईस । सुततो
अवअनहुजनकसीस ॥ १०१ ॥ रघुनाथस
चिवकियअरजतत्य । सबकरहिंषायअप्रायस
समत्य ॥ डेरनबहोरिलियसिक्वअप्राय । दल
अभयसिंहपठयो लिरवाय ॥ १०२ ॥ निजअ
नुजआतबरदतेसनाय । तिहिंप्रतिउदंतसब
लिरियताम ॥ यहमिअजनकसिरकुपितअ
ज । लैहैउतारियुवअवरज ॥ १०३ ॥ लहिरा
जसोवजोचहतलाल । तोआतहनहुजनकहिं

उताल ॥ देहोंतव तो कहें अछ देस । नागोरपुर
 पकरिहों नरेस ॥ १०४ ॥ बखतेस मुद्धयहपत्र
 पाय । जनकसुनिजमाख्ये सुद्धजाय ॥ हाकारजो
 धपुरनगरहोय । रनवासअचानक उठियरोय ॥
 ॥ १०५ ॥ सुनिमिसल अहुउमरावरह । गहि
 तेगकुमर विंद्यो स्वगेह ॥ बखतेसभीत तव
 नतिबिधाय । दियअभयसिंहकगरदिरवाय
 ॥ १०६ ॥ गिनितव समस्त यह मंत्रगूढ । अब
 कियनरेसचितिका अरूढ ॥ नाजरनसहित
 सुद्धांतनारि । वितिअग्निभस्यहुव असिय
 च्यारि ॥ १०७ ॥ सकगगन अहुहदइका ७००
 साल । यहखबरि मईदिखियउताल ॥ सुनिरी
 मिमरातव बखसिसाह । कियअभयसिंहमरुदे
 सनाह ॥ १०८ ॥ अरुकहियरज्यजमवायजा
 य । पुनिआवहुसेवनमोदपाय ॥ मरुपतिउवा

चलनायप्रत्य। नागोरदेतमेंअनुजप्रत्य॥
१०६ ॥ सोसुभदमोहिनाहेंदैनदेत। करिलि
रिदलप्रपपुननुनिकेत ॥ राजाधिराजपद
नाहिंदेकु। अण्डुनिदेसकारिमहरएहु ॥ ११०
॥ अण्डुअभयसिंहकाहियत्वप्राय। पुनिदियउ
साहिलिरिलसुपदाय ॥ राजाधिराजउपपदस
मेत। नागोरदेहुअवतेसहेत ॥ १११ ॥ यहसुनि
रदोरनलजियदेक। काहियदिनपरुपतिमरुकि
तेक ॥ हनिअजितसिंहपितुहुहिहीन। इअब
खलसिंहनागोरलीन ॥ ११२ ॥ यहपकुमारगज
सिंहजाम। हुवअभावीरअमरेसनाम ॥ नृपहु
हसिंहनागीकुतास। सोकारतपहुनागोरदास ॥
॥ ११३ ॥ नृपअभयसिंहताकहेंनिकारि। नागोर
रहुअण्डुनाहेंनिकारि ॥ इतकुम्भसाहसेवनवि
प्राय। ताहिसिंकरअहहुअभिरप्राय ॥ ११४ ॥

आमैरदुतोबुंदीनरेस। पुनिकियउभूपकूरम
प्रबेस ॥ मिलितबहिसालजामिपसमोद। वि
रचियदुहनकतिदिनविमोद ॥ ११५ ॥ दो० ॥
सकससिबसुसत्रह १७८१ समय। कहिबुद्धि
कछवाह ॥ विरचदुराज्यप्रबंधतुम। बाहमरच
हिंसुलाह ॥ ११६ ॥ विबुप्रबंधआलसबहत
। रहतनसुरपुरराज ॥ कहतहोतबुंदियकुनय।
अहप्रतिमहतअकाज ॥ ११७ ॥ बुंदीपतिअ
कियतबहि। अच्छीकरदुविचारि ॥ पठबदु
कोऊनीतिपदु। सबजोकरहिंसमहारि ॥ ११८ ॥
नाथाउतनगराजतब। नृपमातुलकुलजानि
॥ पठयोवहकूरमसुपहु। बुंदीविबिधबरवानि
॥ ११९ ॥ आयलंधिरकर्योनृपति। द्विगुनख
रचनिजसत्य ॥ सबमेठ्योनगराजसो। अदि
परिवज्योदुमअत्य ॥ १२० ॥ कछवाहीसेवनक

रत । श्रीहरिमूर्त्तिसुमंत ॥ कउलभूपवरजतकुठ
त । तदपिबदेकतजंत ॥ १२१ ॥ पतिपतनीकैया
हिपर । बनेनहितकीवत्त ॥ हडुनलोपैतियुक्त
म । तदपिकउलमतरत्त ॥ १२२ ॥ अर्गैनवहय
सत्तइक १७७६ । कळ्वाहीयहकिद्ध ॥ लैसाल
पसौसचिवपन । निजअनुचरकौदिद्ध ॥ १२३
॥ रामनामनिजदासइक । सोकरिसचिवसुभाय
॥ इमरानीपतिइकमविनु । रहीराज्यअपनाय
॥ १२४ ॥ अद्धरवरचकहतलग्यो । नाथाउतवि
रवरूप ॥ रानीप्रतितबशीतिरत्ति । भारवीबुंदि
अभूप ॥ १२५ ॥ निजअनुचरप्रतिलिखहुनुम
रनकरिरकवहुगेहु ॥ नाथाउतनगराजकौ ।
द्वंगनप्रबिसनदेहु ॥ १२६ ॥ रानीइसमुकीतब
हि । रुक्काहिंमोरनिदेस ॥ सोकरिहैनगराजजो ।
कहिहैकुम्भनरेस ॥ १२७ ॥ यातैअनुचररामप्र

ति । दियलिरिपत्रपगय ॥ ननसौपहुनगराज
 कौं ॥ अप्पनगृहव्ययप्राय ॥ १२८ ॥ तबबुंदिय
 नगराजतिन । दिन्नौप्रबिसननाहिं ॥ महुंरछाप
 शिंहिनकह्यो । अधिपनिदेसनप्राहिं ॥ १२९ ॥
 तिनहिंदिस्त्रिनगराजतब । प्रबिस्योबुंदियप्रा
 य ॥ राजकाजलगोकरन । बूतनछापघराय ॥
 १३० ॥ प्रायरवरचसबलिरिलियउ । खंधावा
 रसम्हारि ॥ स्वामिसमुम्बुधसिंहकौं । बिगरत
 लिनसुधारि ॥ १३१ ॥ द्विगुनवरचमेटतकिय
 उमातुलपरनृपरोस ॥ अच्चीमैउलटीसमुम्बि ।
 दियकूरमसिरदोस ॥ १३२ ॥ इतद्रुतजामिपरा
 ज्यको । करिप्रबंधकछवाह । दरकुंचनदिल्लिय
 गयो । सबिनयभिन्द्योसाह ॥ १३३ ॥ तदनंतर
 मरुईसहू । जयनयराज्यजमाय ॥ दिल्लियभिं
 द्योमुगलद्रुत । साहमुहुम्मदप्राय ॥ १३४ ॥ कूर

कमलिनरुपति कहिय । मममदप्रतिमस्तिर ॥
जामदेत नहिंराज्यजुरि । कुरहुअप्यमचदूर ॥
१३५ ॥ पद्यो कुरमजेधपुर । तबनिजकदकखता
ल ॥ रद्वारनससुमायरहि । कहुयोतहं वहुकाल ॥
१३६ ॥ हुतेभूपजयसिंहके । सुतादेयसुतदोय ॥
सुनहुसामन्युपनामतिन्ह । सावधानदेतिहोय ॥
१३७ ॥ ज्येठोसुतसिवसिंहजो । मार्योजनकप्र
मत्त । अतुजहंखरीसिंहतस । तातकथितकर
लत्त ॥ १३८ ॥ सुताविचित्रकुमारिइक । वृजी
कृष्णकुमारि ॥ सुपदुरानसंश्रामकी । जामेयोनि
रधारि ॥ १३९ ॥ मयोविचित्रकुमारिको । बयउ
पयमअनुसार ॥ जानिजनकजयसिंहजस । रवि
यव्याहव्यवहार ॥ १४० ॥ अमयसिंहमसईस
सो । करिसगमनकछवाह ॥ सामथीकियउदि
लसब । नयपदुजेपुरनाह ॥ १४१ ॥ सिक्कवतद

हिलहिंसाहसों। दुवनृपमथुराआय॥ अंतहृ
 रआमैरतैं। लिन्नौं सकलबुलाय॥ १४२॥ सक
 ससिबसुसत्रह १७८१ असित। अट्टमिमहृबि
 चारि॥ तनया व्याही मरुपतिहिं। कुम्भबिचि
 त्रकुमारि॥ १४३॥ मातानृपसंग्रामकी। राना
 अमरकलत्र॥ चाहुवानपुर वेदलापति कीत
 नयातत्र॥ १४४॥ सस्सूवहजयसिंहकी। गंगा
 न्हावनआय॥ मुरतमगामथुरामिली। ली
 नीकुम्भवधाय॥ १४५॥ चाहुवानिपिबख्यो
 रुचिर। विहीतनयाव्याह॥ वरनिबिचित्रकु
 मारिनवनवदुल्लहमरुनाह॥ १४६॥ षष्प०
 सस्सूकीजयसिंहकानि किंकरजिमकिन्नी। इ
 कदिनगोकुलजातरबंधसिविकातसलिन्नी।
 इकबंसगाहिअप्यंमरुपकरइकगहायो॥ मा
 तासों गिनिमहतविहितसतकारबढायो। अ

प्यनों गिनुहुमोकोअनुगयहं तीरथ हरिअव
तरिय। पुमदेहुबैठिहाठकुतुलाकरनजोरिहुप
अरजकिय ॥ १४७ ॥ दो० ॥ यहसुनिमहिधौ
अमरकी। बोलीनयमयबैन ॥ दुहितकेबसु
तैतुला। हमकोउचितयहैन ॥ १४८ ॥ रानभा
तजामातप्रति। पुनिअखिवयचितप्रेय ॥
पुलकालिंदीसरितपर। बंधौसुगमविधेया ॥
॥ १४९ ॥ इनतबलिखिदिल्लीससौ। लिनीं
हुकसोयाय ॥ सदिसहंसमुद्रारवरचि। इनपु
लदियबंधाय ॥ १५० ॥ कुमररानसंश्रामकै।
जगतसिंहअभिधान ॥ ताहुकैतिहिदिनतन
य। भोप्रतापकुलमान ॥ १५१ ॥ सुतसुतसुत
कीमधुपुरहि। सुनीखबरिचहुवानि ॥ दिखहा
ठकलकरवनदिजन। सुदतबधार्द्धमानि ॥ १५१
दूरसमतिपठयोतदु। अंतहपुरअपौर ॥

इतपत्नीचहुवानिह। निजउदयादिकनैर। १५२
॥ अभयसिंहजयसिंहए। दुवपुनिदिल्लिय
आय ॥ हाजिरसाहहजूरहुव। लाहबिनयहि
तलाय ॥ ^{१५३}सकहगबसुसत्रह १७८२समयासे
यरिआयोसाह ॥ सोहिकरतदिल्लीससबाक
हतजोहिकहवाह ॥ १५४ ॥ सूबादुवजयसिं
हके। आगरारुउज्जेन ॥ अबसूबाअजमेरको
बहुरिदयोहितबैन ॥ १५५ ॥ मतिमेंनयमेंसं
त्रमें। सबमेंकूरमसेर ॥ बिबुवजीरदखेबहत।
जवनहिंदुसबजेर ॥ १५६ ॥ ष०प० ॥ अभय
सिंहमरुईससुन्योनिजदेसदवरदुरव। सिकव
साहसोमंगिरचियदरकुंबगेहरव। संगदिथउ
जयसिंहसेनवसुसहंसजुतबर ॥ राजामलनि
जसचिवकेरसिवदाससहोदर। कहिजायराज्य
मरुईसकोसजवजमावहुजेरसन। समुजाय

सब किरद्वोर सठ पार हु तुम मरुपति पयन ॥
 १५७ ॥ दो० ॥ अयो मरुपति गेह इम । सत्य स
 खिब सिव दास ॥ इत मे त्यो कूर म अथिय । तँहं
 इक हिंदु न आस ॥ १५८ ॥ दिल्लीमें यह दुस सह दु
 ख । सहि सब कहत काल ॥ गहि गहि हिंदु न ब
 रस प्रति । कर संगत चंडाल ॥ १५९ ॥ बीस दम
 वसु मानसौं । इक अ बसु सौं लेत ॥ जन प्रति
 हेरत रच पचजर । दिन प्रति थो दुख देत ॥ १६० ॥
 पाव कुल कस ॥ दिवा किति तिनमें इक नाथ ब
 । स्वपच और तस काथित कर सब ॥ दिन प्रतिक
 रि हिंदु न हर बस्ती । स्वपच कहै स्वामि हिंजुरि स
 स्त्री ॥ १६१ ॥ हमरी यह रेयत हे नाथ ब । आई हा
 सिल देन इहां अब ॥ तब वह अ किव स्वामि जि
 म उतर । कथित रीति सब हिंदु गहे कर ॥ १६२ ॥
 कर गहि लिरि वंथे दल कंठन । यह लरि स्वपच

तजैँइकहायन ॥ दूजेबरसबदुरिगहिलावैँ ॥ अ
 हप्रतिदंदमदंधउपावैँ ॥ १६३ ॥ हिंदुनहेरतफिर
 तहीनदल । करतरोहिदिनप्रतिकोलाहल ॥ स्व
 पचनप्रनतिकरहिँहिन्दूसब । तदपिदंडअप्यहिँ
 छुटहिँतब ॥ १६४ ॥ दिल्लीयहदिनप्रतिदुस्स
 हदुरव । सबकरदयैँबिनानलहँसुरव ॥ कूरमन्युप
 यहमाफकरायो । लिखितलिखायसाहसनला
 यो ॥ १६५ ॥ लापवजीरकरैँनहिँउदत । बहुतबे
 रसुनिटारिगयोतब ॥ द्विजइकदयाबहादुरनाय
 र । सोजावतदकिवनसूबापर ॥ १६६ ॥ जाकोम
 नसुबसत्तहजारी । तीनअयुतभदसंगतुरवारी ॥
 वासैँमिलिकूरमयहअप्रकवी । रहैँकानिहिँदुन
 तवरकवी ॥ १६७ ॥ कहिद्विजसिकरवकरनह
 मजैँहैँ । तबअपायबलकरिदललैँहैँ ॥ जोवजी
 रसमुहपिलैँदल । तोतुमकरहुसहायखंडिख

ल ॥ १६८ ॥ यह कहि विप्र तास गृह पत्नी । संग
सबहि सुभदन अरु रती ॥ वह कजीर बरखान सु
हुम्नद । हुसन अली सु हुन्यों जिहिं सग्यद ॥ १६९
॥ सुभदन संग संहसन तरानी । इम बरजोर रहै अ
भिमानी ॥ यह द्विज वीर गयो तस आलय । रिकुम
द सु रकेन बडे रय ॥ १७० ॥ दैपय खान सु हुम्नद
गदिय । इहिं दल छाप करहु यह बहिय ॥ लखी
कजीर छाप यह लै है । जोर करै अति बल हनिजे
है ॥ १७१ ॥ इम विचारि पत्र सु छप्ये उन । हदिम
गोत बल दुर बहि दुन ॥ सकयुन अहु सत्त इक
१७२ अंतर । किय बरजोर समुद्र सु कंगार ॥ १७२
॥ यह जय सिंह अरु बकिनी । नागर किलि बंदि
इम लिनी ॥ बहु अैसी किनी कूरम बर । कहिसा
हहिं मिद बाय गया कर ॥ १७३ ॥ ष० प० ॥ कौदि
कअर काद विकद्रव्य विक्रय हिय धारै । अरु क

म=आपन=प्रवलिक्त्रेय निजनिजवित्थारैः। सोहू
साहहिं=अक्विप्रबलमेदीकूरमपति ॥ इमकरि
कित्ति=अनेकसाहसेयो नय सम्प्रति ॥ लहिधर
ममममनुमतसमुक्तिश्रुतिनिदेसकडु=अनुसरि
य। पदुबुद्धिमयो इहिं समयपे कहिहैं दस=अनुचि
तकरिय ॥ १७४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपू
स्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंह चरित्रे
षष्ठविंशो मयूरवः ॥ २६ ॥ ३ ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
दो ० ॥ इतकोटा अर्जुन नृपति। पायोत्रिवरख
पान ॥ स्यामरु दुज्जनसल्लकै। भोभूहितयम
सान ॥ १ ॥ अग्रजस्यामहिंमारिकै। भोनृपदुज्ज
नसल्ल ॥ बुंदीपरदावा बिरचि। हठिसु बिचारत
हल्ल ॥ २ ॥ इतदिलियकूरमअधिप। साहत्रिहा

यनसेय ॥ सकचउवसुसत्रह १७८४ समय ।
आये निलय प्रजेय ॥ ३ ॥ करि प्रमात्यनगरा
जदिय बुंदिय कुम्भपठाय ॥ बुंदीपतिइहिंपरवि
मन । रकवत बिरसरिसाय ॥ ४ ॥ कछवाहीप्र
तिनृपकहिय । अनुजप्रबोधहु प्राज ॥ राजतु
है जो दहनों । तोरकवहुनगराज ॥ ५ ॥ आतहिं
इमरानीभनत । कछोतमकि कछवाह ॥ भगिनी
तुमरी भुम्बिकी । चितनरकवतचाह ॥ ६ ॥ जामि
पअलसप्रमादजुत । अरु तुमरीमतिएह ॥ गेहहि
भूपनबिगारते । बिगार्यो इकहिगेह ॥ ७ ॥ हम
जान्यो बिगारतबिभव । लैहैं अबहुसुधारि ॥ तुम
रीमलिभ्रममांहिंते । हमहुदयोहितदारि ॥ ८ ॥
यहकहिनृपजयहिं हतब । लियनगराजदुला
य ॥ रचसिराहीरागिनी । इहिंपरबुंदियराय ॥ ९ ॥
चुडाउतिउरजोमयो । कुमरपदमप्रभिधान ॥

अमय बसि तिहिं नदिनन । किन्त महाप्रस्थान
॥ नाथा उत कूरम नृपति । बुद्धो विविधरिसाय
॥ राजकाज लग्गो करन । बुंदिय सालम प्राय ॥
११ ॥ कछवाहीसनयाहिपर । कछुप्रसन बुंदीस
॥ बुंदा उतिर द्वेरिसिर । यह हिरहीबनि ईस ॥ १२
दिल्लीसन बुंदीसजब । बुंदा हरथर प्राय ॥ बुंदा उ
तिर द्वेरितब । लिनीहीबुलवाथ ॥ १३ ॥ कछवा
हीके डर दुहुंन । रकिन्न निवाइनी ॥ पतरानीके ब
चन बसि । अप्परहिय आमैर ॥ १४ ॥ ष ० प ० ॥
बुंदी लोकन बहु अनैति आमैर य अकिय । सर
नाजर किस तूरनगर कुतवात्त मणि सिद्ध । पकरि
पकरि पर दारजार बहु तनगा हिर रवी ॥ पार लूव
मचवाय नगर लज्जा सब नरवी सु नि सु नि च
नीति कूरम सहिय कहिय कछु न बुंदीस मति जि
मजिम सही सु ति मति म बुंदा म न न य म चारि म

५

रनप्रति ॥ १५ ॥ दो० ॥ दिनदिनप्रबकूरमदुमन
 । फलोरुष्टु नजाय ॥ अंधुर्बाहजिमकभुअनखा
 रकवीहृदयसमाय ॥ १६ ॥ पटरानीनितप्रतिकरै
 । सेवाश्रीगोविन्द ॥ अन्तररहतउदासप्रवाता
 तैर्दुद्धनरिंद ॥ १७ ॥ चुंडाउतिपरप्रीतिप्रतिरा
 खतगुप्तनरेस ॥ हितअनहितबुपिनहिरहत।
 प्रकटतअंतप्रसेस ॥ १८ ॥ कछवाहीनिजभात
 के। भरतरहतनितकान ॥ कर्मनिरखितुपबुद्ध
 के। कूरमकरतप्रमान ॥ १९ ॥ तालैनुपजयसिं
 हहू। रचिजामिपपरीस ॥ हृदयविचारतअ
 करमै। करिहोकोउबुंदीस ॥ २० ॥ यद्यप० ॥ साहि
 बरसजयसिंहनगरजयपुरवासवायो। सितस
 हस्यदादसियमकररबिलममिलायो। सिलप
 तंत्रअनुसारसवहिव्यवहारसधाये ॥ बारहको
 सविथारविबिधप्रकारबधाये। रचिजुकतिद

ममकोटिनखरचिपुरप्रपुब्रकिर्नोप्रकट। हिंदु
 वसथानदुज्जो नहिनसहरप्रातिबिबकसुघटा।
 २१ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ भुजंगप्रयातम् ॥ विधा
 यैवमग्निपुरदुर्मराजः। श्रुतीधीरिप्रसेव्यलब्धा
 स्मृतीश्च ॥ द्विजेन्द्रान्समाहृत्यधर्मानुगस्तत्सव
 र्त्समश्रेयश्चाविश्वकार ॥ २२ ॥ विधायाम्नि
 होत्राऽह्वराद्येकयज्वा। नियम्याप्यधर्महृषीकेश
 भक्तः ॥ सितारेशदिल्लीशसंस्पृष्टमंत्रः कृतीपु
 ण्यभूमौबभूवाश्रयनामा ॥ २३ ॥ कृतोधीसरव
 र्वानदोराभिधेन। प्रणत्यैवदिल्लीन्द्रसेनाधिपेन
 ॥ महात्मासविशवात्मजः कूर्मराजो रराजारिके
 ष्वय्यमैकोयथाहि ॥ २४ ॥ कामकीडा ॥ तंनवा
 योपेतंस्कन्धावारं सर्वेऽप्यीकुर्वन्। वज्राजश्रीवि
 ष्णुत्रातोनीत्यादिल्लीशो न्मुरव्यम् ॥ आन्वीशि
 कथाधर्मार्थीचिन्नेराज्यदुन्तारिः। योजान्दरंभे

जेध्व्याश्वाशीभिर्जिह्वुमर्त्ता ॥ २५ ॥ नकुटकम् ।
मातिरुडु दारा उल्वणा कुनीति मिश्रहरिः । समिद
तल्लुगर्भवविलङ्घन एकतरिः ॥ जयनयधार्य
कार्यमननार्थ उदग्रगति । भुवियशसाराजजय
सिंह इलाधिपतिः ॥ २६ ॥ प्रा० मि० ॥ ष० प० ॥
इसकूरमजयसिंह हिंदु मिच्छन उपपरद्ववं । जाप
धरमश्रुतिजजनभूरि अर्ध्वर बित्थरिभुव । निंद
तनिगमपिछानिजोरतुरकानप्रजारन ॥ सहर
सिताराधीसमंत्रिबुल्ल्योतिनमारन । साङ्गनेरस
लहितवसमयदिल्लीपतिउपपरदुसह । संधिया
बहुरिहुलकरसुभटपिल्लेदुवदल अमितमह ॥
॥ २७ ॥ दो० ॥ नृपसाङ्गनवलकरदल । सहरसि
लाराइस ॥ पिल्लेहुलकरसंधिया । दह्वनभुव
दिल्लीस ॥ २८ ॥ इनअवरंगाबादलरि । पाहि
लैअमलप्रचारि ॥ वहनागरसूबाअधिपादया

बहादुरमारि ॥ २९ ॥ इतगुज्जरधरजवनइकासर
बिलंदसप्रसाद ॥ सूबापतिवहसाहको ॥ नगर
हमदाबाद ॥ ३० ॥ सुवसुग्रामसत्तरिसैंहेंसा
यसजासअधीन ॥ मरहदुनसोहू मिल्यो ॥ लिखि
पत्रनअघलीन ॥ ३१ ॥ उज्जयिनीअकबरनगर
। अरुफतनअजमेर ॥ सूबानयजयसिंहकौंसो
बुल्लतबलसेर ॥ ३२ ॥ इतरवटकलदिल्लीउदर
। साहमुहुमदसूल ॥ कंटकअरिकजीनकौं ॥ अ
नयअसअनुकूल ॥ ३३ ॥ मंदनपुंसकरतमुदि
त ॥ यौंहीपुनिअनुचार ॥ रत्तकाप्रिसायनरह
त ॥ सचिवहुमंदसमार ॥ ३४ ॥ मोजदीनतैंइ
कसे ॥ भयेपंचदिल्लीस ॥ दिनदिनबोरिकुरा
नदिय ॥ रचिवनबीपररीस ॥ ३५ ॥ इतबुंदिय
पतिबिनयकरि ॥ रचिसालकसनसाम ॥ बिही
हितजयसिंहवरि ॥ आरंभियउपयाम ॥ ३६ ॥

नगरनिवाहहिंदुलिय। रानीउभयबुलाय ॥ सु
ज्जकुमारिजयसिंहकों। प्रथितदईपरिनाय ॥ ३७ ॥

संगानैरक्षीपयह। बुंदीपतिकियव्याह ॥ दायज
बसुत्रयलकवदिय। अधिकदिरवायउछाह ॥

३८ ॥ सकचउबसुसत्रह १७८४ समय। तिथित
पस्थसितआदि ॥ कूरमद्रमजाभातकिय। पतिच

हुवानप्रमादि ॥ ३९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा
चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमशाशौबुधसिंहचरि

त्रेसप्तविंशो २७ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

नाराचः ॥ इतेश्रीनजावदारव्यनैरगनकोहन्यो

। सुनीअवाजकूर्मराजसज्जभीरकोंबन्यो ॥ मन

किमौरमौरकेठनकिअंदुगैगुरे। कुदारनैन्दार

केतुरवारसज्जसंजुरे ॥ १ ॥ चमूहजारअश्रवा

नलैरूपानमानकी। रिसायकुम्भराययोंचल्योस
 हायरानकी॥ बुलैनकीबदोयसेहुलैहरोलहोंकरै
 । कुकैभटालिभीरत्योंरुकैसमीरसांकरै॥ ३॥
 बजैनिसाननादसोदिसादिसानबित्यै। मरु
 कदंसूककीफटाहजारफुंकरै॥ मवासबासआ
 सपासजासत्रासकंपये। चकारचीसकैपुरीसदि
 करीसचंपये॥ ३॥ चलेमतंगअद्विअंगस्या
 मरंगसज्जके। कुरंगफांदकेचलेतुरंगजंगकज्जके
 ॥ चलेदुबाहकेसिपाहस्वामिधर्मसीसलै। चली
 सुतोपसद्वित्योंचटद्वि-वक्रचीसलै॥ ४॥ मिले
 प्रबीरपत्रबाहपत्रआहवेधते। कमानपत्थकेक
 मानपत्थकीनिसेधते॥ भिरेभुवालभुस्त्रियांसु
 भागधेयभेटलै। कहोंनअोजउन्धयोजुतासफोज
 फेटलै॥ ५॥ फरकिकेतुगैनयोंबिजेयबैनबि
 त्यरी। सहायदेनकुम्भसैनरानअैनसंचरी॥

सुनीसुरानकान्त्योप्रयानसम्पुहो कियो। हिले
मिलेदुहुंनरेसहेतदुल्लस्योहियो॥ ६॥ ष० प०
॥ मिच्छनधादिप्रपातरानजनपदजावदसुनि।
पूतनासैहंपचासचंडकौधनजोधनचुनि। आ
मैरोनरनाहपत्तहितचाहउदैपुर॥ दहबारील
गसलआयसम्पुहमुदआदुर। महिपालउभय
हियलायमिलिसुरवसहपत्तनसंचरिग। करिदल
मिलानकूरभरहियसुपहुगानमहलनसरिग॥
॥ ७॥ बी०॥ सकसरवसुसत्रह १७८ पसमा।
लहिकूरमनिजभीर॥ अतिआदररानोंकियउ
हैप्रगामनहमगीर॥ ८॥ इकजाभिपपुनिद
लअतुल। बहुरिबळयो लहिकाल॥ यातैतंहं
प्रतिनअप्रति। भयउरानभूपाल॥ ९॥ इकथा
लकिद्वीअसन। पुहरीलिसबपेलि॥ कछुअंत
तरहितमैनकिय। हियतबहिंदुनहेलि॥ १०॥

कूरमहूकरजोरि कहि । प्रतिनतिकरि पलटाव ॥
 मन्नुहु प्रप्यनसुमटमुहिं । जिमसोलहउजगल
 ॥ ११ ॥ मैइनहूसौं अनुगत । ममहितनहिं मर
 जाद ॥ बिधिसबकेहों बंदगी । पैहों शान प्रसाद
 ॥ १२ ॥ यह कहि कूरमचभरगहि । कियउरान
 सिरउट्टि ॥ रचि अंजलितबरानहू । बरजैनि
 ट्टि हित बुद्धि ॥ १३ ॥ इत्यादिक किय अनुगय
 न । कूरमहितनिकरं ब ॥ जा मिप बिदुरानहुज
 प्यो ॥ अवरनमम प्रालंब ॥ १४ ॥ ष० प० ॥ कू
 रम प्रतिदिन इरू कहिय सीसोद जोरि करे । रा
 मपुरप संग्राम बदलि अबरहत टेक बर । नैकन
 करत निदेस भुमि अड्डी पुनि भुगत ॥ सुनि
 अकिवय जयसिंहवाहि हनिहों रन उद्धत ।
 रामपुर देहु मोकहं नृपति मै सेवन करिहों सुदित
 । कहियहसलाम जयसिंह किय मुलकलै नल

कवचप्रमित ॥ १५ ॥ महासुंदरी ॥ सुनियो
मनरानो रिसानो महाप्रहिप्रस्त छुछुंदरि
हैनो पस्यो । दुबबेर कही हमरो हीदुतो तबदम
त्रिलकवदेलेनो पस्यो ॥ सुनियो हैसलामक
रीजयसिंहनयो तबरानकोनो पस्यो । लिय
साहको सेवजो रामपुरासु कती कछवाहकोदि
नो पस्यो ॥ १६ ॥ दो० ॥ नीतिनिपुनभुवलोभ
लगि । इमकरमतेहं प्राय ॥ लियउरामपुर
रानसो । करिनुतिलिखितकराय ॥ १७ ॥ रान
सचिवकायस्थतेहं । कगरछापकरीन ॥ तबकू
रमगृहजायतस । पाईतीति प्रवीन ॥ १८ ॥ पदु
प्रपंचइमरामपुर । लियउनीतिलगिलाह ॥ ब
दुरिरानसनप्रनुगचनि । कियरहस्थकछवाह
॥ १९ ॥ ष० प० ॥ कहियमंत्रकछवाहइवहिं
दुनसुभदायक । मिदतजानियतमिच्छनिगम

निंदकभुवनायक । कबहुनसुनतकुराननहिंन
कलमां निमाजनत ॥ काजिनउपपरकुदमुद्वन
नजातमहज्जत । रतपानकापिसायनरहतभा
सूकनजानतमहत । विधियथिसंडमोहनबह
तचितप्रपंचकबुहुनचहत ॥ २० ॥ अत्रबिचि
रिहमएह मंत्रिबुल्लतमरहद्वन । सजिप्रपंचति
नसंगवेरि तुरकानहिंदुवन । हेवृपहिंदुगंहलि
अप्यदकळन्नरहद्वअब ॥ मुग्गाइदिस्त्रियमुमि
सचिवहमकरहिंजेरसब । मरहद्वपरमंडहिंअ
मलअप्यनचम्मलिवारइत । यहअकिवबुद्वरि
कूरमअधियबिन्नतिकतिमडियअमित ॥
२१ ॥ दो० ॥ कछुदिनरहि कोतुककरत । नृपकूर
मतिहिंनैर ॥ पायशनसनसिकवपुनि । आयेपु
रअप्रैर ॥ २२ ॥ गोकूरमजबसानगृह । ब्रह्मत
हिबुंदीस ॥ सहकुदुंबअप्रैरसन । रचियप्रया

नसरीस ॥ २३ ॥ द्विजवरगुरुजयसिंहकोरत
नाकरप्रमिधान ॥ कानीखोहसुगामतसादि
नेतत्यमिलान ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ जिहिंरतनाक
रविप्रसुगुनजयसिंहसिखायो । स्मृतिरुनिगम
खटसत्यविबिधनृपधर्मबितायो । चउदहपुनि
चउसद्विकलाविद्यापदुकिन्ना ॥ जयसिंहगदा
रिहजेगाभूसुरजिहिंमिन्ना । धारनकरायसब
कुलधरमकलिभूपनसिरमेरकिय । जिमजिम
अलापकूरमजग्गोअचरिजतिमअहरिय ॥
॥ २५ ॥ विनुत्रिसंध्यजलपानजग्यपंचकवि
नुभोजन । विनुस्मृतीनअवहारव्यातनयविनु
बसुखोजन । द्विजसुपात्रविनुदानध्यानहरिहर
विनुधारन ॥ विनुविधिकालअवायमंत्रनय
विनुअरिमारन । विनुन्हाननिगमपाठनबहुरि
विनुप्रपंचसंगरविकट । इहिंद्विजप्रसादकूर

मइते ननरकवेनिजभुवजिकट ॥ २६ ॥ जबकूर
मजोधपुरचल्यो व्याहननयचातुर । तबसय्यह
डरतकिपुषपठयोअंतहपुर । नगरकरांलीजाह
भूपजदुबंसजासभुव ॥ द्रुगबहादुरदुगाधीर
कव्योसुतत्थधुव । अकरोधसंगहो द्विजयहहुति
हिंतं हं दिन्नो देहतजि । तबकुमतासजेगोनय
भूसुरगंगारामभजि ॥ २७ ॥ गंगारामहुअमिलम
ति । भोद्विजराजसुभाय ॥ बहुमरवत्पकिवजास
बल । बलिजेपुरबसवाय ॥ २८ ॥ निबपशुका
नीखोहतसं । रहियआयडुंरी त ॥ कखवाही
आमेररहि । रचतस्वामिपरीस ॥ २९ ॥ ब०प०
॥ इतकूरमगृह प्रायकालकोबिदप्रपचकिया ।
मरहद्वनछन्नमिलिदर्इअरजीपुनिदिल्लिय ।
रचतदोरमरहद्वलूटमंडतवभलिलगा । जिभि
जहुबलवित्तप्रबलहमलरहिंमंडिपया । सुनि

साहसुच्छि सचिवनसबन उचितमंत्रयहं उच्चर
 हु । कथतादखानदोरांकहियकहतकुम्भजिम
 लिमकरहु ॥ ३० ॥ इतिश्रीवंशभास्करे महाचं
 पूरुदरूपे दक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरि
 त्रे अष्टाविंशो २८ मयूरवः ॥ ३ ॥ ३
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 दो ॥ इतकोटापतिनृपउमंडि । संभरदुज्जन
 सल्ल ॥ पायो कुम्भजुरामपुर । हडि लुह्योरनह
 ल्ल ॥ १ ॥ पा० कु० ॥ पंचअष्टमुनिससि १९८५
 सस्मितसक । इक विग्रहकोटा कुवअपेचक
 ॥ येवाउतहडुभदछित्तर । प्रबलसिपाहबहो
 च्चक दुप्पर ॥ २ ॥ महाशवमदय हैमत्तम
 न । घंटीपतिराउत्तगबधन ॥ कबुक बत्तउप्य
 रवहकोप्यो । लज्जरुस्वामिधरमसबलोप्यो ॥

॥ ३ ॥ कर उर अगलस्यो जोरन करि । तिहिं
 कबंधजयसिंहहिं संहारि ॥ रत्तिनिकसिहड्डा
 सुबडेस्य । रामपुरपसंग्रामसरनगय ॥ ४ ॥ को
 टापतिसुनिग्रहकहाई । सरननरकरवृद्धचारस
 हाई ॥ चंद्राउतसु सुनीनधरीचित । तबधकि
 दुज्जनसल्लचढ्योतित ॥ ५ ॥ हरिगीतम् ॥
 करिहल्लदुरजनसल्लनृपतबरामपुरपरउप्परयो
 । बजिनदमदलहदसदलभदबदलज्योभरयो
 ॥ उडिकेतुदंतिनपंतिपंतिनसिंधुतंतिनल
 गये । नखरालचालनबाजिजालनज्वाल
 नालनजगये ॥ ६ ॥ ठननंकिघंठनघोरत्यो
 रननंकिकोचनकीकरी । सननंकिसत्तिनना
 ससासऊनंकिपकरकरहल्लरी ॥ बिरुदेलबीरपटे
 लकडकमनेतसज्जितसंकमेरनसैनलरिबि
 लगिलैनकेगलंगेनगिहूनकेभ्रमे ॥ ७ ॥ डगम

गिआहूनकूटतूटतसेतुसागरलुप्ययो। दरदि
द्विद्वैभुवपिद्विकच्छपनिद्विनिद्विनरुप्ययो ॥
नउवत्तिनादनबीरबादनचोनिचादनबित्यस्यो
। जिममहसंवरधूलिडंबरएमअंबरउच्छस्यो ॥
॥ ८ ॥ फटकारिसुंदिनमत्तयोनमयत्तपच्छि
नकेकरै। जिनमानपक्षयप्रानगक्षयदाननि
ज्जरनिज्जरै ॥ असवारतोकि तुरवारकेमच्छक्र
चारफिरावहीं। अबलोंसुसिकवतपौनपैवह
गौनरंचनआवहीं ॥ ९ ॥ जिनधारमारभयार
धारहजारभोगपजक्यो। खुरतारअग्रनभु
मिफुहतज्यैउदुंबरपक्यो ॥ १० ॥ खुरलीसु
रिवलहतबीरकेसुरलीसुसिंधुवउच्चरै। किलका
रिजुगिनिसंगहैहलकारिभैरवहुंकरै ॥ ११ ॥
मदभीमलौं निजसीमतेसुतभीमयौं चढिसंच
स्यो। लियघेरिहुंगासुरामपुरदलफेरिसंगर

वित्यस्यो ॥ लगिअगितोपनकालकोपननैर
 लोपनमंडयो। खगिगोरखजालनसौधसालनदु
 गगगोलनखंडयो ॥ १२ ॥ जरिहटपहनबहबह
 नधूमधोरनिधुंधरे। दुरिअोकअोकनसोककैपु
 रलोकसंसयमैपरे ॥ प्राकारगिरिगिरिजातकहुँ
 छिकिबप्रकपिसिरउच्छटैँ। कहुँफुहिखोमन
 लोमगिरिपरिरखानधूरिसुउप्यटैँ ॥ १३ ॥ दगिहाव
 तुहिलदावमंडपग्रावगिद्धनिज्योँवहैँ। प्रासाद
 पत्थरसैरसत्थरहैँथरत्थरकेकहैँ ॥ छकिछिन
 तोपनबूटकेपरिकूटगोपुरतैँगिरैँ। फुल्लिंगफाल
 नजग्निज्वालनचित्रसालनकेकिरैँ ॥ १४ ॥
 छहरातगोलनधमकेछहरातछत्रिनहुहिकैँ।
 छिकिजातछपरछजकेदिकिजातछपरतुहि
 कैँ ॥ अंगारछारअंगारद्वारबजारबीथिनउच्छटैँ
 । नरहैँनिवाननछिज्जिनैरसमीरश्रीरदमलोँस

रौं ॥ १५ ॥ जरिजातपरपरिजातगिहनिडोरितुह
 लं चंमज्यौं । जरिजातकंडनदंडकेगिरिजातकेकि
 यमंमज्यौं ॥ अक्षिधामधामनधुमतेपुंरामवि
 ब्रलकुक्षयो । इतहसुदुरजनसल्लकरिहरवंस
 कसुनकुक्षयो ॥ १६ ॥ हैदैनिसैनिनवीरकेहम
 गीरअहनपैचहे । केदोरिअररनतोरिअगल
 पोरिअगलगेबहे ॥ वहहु छित्तरअयचत्पर
 धीरधारनमैधस्यो । करिजंगकछु विधिहारिख
 कारुकारिफेजहिं निकरवस्यो ॥ १७ ॥ संग्रामवृ
 पयहकामसुनितकरामपुरतजिभज्यो । इ त
 जिनिदुरजनसल्लहलनलुहिपत्तनगज्यो ॥
 बरजौरदूरममेरकौं गिनिभीतिमानससौंदिरी
 । जयसिंहलियवहरानसौं इमअनअप्पननां
 फिरी ॥ १८ ॥ दो० ॥ कोटापतिनहिंअमलकि
 य । दूरमनुपभयभार ॥ लुहिरामपुरजामलग ।

प्रायउअप्यअगार ॥ १९ ॥ ब० प० ॥ चंद्राउत
 लीसोदनृपतिसंग्रामसिंहइत। पुरबिंमोलीआ
 यरह्योचिंततप्रपंचचित। मातुलहोपरमारनास
 विक्रमबिंमोली ॥ इहिकारनतेहंआयरबूबम
 ज्तकदिखिली। धनकुमरिनामजननीइतस
 हीपीहरइमतत्यरहि। दिनकछुबिहायदिल्लिय
 गयोसाहमुहुम्भदसरनगहि ॥ २० ॥ दो० ॥
 कछुबसुहुंडीनजरि। लियनिजभुम्भिलिखा
 य ॥ दियकोटाअमैरदुव। बनिबनिपिसुनब
 ताय ॥ २१ ॥ कछुदिनरहिनिजपुरक्रम्यो ॥ पटा
 पुलकसबपाय ॥ सरनिमध्यजयसिंहसो। माखे
 चूककराय ॥ २२ ॥ ब० प० ॥ लदनंतरसकबान
 अहसन्नह १७०५ संवत् १७०५ ॥ असाअहमनि
 पोसभयउपुनिसुलकूरमधर। रानाउतिजाठ
 रजनाममाधवनृपनंदन ॥ सुनतरदवरिजसु

सिंहयुग्मिमं द्विय उच्छवधन । दिय द्विजनदान
 रूप्यय अयुत कथितरीतिजपजज्ञकरि । सुतप्र
 सबकर्मसिद्धिय सकल आम्नाय अनुसारसरि ॥
 ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ तदनु ईश्वरीसिंहसुपुत्रजय
 सिंहपदसुत । रानकुमारजगतेससुताव्याहो
 इति संजुत । सरबसुसत्रह १७८५ सालमाघ
 सितलमनमिलायो ॥ जबहि उदैपुरजाय उचित
 उपयम करि आयो । इत दक्षिमुलकमालवकिय
 उमारहडुनमंडु आमल । आजलौ दूरसुनते इन
 हिं प्रनिसन अबलमो प्रबल ॥ २४ ॥ दो० ॥
 रन अवरंगावादाचि । पहिलै कटक प्रचारि ॥
 क्या बहादुर विप्रवह सूबापतिलियमारि ॥
 २५ ॥ ष० प० ॥ इहिं द्विज दिस्त्रिय अगामेदि
 सिंहुन दुरवदिनी । साहडुकमपुनिपायकुंचद
 किरनसिर किनी । तीन अयुततु कवार सुभट

सर्वसौम्यनिवारकदशरथरिजकारे । ३६ ।

निजसंगसिधारै । कोटा नरेसभलिपत्रलिखिदु
 ज्जनसल्लङ्घसंगदिय । इनजायसरितरेवाउतरे
 कछुदिनपारसुकामकिय ॥ २६ ॥ कोटापतिकरि
 कपटतत्यकछुकालबिहायो । द्विजद्विगनिज
 इतरकिवप्रप्यकोटाचलिआयो । उतप्रवरं
 गाबादलुहिपरहृचलाये ॥ द्विजत्रिबेरइलपि
 लिपिखिरचकवहरये । प्रतिजोरबदियभरह
 दूअरितबद्विजसमुहजिह्वये । पासककूपान
 चोपरिप्रथितखेतपानपनरिबिह्वये ॥ २७ ॥
 दयाबहादुर बीरविप्रनागरसूबापति । खूबजा
 रिरनखग्यभारिबहुसनुमहामति । तिलतिलति
 कनतुहिबिरचिअच्छरिगलबांहीं ॥ गंजिअरि
 नकरिगरदमरदपत्तोदिवमोहीं । जिमजिमप्रस
 दमिच्छनजगियभोगनजिमजिमभुल्लये । तिम
 तिमकवाच्छतिरछे बिरचिदिल्लीजारनभुल्लये ॥

॥ २८ ॥ दौ० ॥ मारि द्विजहिंमंडलअमलारेवा
 लंधिरिसाय ॥ मरहहुनमालवलयो । उज्जयि
 नीलमअप्राय ॥ २९ ॥ लैमंडूदसउरलियउ । निज
 निजथानोरकिय ॥ सूबापतिगुजरातको । सोहु
 मिल्योहितसकिय ॥ ३० ॥ तबकेअपवतदकिय
 नी । सुबदकतकरजोर ॥ अबकूरमकाहिमुकल्यो
 । तजहुसामपुरमेर ॥ ३१ ॥ जानिइनहुजयसिंह
 कोरामपुरसुदियहोरि ॥ अवरदेसउज्जेनलग
 । बढिवढिलिनबहोरि ॥ ३२ ॥ कूरमतबमुकल्यो
 कटक । अमलरामपुरकिन ॥ मरहहुनसनकन
 मिलि । दिखीसिरभरदिन ॥ ३३ ॥ इतिश्रीवंश
 मारकरेमहानंप्रस्वहपेदक्षिणायनेनवमराशो
 बुधसिंहचरित्रेकृतत्रिंशो २६ मयूरवः ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

दौ० ॥ अमयसिंहमरुईसइत। मरुधरराजजमाय
 स्वामिधरमबहि साहको। अतिजवदिल्ली प्राय ॥
 १ ॥ इत नृपकानी खोहरहि। बुंडाउतिपरनेहो। स
 करसबसुमुनिइंदु १७८६ मित। हुवउदंतअबएह
 ॥ २ ॥ ष० प० ॥ असितपकवअ। षाढ मासशनि
 वारचउदसि। बुंडाउतिउरकुमरभयोदहमासज
 ठरबासि। धात्रेयीनृप निकटउल्लसहितहिगहि
 अन्यों ॥ हडुनधरयहरीतितबहि निजसुतपहि
 चान्यों। करिजातकर्मकुलबेदविधिगणकन
 बहुबसुब्रातदिय। बहुद्विजनधेनु हाटकहुग
 मणिपटसहितप्रदानकिय ॥ ३ ॥ बुडुरिनृपति
 बुधसिंहकुम्भनृपसौंदुकहाई। सतमतरुप्यय
 सबनदईजयसिंहबधाई। पुनिकहिपठईएह
 बांडिममस्वसाधर्मरत ॥ बुंडाउतिसंगबसिरु
 पुत्रउतपन्नकरियतत। अबचहडुराज्यबुंदिसक

इन् लोमम कथित प्रमान करि । यह मय उ पुत्र अ
अहु हमहिं बुं डाडति सन रह दु दरि ॥ ४ ॥ अरु
हमर क्वहिं गोद ताहि निज सुत करि मान डामम
मगिनी संगर हहु याहि निज हित करि जानहु ॥
संगहि दिय इक सचिद नाम ताको हीरामला ॥ ति
हिं मंगिय यह त नय देहु कुमपहिं चाहहु भल ।
अकिरिय रिसाय बुं दिय अधि प पुत्रहु कें हुं मंगे
मिलत । पर जोर लेहु हो तुम प्रबल हमर न इच्छ
तख माहत ॥ ५ ॥ दो० ॥ कहियह सुत उत्सव
करिय ॥ धरिय नाम उम्मेद ॥ सो सुनि नृप जयसिं
हके । मय उ अमित जित देद ॥ ६ ॥ ष० प० ॥
सुनत एह जयसिंह यो ह्यस्त्रि कर मुच्छरिसायो । पन्न
मपय दह्यो किरु धित सहूल रिजायो । लमकि
अतत काल सचिव राजामल बुल्यो ॥ कह्यो क
हाकर लब्ध रिजि अन्न उन्न बल बुल्यो । करि

उचितलेङ्गरवत्रीकहियगृहवासिनइनहनहुन
न । इच्छितहिराजबुंदियअरपिप्रथितनिबाह
हुअप्पपन ॥ ७ ॥ दो० ॥ तब छित्तरप्रतिइंद्रगढ
। कुम्मलिरवीयहचाहि ॥ दिवसिंहभेजहुकुमार । बुं
दीअप्पहिंताहि ॥ ८ ॥ प्रथमराजतुमकोमिल
त । जोयहतुमहिंरुचैन ॥ तोहमअवरहिंअपि
हैं । बदहुनपिच्छैवेन ॥ ९ ॥ छित्तरसिंहइतब
हिलिखि । पठईकूरमगेह ॥ हमकिंकरबुंदीसके ।
अनुचितकरहिंनराह ॥ १० ॥ अवरहुगोपी
नाथकुल । नट्योअनुक्रमपाय ॥ बुंहीलकूरम
तबहि । सालमलिनबुलाय ॥ ११ ॥ कछोअर
हुतुमरोकुमार । बुंदीगहियबीर ॥ थालेनहिंसंश
यधरहु । हमसहायहमगीर ॥ १२ ॥ सरसालम
यहलोभसुनि । बुह्योकुमारप्रताप ॥ नयदिचा
रिसोहनट्यो । अवरिदुस्तिअप्राप ॥ १३ ॥

जडसालमबुह्योजबहि । मध्यमकुमरदलेल
॥ करउरतैँ प्रायोकुटिल ॥ मनइच्छितलहि
मेल ॥ १४ ॥ अभयसिंहइतमरुअधिप । व
रवसिसाहवसुव्रात ॥ सरबुलंदसिरमुकल्यो ॥
दैसुबागुजरात ॥ १५ ॥ दिल्लीतैँमारवनृपहु ।
अयोजैपुरअत्य ॥ बरवनलगजैपुरबस्यो ।
होजयसिंहहुतत्य ॥ १६ ॥ तबदरकुंचनअ
यतैँहें । मरुपतिदिन्नमिलान ॥ इहिंसुनिकानी
खोहतैँ । चढिअयोचहुवान ॥ १७ ॥ मरुप
तिसौँअतिहेतमिलि । कहिसबकुम्मकुकाम ॥
जयनिवासउपवननिकट । कियबुंदीसमुका
म ॥ १८ ॥ मुक्तादाम ॥ मिलेमरुभूपरुबुद्धबि
नोद । परस्परडेरनअप्रायप्रमोद ॥ सुद्वैकरिगो
ठिनजिम्भनसाजि । दयेलियदेउनबारनबा
जि ॥ १९ ॥ मरुप्रभुडेरनकुम्महुअप्राय । सुता

पतिजानिमिल्योसरसाय ॥ कद्यो करिपावन
 जैपुरजेब । ममालयभोजनकैचलियेब ॥ २० ॥
 कद्यो मरुभूपदुयौ सुनितत्य । चलैहमबुद्धब
 लापतिसत्य ॥ ठगेइनकौ तुमजानिप्रमत्त । हर्मै
 इनतै हितहेयनअत्त ॥ २१ ॥ यहै सुनिकूरमअ
 किवयराह । बुक्यो मिलिजामिपतै यहदेह ॥ य
 है कहिलै मरुभूपहिंजाय । दईविनुजामिपगोहिं
 जिमाय ॥ २२ ॥ चलयो लहिकूरमसिकवकबंध
 । बघो नृपबुद्धहिं फेरि प्रबंध ॥ रहो तुम कूरमकी
 यहजानि । कछू करि है मममद्रप्रमानि ॥ २३ ॥
 सुतो सबगो तुमरी कथसंग । अबै ननरकरबुद्ध
 राज्यउमंग ॥ चलो ममसत्यहिजो चहुयान ।
 ततो इन्हठिल्लहिं लै तुमथान ॥ २४ ॥ यहै कुन
 मन्नियबुंदियईस । रची मरुभूपति हूकछुमिवा ॥
 क्रम्यौं करिकुंचनधन्वकबंध । रच्यो धरगुज्जर

लैनप्रबंध ॥ २५ ॥ इतैसठसंभरमोहप्ररोह ।
कप्यौनिजडेरनकानियरबोह ॥ दर्दपुनिबुद्धहिं
कुसुकहाय । भयोसुत औरससोंपहुभाय ॥ २६
॥ रुलैसुतसालमअंकदलेल । मनोइहिंपुत्रगि
नौलहिमेल ॥ नमन्नियफेरिहुबुंदियनाह ॥
कुप्योगाहिपुच्छतवेकछवाह ॥ २७ ॥ दलेल
कुलाथउसालमनंद । मिल्योसुपकूरमप्रीति
अमंद ॥ वरक्षरगहियपैबहुद्वारि । कस्योतुमबुं
दियभूएहकारि ॥ २८ ॥ अर्बैतुमकोंदुहिताह
मअप्यि । धिरानिजमुग्गानभेजहिथप्यि ॥
विराजहुबुंदियगहियजाय । सबैहमरानस
मेतसहाय ॥ २९ ॥ रह्योअभिषेकसुलोल
हिकाल । सबैसाधिहैपुनिसनुनसाल ॥ बहै
कहिंमालमसिंहबुलाय । प्रबोधितबुंदियदि
न्यपदाय ॥ ३० ॥ कस्योबुधसिंहहिंअनानंदे

इसबैतसराज्यरजूकरिलेहु ॥ सज्योतबसालम
बुंदियसीस। हरामतजीनयधर्महदीस ॥ ३१ ॥ दो०
॥ यहसुनिकानीखोहते। बुद्धनरेसहिंक्षोरि ॥ सु
रिभुरिसालममेंमिले। बहूमटसचिवबहोरि ॥
३२ ॥ पञ्कटिका ॥ इकबनिकनामबानांप्र
धर्म। कियसुरव्यसचिवजोरलकुकर्म ॥ यहजो
धराजजामिजअनीति। पलदयोसठसालममें
सप्रीति ॥ ३३ ॥ सुरवरामनामकायत्यस्थान।
भरिलोभचोधरीउदयमान ॥ नागरइकद्विजज
गदीसनाम। हड्डापुनिर्मितुबहुवहराम ॥ ३४ ॥
भटअनयपुंजहड्डापवान। थितनैरदुगारीजासथा
न ॥ पुनिधाइभातसुभरामपाप। सुरिकियउदुष्ट
सालममिलाप ॥ ३५ ॥ अरुसठअलोदपुरपति
अमान। मातुलसुमहारामाभिधान ॥ इत्यादिस
चिवभटसठअनेक। दरिदरिसालमविचग

देक ॥ ३६ ॥ इतकिय प्रपंचकछवाहराय । दिल्ली
सुअरजपठइलिरवाय । बुंदीस बुद्धअलसब
हंत । चितअबनसाहसेवनचहंत ॥ ३७ ॥ नहि
पुत्रआहिइनकेनिकेत । तसमातभ्रातजहिंरा
ज्यदेत ॥ मुहुकम्मबंससालमअठेल । बरकुमर
तासमध्यमदलेल ॥ ३८ ॥ अतिगुनप्रपंचरनप
दुउदार । बिकांतसुमगबरमतिबिचार ॥ बुंदीस
राज्यअबदेतताहि । अरुमरुपरानहममतिहु
आहि ॥ ३९ ॥ तसमातपठापुद्रितकराय । मम
निकटदेहुहजरतपठाय ॥ सुनिसाहमुहुम्मद
अरजएह । लिखवायपठापठयेसनेह ॥ ४० ॥
बुंदियदलेलसिंहहिंसमपि । बुधसिंहपहइ
हिंदेहुथपि ॥ तुमजाहुकुम्ममालवसुदेस ।
आवतगिनीमरोकुहुअसेस ॥ ४१ ॥ पठये
हमरुप्ययत्रिससिलकव । इनबलअनीकबि

चरद्भ्रूपकव ॥ उज्जैनवारश्रावननदेद्गु । लर्गिपि
 द्विसमस्तनमारिलेद्गु ॥ ४२ ॥ कूरमनरेसतवभुज
 भरोस हैँहमनिचिंतप्रतिमुदितहोस ॥ इमलि
 रिपठायफरमानसाह । कठवाहबंचिमंडियउछ
 ह ॥ ४३ ॥ ष० ष० ॥ बंचिसाहफरमानहररिबजय
 सिंहमहीपति । रूपयतेरहलकवपायमंडिगद
 लदुमति । मनतैँमिलिदकिवनिनप्रकिवउ
 प्परसाहायस ॥ कियमालवपरकुंचबुत्थिआ
 मिरवजिमबायस । संगहिदलेलसालमसुवन
 लेमंडिगदकिवनचलन । बुंदीसइतसुविगस्थो
 विविधमन्निनउगगनप्रत्थमन ॥ ४४ ॥ किय
 बुंदीसबिचारजानमालवसालकजिय । बिजय
 सिंहजिनप्रनुजकुम्भकारागृहरुकिय । जाहि
 कड्डिबरजेरथिरहिजैपुरनृपथप्पहिँ ॥ करि
 फोजनएकत्तयाहिदारिदप्रबप्रप्पहिँ । यह

कियप्रपंचबुधसिंहइतसोसबनृपजयसिंहसु
 नि। वहविजयसिंहसोदरअनुजपठयोहनिक
 रिअनयपुनि ॥ ४५ ॥ घरमधारजयसिंहकर
 मअनुचितयहकिन्वो। विजयसिंहहनिअनु
 जमेजिजामिपठिगदिबौं। कहिपठइपुनिकु
 म्मजामिभ्रातरुतवसालक ॥ आयउयहम
 मइसप्रथितहुंदाहरपालक। इहिंविधिकहा
 यवहनिजअनुजकटकहुइठिगदगधकिय।
 पुनिलिरिपठायबुंदियपुरहिंप्रतिसालमय
 हमंचप्रिय ॥ ४६ ॥ दो० ॥ हमजावतमालक
 पहुमि। मिलिठकनमरहइ। बुंदियधरतुम
 जातनबल। करिरकरवहुनहिंकहु ॥ ४७ ॥ सा
 हधुइम्मदतुमहिंसव। बुंदियधरदियधीर ॥
 सठइहिंदेहुनधसन। हहुनपतिहममीर ॥
 ४८ ॥ सालमप्रतियहलिरिसबल। लैनिज

संगदलेल ॥ मालवउपरउपस्यो ॥ मरहद्वनहि
यमेल ॥ ४९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंद्रसूत्र
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रिं
शो ३० मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
दो ० ॥ सकरददबसुसत्रह १७८६ समय। उ
ज्जमासत्रवदात ॥ कूरममालवकुंभकिय ।
मनसिजतिथिउमहात ॥ १ ॥ सुतामनायत्र
धीसकी । बुंदियपतिलधुबाम ॥ चुंडाउतिहि
तैनेत्रनखि । राहिकरिपृथकमुक्ताम ॥ २ ॥
सस्त्रयहजयसिंहकी । सुज्जकुमारिप्रसूति ॥
पलटाईकूरमनृपति । अबनवीनरचिकृति ॥
३ ॥ पज्जटिका ॥ रद्वोरिनिकटजयसिंहराय ।
पहुदियदलेलसिंहहिंपठाय ॥ कहियहसुपुण्य

तुमरो कुमार । इहिं गिनदुराज्य थंमनउदार ॥
 ४ ॥ सुनियहदलेलसनअतिकसूर । कहिपु
 चमिलीरद्वोरिकूर ॥ इमकूरमसंगानैरअयाय ।
 सरसूपलटाईछलसहाय ॥ ५ ॥ इमदुवदलेल
 कूरमअमान । मिलिनैरनिवाईदियमिलान ॥
 बुंदियलिरिपठईपुनिबिचारि । सालमतुममं
 उदुधरसहारि ॥ ६ ॥ हममिलनप्रथमआवहु
 हजूर । पुनिभुग्गाहुबुंदियकरकपूर ॥ सुनियह
 सहसालमअनयसाम । कूरमठियाआयउमिल
 नकाम ॥ ७ ॥ मिलिउभयगामगुडवामिलान
 ।दियकुम्मसालमहिंरितरवदान ॥ कहिजाव
 हुबुंदियतुमनिसंक । अबतवकुमारसिरपहुअंक
 ॥ ८ ॥ इहिलेहममालवजातआज । सूवाअप्रवं
 तिरकरवनसमाज ॥ सालमतुमजावहुगृहसधी
 र । बुद्धहिंननप्रबिसनदेहुबीर ॥ ९ ॥ यहअ

किंवसालमहिंसिकवत्रपि । मालवचलिकूरमकुं
 चमपि ॥ दलभरनभुम्भिफुटतदरारि । चंचलमतं
 गहल्लियचिकारि ॥ १० ॥ बहिसजवतरारनले
 तबाजि । उद्धतमटमंडनकपटप्राजि ॥ रचिइम
 दरकुंचनकूर्मराज । कोटाधरसंक्रमिप्रथितकाज
 ॥ ११ ॥ नदिकुसकतीरपरिदलअनंत । दिसदिस
 नकुहिगययहउदंत ॥ कोटानृपदुज्जनसस्मकूर
 । हितसचिवदोयपठयेहजूर ॥ १२ ॥ नागरद्विज
 बेणीरामनाम । रनचतुरव्यासदोलत्तराम ॥ इ
 मदुवपठायकूरमअनीक । कोटिसरचियप्रनति
 यकितीक ॥ १३ ॥ म०प० ॥ कुसकछोरिपुनि
 कुंचरचियअगौनृपकूरम । सिंधुसरितनिवस
 थबडोदकियतहंसुकामक्रम । उज्जयिनीके
 अनुगगोडउस्मटसंभरगन ॥ अरुकबंधकड
 वाहसुपदुखिवचियपुनिसेवन । सूबाधिनाथ

कुम्भहिंसमुजिनृपयेसवंप्रायउ निकट। सजि
 सजि मिलापजयसिंहसन कियसासनसृणिसि
 रकरह ॥ १४ ॥ दो० ॥ निजगढसोपुरगोडनृप
 उममद्वयहनिईस ॥ कोटापतिचंडासिकुल। सं
 मरवारबलीस ॥ १५ ॥ गढराधववज्रंगगढ।
 येरिवच्चियचहुवान ॥ नरउरपतिकछवाहनृप
 । सुतगजसिंहसयान ॥ १६ ॥ पतिईडरतला
 मपति। दुवरदोरदलेस ॥ इत्यादिकउज्जेनके।
 प्रायेअनुगअसेस ॥ १७ ॥ पादाकुलकम्।
 खलानुगनृपसमयसयाने। मिलिजयसिंहस
 वहिसनमाने ॥ अरुकोटेसपटालयप्रायो।
 भीमजनकभवसोकमुलायो ॥ १८ ॥ जान्योह
 ईदलेलहिंबुंदिय। होययहेइनकेरवीकलहि
 य ॥ इमविचारिकोटाअपयनायउ। बहमुदडेर
 नजायबढायउ ॥ १९ ॥ जयहरिलैइमसवन

बडेजव। मंडुवपुरप्रविस्थो धरमालव ॥ प्रकटदि
रवातसाहकिंकरपन। मिल्यो कितवअंतरमरह
दुन ॥ २० ॥ कछुदिनसमरव्याजतंहेंकड्डे। ब
हुलपिकिनेदकिवनदलबहु ॥ लुब्धिकटकअ
पनलुट्वायो। मरहदुनकंहेंबिजयमिलायो ॥
२१ ॥ कछुधनबसननिवेदनकिने। लोभबुन
टिनकवचलिने ॥ द्वैकूरमइमसाहहरामी। कि
यमरहदुमिलभुवकामी ॥ २२ ॥ दो० ॥ तदनंत
रकारिसिकवगी। कोटापुरकोटिस ॥ अवररहे
हमारिअरिवल। नरउरआदिनरेस ॥ २३ ॥
इतिश्रीवंशभास्करेमहानचंपूरचरुपेदक्षिणाय
नेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे एकत्रिंशो ३१
मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
ष०प० ॥ इतबुदियअवनीसचाहिबुद्धहनुप

चाल्लिय । कानीरवेहमुकामबोरिवुंदियदिस
 चाल्लिय । रसबसुसन्नह १७८६ सरतपायअग
 हनसितपंचमि ॥ कियस्वदेसपरकुंचमुस्त्रिज्यो
 मृगधलजलधमि । चहुसूनिवाइमगाचलि
 मगवतगहभोरोरहिय । इतसुनिउदंतसाल
 मयहसुबुंदियतजिसम्भुहबहिय ॥ १ ॥
 उग्रथधिककछ्वाहसमयसरथिरुसरसाहस
 हहगुनसाहनिदेसचापचतुरंगरंगरस । वन
 ह्छोतियविकटखानसालमदलेलसहा । कु
 बचबायुरालामिगाहमतकउलफंदग्रह
 मुहपनअलसलाहिमोहमनबुद्धसुमंत्रबिब
 कविन । उनमत्तएनसंभरअधिपइच्छतजल
 बुंदियइरिन ॥ ३ ॥ दो० ॥ सुनिइतआवतसं
 भरहि । वनिसालमबुंदीस ॥ लैदलसम्भुहउ
 ल्हाद्योस्वामिहरामसरीस ॥ ३ ॥ लहिसीमा

बुंदियमुलक । अड्डोठड्डो आय ॥ यहसुनिसठबु
दियअधिप । बाममुखोविहसाय ॥ ४ ॥ जैलसि
हजाजवजयी । दिल्लीरनअसुदिन ॥ तासदेव
सिंहहतनय । भकतिस्वामिरसमिन्न ॥ ५ ॥ नग
रपलोधीधामनिज । बैरिसह्यभवबंस । कुसथल
पंचोलासपुनि । येदुवपुरउत्तंस ॥ ६ ॥ साहसम
प्येसंभरहिं । चोवनगढगहिबांहिं ॥ कुसथलपं
चोलासए । उभयइजाफामांहिं ॥ ७ ॥ तवसंभ
रदियजैतहित । कुसथलपंचोलास ॥ सय्यद
सनदिल्लियसमर । बिरंओजिहिं दिवबास ॥
॥ ८ ॥ तासदेवसिंहहतनय । स्वामिथरमरतसूर
॥ ताकेपुरकुसथलतवहि । आयउबुद्धजर ॥
॥ ९ ॥ बिष्णुसिंहहतनयाबुद्धरि । अनुपमतन
याअय ॥ येसंगहिरानीउभय । पतिप्रमराग
तिपाय ॥ १० ॥ पुरवाहिरपृतनापरिगाधन

जिमडेरनघेर ॥ देवसिंहमहिमानिदिय । बुद्धहि
 गोठिडिबेर ॥ ११ ॥ परिडेरनलगपामरे । धाम
 स्वीयपधराय ॥ निजसरबस्वनिवेदयो । देव
 सिंहहितदाय ॥ १२ ॥ यहसुनिपुरबलवनअ
 थिप । अमयसिंहअतिधीर ॥ निजदलसजि
 आयउनिडर । बुद्धियपतिदिगवीर ॥ १३ ॥
 अमयदेवयेभटउमय । बैरिसल्लभवबंस ॥ स
 मालिहुवबुंदीसकै । देहअरपिसजिदंस ॥ १४
 ॥ यहउदंतसुनिइंद्रगह । सुभटइंद्रसल्लोत ॥ दि
 वसिंहचित्तरसुवन । आयउदलउद्योत ॥ १५ ॥
 कछुकिलोरबयबसिकछुक । कूरममसलहि
 कूर ॥ देवपृथकडेरादसे । दलसभरतजिदूर ॥
 १६ ॥ इतसठसालयपिडिपरि । कृतधनचिति
 कुकाम ॥ पत्तनपंचोलासडिग । किनेलरनमु
 काम ॥ १७ ॥ कुलबधवमुहुकम्मके । मिलि

सबसालममाहिं ॥ पद्दोलीपुरपतिप्रथितं । मि
 ल्यो जवानसुनाहिं ॥ १८ ॥ तोपनइकजंबूरस
 त । द्वैसतसजिबंदूक ॥ मिल्योअनिबुधसिंह
 मै । अनुचरथरमअचूक ॥ १९ ॥ त्यौहीइकनग
 राजतहं । सुहुकमवंसवतंस ॥ सालममैनामि
 ल्योसुमट । पटुबिरव्यातप्रसंस ॥ २० ॥ ष०प०
 ॥ सुनिइतरनजयसिंहभीरसालमदलमेजिय
 । तीनसहंसतुशवारपंचउमरावपुरव्यप्रिय । ई
 सरहापुरईसनामकोजुवनिसंकनरा । सारसोप
 पुरस्वामिबिदितफलमल्लवीरवर । सांबलसुहा
 इपुरपतिसबलप्रबलअचलनानेडियति ।
 बहादुरसिंहकूरमबहुरिबुझानीपुरपतिविम
 ति ॥ २१ ॥ दो० ॥ अजमुवबासीसुमटबलिनि
 रुचबंसकछवाह ॥ नामधेयसिरदारनिज ।
 सोदियसंगसियाह ॥ २२ ॥ पृथ्वीसिंहरुकरन

पुनि । उभय नरुवप्रवतंस ॥ घासीरामरसोर
 पति । दलिभट कूरमवंस ॥ २३ ॥ सेरसिंहरिवि
 द्धिय सबल । पुनिज ह्वपरताप ॥ हरितौवर म्हा
 द्धकम् । मारवकरनमिलाप ॥ २४ ॥ उदयसिंह
 पुनिरूपप्ररु । जोधसुरतभटजत्थ ॥ सालमहि
 तकूरमसजे । सोलंरवीचउसत्थ ॥ २५ ॥ अमि
 रूपपदयेइते । लरिबुंदियमुवलैन ॥ बियहबहु
 रिप्रवासबसि । सबरक्वियढिगसैन ॥ २६ ॥
 नरुरपति गजसिंहसुव । जयसिंहहिंतेहेंजंपि
 ॥ समरमपंचीममसचिव । चाहतजयअरिचंपि
 ॥ २७ ॥ भेजहुतिहिंइनसंगभल । कूरमतबमु
 सि काय ॥ संगहिदियनरुरसचिव । नामसुखं
 डेराय ॥ २८ ॥ ष० प० ॥ सुभटमानसिंहोत्तक
 लहइमपंचमुख्यकिय । अवरहुसुभटअनेकसे
 नममलिद्रुतसज्जिय । करियहदलदरकुंचमुल

कमालवतजिमंडुव ॥ जुरिप्रायउजंधालमीर
 सालमकुसथलभुव । करिदलमिलानसालमक
 टकहडुनपतिदिगमिलनहित । इनपंचमदन
 यरुकहिय । बुद्धश्रवनधारहुविदित ॥ २९ ॥ दो०
 ॥ अभयसिंहबलवनअधिप । पहनिभज्जिगाह
 ॥ भीमहितुअतिमन्निभय । दुल्लभमन्नतदेह ॥ ३०
 जाकेबलजयसिंहतै । अबरनरचहुनएहु ॥ दिन
 प्रतिरुप्यदोयसत । रहिहंदावनलेहु ॥ ३१ ॥ न
 हिबुल्ल्योबुंदियनृपति । क्रमसबसहियकुबेन ॥
 राजाउतपंचनसरिस । निदुरदिखायेनैन ॥ ३२ ॥
 ष० प० ॥ कूरमपतिभटकुवचप्रकटसुनिसुनिल
 लवनपति । अभयसिंहअतिवीरभयउद्यकिप्र
 लयरुद्रमति । कररिविमुच्छंडसिअधर निररिवि
 पंचनउफनायो ॥ पन्नमपयचंप्योकिमत्तभूमा
 जरिवजायो ॥ बुल्लयोविदितभुजवोकिबलम

लज्जतगीदरद्वै । बुधसिंहप्रान्तरमबलहिं
 केहरिहममहरिकर ॥ ३३ ॥ दो० ॥ जातनअगो
 हमभजत। गृहरनअनुचितगाय ॥ अवरनतर
 नआहुरत। पद्यहडुनपाय ॥ ३४ ॥ इमहकारि
 बलवनअधिप। सुरिउद्विगमहिमुच्छ ॥ फटाते
 पसंहिगपनहुं । पन्नगदहृतपुच्छ ॥ ३५ ॥ तवहूर
 मरुमदनतमकि । सजियजायनिजसैन ॥ अत
 सालमसवइहजुरि । लमिदलबंधियलेन ॥
 ३६ ॥ देवसिंहछित्तरसुवन । इंदुगढपसुनिह
 ॥ भीरुमनिजयसिंहमय । गद्योसपरिकरगेह ॥ ३७
 ॥ हृदयनरायन हरियकुल । विबंधवउमराव ॥ कर
 नमीरबुंदीसकी । द्रुतआपेरनदाड ॥ ३८ ॥ हडु
 मेवसामंतहर । मायवहरभटपौर ॥ कुलबखन
 अरुनाथकुल । येचालुकवृषपौर ॥ ३९ ॥
 शुद्धप्राकृतभाषा ॥ प्रार्था ॥ विद्वहअयो

(१) हीविणी अणुप्रंबुदीसपट्टवंपिकव ॥ सालमञ्ज
 पप्रयो जिदो मिलिप्रोबुहेणभूवइणा ॥ ४० ॥ प्रा
 मि० ॥ दो० ॥ राजसिंहप्रन्दयरतन । बंधवनिज
 वरबीर ॥ दोलतिसिंहदुसज्जिदल । भटत्रायउ
 नृपभीर ॥ ४१ ॥ हाजरिभटप्रथमहिदुते । महासिं
 हकुलमेर ॥ असितपकरवकेइंदुजिमालियो
 धटनदलप्रोर ॥ ४२ ॥ दसहजारपृतनावदलि
 । सषडुवसालमसंग ॥ दसहजारनृपनिकटद
 ल । रहियस्वावनरंग ॥ ४३ ॥ उभयपकरवप्ररि
 मित्रतजि । समयजोरहरसाव ॥ रहियइंद्रगढ
 प्रादिवहु । उदासीनउभराव ॥ ४४ ॥ सालमहि
 गतेरहसंहंस । नृपदिगदसनिरधार ॥ इतकुयो
 वलवनप्रधिप । भुजधरिबुंदियभार ॥ ४५ ॥

(१) विविधानेहोविनेकी अनुजम्बुदीशपट्टपस्पेद्य ॥ सालिमपुत्रः
 प्रतापः ज्येष्ठो मिलितो बुधेन भूपतिना ॥ ४ ॥

बुद्धनृपतिवरजतरह्यो । देउनसपथदिवाय ॥ ह
 द्वेभज्जननांसुने । लग्गीप्रंदरलाय ॥ ४६ ॥ अम
 यसिंहअरुदेवइत । अरुकछुसंभरसैन ॥ जिहि
 किचजेमटसज्जकिय । वरनततिहकविबेना ॥
 ४७ ॥ महाराजमातुलकुलज । मुख्योयुसालम
 मल ॥ वाकोसुतसंग्रामइत । सोहुसज्योगहिसे
 ला ॥ ४८ ॥ अमसिंहसज्योप्रथित । नाथाउतर
 कभूर ॥ अरवतीसिंहजगभानुबलि । सजेहहुअति
 मुर ॥ ४९ ॥ साँवलदाससजेरसजि । गोरबंस
 उजिआर ॥ जेराउरकछवाहजुरि । परसुरामथोर
 हार ॥ ५० ॥ वरजतनृपबुंदीसके । सहठदिवाव
 तसोह ॥ अमयदेवसंगहिइते । मटनतनंकिय
 सोह ॥ ५१ ॥ देवसिंहअममल्लदुव । दुल्लहललि
 वडवार ॥ अरुअरिदुलहनिअहरिय । जब्इतेजु
 अर ॥ ५२ ॥ अवरमटनपिकथोसमयासालमअ

युतप्रयुतप्रनीक ॥ खोरहुनृपहिनइक्काछिना
 कोजानैवकिलीक ॥ ५३ ॥ जोभूपहुसिरघातज
 ड। कूरमघस्रहिंकूर ॥ तोसबस्वामिसमीपही। स
 नुनजंगहिंसूर ॥ ५४ ॥ स्वामिदयेनलरनसपथ।
 बलिनृपतजननबेस ॥ नयबिचारिइमइननिकट
 । सकलरहेसुभटेस ॥ ५५ ॥ वीरजितेपहिलैबदि
 य। तिनननमन्नियसौहैं ॥ अमयसिंहसंगहिउ
 टिय। भयदफुरावतभौहैं ॥ ५६ ॥ करिकुबैनडारि
 कूरमन। निजदलपिल्लियजाय ॥ यहसहीनब
 लवनअधिय। लगियसेरदिबलाय ॥ ५७ ॥
 अमयसिंहअरुदेवइत। कुपिबलियजिनका
 ल ॥ सिरघरसतअजलोकसौ। पयपरसतप्राया
 ल ॥ ५८ ॥ सालमअरुकूरमसुभटा। जुरिइतप्र
 वलजसर ॥ बुंदियदलसिरबगलै। सकल
 लेबडिसूर ॥ ५९ ॥ इतिश्रीवंशवाल्मीकिमहा

६

चंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
 ने द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दो० ॥ सकहयवसुसत्रह १७८६ समय । माघ
 वदरसमिलाप ॥ घटियरुद्ररविकेचढत । उल
 दिससुद्रनत्राप ॥ १ ॥ दुर्मिला ॥ दुवसेनउद
 गानरवगासमगानत्रगगतुरगानबगालई । म
 चिरंगउतंगनदंगमलंगनसज्जिरनंगनजंगजई
 ॥ लगिकंपलजाकनभीरुभजाकनबाककजाक
 नहाकबढी । जिममेहससंवरयों लगिअंबरचंड
 अडंबररेवेहचढी ॥ २ ॥ फहरकिदिसानदिसा
 नबडेबहरकिनिसानउडेविथरै । रसनाअहि
 नायककीनिकरै किपरागलहोरियकीप्रसरै ॥
 गजयदठनंकियभेरिभनंकियरंगरनंकियकेच

करी। परखराननं कियवानसनं कियचापसनं
कियतापपरी ॥ ३ ॥ धमचकरचकनलगि

लचकनकोलमचकनतेलकढ्यो। परखराल

नभारखुभीखुरतालनव्यालकपालनसालब

ढ्यो ॥ डममगिसिलेअग्रशृंगडुलेरगामगि

कृपाननअमगिअरी। बजिरवह्नतबह्नहह्न

उरह्ननधुम्मिहमह्ननधुम्मिमरी ॥ ४ ॥ मचि

धोरनदोरदुअोरसमीरनजोरउमीरनधोरज

म्यो। अममह्नउअहनहडुहठीकअवाहनगाह

नचाहक्रम्यो ॥ सुवजेतइतेमटदेवसहीकरि

स्वामिमहीहितसंगसज्यो। दुहुअोरकुलाह

कतोपदगीलगिमहबलाहकनहलज्यो ॥ ५ ॥

उतेतेकअवाहनउग्रउअहनबेगसुवाहनअग्ग

लई। बनिबुंदियवालमजंगसुजालमसंगहि

सालमदोरदई ॥ परिरिद्विकृपाननचंडचुहान

नगिद्धिउडाननगूदगहै । गनधीरगुमाननवीर
 प्रमाननवीरकमाननतीरबहै ॥ ६ ॥ बढिबु
 ल्थिनबुल्लिबडवसुधालगिलुल्लिनलुल्लिप
 रैप्रजरै । घटसेलघमाकनरंगरमाकनहडुसुहा
 कनहोसहरै ॥ लखिरवगाउदगानमगालगी
 जुरिअच्छुरिजगप्रजापतिज्यौ । गलबाहैक
 रैकरिबीरबैरैगमनैगनगैवरकीगतिज्यौ ॥ ७ ॥
 छननंकिउडाननबानछयेठननंकिगयंदन
 यंदधुरे । फननंकिदुबाहनढोपफटेरननंकि
 सिपाहनकोचरुरे ॥ डुलिभैरवडैरुवतैडहकीड
 रिडाकिनिसाकिनिचैकिबली । नदिनारदन्ध
 बिसारदहौंविबिवारदमांतिमिलेरुहली ॥ ८ ॥
 कटिरवगाकलापरुदंतकहैफदिकुंममउलिन
 मेहफुरैतरितातनुतेगतहौंतरकैघनगज्जमतं
 गजगज्जधुरै ॥ बकपंतियदंतियदंतबहेबहुंभो

रप्रचानकप्रब्र वढे । कटिकैँ उडिचातकधंठ
 कढे प्रतिपकवरमेकप्रनेकपढे ॥ ९ ॥ यहप्रा
 निसुमाकरमैवरखावढिमाधवमासप्रमाविशु
 ख्यो । लखिनायकसूरनहूरनहूरनअंगनअंग
 प्रनगफुख्यो ॥ इतसूरनचंदनअस्रचढ्येरसकैँ
 इतहूरनरागरचे । उमहे इतसिंधुनकीध्वनितैँस
 मुहेउतसिजितसद्मचे ॥ १० ॥ इतडाकिनिदू
 तिकजाकिनिप्रोइतसाकिनिनाकिनियास
 सरवी । सबहूरसुहागिनिइकप्रभागिनिबुद्ध
 बिभागिनिसोविलखी ॥ द्रुतहारसिंगारविगा
 रिदयेधुपिअंजनरोदनबारिवद्यो । करकंकन
 फेरिमरोरिकलापहिँछोरिअलापहिँतापस
 ह्यो ॥ ११ ॥ यहप्राइयडाकिनिकीसिखईधव
 हीनभईअबछोहछई । प्रतिप्ररतिअच्छरि
 कीलखिकैँहसिडाकिनिडिंडिमडकदई ॥ सह

नाइत्यसुं डिन की करि कै गन बावन गावन मैंग
हकै । कटि मुंडरुंड किरे इत को चउस द्वि न मुंड
नचै चहकै ॥ १२ ॥ परवराल तुरंगन पूरकिते
नरवराल कुरंगन फाल नचै । भटवार कटार न
कार करै अजि मार अंगार न मार मचै ॥ फटका
रिमलंगज सुं डि फिर कट कारि चुहान न मुंड क्रमै
। हल कारि चुरै लिनि हो सहरै लल कारि मयंक
र मूल भ्रमै ॥ १३ ॥ रवगधार नधार रि वरै रवटके
पल चार न मुंड कटै कपटै । रबुरतार न मार र बुद्धे प
हुमी असवार न वार दटै दपटै ॥ उपकार न का
र किते उमहे सिवधार न काज गहे सिरकौ । दल
मार न मार मिले दुवधौ सदवार न वार चले चिरकौ
॥ १४ ॥ यमसान न बान उडान न लै अरिभान
न पीवत काल अही । चहुवान न के करकी उप
मापवमान न मान सहै निबही । करवाल न चं

डउडीचिनगीमटजालनभीरभिरैभुरसै । बढि
 ज्वालकरालनलोकबरैदिकपालकपालनसा
 लबसै ॥ १५ ॥ गजराजनढालढहैढरकैरत्नभा
 जनघायभरैभभकै । लगिलाजनसूरलरैलट
 कैछटकैभुवकाजनलोहब्रुकै ॥ कटिकालिक
 पीहकिरैकलिमैफाटिमस्तकरवंडउडैफाबिकै ।
 जिमसैलनशृंगारिवरैविरवरैप्रतिमल्लपुरंदरके
 पबिकै ॥ १६ ॥ मथिमंथनिमत्थगहैगलिसौग
 नगिद्धनिगोदगिलैगहकै । मनुग्वालिनिमहद
 हीमधिकैनवनीलनिकारनबारनकै ॥ चहिमार
 दुधारचलैचमकैअसवारतुरवारकटैउलटै ॥
 फाटिमकुनऊरुफटैउछटैकटिबाहुलबाहुल
 बाहुकटै ॥ १७ ॥ दो० ॥ इहिरनबिचबलवनअ
 धिप । अमयसिंहअतिवीर ॥ फलमल्लहिंरवोज
 नफिरत । हुलसिंहहुहमगीर ॥ १८ ॥ जबहिपं

चजयसिंहके । येकूरमउ मराव ॥ बुंदीपतिअगै
 विरित । बुल्लेकुवचबढाव ॥ १९ ॥ इनहमेंफत
 मल्लयेंहं । सारसोपपतिसूर ॥ कहिकातरअ
 ममल्लको । गद्योबहुतमगसूर ॥ २० ॥ इहिंका
 रनअममल्लअब । तिहिंहेरतगाहितेग ॥ दुखो
 कहाकूरपदरि । बीरबतावहुबेग ॥ २१ ॥ अ० प०
 ॥ जिमनागाहिंरवगराजमृगाहिंमृगराजमहावन
 जंमहिंजिमजंमारिमधुहिंमानहुंमधुसूदन ।
 पानीजिमपावकहिंतूनहिंपावकजिमतकृत
 ॥ सजवकपोतहिंसेनहननहेरनजिमहकृत ।
 अरवुहिंविडालतिमिराहिंअरुननरंकहिं
 शरिद्वनिम । फतमल्लरूपपोमिनिफिरितइम
 हेरियअममल्लइम ॥ २२ ॥ दो० ॥ समुरवपि
 विरफतमल्लसो । इमअकिवयअममल्ल ॥ गी
 दरगालजजायके । अबकिनकरतउरुल्ल ॥ २३ ॥

इमहकारिबलवनप्रधिप। मंडतवाननमेह॥
 उफनावतश्रायोउमंडि। दंसनमावतदेह॥ २४
 ॥ व० प० ॥ पयदध्वतप्रहिपुच्छमुच्छ्रैचत
 मयंदजिम। सोरमनहुंसावातप्रगिलगात
 प्रचंडइम। हेलिमश्रवहजारजेठदुपहरजनु
 जगिय। प्रलयउग्रजिमप्रथितलायप्ररिबि
 नप्रतिलगिय। काननप्रमानवाननकरखि
 कूरमदेहसुसेहकिय। मदमत्तलखहुहहुमरद
 गहुपदअंगदगतिय॥ २५ ॥ सुक्तादाम॥
 जुर्योप्रममल्लइतैरुपिजुह। प्रयोफलमल्लउ
 तैकलिकुह। उमैनिजस्वामिनकीधुवश्रास।
 तकावतप्रकाहैचकतयास॥ २६ ॥ उमैरन
 दच्छबडेउमराव। उमैउमंडेरसबीरउगाव। उमै
 जयधप्यनहारिउथपि। उमैउफनायकुवेनन
 अपि॥ २७ ॥ निरलदुल्लहसजितप्रंग।

उमैमर अचत सुच्छ अमंग ॥ उमै अनु रूपरि
 जावतरंग । उमैर न अंगन केजयरवंभ ॥ २८ ॥
 उमैसिबदारिदमिहनहार । उमैपलचारनकेउ
 पकार ॥ उमैमकावतरवगउदगा । उमैचलि
 मेतहसावतअमंग ॥ २९ ॥ उमैमवतैतजिमो
 ह अलुद्ध । उमैमन हलिलगावतउद्ध । उमै
 लुमवाहहु वाहहु अकिह । उमैकरिसूरजको
 निजसकिव ॥ ३० ॥ उमैकनकाचलपायन
 बंधि । उमैदमउद्धतसंहारिसंधि ॥ उमैतुलसी
 थरिमस्तकअप्राय । उमैजलगंगउमंग अचाय
 ॥ ३१ ॥ उमैछरवजानिजुरेइकधेनु । उमैकरि
 राजकिइककरेनु ॥ उमैइकसिंहनिज्योवनई
 स । जुरेइमकूरमहुजयीस ॥ ३२ ॥ मिलेपहि
 लहुवतीरनमार । कहेसरदोउनभेदिकरार ॥
 चदहुहिचंडप्रतंचनचाय । उडैसलभाजिमरी

यप्रमाप ॥ ३३ ॥ जहाँ करि बाननयौरनजोर। मि
 लेपुनिसेलनद्वैभटमोर ॥ सुकंकटभेदिकठेघट
 सारि। कियोतरुतेजनप्रगाकुदारि ॥ ३४ ॥ च
 लीप्रममल्लवरच्छियप्रच्छ। पस्यो छिदिंरूम
 बाजिदुपच्छ ॥ वहाँ हयप्रौरचव्योकछवाहारु
 प्योप्रममल्लदुपद्वयराह ॥ ३५ ॥ वरच्छिनजं
 गप्रपुब्वविधाय। लईप्रवरवापनतैहिमला
 य ॥ कियोँघनतैकठि विज्जुकराल। कियोँबि
 लतै किलकुंडलिकाल ॥ ३६ ॥ कियोँनयतै
 ससिद्वैजकलाकि। कढीयमके मुखतैदसना
 कि ॥ हलीकिहुतरसनतैकठिहेलि। मयूखन
 भोमनितैप्रथवेति ॥ ३७ ॥ कढीध्वनिव्याकृ
 तितैकिसकास। कढेमतगातमतैकिसमास ॥
 कटाच्छ कियोँकुलदादृगकुञ्ज। पयोभवकोरक
 तैप्रलिपुंज ॥ ३८ ॥ कनिंदकतैनिकसीजमु

नाकि । प्रजापतितैपरिपूरप्रजाकि ॥ गुनत्रयतै
किचलेमहदादि । महानटकीजटतैप्रमथारि
॥ ३६ ॥ हिमालयतैजिममंगहिलोर । कटीश्व
रकेमुखदंतुलिकोर ॥ अनंतकप्राननतैजि
मजीह । सटाधुनिथंमहितैनरसीह ॥ ४० ॥
नबोहनकेउरतैकिउरोज । उदेगिरितैकिदि
वाकरप्रोज ॥ किप्रजनिकेउरतैहनुमान । प
रासरनंदनतैकिपुरान ॥ ४१ ॥ सुराधिपकेक
रतैजिमसंब । कहेधनुगांडिवतैकिकलंब ॥
सहीकपिलाननतैजनुसाय । लयायनगायन
तैकिप्रलाप ॥ ४२ ॥ धपीजनुनीरदतैजल
धार । महाबलमाधवतैमनुभार ॥ त्रिलोचन
केकरतैकिविसूल । मउत्तियसुत्तियतैकिप्र
मूल ॥ ४३ ॥ कहेइमदोउनखापतरवगा । मि
लेप्रलयानलुद्धैरनमगा ॥ उभैकरलाघवदाब

दिस्वात । परस्परदेत प्रहार निपात ॥ ४४ ॥ उभे
 फिरिमंडलदारतवार । मचावतजार दुधारनमा
 र ॥ दई धापिसंभरदाहिनअंस । पर्योकरिकू
 रमरव्यातप्रसंस ॥ ४५ ॥ दो० ॥ हठिकूरमफ
 लमल्लहनि । अभयसिंहचहुवान ॥ कूरमको
 जुवरामको । पिक्रवतगाहकमान ॥ ४६ ॥ ई
 सरदापुरपतिअतुल । वहकोजुवकछवाह ॥
 अप्पहिंखोजतइकिवकै । अभिमुरवरविगउ
 छाह ॥ ४७ ॥ मिलिदेउनकिन्नीमुदित । ना
 गफेनमनुहारि ॥ अकवीपुनिअभमल्लइम ।
 कूरमसुनहुहकारि ॥ ४८ ॥ सबतुममिलिह
 मरेसुनत । भूपहिंडारीभीति ॥ तुमहूमफतम
 ल्लतहें । अकवीअधिकअनीति ॥ ४९ ॥ का
 कोदरहिंकुपायकै । कोउनजियतसकोप ॥ फ
 ननहन्योफतमल्लको । अबतवसिरआटोप

॥ ५० ॥ फलवानफतमल्लके । छत्तिअमय
 छलछेक ॥ जनुधाननजयअरुअजय । वन्यो
 तितरसबिबेक ॥ ५१ ॥ यतैकोजुवरामअव
 । मिलिबुह्योरनमाहि ॥ जिनकेवाननतुमहि
 दे । तिनतैगबुहुनाहि ॥ ५२ ॥ ष० प० ॥ यहै
 सुनतअममल्लरवगकोजुवसिरमारिय । सजि
 कोजुवइतसंगिहहुउरतकिप्रहारिय । याकेख
 गाउदयाकहिबाहुलकरकह्यो ॥ बाकीसंगि
 अपुष्पचकिवहियरीठकचह्यो । अरितव
 सिराहिलवनअधिपपुनिअसिमारियमत्थ
 पर । कटिदोपसीसकहियसकलमनहुबिबं
 धववंदिघर ॥ ५३ ॥ दो० ॥ कोजुवरामसुसि
 रकटत । बेगबसनसनबंधि ॥ करइकहिअ
 सिबरकरवि । सिरमारिगजयसंधि ॥ ५४ ॥
 कोजुवकोइकिवनकरसु । इमकह्योअममल्ल

॥ यातैंगहिकरबामअसि। ऋरीबहुरिउरुल्ल
 ॥ ५५ ॥ टोए कट्टितिरछीतरकि। तुट्टिपरियतर
 वारि ॥ अक्खिवयतबअममल्लइम। बाहहुने
 कक्खिचारि ॥ ५६ ॥ जिहंकरतैअसिबरजुर
 त। तिरछीतरकततुट्टि ॥ जनितार्कोहरखे
 जननि। क्योबहुधालनकुट्टि ॥ ५७ ॥ क्खि
 इमकोजुवरामपर। असिगरियअममल्ल ॥
 सिवगाहिलिन्नेउडतसिर। ढखोयहहुनढ
 ल्ल ॥ ५८ ॥ ईसरदाकेपतिहिंइम। बलवनपति
 हनिवेग ॥ सावलदाससुहाडपति। तक्ख्ये
 ऋरततेग ॥ ५९ ॥ मुक्कादाम ॥ चवीयहदू
 तनभूतनचास। सुनीसबकूरमसावलदास
 ॥ उदायुधउग्रदिवाकरअस। रहंइतनीस
 हिक्योरधुबंस ॥ ६० ॥ मिल्येअममल्लहु
 उद्धतमान। थपावतधारहिंदैबल्लिदान ॥ थ

थो कृ बलाय किधुं घुहिंधारि । किधौरनराव
 नरायहकारि ॥ ६१ ॥ किधौ बलपै बलवास
 वक्रुद्धाजटासुरपै कि वक्रौदरजुद्ध ॥ कुप्रत्य
 भ्रमावतहत्थकपान । दिरवातसंकरको प्रति
 दान ॥ ६२ ॥ सुहाडपहइततै गहिसंगि ।
 मिल्यो प्रममल्लहिं भल्लउमंगि ॥ नचीतैहंता
 लिनचोसरिनारि । रचीइमहडुहकूरमरारि ॥
 ६३ ॥ जहाँतैहं प्रावहि प्रावहिजाप । जहाँतै
 हंखूटतरवगानरवाप ॥ जहाँतैहं प्रेतडका
 रतजोर । जहाँतैहं धायल धायनघोर ॥ ६४ ॥
 जहाँतैहं नारदको प्रतिनञ्ज । जहाँतैहं स्वरन
 दूरनसञ्च ॥ जहाँतैहं भूतनभूखप्रकास । जहाँ
 तैहं गिह्निगूदबिलास ॥ ६५ ॥ जहाँतैहं डा
 किनिडिं डिमडक । जहाँतैहं धारनकीधमच
 क ॥ जहाँतैहं हत्थिनचंडचिकार । जहाँतैहं

फेरविकानफिकार ॥ ६६ ॥ जहाँतँहँ फुटतधू
 अतिजोर । जहाँतँहँ ब्रंबकतंडवतोर ॥ जहाँ
 तँहँ दिग्गजकातरगज्ज । जहाँतँहँ सोहतसूर
 नसज्ज ॥ ६७ ॥ जहाँतँहँ कातरकूकतकूक ।
 जहाँतँहँ चाहतबबलबूक ॥ जहाँतँहँ फुट
 तफीलनप्रत्य । जहाँतँहँ सूरनहूरनहृत्थ ॥
 ६८ ॥ जहाँतँहँ खगानखंडखिरंत । जहाँतँहँ
 गैवरगंजगिरंत ॥ जहाँतँहँ जुगिनि कोजय
 कार । जहाँतँहँ रुंडनमुंडनमार ॥ ६९ ॥ जहाँ
 तँहँ साकिनिसोरसुनाव । जहाँतँहँ पंडितजं
 गप्रभाव ॥ जहाँतँहँ हत्थिनबत्थिनजुहि । ज
 हाँतँहँ तेगतरकृततुहि ॥ ७० ॥ जहाँतँहँ
 सोनितसौबढिसाद । जहाँतँहँ प्रेतनम
 च्चप्रमाद ॥ जहाँतँहँ चालचुरैलिनिकी ।
 जहाँतँहँ भैरवमज्जतभौकि ॥ ७१ ॥ जहाँतँ

हं हं हं न जालमजोर । इतें जें हं दुस्सह कूरमत्रो
 र ॥ सुहाडप कूरमसावलदास । मिल्यो अभम
 ल्हाहि पुंज प्रकास ॥ ७२ ॥ कहै दुव बाह दु बा
 ह दु कथ्य । रबै रन त्योर बिरु कतरथ्य ॥ सरै
 जल जंन किघायन सोन । जुरै इन दोउ नतें तें
 हं जोन ॥ ७३ ॥ लरै अभम ल्हा सु बुं दिय लाज ।
 करै उत कूरम जै पुर काज ॥ बहै अभम सिबान वर
 च्छिन ब्रात । परै मनु भइ व बिजु व पात ॥ ७४ ॥
 येइ ल्ये इन च्छक बधन थूल । बने तें हं कातर प
 त बधूल ॥ मलंगत मौर व सो नित मत्त । बलंग
 त गिइ बने सिर छत्त ॥ ७५ ॥ नबै निकसे हि
 यैपे कहि नैन । सरोज कि सोन सिली मुख सै
 न ॥ कहै फटि बुकन दुक विकास । मनो सुम
 कि सुक माधव मास ॥ ७६ ॥ उडै सिर अंवर
 पच्छिन पेलि । करै जनु कालिय कंदु क केलि ॥

॥ उच्छृङ्खलनमैकहिप्रंत। भुजंगटिषारनमै
 किप्रमंत ॥ ७७ ॥ हरैसिरप्रदफह्योइहिंरा
 रि। दयोजनुजुगिनिरवप्परडारि ॥ सिखा
 कटिसूरनकीफहरात। किधौंजयकेतुप्रमं
 जनपाल ॥ ७८ ॥ किरैफटिटोपनतैकरवा
 ल। फटाबिनुलेतभुजंगकिफाल ॥ सुहाव
 तकेगरिनकसमूल। फबैइसमासमनौति
 लफूल ॥ ७९ ॥ लयैप्रसिप्रोठगरैकटि
 लाल। पकेजनुबिंबकिपुंजप्रवाल ॥ उडैक
 टिदंतनप्रोधप्रखंड। रिवैफटिहीरनके
 जिमखंड ॥ ८० ॥ किरैसहसुत्तिप्रहारन
 कान। बनैसहसुत्तिसुसुत्तिविधान ॥ जहा
 गरिहत्यगिरैप्रतिजुद्ध। किधौंफनपंचक
 केप्रहिजुद्ध ॥ ८१ ॥ तिरैबहुखेदकसेनि
 तताल। मनौकिसरस्वतिकच्छपधाल ॥

हुकैँ बहुसूरु टक्कनमार । गिरैँ जिम-आसव
 मन्तगमार ॥ ८२ ॥ डरावतडाकिनि दंतदि
 स्वाय । जरावतसाकिनिलावतलाय ॥ ति
 हँ भटनाटककेनटतोर । गिनैँ रस-अद्रुतही
 नहिंघोर ॥ ८३ ॥ गिरैँ कहुँ भज्जतभीहन
 सीस । उठावतपूर्ब बिहावतईस ॥ गिलैँ ति
 नकोननगूदहुगिद्ध । बुरेइ भजेकिमेरेभय
 बिद्ध ॥ ८४ ॥ मिलेदुवयागतिकेरनमाहिं
 । जचैँ जुरनातहँ नाहिं सुनाहिं ॥ लगीगर
 बुदियजैपुरलाज । करैँ नहिं अघसरैँ नाहिं
 काज ॥ ८५ ॥ भयो बलसाँवलको बलभा
 व । दयो अभमल्लपुरंदरदाव ॥ चलीपविकी
 छबितैँ असिचंड । खुल्यो सिरसाँवलज्यो
 गिरिरवंड ॥ ८६ ॥ ष० प० ॥ अभयसिंह
 सुत अत्यप्रबलसुगतेसरूपूरन ॥ दासी

औरसदुवहिचलेचाहतअरिचूरनासार
 सोपकेसुमटबड्डिपहुंचेसुहाडबल॥ भटसां
 वलकेभंजिदखिनांनेडिलयोदल। इन्हह
 नतपिकिवकूरमअचलदेउनभुगानहूर
 दिय। उमपुत्रमरतअममल्लअबलरिअच
 लेससमीपलिय॥ ८७ ॥ अचलसिंहत
 रवारिपरियअममल्लबाजिपर। ऊरतरबंध
 हयकु कियइनहुकारियइहिअवसर। स्वर
 अचलकोसीसतरकितुह्योअसिउच्छ
 ट॥ लियउकेलिलगिलाहनअबहुमंडिम
 हानट। अचलहिंबिदारिअममल्लइम
 सुतनबैरकह्योसकलबिनुबाजिजाय
 गंज्योबलियबुधानीपुरपतिप्रबल॥ ८८
 ॥ दो० ॥ वीरवहादुरसिंहतब। बुधानी
 पुरनाह॥ अअरहितअममल्लको। इकल

तरचिगउच्छाह ॥ ८६ ॥ वेगहयहिंरुपटा
 यबलि । समुहभारियसंगि ॥ अममल्लहिं
 यहलगियद्रम । अगसिरपबि किउमंगि ॥
 ६० ॥ ष० प० ॥ लयतसंगिअममल्ल
 तिफुहतननछोहिउ । बिरचिबपाबरवसी
 सडंकि कूरमदलडोहिउ । दिनांतुरगहठब
 धितुमुलकोऊनहितकत ॥ यहअचिज्ज
 सहिसंगिबल्लोसमुहजयबकत । जिम
 तुलादंडरवंभाहिंजुरतउरप्रबिद्धअममल्ल
 द्रम । बुधानिनगरईसहिंसबिधितुल्लिपट
 क्रियअवनितिस ॥ ६१ ॥ दो० ॥ पर्यो
 बहादुरसिंहइत । इतसुपर्योअममल्ल ॥
 इमकूरममटपंचअरि । हनिसुतोहरवला ॥
 ६२ ॥ पञ्जटिका ॥ चक्रवानदेवसिंहिहिं
 विचारि । सिरदारकुम्भनारवसुहारी ॥

नाथा उत चालुक्ये प्रेमनाम । कियं प्राह व
नर उर सचिव काम ॥ ६३ ॥ संग्रामनाम
चालुक्यसंग । जुरिकरनसिंह कथं वाहजंग
॥ परिहार परसुधर बलमचंड । दिय जोधवा
लुकहिंदुसहदंड ॥ ६४ ॥ गंजन अरिसां
वलदासगोर । उडिरूपसिंह चालुक्यप्रो
र ॥ जोरावरनारवकुम्भजत्य । सुरतेसबीर
चालुक्यसत्य ॥ ६५ ॥ नरवतेसहदु अरिसि
करतबाह । बलिउदयसिंह चालुक्यचाह
॥ जगभानुहदु प्रतिचित्रजंग । सजिकूर
वपृथ्वीसिंहसंग ॥ ६६ ॥ दो० ॥ इमबुद्धि
यप्रामैरभट । रचिग परस्परारि ॥ जुद्धमि
लेजलदुद्ध जिम । अखन अगुपारि ॥ ६७ ॥
मुक्तादाम ॥ सज्यो इत देव नैसिरहार ।
पेरिसिरो अचंडप्रहार ॥ न लीअरिसिबान

बरच्छिनचोट । लगेकतिलेतकबुत्तरलो
 ट ॥ ९८ ॥ उलदियसत्तसमुद्रनप्राप ।
 प्रकदियकूरमकोयँहँपाप ॥ थरक्रियत्यौं
 अतलादिकथान । लरक्रियसेसफदाल
 चकान ॥ ९९ ॥ तरक्रियकच्छपपिदि
 सत्रास । बनेंजनुअंडकटाहविनास ॥ दि
 क्योकिरितुंडहिंदंतुलितारि । चिक्योदिक
 कुंजरपुंजविकारि ॥ १०० ॥ बुटँसरवृत्ति
 नवृत्तिवच्छेकि । कढँवनतैजिमकुक्कत
 केकि ॥ करकहँकोचनकोअसिकद्वि
 । फरकहँविज्जुवज्यौंघनफद्वि ॥ १०१ ॥
 खरकहँढालनकेकटिरवंड । दरकहँ
 लालनसेध्वजदंड ॥ बरकहँधोनियधि
 छिनरत्त । बरकहँबाहुलटोपविद्यत्त ॥
 १०२ ॥ ऊरकहँइकहँइकफटकिथ

रकहिंरुंडलर कहिं थकि ॥ गरकहिंरुं
 जरपंजरगोदि । जरकहिंजोरमहाभटमो
 दि ॥ १०३ ॥ ल्पवंगनप्रोथसनंकियस्वास
 । भनंकियभेरिवलाहकभास ॥ रनंकिय
 कोचनरोचनरुड । रुनंकियअकरवरप
 करवरमुंड ॥ १०४ ॥ खनंकियहडुनहडु
 नरवगा । फनंकियफेनिलसेससमगा ॥
 छनंकियवानउडाननछुट । ठनंकियघट
 करीकटिकूट ॥ १०५ ॥ इतैतहं देवउतै
 सिरदार । हमल्लनभल्लनदेतप्रहार ॥ उभै
 रुपटावतसत्तिनसूर । उभैअधिबीरमहा
 मगरूर ॥ १०६ ॥ दो ० ॥ महाचंडअरु
 चंडमनु । दोऊभटजमदास ॥ असुदलगा
 हकअंकुरे । रनमारीभवदास ॥ १०७ ॥
 ष ० प ० ॥ देवसिंहकेसुभटहनियसिर

दारसिंहरवट । नारवकेरुनरुषिदेवस
 द्वियद्वादसभट । द्विगुनजोरलरिवद्रुतहि
 अक्कपहिलैतिह्रद्वीरे ॥ अरुमंडलभि
 द्वायप्रथमपठयेस्वधर्मपरि । डाकिनि
 पिसान्चयह कूकदियसुसुनिसोरनारव
 सुभट । दसमानउग्रअडेहुसहबहुरि
 अनिठ्ठेविकट ॥ १०८ ॥ दो० ॥ सुम
 दअद्रुनिजसंठिकै । देवसिंहद्रुतदाय ॥
 नारवकेतेदसनिगलि । नारवलियनिय
 राय ॥ १०९ ॥ ष० प० ॥ अबउन्नतत
 मअसउपरदिनकरआरोहत । चित्रजं
 वदियवच्युमुदितसारथिसहभोहत ।
 देवसिंहसिरदारजयरुराथियमिलेजह
 ॥ विरचतदुवबलबंधितुमुलथलरगजं
 गतहं । सत्तनखलीनखंचियअरुन।दु

किसकतिफनिपतिचकिय । बुक्जाम
 अधिकसंजोगसुरवतदिनचक्रचक्रिन
 तकिय ॥ ११० ॥ जिमद्रोणाचललेनउ
 द्योअंजनिमुतलासक । अचवनजिम
 अंभोधिबिदितप्रातापिबिनासक । चं
 डीजिमचंडपरखानमुष्टिकसंकरवन ॥
 पन्नगपरकिसुपर्णगरदितमहिमकरया
 सन । इमवैरिसल्लकुलउद्धरनलरिसमीप
 नारवलियउ । मानोकिमीमदृढपयमुरारि
 दुस्सासनउपरदियउ ॥ १११ ॥ भुजंगप्र
 यातम् ॥ मिलेबन्हिकेमानुकेबंसमज्जी । दु
 हूंफोजमेंओजतेंमोजदज्जी ॥ दुहूंतेरके
 जोरतेंभुमिदबी । इतेंगोमुरवामेरिबज्जेअ
 रबी ॥ ११२ ॥ भयोसेसरकेसकेबेसमिनी
 । किटीदंतुलीदारिकेंतुंडदिनी ॥ कढ्योव्या

लपातालनातानकोऊ। सस्यो बच्छबीम
 च्छदौलेयसोऊ ॥ ११३ ॥ हठीजूटतैमेरु
 केकूटहस्ते। चहुंकोइससोइकेश्रोतवस्ते
 ॥ मजे लोकस्वर्गादिलोकसर्गोने। लोई
 सकौसीसकेलाभलौने ॥ ११४ ॥ मयेरा
 जसिंधूनकेलागभिन्ने। नचीजुमिनीता
 लबेतालदिने ॥ रिवरहहुषैरवृष्णबुद्धि
 रबहे। मर्नोफुलामैचक्षुरीदंडमंडे ॥ ११५ ॥
 उमैमंडलीयावलाजीरडारि। उमैबारकी
 कारमैनाहिअसवे ॥ इतैलज्जबुंदीसकी
 रोकिठिखै। उतैरव्यालज्जेसिंहकेजोररिव
 लै ॥ ११६ ॥ उमैजेठकेमानकेमानउमो।
 परैफोजकेअोजकेअंलुपुमो ॥ बकीडा
 किनीडकाडैरैबजाये। यनेमेदकेमेदमैदो
 अशाये ॥ ११७ ॥ फिरैफैकरीचंडेरुंडपु

ल्ले । मिरै भूत के रत्त भै मत्त भुल्ले ॥ भूमै गिह
 नी चिल्लनी मेद भ करवै । रमै पंक म कंक ना
 संकर करवै ॥ ११८ ॥ तपै रंग बाजी न के तं
 ग वुहै । छपै भीरु बिद्वा ब के चाव छुहै । उल
 ही नटी लो गिर को उछहै । फिरै रीस क ई
 स के सीस फुहै ॥ ११९ ॥ कटी के पता का
 उडी प्रबल कहु । चपु प्रेथ के जोर ज्यो मोर च
 छुहै ॥ कुकै मंड बेतंड पै वात रूपै । कियो सेल
 के अंगार व जूरि कपै ॥ १२० ॥ बव्यो संकु
 ली सत्य लै बत्य बाही । निभ्यो पान पै ह्यो
 सदा गो न नाही ॥ गहै कोद क हार के पार
 गोहै । खुरो बाजि के घुमि के मुमि खोरे
 ॥ १२१ ॥ फिरै के गदा मारि गो मत्थ फोरि नि
 रै कं म मती न को रं क चोरै ॥ कठै हत्थि हो
 इन क उद कच्छी । सुर तार की नग जौ व

रमन्ही ॥ १२२ ॥ किते कुपि होदे नमै
 सरुहै । मरोरै निसादीनके कंठ मुहै ॥ भिदैं
 त्यौ गजा जीवके जीव मुहै । बढे मोहमै के
 प द्यस्त बुहै ॥ १२३ ॥ नदैं मंमकी कुहि
 भेरी नगारे । बढै के बिदारे हहा हाय हारे ॥
 चही अगिजंगी चिनंगी चमकी । सिकी
 कार संसारकी बुद्धिसंकी ॥ १२४ ॥ तपैप
 कवरी बाजि हकैतर कै । जपै रामके घु
 मिहै मुमिजकै ॥ खिरे हडुके कुंडके खं
 डखंडी । मनो बुद्धि ओरेनकी मेघमंडी ॥
 १२५ ॥ चलै रोपत्यौ चापजीवा चतहैन
 बैरे वरी मूचरी प्राननहै ॥ बहै वेगतेते
 गसनाह बुहै । कियो सबकी पतिमै तति
 कुहै ॥ १२६ ॥ मरै सुडि हथीनके कुंडमु
 कै । कटै प्रोथबाजीनके कंकुकुके ॥ भ

ईरुंधि त्रैलोक्य कौंधुंधि मारी । च ईस्वर्ग
 की सीमलौ भीम चारी ॥ १२७ ॥ त कैंबीर
 कायास अयास तंद्रा । चढीराति सोपै
 अमान ष चंद्रा ॥ सजी दैव त्रैजामकेपु
 वसंजा । बनें भानु कैं विष्फुरी चंद्र बंजा ॥
 सबै संकुली ध्वांत संग्राह सीमा । भचकी
 फिरी मार अंगार भीमा ॥ दिपैं हों कटारी
 उडी अंब दीसी । सुही चंद्र कों मोहिनी
 रे हिनीसी ॥ १२६ ॥ जरै गै न गिहीन के
 नैन नकी । सुही मृग की तीन तारा थर
 की ॥ उडैं हीर जो कालिनी इक उगै ॥
 अभाजास अंधार पै मार पुगै ॥ १३० ॥
 कर्म गै न के मल्लज्य जोर कड़े । महाकारि
 अदित्य जे चारि चड़े ॥ बुट्यो कहि त्रै
 मूल उड्डीन बहे ॥ सुही तीन तारी नते पु

धसोहै ॥ १३१ ॥ छुटै चक्रद्वै बक्रप्राया
 सद्यजे । मन्त्रीमजे पंचतारेनभ्रजे ॥
 महाकारिह पंचअंगारउडे । मघाजोमनो
 हकिआइ हड्डै ॥ १३२ ॥ जरतेउडे का
 लिकापालिकापै । तिपुबोत्तराफग्गुनी
 रिच्छुवै ॥ उडेअजरे हत्यलमीअं
 मारी । मपंचालजोहस्तनक्षत्रमारी ॥
 १३३ ॥ चहैअब्यमुत्तीबनेइकचिन्ना ।
 अवालाचहै स्वातिइकेपवित्रा ॥ अकं
 तीकवीअब्रतेअब्रधाबै । बिसारवासु
 चोरिच्छुकारवाबनावै ॥ १३४ ॥ उडे
 ल्योतिलेमानकेकेअंगारे । तिज्योमित्र
 मच्छुकेव्यारितारे ॥ चलीकानतहुड
 लीज्योमचीनो । सुनासीरकेरिच्छुकेते
 मतीनो ॥ १३५ ॥ इलीबक्रपैरुडुसंख्य

अंगारे। त्रिज्योसिंह लंगूलत्योंमूलतारे ॥
 जौरेअब्रह्मगेदंत दोअोर सोंजो। दिपैपुह्रअ
 खाढसोरिअद्वैको ॥ १३६ ॥ अंगारीउमेअ
 वकाहउअरी ॥ कढेउत्तराद्वैभयचकुका
 री। इतेमैउडैअब्रह्मअोरैअंगारि। त्रिदोए
 भजेतेमिजित्तीनतारे ॥ १३७ ॥ भगोबिंद
 कोज्योकह्योमगत्योंभो। मृदगौलरव्योचो
 धनिशामज्योंभो। उडैचर्मसोचंद्रमाला
 अरोह्यो। सुहीद्वन्तवारीसकेरिअसोह्यो
 ॥ १३८ ॥ महारतिअर्केन्दुकैसंतामने।
 अतारेरहेकृत्तिकाअंतअने ॥ त्रिजाया
 हिंपुह्राभइयोत्रिजामा। मरीफैरिअज्योअ
 स्वउद्वेदकामा ॥ १३९ ॥ हवीबीरजेसिंह
 केधुह्रुह्रुके। कुहूसालमीसुरफैरंडकुह्रुके
 फिरैसमुलीबमुलीमिह्रुह्रुके। प्रमैरिग

लासेनभालेनभुल्ले ॥ १४० ॥ भन्योवैरिस
 लोलभूलेसभायो । जग्योदेवक्रव्याददजो
 जैतजायो ॥ नरुजातसैंगातयोलीलिलि
 न्नो । नहीईसजज्योसुपैसीसदिन्नो ॥ १४१
 ॥ दो० ॥ गिरतगिरतनारवमजब । द्रुतमंडि
 गसिरदार ॥ देवसिंहकियछकितदेअसि
 उपवीतउतार ॥ १४२ ॥ अक्वसुदेवहनि
 नारवाहि । रवायइकृतसरवगा ॥ धक्योम
 बलहरबलधुर । फिरतमचावतफगा ॥ १४३
 ॥ स० प० ॥ अमोतच्छकडरगबहुरिपयपु
 च्छविद्विय । अमोबरवारुदद्वोहिपाव
 कतिरछविय । अमोदिनकरअसहसुर
 रिउत्तरमगलिद्वो ॥ अमोदुधितमयदब
 हुरीविन्दियअलविद्वो । अमोसुदेवअ
 हवअडरअरुनारवअतिउफन्या । जयसि

६

हमानभंजकसजववेतालनरंजकबन्ध्या ॥
१४४ ॥ निःशाणी ॥ नारवकों देवानिगलि
अग्नी उफनाया । इतनरउरनूपके सचिव
चालुक चंपाया ॥ प्रेमसिंह हूँ देपलट दुतदा
वदिरवाया । ऊल्लरिलोहननंकतेतेगातर
काया ॥ १४५ ॥ सरोँ हूँ सत्यहूँ गलबत्य
मिलाया । रवंडेराथरिविलार हूरनफगरचा
या ॥ पातगदाके पुटलीफटकारफबाया ।
घायहवकैरंगके जलजंत्रचलाया ॥ १४६ ॥
खेहगरहीमेहलौँ अबीरउडाया । फूलफले
जेफिफरेफबिफांकफुलाया ॥ गोलीगोट
गुलालके बहुअेरचढाया । डैरोंडिंडिम
डाकिनी उफडकबजाया ॥ १४७ ॥ गनि
काज्यौँ चिनं जुमिनीथे इथरकाया । भैरों
गायकभायकैँ अालापउठाया ॥ नाथार

तमेमहुनिडररकारेवल्हरिवल्हाया । दोऊ
फयाउदयामैइमकोलुकभ्राया ॥ १४८ ॥
छेदेतीरनछनियेवीरनबिरमाया । सिल
यमाकोसंकुलेषाकोकिछकाया ॥ दोऊ
भारतदावजेघनघावधुमाया । नरउरमंथी
प्रेमकावहुवारबचाया ॥ १४९ ॥ रवेडेरेवं
डेरावकेहुतप्रेमदवाया । चंचलचंडचमं
किकेयीवागरकाया ॥ सिवकोदेसिरप्रेम
कागतप्रानगिराया । चालुककोनरउर
सचिवहनियेहहकाया ॥ १५० ॥ देरिदि
निरंकुलदेवइहिंसजितसमुहाया । धर
देउनयमचळदेफनमालफिराया ॥ हहु
नमंसनिहारहीहहुहठभ्राया । जिनलमो
तिमलेचलेरवमपानपचाया ॥ १५१ ॥ कं
कटदोपोंकहिकेकडिजातभ्रथाया । ज्यो

सबनीगरसहुमै चहितंन चलाया ॥ योऽयं
 सिउच्छदेवकी रत्नचित्रराया ॥ खंडेराय
 रिविल्लारकी रवगो बलराया ॥ १५२ ॥
 दो० ॥ नरहरपतिको रत्नचित्रराया ॥ खंडेरा
 यदुनाया ॥ बहुरिदेवसिंह वल्लो ॥ कूरमद
 लजयकाम ॥ १५३ ॥ ब० प० ॥ महाराजगु
 ष्ठमामसू० पहिलेसुपरा हयो ॥ सुत वकिसं
 ग्रामसिंह कूरमदलकलो ॥ कारनसिंहकच्छ
 गद चोहितिसिंहके रवसायो ॥ पानीमान
 दुं प्रलयउदयिसतंनउपनायो ॥ प्रमका
 लरवगोप्रसंककरनकूरमउतउद्धत ॥ इतसु
 बल्लो ॥ त्रयनेरविदरिवकूरयतदिनाय
 पयप्रतिजयजयबल्लो ॥ १५४ ॥ इतसं
 ग्रामप्रसंककरनकूरमउतउद्धत ॥ इतसु
 दियजयग्रामउतसुजेपुरजयइच्छत ॥

दोऊजुरिजमदावधावरखगधावधुमाये ॥
 बहुबिमानअच्छरिनलुब्धिप्रायासलु
 भाये । वीररुउद्दवीमच्छबलिअतिअच्छि
 ज्जरसउप्यज्यो । नञ्चतअनेकरुंडननिर
 रिदभालचंद्रतद्दिनभज्यो ॥ १५५ ॥ करभ
 नश्रीवाकटतउनहिंवेतालउठावत । अत्र
 तत्रअरोपवीनलयलीनबजावत । मनु
 जनमुंडमृदंगढोलबज्जतहयठहूर ॥ गो
 सुरवगतिगजमुंडिमचतसंगीतमनोहर ।
 गावतपिसाचजुगिनिगहकिअहकिसु
 सिरअनइतत । करितालखंडसीसक
 किलकिहल्लीसकडाकिनिहलत ॥ १५६
 ॥ दो० ॥ रनदोऊयाविधिरचत । सजि
 करनरुसंग्राम ॥ आजिनरुकेलेअडर
 ताजिनवगातमाम ॥ १५७ ॥ कुपिहनि

यकूरमकरन। सोलंरबीउरसंगि ॥ प्रतिभट
 परप्रतिभटयहहु। इततैबढियउमंगि ॥
 १५८ ॥ जारियखगचालुकमपदि। चल्हं
 यदपदिप्रचूक ॥ कियसिरकूरमकरनको
 । दोपसहितद्वैटूक ॥ १५९ ॥ हनियाहित
 मल्लाहुकम। खिच्चियसेरखपाय ॥ लिय
 अबगायरसेरपति। घासीरामनिराय ॥
 १६० ॥ कूरमघासीरामतब। सिरजारिय
 समसेर ॥ कहतरिदिनवहसिरकियउ। सि
 वनिजमालसुमेर ॥ १६१ ॥ समरपह्योसं
 आमकों। देवसिंहहुतदेरिब ॥ कूरमघा
 सीरामकों। पूगोसम्मुहपेरिब ॥ १६२ ॥
 देवसिंहकेउरदुसह। हुलकूरमखगदीन
 ॥ पैठोकटिनागोदपुनि। तरकिपंसुलीती
 न ॥ १६३ ॥ इहिंअंतरदेवहुअतुल। त

ससिरप्रारियतेग ॥ हनिरसोरपतिकोंडु
 लसि। बढ्योबद्धरिअतिबेग ॥ १६४ ॥ हरि
 यसिंहतों करहरी। पुनिजद्वपरताप ॥ कर
 नसिंहद्वोरकुल। येअरिपिक्वअमा
 प ॥ लिरितइन्हें मानहुंलिरवे। खगसि
 चानरवरकोन ॥ १६५ ॥ आयोदेवसुउ
 प्परहि। प्रलयमांहे जिमपोन ॥ १६६ ॥
 तबहिदेवकरबंधतकि। तोंवरप्रारियते
 ग ॥ तीननइनहनिकैतरु। दीरनयोहतवे
 ग ॥ १६७ ॥ जेतसुवनकेइमजवर। तीनल
 गियतरवारि ॥ अरुखटभटअमैरके। अ
 रदलयेरनमारि ॥ १६८ ॥ अजसुदेवअ
 तिलोहअकि। परयोमूरअितप्रान ॥ हूरन
 कोंहोंसहिरही। येंहंअथुहिबलवान ॥
 १६९ ॥ सालमदलसागरमध्यो। अभय

देवप्रतिलाग ॥ तोउनलद्धोजयरतनायं
 हेंबुंदीसप्रभाग ॥ १७० ॥ सठसालमइ
 करवालबिच । दुस्योरहोभयदाव ॥ बुंदिय
 दलसमुहबढे । आमैरेउमराव ॥ १७१ ॥
 ष० प० ॥ परसुरामपरिहारजोधचालुक
 प्रतिजुहिय । सावलगोरसजोररूपचा
 लुव्यप्रहृदिय । जोरावरनरुबंसलरि
 यचालुक्यसुरतसह ॥ बलिहडाबरवलेस
 उदयचालुकलियप्रगाह । जगभाबुह
 हुउद्धतजुस्योक्रमपृथ्वीसिंहसन । सजि
 माहिंमाहिंदुवदलसुमटलगोइमरव
 गानलरन ॥ १७२ ॥ निःशाणी ॥ दो
 ऊप्रोरदुबाहयोंप्रसिबाहप्रबकें । डैरों
 डाहलडिंडिमीडकेंडकडकें ॥ सेलभन
 केंसंकुलेप्रतियायउबकें । सीसकपाली

संग्रहै काली सु किल कै ॥ १७३ ॥ खूब
 बजाई रवगनै धाराधम च कै । कुकै को
 उ कराहि कै कमठे सम च कै ॥ नीसासा
 नासानुगी प्रासागज त कै । भोगी भोगन
 मिलि स कै भुम्मी प्रक ब कै ॥ १७४ ॥
 चो हों दिस रो हों रुके छो हों भट ब कै । ज
 डे जंजीर नजरे बड़े गज ब कै ॥ ताजी तंगन
 तारि कै फालो फरर कै । मेह प्रडं बर मंडती
 रज प्रंबर ठ कै ॥ १७५ ॥ केसूर नथ कै
 कलह के हरन त कै । गातन मा वै गिहनी
 गिलि गूद गज कै ॥ केधायक पायक कट
 सायक सक सक कै । खंधे रवे ल्ह रि व ल्हार के
 भट से लभ च कै ॥ १७६ ॥ खंड बट कै
 खुपरी ल गि लु ल्यि लट कै । से लो मार सु
 मार है अस वार उ च कै ॥ धुकि ह ल्यी धीर

नधरैजंजीरनजके । लकलकेबरहीलग
तल्लिधायबबके ॥ १७७ ॥ रीसबदके
अंगकेकेसोसपटके । केकेकटसंकटके
केलेगतरके ॥ सिरफहेधरउल्लटेकडिने
नफदके । हयहहेपयउच्छटेरयमगरउल्ल
॥ १७८ ॥ लोहीबूढनिलालकीधाराधक
धके । केडाकिनिरवप्परभरकेसादिनि
बके ॥ चंडहपानीचंचलाचढिअव्वच
मके । यौअंबरआयुधउल्लेजिमनागलर
के ॥ १७९ ॥ बीरोंबीरवरबरीतरवारि
तरके । दोहत्थनगरैदपटिकेबत्थनह
के ॥ केअंबकबबकबजेकेढोलहमके ।
केजंबुकमंडेकवलकेकेककिलके ॥
१८० ॥ केबदीबुल्लेदिरुदरसबीरउबके
सूरठरकेसमुहीनमहरथरके ॥ तीरद

सारों निकवसैरनधीररटकैं ॥ केमातरमा
 तर कहैं केकातर चकैं ॥ १८१ ॥ सोरस
 लकैं संकुलीतपिघोरतुपकैं । केकंकटअ
 टोपकैं केटोपमचकैं ॥ धायेबहलधूमके
 छायेछितिठकैं । कपिफरकैं केकुकेपयकैं
 पिलरकैं ॥ १८२ ॥ धायहबकैं केहकैंह
 लीनहलकैं । गीतअलापों जुगिनीलेजा
 तलतकैं ॥ ग्रामसुपेगंधारमेंतीरेस्वर
 तकैं । ज्योंनरत्यों हेवरउडे । ज्योंगैवरजकैं
 १८३ ॥ धाताजगनिम्मानकेअभिमानअ
 सकैं । पानीभुमिपताललोंजिमथालथर
 कैं ॥ अघेअघेहोहुयों बडेभटबकैं । त्यों
 त्योंपयपच्छे लगेबनीधकयकैं ॥ १८४ ॥
 समयघोरसंहारकोइहिरीतिउबकैं । कों
 नपिताकोपुत्रयोंनातेसबथकैं ॥ उबीरे

मैं इक से मन भीत भुरकैं । जिम तिम प्यारे
 जीवकों तजनों ननतकैं ॥ १८५ ॥ कलब
 ह्नी बानी कहैं प्रमिभीरु भूदकैं । पाय अटकैं
 पगाडों लरि लुत्थिल दकैं ॥ अंत उलजै
 अंत सो जिम फंद जरकैं । इक कटकैं इक
 कों परवरै तप दकैं ॥ १८६ ॥ किते होइन कैं
 पुरौर बुर तालरवनकैं । कपि कलेजे के कहैं
 के छहर दकैं ॥ पिदिम चकैं पंसुली रीठक
 वरकैं । किते हूल कपान की बात लब बकैं
 ॥ १८७ ॥ फहैं मुंडन फांक ज्यो दारिम हरर
 कैं । कंधक फोणी कर कटैं कर के च करकैं ॥
 कहे किरत नितंब के जिम कच्छप जकैं । क
 दिजंघा सत्थी कटैं । हत्थी हनिहकैं ॥ १८८
 व्यंजन प्रेत बनात के गह कात गटकैं । किते
 कोय कटाहकैं पयलोहित पकैं ॥ उंबी सिंबी

अंगुलीबहुसेकिबतकैं । स्वाजेपूषीखल्ल
 केलाजेकरितकैं ॥ १८९ ॥ रदुरमांखंडी
 रुदुप्यरीचकवैधसबकैं । भेजाभातभराइ
 कैगिलिजातागजकैं । फैलेधेउरपिफ
 रनबैलेबनिबकैं । बुझागेरबनायकैं
 बुझाभरिहकैं ॥ १९० ॥ भोजनअैसेभू
 तयनकारिकेकफिलकैं । जिहिंवेलासके
 मुरतबंकेअकबकैं ॥ फाटिबकत्तरवि
 करवैकेतोपचकैं । फीलबकैं फांदते
 खगहडुरवकैं ॥ १९१ ॥ मुल्लैकेमगामां
 वरीपुगपंकरबुचकैं । धुपैरेवतरपालले
 धनरत्तगुटकैं ॥ बाहेरत्तचढाहिकैं बउसा
 हिचहकैं । कायउककैंकेकटैकरिपायकक
 ॥ १९२ ॥ लगेअंबरलायसीकेघायुटप
 कैं । किवटकेबटकेकरैकटकनकमकैं ॥

नाचन बुद्धे ड किनी लैडा चड चकै । ज्वाल
मरुके केजरी गज ढाल ढरुके ॥ १९३ ॥ बीर
बद्धतर पार केतीर तमके । इत दमके हीर
लौं चिनगी किचमके ॥ सत्त लो कउ अर
रि के धर सत्त यमके । परिप्रदो दि कपाल
के कपाल कसके ॥ १९४ ॥ के डुके गाफि
लक दे लगिने न पलके । सिस करके संकु
ली फन पंति फरके ॥ धायन सत्ये स्वासके
रि फे नममके । छोह गरुरी जोरि के सिर
फोरि सके ॥ १९५ ॥ मुल्लिम दके के मिर
कतिर वान क दके । महि लापय मंजीर
लौं हिजीर ठमके ॥ बंध ठ हके जीर के के
बन हके । पिदि कसके कच्छ पी थर धु जि
धसके ॥ १९६ ॥ बेदंतु लि वारा हकी ब
हु वार बरके । लैके धायल लकल की स

दिनिसरकै ॥ करजपूतोंबलकढैधूतों
 परियकै । पत्तरवरकै जुगिनीकरतबरकै
 ॥ १६७ ॥ लक्योजिनतैसोतुमुलतेफेरिन
 तकै । तदिनपंचोलासपै नरनासनथकै
 ॥ योंबुंदीप्रामैरकीप्रतिलाजप्रटकै ।
 हुडेकूरमहल्लसों हरवल्लनहकै ॥ १६८ ॥
 दो ॥ इहिंप्रंतरप्रवसेसप्रव । दुवना
 डीदिवसेस ॥ बुंदीमटबिज्जतबढ्यो ।
 बिजयकूरमनबेस ॥ १६९ ॥ इतिश्रीविं
 शभास्करेमहान्वंपूस्वरूपेदक्षिणायनेन
 वमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रयस्त्रिंशोऽंश
 मयूरवः ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६
 ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६
 दो ॥ नृपकेवरजतजेनिडर । प्रमयदेव
 निमप्राय ॥ तिलतिलबुंदियबीरते । तु

द्वेप्रसिनप्रघाय ॥ १ ॥ तिनमै इकजैत
हतनय। देवालरनउदार ॥ मिश्रुनतउमू
रछिमरद। सुतोत्रिप्रसिसमार ॥ २ ॥
ष० प० ॥ पश्योप्रमयहरिप्रथमपारिपंच
हिराजाउत। पुनिनिजसंगहिपरिगसु
गतपूरनदोऊसुत। हडुदेवपुनिहनिय
नरुवसिरदारस्वतंत्री ॥ खिजिपुनिख
डेरायमारिनरउरपतिमंत्री। हनिपुनिर
सोरपतिवहहुलसिदूरमघासीरामकलि
। जइवकबंधतौवरजुरेबहुतेअरितीन
बलि ॥ ३ ॥ दो० ॥ खगगनइमउमराव
खट। मारिदेवबसिमोह ॥ रिपुरुंडनमं
चकरसिक। लरिसुतोबकिलोह ॥ ४ ॥
करनहुकमअरुसरइन। तीननहनिब
लतेग ॥ नाथाउतसग्रामनर। विनुसिरन

श्योविग ॥ ५ ॥ बद्धलें ह्यहवप्यके । नापी
 उदल्यो नां हिं ॥ सीसअरथ बुधसिंहके ।
 देपत्तो दिवमां हिं ॥ ६ ॥ ब० प० ॥ परसु
 राम परिहार पस्यो-चालुकजोधहिं हनि । चा
 लुक रूपहिं चक्रिष पस्यो सांवल गोरन म
 नि । जोरावरन रुजात सुरत चालुक हनि सु
 तो । उदयसिंह हनि परिग हड्डु बरवते सधि
 रुतो । जगमानु हड्डु जुक्त ह न्यो वूरमपृ
 एकीसिंह के हं । लगि मां हिं मां हिं द्विजे
 लरत ते उन को पसमात ते हं ॥ ७ ॥ दो०
 ॥ बुंदीपति कोमट बलि । नामसुज दोराय
 ॥ अति उद्धत हनि पंचअरि । लुह्योअसि
 नअथाय ॥ ८ ॥ बारहसै इत्यादि बलि
 दुदीसमरिग दुबाह ॥ भट हजार थायल
 भये । निडर देवतिन नाह ॥ ९ ॥ ब० प०

कुसयलपंचोलासभयउ इमजंगभयंकर। चर
मप्रद्विदिगचपलहंकिपुहुंचतरविहेवर।
बिरवमरारिद्रुवबन्धवृत्तिपत्थरिबटउषट
॥ दुवघाँसौलरिविदादरेवेतखोजनभेजेभट
। कुरापनकसानुचितिहोमकरिलायेडेहन
घायलन। जयपुरनरेसजयसिंहजयबुंदी
पतिप्रनजयबिमन ॥ १० ॥ दो० ॥ बि
त्तोइमप्राहवबिकट। जित्तोसालमजीर
॥ सोधतप्रबघायलसुभट। प्रागमनिस
दुहुँप्रेर ॥ ११ ॥ त्रिप्रसिघायजेतहत
नय। देरव्योघुभतदेव ॥ निजसिविका
पठवायनृप। प्रान्योवहदिगाएव ॥ १२ ॥
सुनतपराजयरवगासजि। खिजितंहंभो
पखवास ॥ यासवानरघुदुहुँनपुनि। बिर
च्योलरिदिववास ॥ १३ ॥ बरजतहूति

लतिल बढ्यो । कहि अरिन अतिकोप ॥
 स्यामि हारि सहि नहि सक्यो । भलमलनापि
 लमोप ॥ १४ ॥ कुरु अनी कबुं दीसको ।
 अलय संग इमल गि ॥ यहरन करि अब
 हरि गिनि । पलव्यो द्रोहन पगि ॥ १५ ॥
 समय घोर पर रे सुमट । बदले सब नयवेय
 ॥ घाय हुं सके घाय लन । सालम दल वि
 चलोय ॥ १६ ॥ रहे मनुज बुं दीसहि ग ।
 क सहं स अनु कुल ॥ सालम दल वि च
 नव सहं स । मुखो बहुरि अघ मूल ॥ १७ ॥
 हिं अंतर अंधार अति । कुहु निस अघा
 मम जीन ॥ बुं दीसति मलि मंद बुध । नीती
 विपति नदीन ॥ १८ ॥ ष० प० ॥ जिहि बुं
 दिवहित देव सिं ह मैन नरन मारिय । जि
 हि बुं दिवहित समर सिं ह बर दुर्ग विधारि

य। जिहिं हितसूरजमल्लरतनरानां खिजि
रवद्धो ॥ जिहिं हितभोजसजेरुलरिरुसूरति
जयलद्धो । जिहिं हितजयीससभरसता
साहजिहांकोंसीसदिय । बुधधवहिं बेरि
जारनविरवयतदिनवहबुंदियतकिय ॥
१६ ॥ दो० ॥ बुंदीपति बहु विधिबिगारि ।
असोमयउअसत्त ॥ अचविनुहलजिम
अंधकी । बरबीजायनबत्त ॥ २० ॥ कूरम
दलइतबिजयकरि । सालमसहितसहा
स ॥ अमलकिनअमैरको । कुसधलमं
चोलास ॥ २१ ॥ इमकुसधलअनिरुद्ध
सुव । पायअनादरउच्च ॥ बिमनारनिबि
तायकै । कोटाकौकियकुद्ध ॥ २२ ॥ संभ
रदेवसुजेतसुव । असिनयघायलअंग ॥
बुंदीजानित्यकोयदिति । सिविकाचदि

दुवसंग ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ चढिचल्लियच
दुवानछोरिदुंदियद्वनाधम। कोटानिबस
थमंगरोलकियतहंमुकामक्रम। हीदुव
रानियसंगपुरसुकोटापठवाई ॥ पठयोसा
लकपासकुमरनिजरुयहकहाई। तुमदेव
सिंहजिहिंतिहिंतरहयाहिजिवावदुद्ध
वप्रब। जयसिंहजोरपिकवदुजबरगुमर
तोरमंडलगजब ॥ २४ ॥ दो० ॥ सेवासु
हरीग्रामको। गुजरगेदागोत ॥ जिहिंनि
जधावरधाइजुत। पलनांलियधरिपो
त ॥ २५ ॥ बुंडाउतसीसोदभट। भारत
नामसुभाय ॥ कढतछन्ननृपकुमरके।
सोदियसंगसहाय ॥ २६ ॥ पादाकुल
कम् ॥ धावरभारतसिंहपिधाये। चम्मलि
उत्तारिसजवचलाये ॥ दुबियनामबिन्दु

मतिश्रामह । आरुत हां बिरचिय विश्रामह
॥ २७ ॥ जहं हदलसिंह हडु भोजाउत । जत
ननरकरवेगेह विनयजुत ॥ कुमारउमेदरति
तहं कही । प्रातलगिये बेघममगपही ॥ २८
॥ गिरिवरघंटिय लंघि बेगगति । पडुं चो
बालनेर बेघम प्रति ॥ देवसिंहमातुलस
सुहदुत । जायबधाय लयो उच्छवजुत ॥
२९ ॥ इतसालम लगि पिद्वि उडायउ ।
मंगरोल बुद्धहिं पडुं चायउ ॥ पच्छो मुरि
आरुत बुंदिय प्रति । अमल स्वकीय किय
उजयउन्नति ॥ ३० ॥ दिनी मुलकदले
लदुहाई । सबकौं नृपता अधिक सुहाई
॥ छत्रमहल बिचरहि छत्राधम । कियउ
राजधानी भुगनक्रम ॥ ३१ ॥ बुद्धिसुन
हडुम अिस भुलायो । मनहुं राजपीदिनने

पायो ॥ इक्ष्मलकर दासिनऊकमेरनाक
नकफउत्तकनकहिंडोरन ॥ ३२ ॥ मंगरी
ल्लेइतमतिमुद्धह। विनुसुधिचल्यो
करमजिमबुद्धह ॥ स्यंदनसतबारन
बलीसह। बहलदलडेराइकबीसह^{३३}।
पुनिसतसत्तरिसकटप्रमानह। रुचिर
पालकीतरवतरवानह ॥ इत्यादिकब
दुरवतसुहाये। रवचहीनतत्यहिर
रुवाये ॥ ३४ ॥ अप्पचल्योजितमुह
तितत्रैसै। पैनविचारकोनगृहपैसै ॥
महनलंधितारजगिरिधंदिय। मूरनन
भंजिबलहिंजरीबंदिय ॥ ३५ ॥ राजाइ
मपहुंयोप्रभादरठ। ग्रामप्रेमपुरहैमथु
करगठ ॥ कछुदिनतत्थरह्योकरलेस
ह। देरवनचह्योरानकोदेसह ॥ ३६ ॥

दो० ॥ असिलजेठतेरसिदिवससिद्धि
योगरविवार ॥ मधुकरगढले बुद्धनृप।
मुरिचल्लोमेवार ॥ ३७ ॥ कुसलसिंह
भट्टरानको। भैसरोरगढधाम ॥ तत्थबंभ
नीसरिततट। किन्नेजायमुकाम ॥ ३८ ॥
पादाकुलकम् ॥ सगताउतप्रट् भैसरो
रपति। बहुप्रजकुसलसिंहरचिबिबलि
॥ समुहप्रायनजरिहय किन्ने। अरुति
हिंनृपहुवाजिइकदिन्ने ॥ ३९ ॥ रत्ति
इक्क पिच्छे वेधमरहि। चाहुवानगोउद
यनैरचहि ॥ प्रायशानसंश्राममच्चिसुह
। मोहिल्लानगरीलगसमुह ॥ ४० ॥ मिल
तहिमुदवुंदीसबलायो। चरनरानप्रतिह
त्यचलायो ॥ रानसुहत्यपकरिअनुरत्ते।
। मुसकिलायवृत्तियमयमत्तो ॥ ४१ ॥

इहिं विधिप्रकट कियो प्रतिप्रहर। अ
रुविमना कूरमहित अंतर ॥ प्रविश्यो पु
नि बुद्धहिं लै पत्तन। महिमानी पठई सं
कोचन ॥ ४२ ॥ इति श्री वंशभास्करे
महा चंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमरा
श्री बुधसिंहचरित्रे चतुस्त्रिंशो ३४ मयू
रवः ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
दो० ॥ इत कूरममालवप्रवनि। सुनि
कुसथलसंग्राम ॥ कदनमन्निनिजमदन
को। कुप्पिफिह्योजयकाम ॥ १ ॥ पादा
कुलकम् ॥ मनहुं बंधविच्छियचटका
यो। जानिप्रलयभूतेसजगायो ॥ कुञ्ज
कलहजयसिंहमानिकिया। कोटासीम
मुकामप्रानिकिया ॥ २ ॥ होदलेलसा

गहिसालमसुत । चह्यो राज जिहिं स्वाभिध
रमच्युत ॥ वाजुत नृ. कूरमउफनायो । इम
हुतसरितकुसकतट-प्रायो ॥ ३ ॥ कुस
कहिगयो मिलनकोटापाते । विरचिय
समयजानिअतिबिबति ॥ हयगजव
सननजरिकारिहडा । तजिनृपथरमरबु
च्योअधरकडा ॥ ४ ॥ पाज्कटिका ॥
पुनितिहिंमुकामकूरमप्रवीन । कमजुत
दलेलअभिषेककीन ॥ कोटेसहत्यप
हिलेकराय । बलितिलकहत्यअवरन
विधाय ॥ ५ ॥ करिबदुरिअप्यकरति
लककुम्पासिरधरियअन्नमगललित
लुम्भ ॥ पुनिढोरियचामरअप्यपानि ।
बुंदीसरावराजावरवानि ॥ ६ ॥ अरु
कोटापतिसौकहिअठेल । बुंदीसगिनहु

अवयहदलेल ॥ जोआवहिं बुंदियसुभ
दबुहि । तोताहिनरकवहुलेहुलुहि ॥
७ ॥ हयअदुसप्तइकं १७८७ अअब्दमा
न । बनिबिसदजेठतेरसिबिधान । इम
करिदलेलअभिसिकअंक । समयानुकू
ल्यकूरमनिसंक ॥ ८ ॥ निजदुषाकु
मरितनयासुनाम । लांगलिफिलायता
केललाम ॥ मत्रिसुदलेलजायातस्वी
य । मजइकअरोहिदोरुगरीय ॥ ९ ॥
कोदेसपदालयकियप्रयान । थिरहुवत्र
अइकाहितरवतथान ॥ सिरुपावबाजि
हुवहुवनवीन । कोदेसहुहुनकीनजरि
कीन ॥ १० ॥ तदनंतरकूरमतोरतिकर
। कोदेसाहिंकोदासिउसिकव ॥ उज्जेन
अनुमअवरहुअरेस । देसिकवरुपठ

येस्वस्वदेस ॥ ११ ॥ कूरमदलेलजुतवि
रचिकुच्चा प्रायउभुव कुस थलयुमरउच्च ॥
संग्रामभुम्भितहं लरिविसमस्त ॥ आत्मीय
भदनबंदियन्नरस्त ॥ १२ ॥ दो० ॥ ह
हुअप्रमयपहिलै हरिया सारसोपपतिस्वा
स ॥ वाकेसुतरतनहिंदियउ ॥ पत्तनपं
चोलास ॥ १३ ॥ अजितसिंहको सुवत
नय ॥ इसरदापुरईस ॥ कुसथलपुरतादो
दयो ॥ हरिजयसिंहमहीस ॥ १४ ॥ सां
वलदाससुहाडपति ॥ सुतसोभागसना
म ॥ वाहिपलोधीपुरदियउ ॥ कूरमनूपज
यकाम ॥ १५ ॥ नाहनगरनानेडिको ॥
आहवमृतअचलेस ॥ सुवनतास
हरिसिंहको बसुग्रामकदियवेस ॥ १६ ॥
सुवनबहादुरसिंहको ॥ पुरबुदानी

॥ दसग्रामकतिहिं हित दये। बुंढा हरगि
निढाल ॥ १७ ॥ घासीरामरसेरपति
। पुत्तहिं ग्रामकंपंच ॥ दिव्यभूपतिजयसिं
हद्रुत। पद्दुरदिनीतिप्रपंच ॥ १८ ॥ अ
भयसिंहप्रात्मजअधम। नाथरामहना
मं ॥ पलद्वयोसररनकेप्रथम। सालयसो
करिसाम ॥ १९ ॥ यालैनहिं बलवनलि
यउ। मिल्योजानिइनमांहि ॥ नाथरा
महिंमन्निज। निखास्योगहिवांहि ॥
२० ॥ देवसिंहकीमेदिनी। इमबंदीक
छवाह ॥ देवहुगिनिबुद्धहिंअधनाको
दागयउसचाह ॥ २१ ॥ पुनितजिपंचो
लासको। कियजयसिंहप्रयान ॥ प्रदि
स्योजैपुरनिजनयर। उद्धतदिजयअप्रमा
न ॥ २२ ॥ सोरदा ॥ स्वीयजननिकेस

त्य । उदयनैर हीजो अत्रहि ॥ तनया बुद्धि
य तत्य । कारन व्याह दलैलके ॥ २३ ॥ दो०
॥ सुत समेत जयसिंहसौ । रनाउतिसुरि
साय ॥ वररव छिया सीमाघविच । पत्नीपी
हरजाय ॥ २४ ॥ ही तत्र तै तत्यहि सुन्यो
। अत्र तनया आहान ॥ सालम सुतके
व्याहकौ । यातै पठइसान ॥ २५ ॥ कूर
मपुनिकहि मुकलिय । नहियह सालम
नंद ॥ है अत्रयह बुंदीस सुव । अधिपद
लेल अमद ॥ २६ ॥ दुकमसाहलिरव
वायहम । दियइहिं राज्य दिवाय ॥ जिहि
रकवनहमरान जुता । सबकछवाहसहा
य ॥ २७ ॥ यातै कछुन विचार अत्र । इति
ललाटनृप अंक ॥ तनयादिदुपमायतुम
। सोकविहायनिसंक ॥ २८ ॥ निजरा

रा. वं. भा. बु. च. बुद्धसिंहज्जकोउदयपुरविराजिबो २८२ मयूरवः ३
६

नीप्रतिपत्रइम। पठयो कूरमपाल॥ पैकु

मरीक बुरोमपमि। आयसकीनहि हाल॥

२६ ॥ इति श्री वंशाभास्करे महाचंपूस्वरु

येदक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि

त्रे पंच त्रिंशो ३५ मयूरवः ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

द्वे ॥ इत नृपप्रविस्थो उदयपुर। स्वसुर

हवेलीपास ॥ अथै वृज्जनकेमहल। उ

तरथो तत्पुत्रदास ॥ १ ॥ मोदकफलभा

जनप्रमित। पुनिरुपयसतपंच ॥ महि

मानी इम सुकलिय। रानबिरविहितरुं

॥ २ ॥ विपतिप्रतीव विचारिके। इक

तकरि उमराव ॥ कहिय रान बुधसिंहके

कुतधर प्रावन दाव ॥ ३ ॥ पंचनकहि

तवरानप्रति। विधिकोटिस बुलाय ॥
संत्ररचहुनृपतीनमिलि। पहुमीलेनउ
पाय ॥ ४ ॥ पादाकुलकम् ॥ पहुविचा
रिइमरानमंत्रपन। कोटापतिबुल्लियइ
हिंकारन ॥ पुनिगिनिबुद्धहिंजनकजा
मिपति। अंतहपुरबुल्लियमंडियमति
॥ ५ ॥ रीतिसुसुनिकूरमपतिरानी। रा
नसहोदरजामिरिसानी ॥ जनकजामि
ममभुवाजियतनन। अंतहपुरबुल्लहु
जिहिंकारन ॥ ६ ॥ विनुकारनबुल्लहु
ननबुद्धहिं। कहुमन्नहुकूरमपतिकुद्धहिं
॥ जामिबचनसुनिरानसोचिजिय। बुद्ध
हिंनिजअवरोधनबुल्लिय ॥ ७ ॥ इहिं
अवरोधगमनअवरोधहु। सुनिरुगमन
चिंयोविनसोधहु ॥ विशुसिंहपुरबं

स बहाला । भगिनी तस युन रूप सुमाला
॥ नाम युमान कुमरि सुमल च्छन । बद्धरि सी
लगुन विनय विच च्छन ॥ वच्छर दुवके
पुष्ट विधाई । संभर पति सौं तास सगाई ।
॥ ६ ॥ संपति विन पुनि व्याह सुहायो ।
पत्र दूत दूत अगा पयायो ॥ मंगिय सिक्क
रान प्रति मुद्ध ह । वरजिय तद पिरान नृप
बुद्ध ह ॥ १० ॥ पद्दमी निज हित मंत्र प्र
चारन । कोटा पति बुल्लिय तुम कारन ॥
अरु मम भद्रु धरन तजि प्राये । अप्पन
हित ह म मंत्र उपये ॥ ११ ॥ तुम कौं रुचत
अन व सर उपनय । मन्न हुतो इक वचन नी
लिमय ॥ मम सालिय पानि ग्रह मंडहु ।
बं धुन कै अर हुत नया वहु ॥ १२ ॥ जोहि
ग्रह चहिं व्याहिति हिं अत्य हि । सजहु

भुमिउद्यमहमसत्यहि ॥ संभरकहियहपु
बसगई । बलिछोरै नन होत बडाई ॥ १३ ॥
हरिहरिरानबरजिपुनि हास्यो । बुद्धयुद्धनय
तउन विचारयो ॥ पुनि कहिरान आलको
दापति । प्रायेतुमधरहमहि लज्जप्रति
॥ १४ ॥ यतै कछु वचन उपाय प्रब । तुम
इत जात कोन करि हेत व ॥ यह जोरु ब
व्याहिरु द्रुत आवहु । जोबर सचिवर किव
तिहि जावहु ॥ १५ ॥ मयाराम लव प्रप
पुरोहित । अवनि उपाय काजर किवयहु
त ॥ अप्प विवाह हररव उफ नायो । बहि
दिस व किव नहुत हि बलायो ॥ १६ ॥
करहि न व्याह विपति विचकेऊ । संभर
पति प्रच्छे गिनि सीऊ ॥ महीसरित
उत्तारे प्रमत्त मन । पहुँ चिय बस बहाला

पत्तन ॥ १७ ॥ सावनअसितसत्तवसु
संबत । सद्धिलगनएकादसिसंगत ॥ ब्या
हियद्विप्रसिंहमगिनीवत । राउलअज
वसुतारमनीरत ॥ १८ ॥ बहुविधिराउ
लहरवदधायि । स्वागतसबनअपुव
सधायि । रुचिवरातअश्विनलगिरकि
य । अरुपुनिहजावहुननअकिवय ॥
१९ ॥ धरिये वरनितत्यहिअधानह ।
यातेतेहेरकिवयचहुवानह ॥ अमय
सिंहमरुधरनेरसइता । चहिदिलीसनि
देसकरनचित ॥ २० ॥ सुबापतिगुज्जर
धरस्वामी । ग्रामसहेससरिअनुगानी
॥ अकलअहमदाबादनगरपति । सरबु
लंदजिनकरिसमाति ॥ २१ ॥ सकुमु
निवसुअत्यधि १७८७ मासइस । हुत

हंकिय गुजरात पद्ममिदिस ॥ विदित
विजय दसमी सनिबासर ॥ ब्रिदि अहमदा
दादलयोबर ॥ २२ ॥ जंगक छुक तोप नर
चिजाहिर ॥ बुल्यो बहुरेडा कहे बाहिर ॥
लरिक् प्रावतर द्वोर लर नहिता ॥ चहिर न
सब हंकिय प्रसन्नचित ॥ २३ ॥ ऊदाउत
चंपाउत उद्धत ॥ मेरांतया कुंपाउत दृढम
त ॥ जैताउत पुनि जैत मालउत ॥ बल्ला
उत करनोत जोर जुता ॥ २४ ॥ पाताउत
रुकलाउत प्रतिभटा ॥ बढि धूह डरानाउत
रन बट ॥ भद्दाउतरु महेचे बिनुमय ॥ रूपा
उतरु सताउत अतिरय ॥ २५ ॥ गोमाउ
तरु करमसीउत जंहे ॥ दिवराजर नधीरबं
सितंहे ॥ चाहडु देवउतरु पोकर नं चंदा
उत हुमंडि दृढ मरनां ॥ २६ ॥ जोधेर तन

पत्तन ॥ १७ ॥ सावन असित सत्त वसु
संबत । सद्धिलगन एकादसि संगत ॥ ब्य
हिय द्विष्यु सिं ह भगिनी बत । राउल अज
वसु तार मनी रत ॥ १८ ॥ बहु विधिराउ
ल हर रद बधायि । स्वामल सवन अपु व
सधायि । रुचि वरा त अश्विन ल गिर किव
य । अरु पुनि हू जा बहु नन अ किव य ॥
१९ ॥ धरिय बर नित त्य हि अधान ह ।
या लै लै ईर किव य चहु वान ह ॥ अमय
सिं ह भ स थर नेर स इता च हि दिल्ली स नि
देस कर न चित ॥ २० ॥ सुबापति गुजर
धर स्वामी । आभ सह स स ररि अनु गानी
॥ अ बल अ ह म दा बा द न गार पति । सर बु
लं द जि ल न करि स म्माति ॥ २१ ॥ सकु मु
नि व सु अ ल वि १९८७ मास इ स इत

हंकियगुजरातपद्ममिदिस ॥ विदित
बिजयदसमीसनिवासर। बिदि-अहमदा
वादलयोवर ॥ २२ ॥ जंगकछुकतोपनर
विजाहिर। बुल्योबहुरिडाकदेवाहिरा ॥
लखि-प्रावतरद्वोरलरनहित। चहिरन
सब हंकियप्रसन्नचित ॥ २३ ॥ ऊदाउत
चंपाउतउद्धत। मेरांतयाकुंपाउतदृढम
त ॥ जैताउतपुनिजैतमालउत। बल्ला
उतकरनोतजोरजुता ॥ २४ ॥ पाताउत
रुकलाउतप्रतिमटा। बढिधूहडरानाउत
रनबट ॥ भद्दाउतरुमहेचेबिनुमय। रूपा
उतरुसताउतप्रतिरय ॥ २५ ॥ गोमाउ
तरुकरमसीउतजहं। देवराजरनधीरबं
सितहं ॥ चाहडदेवउतरुपोकर ॥ चंदा
उतहुमंडिदृढमरनां ॥ २६ ॥ जोधेरतन

रा. वं. भा. बु. च. अहमदाबादकोयुद्ध २८८ मयूरवः ३६.

५

केसरीकुलमवा धंधलअरुसिंधलअरि
बनदव ॥ धूपतिउतरतनोत बडेभर। मंड
नउतबुंडा। उतअसिकर ॥ २७ ॥ बरसिं
होतनराउतअतिबल। सोहडरायपा
लउतमदमल ॥ रनमल्लोतमंडलेरवरत
। मुदितभारमल्लोतलरनमत ॥ २८ ॥ ब
हुरिचंद्रसेनोतमहावल। इत्यादिकसंजु
रिचितउज्जल ॥ नृपअममल्लहिहत्यादि
स्वावल। लोलेरनमुच्छनकरलावत ॥
२९ ॥ सरबुलंदसूरजकरसकिवय। निड
रमिच्छउततेहवनकिवय ॥ आकुलमो
मसहंसअकुलाने। उममणिपद्यमकुदु
लाने ॥ ३० ॥ घनेधुमंडुवगइचिजेरना।
सरिमचिममिच्छनरहोरन ॥ किलकप्रे
तडाकिनिगनकिनी। लास्यव्यक्तिपर

सद्दिनलिनी ॥ ३१ ॥ डिगिवाचिनसिंधुन
जलडोहो । अपरुनप्रक्षससकप्रवरोहो ॥
काटिकंकटनिकसतत्रपुकेसै । जिल्लमगन
कंदुकतजिजैसै ॥ ३२ ॥ काटिकटिकुंमति
रतसेनितकिम । जलप्रगाधघटउडुप
पृथुलजिम ॥ अलीइमामहोतउतआ
रेव । इतहरिअच्छुतभूलनाथभव ॥ ३३ ॥
भूतकिलकि कहुं हयभरकावत । गोकिचो
रलरिगवालचलावत ॥ कहुंमटचरनर
कावनउरुत । मूढचिल्लमोगनजिमहुम
त ॥ ३४ ॥ फहितकेतुइमनफहरावत ।
रंभातरुकिअदिलहरावत ॥ गुदिकाअ
मतरीलियहराकिवय । मनहुकुइसरया
मिथमकिवय ॥ ३५ ॥ निकसतगोदक
पालहितुइम । मंजुसदलमधुजालहितु

जिम ॥ बहुप्रायुधप्रायुधपरवज्जत। लखि
कल्लारिदेवालयलज्जत ॥ ३६ ॥ इमरनकरि
रद्वोरबढेप्रति। मिच्छनहनतधन्वपति
सम्पति ॥ सरबुलंदलखिप्रबलमज्योसठ
। हास्योतजियुजरातसहितसठ ॥ ३७ ॥
बलिदिल्लीपतिप्रमलबढायो। इममरु
मूपजित्तिरनप्रायो ॥ मुदितमयोसुनि
साहसुदुम्माद। सरबुलंददकिवनगयडु
म्माद ॥ ३८ ॥ बुंदियपतिइतस्वसुरगेहर
हि। दुलहनि तत्थिहिरकिवगमनचहि
॥ कलियमासकुञ्चप्रप्पुनकिय। दायज
बसुबहुविधिराउलदिय ॥ ३९ ॥ दंति
अगड्डेरावसुदत्तह। मासरहतबारहमय
मत्तह ॥ नृपकेइमपालनवहनायो। प्रै
चतनिगडजोरउकनायो ॥ ४० ॥ यह

सुनिरानलयो वह हत्थी । सहंसमेजिरुष्ण
यन्दरसत्थी ॥ इतकोटेस उदैपुर आथ उ । अ
धिपरानसहसंत्र उपाय उ ॥ ४१ ॥ यथाराय
विप्राधसतत्थीहि । बुल्ल्यो कु ब च कु न य अ
यसत्थीहि ॥ क हारान पु च्च त के टे स हिं ।
द ल्ल्यो इ न प हि ले नृ प दे स हिं ॥ ४२ ॥ इ
न की ल रि वि अ व र न म न च ल्ल्यो । त ब हू इ
न न मु च्च क र घ ल्ल्यो ॥ क ग र लि रि वि ज य
सिंह क थि त किय । इ न हिं पु च्चि ले हो कि
म बुं दिय ॥ ४३ ॥ य ह सु नि म हा रा व थ वि
उ द्यो । रा न हू वि प्र अ ध म प र रु द्यो ॥ इ म
नृ प का ज वि गारि वि प्र यं हं । प हूं च्यो म
ग हि म ध्य स म र प हं ॥ ४४ ॥ इ म पु नि बु
दू उ दै पुर आ यो । वि प ति जो र स ब गु म र
वि हा यो । स म्मु ह आ य रा न हि त स जि य

रा. वंभा-बुच-बुद्धसिंहज्जकोउदयपुरविराजिदो २२ मयूरवः २५

। लैप्रबिस्थोपत्तनचहिलज्जिय ॥ ४५ ॥

इति श्री बंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षि

रायने नवमराष्टौ बुद्धसिंहचरित्रे षट्त्रिं

शो मयूरवः ॥ ३६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

७० प० ॥ रा ननगर विचर हिय हड्ड भूमति

इक हायना सरसतरुपय नित्यशान पडुंदा

तमानमना सभासमय समरुजातपडुरान

निकटजब ॥ अदवर किव प्रति अग्र धत

रदत तजिदित एनतव । लैजात प्रायस

एह सरल इकासन बैठत उभय । समर

हियनि पाहुन समुद बिनु बुंदिययार

तविनय ॥ १ ॥ पादा कुलकम् ॥ बुद्धपु

रोहित मंत्र विष्णो ॥ नृपति एनहिततद

पिन टारुको ॥ अक्रिययपुनि बुंदियजन्त्रे
हैं। तुमहिं रूपजावननबदेहैं ॥ २ ॥ अब
निदेन कूरमप्रति अकरवहिं। रामांपनकोय
छनरकरवहिं ॥ जबस्वार्थीनराज्यनिजजोद
हिं। सुरवसहनिंदहमहुतबसोवहिं ॥ ३ ॥
तोलांरवरचरुकीयमानतत। दिनप्रतिद
स्यपंचसतपहुंचत ॥ कहिनृपकुम्भरुशुग
भदिकेहो। लगि हमरेहितबुंदियलेहो ॥
४ ॥ प्रनयरावरेतै कूरमपति। ममभुवजोदे
हैंनटेकमति ॥ तोरनकरिलेहो किततकि
न। प्रीतितथाकरिहो परपक्रिवन ॥ ५ ॥
सुनियहरानसुजाननीतिसध। कहियप्रा
जदिल्लीकरकूरम ॥ अकबरपुरअजमेर
अवंतिय। सूबातीनअधीनसाहकिय
॥ ६ ॥ मित्रखानदोराजिहिं मन्नतसिना

नीजुजवनपतिसम्पत् ॥ साहुहुजासक
धितस्त्रिधारत । बलिप्रवरनजिहिंसम
नविचारत ॥ ७ ॥ पुनिजिनबनिबनि
स्वसुरसालप्रिय । अकवरतैप्रबलौधन
संचिय ॥ अरुबहुमुलकप्रप्यनन
सो । जाससचिवराजा मलजैसो ॥ ८ ॥
रायकृपारामहुवकीलरत । जासकधित
जवनेसनलुप्यत ॥ गृहजाकेदिल्लियउ
मीरगन । पहुँचतकरजीरतकिंकरपन ॥
॥ ९ ॥ जिनकोअरजसाहप्रतिजंपत ।
वसुअधिकारमिलततिनकोबत ॥ इहे
सतसिविकाजिहिंशरह । बढिपंतिनढ
किजातबजारह ॥ १० ॥ बैहकजाहिरवा
सरिवलबत्तिय । रमतसाहसतरंजहुलसि
हिय ॥ जिनकेघरअसेवकीलजन । धिरन

उद्यपि स्वामिजयप्रपन्न ॥ ११ ॥ जंगविर
चितिनतैको जित्तहिं । विनुहितकाहि
विगारहिबित्तहिं ॥ इहिंकारनतिनतैरन
उचितन । अवरउपायरचहिं बहुअपन्न
॥ १२ ॥ येदउपायकेहुनहिंसंभवालगै
नहिंविनुसमयजासलव ॥ यातिसामदा
नअनुसरिहै । कूरमसोतुमसोहितकरि
है ॥ १३ ॥ विनुनयसमयहोतनहिंचाही
। समरटेकनाहकतुमसाही ॥ निजहठजो
ममराज्यनसैहो । प्रसतुमहुकोफलतब
लैहो ॥ १४ ॥ सञ्चकहतनृपमुद्धरिसायो
। चलनहुकमसत्यहिंपहुंचायो ॥ हेसब
अनुगमूढहथजोरे । नचलहुइमकाहु
ननिहारे ॥ १५ ॥ सकविक्रमअहुहब
सुसत्रह १७ ८८ । बाहुलमासप्रथाक

रा. संभा. बु. च. बुंदीशके उदयपुरविराजिबो २९६ मयूखः ३७

रिबिग्रह ॥ अनरिचल्यो संभरप्रज्ञानी
। करजतरहोरानहितबानी ॥ १६ ॥ जद
पिमुशोनरानतउसज्जन। गजभूरवनसि
रुपावबाजिगन ॥ पठयेमितदसतूरबुद्ध
प्रति। इलअकिवयहमकरजदारप्रति ॥
१७ ॥ इनकेदम्पटावहुयाते। लनिकन
देहमकरजदियाते ॥ तिनकीतीससहंस
मुद्रातव। जानिबिपतिरानपठईजव ॥
१८ ॥ करजगारितिनकरिकउलेसह। बु
द्धदलियसुमतिनरबेसह ॥ इतवहुलमे
ककचउत्थिदिन। प्रायउचलिश्रीद्वार
हुहुहुन ॥ १९ ॥ इकरुतदम्पमेठहरिअणि
य। थोदलगासमुकामसुथपिय ॥ बलित
त्यरदुवमासदिलाये। लंघनपुनिचालीस
लगाये ॥ २० ॥ अधिकअफीमबढ्योनु

पप्रगौं । पैसेत्रिमितनित्यहितपर्यौं । एति
तिममद्यप्रवद्युपीवहिं । जडबिनुभूरव
आयुबलजीवहिं ॥ २१ ॥ असनलेतरत्त
मप्रदुमदिन । तुच्छबहुतसोपैवपंचैतिन
॥ इहिंविधिप्रन्नप्ररुचिपरप्राये । लंघन
तबचालीसलगाये ॥ २२ ॥ तबहिंअफीस
मद्यदुवत्यागे । त्हेपुनिपत्थलोअमुदलोगे ॥
बिरचिकुच्चवहशामबिहायो । लुहनरानां
मुलकलगायो ॥ २३ ॥ सठनृपनहिंपरि
करसमुभायो । बहुबहुलूटप्रयंचबनाये ॥
रानहुसुनिगिनिमुद्धरिसानो । बुद्धसुक्कड
लनहत्यविकानो ॥ २४ ॥ दुबमिलान
कुंपासणिकिन्ने । दुवन्नयपुरांधेरहुदिने
पथइहिंरुक्कतचलतप्रमत्तो । एरुबेघम
ससुरालयपत्तो ॥ २५ ॥ बसुबसुसनाइ

कुमितसंबल १७०० । गडर चउत्थिस
हरणमासगत । मंजुगित्योन जुद्धकरिम
नों । स्वसुर अन्नजीवनलियसरनों ॥ २६ ॥
पर दुख सद्य हृदय देवहु पुनि । सालक
निज बुद्धिहि आवत सुनि ॥ अमि मुरवजा
अनिजा लय आने । विनय प्रीति कर जेरे
बरवाने ॥ २७ ॥ बुद्ध मु कव्य मह लन व
स कायो । अप्य लाल वारिय कहि आये ॥
रावत सुराज वागखिलर किवय । अब
केसे निमि हो हुन अ किवय ॥ २८ ॥ बुं
दिय लोक विचार विहीनों । कम लुहन
सत्यहि प्रति कोनों ॥ राउत देवति नहि
ज जाये । भेन रहे तव ग्रहन पठये ॥ २९
॥ सुद बुद्धा हु सुनिरो कि नर किवय । उपा
लंभ देवहि प्रति अ किवय ॥ धरनि विप

त्तिलोकममधारत। बलिअत्यहिआ
धारबिचारत ॥ ३० ॥ लुहनखानहेहु
तुमसालक। क्योंमोरनपकरातकपाल
क ॥ जोसुनिदेवतबहुकरजोरे। माफक
रहुअप्युनकहिमोरे ॥ ३१ ॥ अतिस
हनत्वहेवअबलीनों। बुद्धहितुबनिअ
धिकअधीनों ॥ पंचहजारिआमदियपं
चक। रूपयअद्वनित्यसुनिरंचक ॥ ३२
॥ निबहनकौयहदेवनिवेदिय। जडसंभर
तोउनथपतजिय ॥ करजहुकरिरकरे
नहिकोऊ। समुजीतुअमूहनूपसेऊ ॥
३३ ॥ अग्गत्रिलखवहजारअठारह। भुग
तेदमकर। जसहिभारह ॥ बसुसलनित्य
दयेइकबअर। तीससहंसहयहितउदार
तर ॥ ३४ ॥ बिभदेवजिहिंकरजबिलायो

। लोऊप्रबगृहनजरिवतायो ॥ होमबहे
 यच्छयमरूपहृडा । बिरत्रियतदपिदेवहित
 बद्धा ॥ ३५ ॥ मनोहरम् ॥ बुंदीकेबिनाम
 तिविडारिदेबेकेजेतिन्हें राखिवद्धवेरन
 विपत्तिबिदलायोनां । याहीतेरिसायरान
 कीनिलीनां बेघमकहायोनां हिरकरवहु
 तथापिवासतायोनां ॥ पाघपावलीनकी
 रूपैरिनकीपनहुमिलीपिमजबूतीमानिधन
 पुरमायोनां । चौंडासौंसूतबप्पराउलकेबं
 सकाऊयमथुरधेरीधीरदेवासोदिरवायो
 नां ॥ ३६ ॥ इतिश्रीवंशभास्करमहाचंपूस्व
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरि
 त्रेसलत्रिशो ३७ मयूरवः ॥ ॥

॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥
 ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥

पादा कुलकम् ॥ याहिवरसदुरमिच्छ
 योऽमति । नहितनग्रनधनीहुधरेनति ॥
 इकरुप्यउपधान्यजननइत । युल्लदिवयो
 द्वैसतवकेनयित ॥ १ ॥ अन्ननृपतजि
 जनजानलमेइम । तरुअपत्रअफलहिं
 पच्छियलिस ॥ मन्हुं तालसुकेजलम
 न्दे । इमनहियये बसातकअन्के ॥ २ ॥
 यादिगजादिरवतअबअप्राये । मंगरोल
 रकव्योसुमगायो ॥ नृपकोटिससोहुपठ
 योनन । खानखरचदेजाहुकह्योयन ॥
 ३ ॥ इमठाठाबहुबिभवरह्योअब । सं
 भरकोनिंदतजिहानसब ॥ ऐअफीम
 असावतजिपके । युधाबढायअस
 नपहुषके ॥ ४ ॥ अगमाहितजिकोटा
 पतिप्राहुति । आइमिजपीहरचुंडाउ

लि॥ कोटापुरहिरहीकबवहिय। प्रबसु
नृपद्रुनेघमप्रवगाहिय॥ ५॥ जैतसु
वनउतदेवजंगजय। गिनिबुद्धिं प्रधन
रुकोटागय॥ तत्थहिघायप्रच्छुवत
तो। पुनिकोटेससभावहपत्तो॥ ६॥ म
हाशुलतबकहियदर्पमत। सारधलकव
पदातुमरोगत॥ हमदुवलकवपटाप्रब
देहै। प्ररुप्रच्छुवतुमरेघरप्रैहै॥ प्रब
बुंदीसनामहुनप्रकरवहु। रीतिप्रदब
हुगुनोयहरकरवहु॥ यहैसुनतदेवारिस
प्रायो। दरदीकरजिमपुच्छदवायो॥
७॥ उदुयोमटभुजयोकिप्रवीनक। इत
उतपरिमसभाविवप्रोदक॥ प्ररुउत्त
रबुल्ल्योप्रसंकर। पतिदूरमप्रगैदि
स्त्रिजपुर॥ ८॥ बुद्धरुमीमउमयकियइ

कृत। त्रय नृप इच्छया लजिम्भिय तत ॥
हेममजनक जैत तं हं हाजरि । कद्योतिन
हि क्रूरमपति हित करि ॥ १० ॥ सुभटजैत
तुममिल दुभीमसन । अजनविरोध साम
द्ववप्रपन ॥ सुसुनिभीमप्रद्योकर
कि नो । हुतहि जैत उचरत बदि नो ॥ ११ ॥
हुन कीजन नीरे अघहिय । भामिनि
गिनि बुंदिय तै भुगिय ॥ यातै स्वामि ह
रामप्रधमप्रति । मिलहि तोहि किमध
रमस्वच्छमति ॥ १२ ॥ कहि इमदिय उठे
लिताको कर । वाके सुतहि कहत इमप्र
कर ॥ अप्न स्वामितोहिन सुहावहि ।
तो नहमहित वप्रश्रयभावहि ॥ १३ ॥
देवन इमपरिखद बिचद ल्यो । फिरि धकि
उठत घाय इक फल्यो ॥ महारावक रजेरि

मनायो । यहमन्योनमुररिउतप्रायो ॥
 १४ ॥ फटलघायप्रतकगदफेलिय। कति
 कमासु विन्चत्रिदिववासकिय ॥ इममट
 देवधरमप्रवधास्यो । विपतिसहिरुध
 नप्रनयविडास्यो ॥ १५ ॥ कलिजुगका
 लामयो यद्दामीरयम । हैइकजीहकहैकोले
 हस ॥ होवतकुलपुहुकम्भहशामी । निक
 स्यो बैरिसल्लकुलनामी ॥ १६ ॥ बुधइत
 गरमजानिवदबाला । ब्याहिजुरस्त्रिव
 कषंसबहाला ॥ ताकेउदरकुमरउद्गमहुव
 धरियनामजिहैं चंद्रसिंहयुव ॥ १७ ॥
 मधुगतप्रमासत्तदसु १७८७ संवत् । मा
 ल्लयरहि बालयहमीवत ॥ इहिंप्रसु
 धारैयनासप्रठारहि । देधमनायसक्यो
 इकबारहि ॥ १८ ॥ लुंडाउतिगनियइ

तवेधम । गर्भधर्योसुभयोपुनिउद्गम ॥
संबतमानअंकवसुसत्रह १७८ ६ । अ
रुसितबहुलभालचंद्रअह ॥ १६ ॥
धरुबासरइमहुवकुमारपव । दीपसिंह
नायकअरिबनदव ॥ इतजैपुरसाह
सअधिकार्द्र । बलिजयसिंहजुसुता
बुलाई ॥ २० ॥ कृष्णकुमारिनामअ
तिअगह । अमयसिंहमरुपति साली
यह ॥ माधदबहिनिबडीलहिमेलहि
। दईसबिधिपरिनायदलेलहिं ॥ २१ ॥
तवकूरमधरव्याहअनन्तर । बसिजामा
तसुताइकबच्छर ॥ अंकअहसत्रह
१७८ ६ सकअगम । सिकवपायजय
सिंहजनकसम ॥ २२ ॥ अइअबु
दियकधवाही । बाहररहियहटेकनिब

ही॥ स्वसुरस्वकीय पापमति सालम। ब
महलनरहतजु बत्राधम॥ २३॥ जोयह
राज्यहृत्थनिजजानै। काहूकोनकथितउ
रप्रानै॥ सुततियजानिरुमानिस्वसुरसु
ह। सोतिहिं बेरगोडु नहि सम्पुह॥ २४॥
कूबुवाहीइहिंअनखरिसाई। कूरस्वसुरप्र
तियहैकहाई॥ मैबुधसिंहतनयकीनारी।
किंकरतुमममभारिवित्तकारी॥ २५॥ स्व
सुरमनि सम्पुहसुदनायउ। करजोरिनपुनि
दिनयकहायउ॥ नृपमहलनरहिकैअति
उन्नति। भुगतराज्यअंधबनिभूपति॥
२६॥ बसुदुछोरिमहलनपुरवाहिर। जोसु
स्वनहतहोडुकढिजाहिर॥ चविइमता
हिनिकारनचाही। बडुसिपाहपठगेकूबु
वाही॥ २७॥ सुनि सालमनिकस्योअ

६

तिसोचन । निजन सहित कर जोरि अधि
 कनत ॥ जान्यो प्रबहि प्रति षाजै है । कब
 वाही इच्छित प्रबकै है ॥ २८ ॥ इम बिदा
 रिपुर बाहिर आयो । बलित त्यहि निज नि
 लय बनायो ॥ स्वबसि राज्य इम करि हठ सा
 हिय । प्रब महल न प्रबि सी कब वाहिया ॥
 २९ ॥ प्रथमहि फल सालमय ह पायो । प्र
 बनवनव पै है प्रकुलायो ॥ इत मरुपति
 गुजरात विजय करि । धरमारव पुनि प्रा
 यगर बधरि ॥ ३० ॥ बुद्ध उदंत सुनिरुलि
 रिक्कगर । पुर बेद्यम पड़े चर सत्वर ॥ देद्य
 मरहे मरुप चर मासन । तउन जबा बलिर बो
 जडतासन ॥ ३१ ॥ इम दस बेर मरुप दल
 प्रायउ । पै इक दलन बुद्ध सन पायउ ॥
 यह सुनि मो मरुप उदास हरि इत बे

शमलूपहुनिरासह ॥ ३२ ॥ बुद्धिबिगारि
उदबेगबह्योऽप्रति । रहनलग्योएकांत
मंदप्रति ॥ स्वीयजनहुनहिनिकटसुहा
वहिं । कामपरहितबटेरिबुलावहिं ॥

३३ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरू
पेक्षिणायनेनक्षमराशौ बुधसिंहचरि
त्रेऽप्रच्छिप्रो ३८ मयूरवः ॥ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

पादाकुलकम् ॥ इतजयसिंहप्रतापबुद्ध्यो
ऽप्रति । प्रथितकहैसुकरीदिल्लियपति
॥ अद्बहुलिरवैदिसससाहअव । कथा
रमाहिलिरव्योहुजोनकव ॥ १ ॥ जहंरा
जाधिराजउपपदजुत । लिरवनराजराजं
प्रलय्योहुत ॥ तिमतिमबुद्ध्योसबनसि

८

रकूरम। तहाँ प्रवरकेउनहुवतासम ॥ २
॥ कियरुप्यकोसनकोदिनधन। सहंसन
यजहयचतुरमंदुरन ॥ जोनहिसाहवजी
रकीरसेके। सोजयसिंहकरैबलसंभरि ॥
३ ॥ स्मृतिनसुधायन्यायबिसतारै। विप्र
नप्रथमबिसेसबहारै ॥ बाहिरइमधरमा
बुगदीसै। पैसुरज्योनापिष्टकंहंपीसै ॥
४ ॥ जोनिजधरमरच्योकूरमहिय। क्यौ
तबकर्मप्रथमइतेकिय ॥ हन्यौप्रथम
सिवसिंहस्वीयसुत। जोहुतासजननी
निजतियजुत ॥ ५ ॥ पुनिजननीनिज
स्वर्गपढाई। भटवरविजयसिंहबलिभाई
॥ पुनिसंग्रामरामपुरस्वामी। हन्यौदगार
चिहोयहरामी ॥ सत्तप्रदुसत्रह १७८७
मितसंबत। तिरहलकरवसा। हरुप्ययतन

॥ ६ ॥ लैः अरु कितव मिल्यो मर हट्टना सो
मुखीन अरु बल ग अरु धर्म सन ॥ साहता सवि
खासा हि र कर्वे । यहत उमं न द किव नि न अ
कर्वे ॥ ७ ॥ अरु सी ल रिव अरु किव य निंदा
हम । अरु अरु अरु करी बहु कूर म ॥ अरु बन
व बसु सत्रे ह मित संबत । अरु यो पुनि माल
व अरु उद्धत ॥ ८ ॥ ष० प० ॥ अरु बहावन
न व अरु ८६ बिसद बाहु ल दर्प क दिन
अरु य उ पुर उ ज्जाने अरु व नि द बत कूर म इ
न । सत्तल कर व साहसन व्याजरु पय म गा
य बलि ॥ मर हट्टन किय मेल किय न हिल
साह मंडिक लि । दल लि रिव य रान संश्रा
म प्रति तु महु सेन भेज हु अरु तुल । यह अरु
य मुलि द बत समय मिलि मर हट्टन वल वि
पत्त ॥ ९ ॥ दो ० ॥ सन न रान संश्रा मय

ह । दलपहयोसुदराज ॥ सबनसिरोमनि
 निजसन्धिब । धा इम्हात नगराज ॥ १० ॥
 विदुसादिप्ररुवेदला । सर्वसुभददियसं
 ग ॥ तेदसउरप्रायेत्वरित । प्रवनीलो
 मउमंग ॥ ११ ॥ दसउरते पुनिकुंन्वकरि
 प्रायउपुरउजेन ॥ कूरमसोहितमिल
 नकरि । संगरहियसबसेन ॥ १२ ॥ ष०
 प० ॥ बुल्योतबनगराज देवसिंहहुबेध
 मपति । तबहिदेवकरिकुंन्वचल्योसहस्र
 त्यवेगगति । तबहुमंदबुंदीसचल्योनिज
 सालकसंगहि ॥ सोधीयहकुम्मसनमि
 लिहलेहे स्वकीयमहि । जयसिंहव्याहि
 तनयाजुपेपहदलेलहिं यपिदिय । पि
 क्वहु तथापि जडबुद्धमति लैनजातनि
 जवसुमतिय ॥ १३ ॥ दो० ॥ देवासंह

निजजामिपहिं । आतदेखिअकुलाय ॥
 नगरसल्लमरिनाहप्रति । लिखिदलअण
 पठाय ॥ १४ ॥ जामिपआवतसंगममनि
 जहठमन्नलनाहिं ॥ कूरमकोआसयलि
 खड्ड । यतिहमथितआहिं ॥ १५ ॥ जुसु
 निकेसरीसिंहजब । नगरसल्लमरिनाह ॥
 पुच्छिययहजयसिंहप्रति । कहियकुपिक
 छवाह ॥ १६ ॥ तुमसुरानरानधरमुकव्य
 भट । अरुछन्नैनाहियेहु ॥ चितिसुबत्तर
 हहुचुप । अवननमुंदनदेहु ॥ १७ ॥ सुसु
 निसल्लमरिपतिलिखियदिवसिंहप्रतिप
 त्त ॥ आवनदेहुनबुद्धयहं । रसनहिकुम्म
 विरत्त ॥ १८ ॥ ष० प० ॥ देवसिंहतबय
 हउदंतबुयहितुनिवेदिय । तबहुअंधबुं
 दीसनाहिपञ्चोप्रयानकिय । यहलिखि

देवद्वारकुंचविरचियबेधमप्रति ॥ ताहिबि
 गारनतवहिमुखोबुधसिंहहीनप्रति । यह
 सुनतरानसंग्रामधकिदेवहितुबेधमलई
 । सद्धतविमूढजामीसमुखसालकविचय
 हगतिमई ॥ १९ ॥ दो० ॥ नगरपुरकावा
 दपति । नाममुहुम्मदमिच्छ ॥ कूरमपति
 वासों कियउ । प्रगाबइररनइच्छ ॥ २०
 अबबुंदियप्रामैरकै । जवनवहेलखिजु
 द्द ॥ भलकगरभेजतभयो । बेधमपुरप्रति
 बुद्ध ॥ २१ ॥ सहजरावरत्रियसचिवाता
 कोलेदलतत्त ॥ बेधमप्रायरुबुद्धसों । मि
 ल्यो लरव्यो सुप्रमत्त ॥ २२ ॥ वहतप्रामि
 बहुदिनरह्यो । मंथ्योदलसुमिल्योन ॥ हे
 उदासनिजगेहतब । गोरवत्रियकरिगेन ॥
 २३ ॥ सकनभनवसत्रह १७९ ० समयाज्ञा

दसिमाद्य बलच्छ ॥ तजियरानसंग्रामत
 नु । दानसमयनयदच्छ ॥ २४ ॥ तबहि
 उदैपुरपदलहि । हुवरानांजगतेस ॥ बुद्ध
 सुइतदेवहिं बिपति । अदयदईजडएस ॥
 २५ ॥ सकनवेनभे सत्रहसमय १७ ६० ॥ अ
 लफगुनप्रवदात ॥ मंगलबारचउत्थि
 मिलि । प्रकटतसमयप्रभात ॥ २६ ॥ बुँड
 उतिरानीजठर । रहिनवमासप्रमान ॥ दु
 हिताहुवबुंदीसके । दीपकुमरिअमिधा
 न ॥ २७ ॥ ॥ इतिश्रीवंशमास्करे
 मन्त्रायंपूर्वहूपेदसि एायनेनवमराशी
 बुधासिंहचरित्रे एकौनचत्वारिंशो ३६

मयूरवः	॥	३	॥	६
॥	३	॥	३	॥
॥	३	॥	३	॥

ष० प० ॥ इत्यहं हृदयप्रतापसिंहसालाम्
जिह्वोमुव । अञ्जुजहिं गिनिप्रवनीसम्
प्रसम्मालिकुसथलपुव । प्रायोतब् नृपया
हि नोहिं प्रदरिमुहलायो ॥ अञ्जुतिहिंको
टाप्रायरानिप्रतिमंत्रञ्चायो । विस्रवासि
ताहितिय बुद्धकीकस्वाहीयहमंत्रक्रिय
। ह्रमदेतरवरवलुमजायहृदिबलदक्षिण
अनहुबलिय ॥ १ ॥ तबप्रतापहृदिति
करवमित्योदविष्वनमरहृदना । लखित्री
मंतञ्जुनीकप्रतुलप्रारंभमुदितमना । ब
वापंडितरामचंद्रसंध्याराणं जिय ॥ पु
लापतिकेपासवानवलमैपतिएदिय ।
इनतैहुप्रधिकश्रीमंतकेदलमालिक
उमरावदुव । अनंदरावपरमारप्ररु
रुलकरावमलारदव ॥ ३ ॥ दो ॥

५

इन्ध्यारिनदलमुरव्यलिरिवि। मिलि
 प्रतापप्रतिभोद॥ दम्मलकरवटदैन
 किय। बुंदियपरसबिनोद॥ ३॥ इतकू
 रमकछुकज्जबसि। मालवप्रवनिबिहा
 य॥ सालमसुवनदलेलसह। जैपुरपत्तो
 जाय॥ ४॥ भरहट्टनपरतापमिलि। दे
 रवटलकरवसुदम्म॥ दलदुरसहलायोल
 रन। कनलबुंदियकम्म॥ ५॥ सकइक
 नवसनहसमय१७९१। अप्पारुमाधवमा
 स॥ बुंदीविंदियप्रानिकै। गहतअररु
 लमथास॥ ६॥ भुजंगप्रयातम्॥ बडे
 दकिवनीत्यौलगेनैरबुंदी। खुरोपकररो
 धुम्पिहेधुम्पिखुंदी॥ रुगीज्वालिकादी
 पकीमालिकादी। रुगीमालिकाकालि
 काकालिकादी॥ ७॥ हक्योपोनइडेन

मैं गोनहं क्यो । बढ्यो घोर प्रंधार संसार हं
 क्यो ॥ चलै लोलगोला जगै प्रगि जारै । दु
 बाजू बिकै कोट देदरारै ॥ ८ ॥ परै गोरु
 अहाल तुह पताका । उडै छुटै के महु मज्यो
 बलाका ॥ बिकै त्यों गिरै धूम प्रासाद ब
 नी । पताका उडै प्रबुहै है पतनी ॥ ९ ॥
 उडै गोन गिद्धौ लगे पच्छ प्रगी । लखै चं
 ग के पुच्छ ज्यो राल लगी ॥ डिगै कोल त्यों
 ब्याल पाताल डोलै । अकूपार की धार सो
 पिट्टि बोलै ॥ १० ॥ चलै तोप प्राकार को
 लोप मंडै । रिबै खो मके तो मके र बंड खंडै
 ॥ जरै हट बाजार यो हेति जगी । मनो रा
 ल की तूल मै प्रगि लगी ॥ ११ ॥ कहां ह
 गध पाटी रवारी कंवारी । बुझा बक हों डारि
 कै नीर नारी ॥ चिलंगी उडै चिअ सारी नव

हैं। मनोबाग खद्योत प्रद्योत मंडें ॥ १२ ॥ ब
 देपह प्रहालिका पातवर्जें। घनी बालिका
 पालिका धोरि भर्जें। कहों मारसों धेनु हं मा
 र कडें। बरें द्वार प्रागार पै धार कडें। फर कैं
 कहों गोरव प्रासाद फुहें। बर कैं ध्वजा दंडके
 खंड तुहें ॥ गिरें दो हरे ते हरेगे हगोलैं। घने
 पीठ पल्ल्यां कबीची नडोलैं ॥ १४ ॥ धुनें ध
 गोपान सौरव प्यराली। उडें मंद पै इन्द्र ज्यो
 गिह आली ॥ दुते ज्यो रहत्यों सबै लोकहा
 रे। भिली प्रोट बुंदी परे कोट वारे ॥ १५ ॥
 इतें हुगपै वीर देहे निसैनी बिढे बंदरी
 संन ज्यो संक लैनी ॥ भज्यो साल मां जोग
 ह्योर वीर क्यो। जनानां लु ल्योरारि धान
 नर क्यो ॥ १६ ॥ किते वीर जै सिंह जे प्र
 त्यर करे। तके समुह रागपै जानित करे ॥

हरामीन हड्डेन की हारि होतैं । जनी प्रप
 नी वि फुरे जंग जोतैं ॥ १७ ॥ मची मार बा
 जार मैं बाढ बज्यो । लग्यो कंफ भी हून को
 नी र लज्यो ॥ मिले द किव नी कूर मी वीर
 पत्ते । करी कैं बजे हाड की प्राड कत्ते ॥ १८
 ॥ बढ्यो घन प्रारत्त बी थी बजारैं । उडैं मुं
 ड त्यो रुंड न चै प्रवारैं ॥ कढे नैन नू चै गि
 रैं मो ह काला । मनो कंज कंजोर पै भोर मा
 ला ॥ १९ ॥ बढे हत्य कते बनै लुत्थि बत्थी
 । बनै प्रच्छरी तैं घनै लुत्थि बत्थी ॥ बजी
 चाप टंकार भंकार भेरी ॥ घने द किव नी कूर
 मी से न घेरी ॥ २० ॥ जुके सत्य है हत्य तैं
 मत्य करै । कुलाली कि घौ चक्रु मंड उतरै
 ॥ कढे पारलै लार प्रतै कटारी । मनो गार
 रुना गिनी हत्य मारी ॥ २१ ॥ बहै नारि

५

अच्छी कि प्रच्छी बरच्छी । मिलें कोचकों
 फारिज्यों वारिप्रच्छी ॥ बजीरीठबुंदीसुवै
 साखअह्ने । सजेदकिवनी लावके घावसइ
 २२ ॥ घनौचक्रकों देरवनों अक्रवाह्यो
 । सुपैपवमगाहकी राहसाह्यो ॥ सक्योदे
 रिवयोनाहिं स्वमानुसारै । नतोतदिनांजा
 मप्रोटोनिहारै ॥ २३ ॥ कहों मोहअरारो
 हकुक्कथासी । बकैबासनीमत्तज्योंग्रा
 मबासी ॥ कितेउल्लटै फादि अन्तीकैबाहे
 । मनौद्वारमंडारहीकिउघारे ॥ २४ ॥ भरकै
 कहैरुपरीफुहिभजे । फरकै कहोंफिफ
 रेकेकलेजे ॥ भिरेदकिवनीबुद्धकेकाजभा
 री । मिलीजीतिअप्रोदूरमीसेनमारी ॥ २५
 ॥ ष० प० ॥ मिलिप्रतापभरहहुजिलि
 बुंदियजसलिनौ । गहिसालमनिज

जनकबंदिहुलकरबसिकिनो। सालमको
 सरषस्वसज्जनिजकरनसुहायो॥ नगरै
 नवाजायईनिजनामदुहाई। बुंदिय
 कुरायपरहहुइतरसमुकामतत्यहिरहि
 य। दिसदिसनवत्तफुहियद्रुतहिकविन
 दाहदकिवनकहिय॥ २६॥ दो०॥ सह
 रलुटियसालमगाहिय। फिरियबुद्धरुप
 न्नान॥ अरुचउसतदुहुंओरके। परसुभ
 टगतप्रान॥ २७॥ कछवाहीकोटानगर
 यहुनिबुंदियआय॥ दियमहिमानी
 दकिवनिन। हुवदिनसेनरखाय॥ २८॥
 कछवाहीमल्लारकर। रकवीबंघियगनि
 ॥ अरुताकीतियकीअतुलकियभावज
 समकानि॥ २९॥ तंहहुलकरमल्लार
 तब। सधालियहितपगि॥ बुंदियजोर्जे

रा. वं. भा. बु. च. बूंदीमें बुद्धसिंहजूको अपमल ३२२ मयूरवः ४०
५०

हैं बुद्धरि। लैहैं तो हठ लगि ॥ ३० ॥ अपव
रुद्धत्रय दलके अधिप। तिनहूको हितधा
रि ॥ दिने हयसिरुपाव द्रुत। रानी सुनयवि
चारि ॥ ३१ ॥ कछवाही प्रति सिकव करि
। लदनंतर जय तोर ॥ प्रबल वीर पच्छे प
लटि। उमडिय दक्खिन प्रेर ॥ ३२ ॥
कटकसुड भिय ग्राम कटि। रहि बिंजे
लिय नरै ॥ बेधम कगार बुद्ध प्रति। लिखे
मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥ ष० प० ॥ मि
लनन प्रायउ त बुद्ध बंचिकगार बुद्धिय
पति। लव उपपरि प्रर हट्टु गये दक्खिनस
बेग गति। इत बेधम तजिम हल बुद्ध प्र
राम बास किय ॥ रान कटकतिन दिनन
प्रानिल त्यहि मिलान दिय। हति जानि
रानस ग्रामकी नृपहु सो क प्रकवन गयउ

। मिलिधाइभ्रातनगराजनमिकरनजोरि
 हाजरभयउ ॥ ३४ ॥ हुवहुवहयसिरुपाव
 नृपहिंनगराजनिवेदिय। प्रायराजमृत
 जानिनृपतियहप्रकिवनॉहिंलिय। तद्
 लुसाहपुरईसनामउमेदजंगजय। ता
 सजनकतिनदिननमरिययातैतत्यहु
 गय। केसरीसिंहडेनतदनुगिनिसलूमरिप
 ताहिगय। इमराजभटनसनमानिप्रबनृ
 पनिजउपवनप्राहिगय ॥ ३५ ॥ दो० ॥
 धाइभ्रातजिमनजरिकिय। इनहुहुहुंन
 तिमकिन्न ॥ नॉहिसुलियबुंदियनृपति।
 हुवतिनहितहयदिन ॥ ३६ ॥ इतबुंदि
 यलिनीसुनतहुपिनृपतिकब्रवाह ॥
 बीससहंसचतुरगबलि। पठयेसज्जिसि
 पाह ॥ ३७ ॥ सालमसुवनप्रतापतब।

चतुरंगहिसुनिचास ॥ नैननगरतजिभ
जिगो। पुनिमरहदूनपास ॥ ३८ ॥ अरु
कछवाहीसुनतयह। आवतभ्रातअनी
क ॥ बुंदियतजिबेगमगई। रहीनटेकर
लोक ॥ ३९ ॥ सोरहा ॥ कछवाहीनि
जकिन्न। इकमासबुंदियअमल ॥ लरें
बिनुहिपुनिलिन्न। हुतहिआयजय-
सिंहदल ॥ ४० ॥ कूरमकोटकराय।
याहिबरसपुरटोकइत ॥ दोसादुग्गब
नाय। प्रथितनिवाईदुग्गपुनि ॥ ४१ ॥
हरिगीतम् ॥ इतकोउदेपुरराननृपज
गतेसकालहिजानिके। ब्रजकुमारिनाम
कजामिनिजतिहिं ब्याहजोअप्रमानिके
॥ कोटिसदुरजनससकोबरिताहि ब्याह
नदुस्यो। इनलिरिसकूरमउग्रहैअव

कासउद्धहकोगयो ॥ ४२ ॥ यहजानिरा
 नपदायप्रतिबन्धकुम्भजोप्रबकुपिकै। ह
 योहव्याहनआततुमभुवलेहिंलज्जहिं
 लुपिकै। इकलिंगआनहमैहुतोतुममा
 हिहैरनरीरिहै। जोपैमुवापतिजेपुरेसत
 थापितेगनतोरिहै ॥ ४३ ॥ कोटिसयहसु
 निकुचकरिपहुंच्येउदैपुरप्रीतिसौ। जगते
 सतिहिंनिजजामिदियपरिनायहितर
 सरीतिसौ ॥ यहव्याहचंद्रहअंकसत्तरु
 इक १७६१ सबलमैभयो। आसाहमेच
 कपकरवनवमियलग्नउच्छवउन्नयो ॥ ४४
 ॥ कोटिसनृपइमव्याहिदुलहनिस्वीयप
 तनसंचर्यो। इकजानिरानहिंयाहिइत
 जयसिंहजालमहैजस्यो ॥ इतरानभट
 जयसिंहसगलाउत्तवग्धहपुत्तहो। जि

हिंश्रापिप्लियाजुस्वामियकामस्य
इतजुत्तहो ॥ ४५ ॥ दुवपुस्तहितुवकी
लउत्तमहोउदैपुरकोवहो। साहसितार
धीसपैजुअनीसअब्दनतैरहे ॥ तिहिं
तत्यसाहुवछत्रपतिआदाबप्रतिकरि
अहरे। बहदरिगादियकोनपैकाकाक
हहकहीकरे ॥ ४६ ॥ संग्रामराननिपा
तसुनितिहिंसिकवसाहुवसौंचही। ज
यसिंहसौंयहजानिबाजेरायमंत्रियहूक
ही ॥ मममातपूरबजातजातजुनहानति
त्यविधानसौं। तिहिंलेउदैपुरजाहुएह
उदंतअक्वदुरानसौं ॥ ४७ ॥ तुमरान
कूरमसौंकहाययहेकहावहुसाहसौं। मम
यालकासियजालजोदेहेनकररहिराहसौं
॥ खन्धदमगाहुमैकहोरुकिहेनदलजुत

जायहे । पुनि फल्यु गयसिर पारि पिंडुन
अध्वश्चित् आयहे ॥ ४८ ॥ जयसिंह
वय ह नंदयो सुनिता समातहि संगले ।
आयो उदैपुर ओमिल्यो वहराना हंतु उमं
गले ॥ करजोरि प्रकिये पसवा नृपसाहु
मंत्रिय प्राहिजो । तसमात प्रावतरा वरे
यरपुष्टीरथ चाहिजो ॥ ४९ ॥ सुनिए
हसमुह जायरा न अतीव प्रहर प्रदरी ।
महिमानि मंडि दिवाय डेरन कानि मातहि
लोकरी ॥ अकरोधमा हिं बुलाय प्रीति बहा
य विन्नति प्रकरवई । सुनिरान विन्नति वा
तमंत्रिय मात मोदमई मई ॥ ५० ॥ गजवा
जि वल्लु बिसे सरान निवेदिता हि धर्मान
यो । पुनि जाय डेरन सिक्वदै संगलीयसे
नहु कौंदयो ॥ नगरी सल्लु मरिनाह केसरि

श. वं. मा. बु. च. श्रीमंतमाताकीतीर्थयात्रा ३२८ मखरः ४०

सिंहमुखसुसंगमो जयसिंहपुनिवहव
अनंदनसंगउच्चउमंगमो ॥ ५१ ॥ खुरता
रमारनमुष्मिदेत दरारदारिमपक्कज्यो ॥
वलकवदलपतिमंत्रिजननीचंडसंगहि
वक्कज्यो ॥ बहरकदंतिबडिनपैफहर
क्रिफैलतसीफिरै ॥ मिलिफेटमंडुफपेट
मैपवमानचंचलहृचिरै ॥ ५२ ॥ श्रियमं
तमातसुरेनयोसहसेनजेपुरसंचरी ॥ क
खवाहरायहुआयसमुहकानिरानहिलो
करी ॥ जयसिंहप्रीतिवदायतासदिवाय
डेरनमोदसो ॥ बिलंडबाजिरुदंडदुवकिय
भेटबदिबिनोदसो ॥ ५३ ॥ महिमनिदे
अलिअग्यसोअदरोधमध्यबुलायके ॥
मुहुहुबसमुहजायमंदिरलायमत्यहिना
॥ बडदरिगदियलाहिअपुनअल्प

आसनपैरह्यो। नगबस्त्रनव्यनिवेदिकैहम
 दासकूरमयों कह्यो ॥ ५४ ॥ तनयासु कृष्णा
 कुमारिप्रप्यनजोदलेलहिंअप्यई। गहि
 ताहि हत्यनकुमयों शिरतासअंकहियप्य
 ई ॥ कहिमेर पुत्रिय बुंदिभूषदलेलरानिय
 हैयहै। तसलज्जपुमिसुहाम की तुमकोसु
 अज्जअमैयहै ॥ ५५ ॥ तिहिं लायहिय
 न्मियमंतमातहुअक्लिदमीलि परापयों। रूप
 येपचीस हजार छोरियजेन बुंदिय कौलगे
 ॥ जबकुममालव फलतलसुसा हल्लवहिं
 मेलकै। निवै हजारलिरवायलियठहराय
 दमदलेलकै ॥ ५६ ॥ तबददिरवनिनवृ
 पसाहसोंअरजीकरायनिदेसले। यहअं
 कथपिय बुंदियै कहि कोउनाहिं बिसेस
 लें ॥ तिनमाहिं लोअिय मंतमातब छेरि

दक्ष इते दये । पुनिप्रकिव पुत्तिय लाय
वृत्तियनेह बीज बयेनये ॥ ५७ ॥ श्रिय
मंतमाताहिंर किवयों जयसिंहजयपुरमा
सलीं । पुनिसाहहिंतुलिरवायमगकरमा
फतासप्रवासलीं ॥ बलितासडेरनजाय
कूरमराय बंदनकेबली । सजिस्वीयसेन
हुसंगद्वैवहंपंधापुरबमुक्कली ॥ ५८ ॥ म
दशनकेसरिसिंहज्यो जयसिंहतत्यहिएर
हे । दलभ्येसंगहितासद्वैपुनिमासजैपुर
जेरहे ॥ नगरीसल्लुपरिनाहकेसरिसिंहधु
लभ्यधीरथीं ॥ जयसिंहबगधहनंदहोयह
वेदपाठकधीरलीं ॥ ५९ ॥ सनमानदोउ
नकोनालोनाबवाहडेरनजायके । हयह
नियहूरमसों तिलेपहुंचेउदपुरप्रायके ॥
गह्वारवाहपरमारये करिकेद सालमकीं

बुलौं तजिनैर बुंदिय कुंचके पडुंचेति मालव
जितिते ॥ ६० ॥ परमार दोलतसिंह सुसेनद
विजयसंग हो । यहरानको इमराव हो अरुनी
विजय संग हो ॥ तिहिं अखिलसालम
सिंह जोके हें लेहु जा मिनके अर्बे । इवल
करु रूपय लेहु सो इह देहु जावहु मी तवे
॥ ६१ ॥ जितने उदैपुर मार हो अरु रान को
जस वित्थरे । ममपत्र लेहु लिरवाय अगोनि
खिदेहु तुम इनके करे ॥ इनको अमात्य हु
इकरु रूपय लेन संग हिली जिये । तिहिं आम
पंचहजार को हम देहिं सत्यपती जिये ॥ ६२ ॥
तुम को हु बुंदिय को पता मिति हे हजार प
चीसको । सुनिएह दोलतसिंह पत्र लिरवाय
सालम हीसको । अरु अपराव मलारसों
परमारसों परमारसों इम अकरु इहु कलकव

पुनिकुम्भप्रायसपायदोउनकोंहिदिन्नप
 टाभले ॥ ६६ ॥ ससिअंकसत्तरुइक १७६१
 संबतमासकृत्तियगोरमैं । कछवाहकियसब
 भूपइकतजानिदक्विनजारमैं ॥ भिद्वारमैंअ
 गोंचनामकग्रामसर्वमिलेतहां । अरजीलि
 रवायपठायदिल्लियसेनभेजहुयेयहां ॥ ६७
 ॥ सुनिसाहसेनसमस्तसंजुतरवानदीरह
 मुकूल्यो । यहमासअग्रहनक्षत्रापंचमिचं
 टचक्रहिंलेचल्यो ॥ द्रुतप्रायमालवदेसमैं
 बुलवायकूरमहुलयो । बिबुरानतबसब
 भूपसंजुतसोहुमालवमैंगयो ॥ ६८ ॥ तिहिं
 सालबिचइतनैरबेघमपोसमासअमा
 जहां । कछवाहरानियदेहहानियदानकें
 रुकरीतहां ॥ इतकौनबाबरुकुम्भमालव
 हैंमिलेअतिप्रीतिसों । सबहिंदुभूपनस

त्यलैरनमंत्रमंडियरीतिसौं ॥ ६८ ॥ अभ
मल्लनृपमरुईसवीकानैरभूपतिसत्यही।
कोटिसदुरजनसल्लसोपुरभूपगोरसमत्य
ही ॥ रतलाभरुबुवकेरुईडरकेकबंधहुसं
जुरे। बुंदेलनृपदतियादिभूपभदोरभंडप
विफुरे ॥ ७० ॥ रचिमे लबीर बघेलबंधु
वभूपसम्मलिसज्जयो। नगरीकरोलिय
भूपजद्वसेनसंजुलसोठयो ॥ पुनिरूपनै
रकबंधभूपजुपायलागियअनिकै। पुनि
आयनैरभनायभूपतिजोरमिच्छनजानि
कै ॥ ७१ ॥ बजरंगराघवदुगकोमहिपा
लखिअियहुमिल्यो। नगरीसिरोहियदेव
रानृपअनिआयसकैमिल्यो ॥ रचिचक
दहियआयमहियनैरजेसलधेरको। ब-
लिनैरपहानिल्लपउमदआयआतहिबेर

५३०

को ॥ ७२ ॥ कछवाहनरउरनाहमिच्छनबा
 बहूकितनेकहूँ । मिलिरवानदोरहसूसबैष
 रितत्यरुंधिदिसाचहों ॥ सबकेंसिराहिरु
 खानदोरहसेनदक्खिनपैसज्यो । परहदूसे
 नहुपिखिबकैचहिरदुसमुहदूगज्यो ॥
 ७३ ॥ रचिपुत्रपंडितरामचंद्रमलारओपर
 पारत्यों । राणजिससुलिसंधियाबहिसंतजी
 तबिचारत्यों ॥ दलमोंहिसोंपरवरैतअप्रदु
 हजारकदिरुयोंकही । तुमजायजैपुरदेसलु
 ददुत्योंहिमिच्छनकीमही ॥ ७४ ॥ असदार
 अप्रदु हजारवेतवसीमजैपुरजायकें । दोडारु
 टोंकबिगारिलुहियकुमअनउठायकें ॥
 नगरीनिवाइयलुहिकेंपुनिलुहिमालपुराल
 यो । लंबारुडघोयलुहिपहुलिदावदुदुवपै
 दयो ॥ ७५ ॥ तिहिसारिजारिनराननैररुजा

यसा लिय लुट्टई । मोजादपत्तन लुट्टिके हल
 सरियत्तन दे लई ॥ इमरारिखगन मारि मारि
 किगारि जैपुर देसमें । पुनि नैरसंभर आदिलु
 हियसाहके प्रवसेसमें ॥ ७६ ॥ जिमकुम
 प्रीयेंहंसाहको मरहट्टु नाहिं गिने मिले । तिम
 तेहुदा करेन बीर मन्त्रि सुग्राम जैपुर के गिले ॥
 असवार पान हजार अट्टन लूट्यो इत मंडई
 । उतराम चंद्र मलार अयोधर मार बगन कौ ल
 ह ॥ ७७ ॥ निससुत्तसाह अनीक पै पविपा
 ल पक्षय ज्यो परे । बजि बंब आनक त्यों अत्र
 नक कूटि बिबल एकरे ॥ तब ज्यो हुते ति
 मसाहके उमराव भीरु कभ गये । लचिकुम
 मौर हरवान दौर हल जिम गहि लग गये ॥
 ७८ ॥ तब सेन भजत साहको दरिनी वरव
 यान खंडयो । उडिरे ह अबरयो छई जिममे

इसंबरमंडयो ॥ अचलाहु लकरवनफोज की
 धमचक्रथकनलैथुकी । बढि ब्याधिदिग्ग
 जदंततुदिसमाधिसंकरकी चुकी ॥ ७६ ॥
 फररकि फीलनकेतुत्यों थररकि अंबर
 च्चरी । बररकि दहु बराह भूदररकि क
 च्चपमोहरी ॥ तरवारि दक्खिनसेनकी
 दलमारि दिहिय को दयो । दृगमीचिअज्ज
 तसाहकेदलराह बुंदियको लयो ॥ ७७ ॥
 लगि पिद्वि दक्खिनके अनीकन लागच
 मलिलों करी । इतअगअप्रायरुसाहकी
 पृतनाधुनी वहउत्तरी ॥ तजिभानपुरको
 दानदीलगसेतभज्जतहीगयो । जवहु
 सरुप्पयइककोइकसेरतदिन बिकयो
 ॥ ७८ ॥ अतिही बुधातुरसाहकोदलअ
 पगाइमउत्तस्यो । पुनिअप्राय बुंदियरसात्

पान द ले ल साल म कै कस्यो ॥ कछ वाहना
 हरखान दोर ह सर्व भूपन सत्य ही । रहित
 त्यमंडिय मंत्र द किवन सेन मनि समत्य ही
 ॥ ८२ ॥ कछु देस अज्ज दये विना उन कोन
 ही मन धरि हे । तस माल अक वहु साहस
 सुनि साह माल व अरि हे ॥ तब खान दो
 र मंडियो पट वाय विजति साह को । लि
 खि देहु माल व को न तो खल अत दिखि
 य चाह को ॥ ८३ ॥ यह मंडि अइत सेन
 द किवन पै हु कगार मुक ल्यो । तुम लेहु
 माल व साहसो करि साम संचित जो फल्यो
 ॥ मरहु वीर न बंदि कगार बत्त माल व सी
 करी । जवने सह सुनि पत्र माल व देन बत्त
 हि अहरी ॥ ८४ ॥ लिखि पत्र माल व दे
 न जो जवने सबुं दिय प्रेरयो । सुनिरवान

स. ६
व-भा-बु-च-खानदोरादिकी दक्षिणपरचढाई ३३६ मयू-४०

दोरहकुम्ममोरहसोहिदकिवनकोंदयो
॥ मरहदृ तत्तह बंविपत्तहलैअवंतिरबुशी
भये । नदिनाहिचम्मलिउत्तरेपुरेतिमाल
वहीगये ॥ ८५ ॥ मधुमासचंद्ररुअंकस
त्तरुइक्क १७६१ संबतयोभई । तबरखान
दोरहसिकवभूपनदेरुदिल्लियहीलई
॥ तबचाहकैकळवाहभूपतिदुग्गबुंदिय
देरवनें । चढिकैदलेलसमेतहल्लियइक्क
बीरुल्लैयनें ॥ ८६ ॥ प्रविश्योसुउत्तरद्वा
रपत्तनपंतिपिकवतसंचस्यो । चढिदुग्गाह
ल्लियपोरिहैनवठानकोकहिउत्तस्यो ॥
सठपापसालमआयसम्भुहजोरिहल्लियन
कोंनयो । इमराजमंदिरपिकिवकैपुनिकु
म्मपबयपैमयो ॥ ८७ ॥ बरसिंहभूपतिअ
गाबंधियदुग्गजोबिगस्यो लरव्यो । कपिसी

समित्तिरुखातिका कहुँ खोमतोमपस्यो
 लरथ्यो ॥ कखवाहनाहदलेलसँनवदुगाबं
 धनकीकही। सुनिसच्चमनिदलेलह्रस्वसुरे
 सउक्तकियोसही ॥ ८८ ॥ रहिदोयरत्ति
 रुप्रफिवयोँजयसिंहजैपुरसंचस्यो। नव
 दुगाबंधिदलेलह्रइतसज्जबुंदियकोक
 स्यो ॥ इहिंसालअगहनमासमेंजगतेस
 रानहुजानिकेँ। दियनैरबेघमदेवसिंह
 हिंफेरिकगारठानिकेँ ॥ ८९ ॥ दुवलफव
 रुपयदंडकेलियरानराउतदेवसों। सहि
 दुःखदारिदविगस्योइमसालजामिपसेव
 सों ॥ पुनिरानकामसुराजकोनगराजसों
 सबछिन्नयो। लखिवृहकोविहजोबिहारि
 यदासकायथकोँदयो ॥ ९० ॥ जिहिंअ
 गदिह्लियजायकेँसबरानकामसुधारयो

जयसिंह कौं विचडारिकें लिखवाय रामपुराल
 ये ॥ पुनिभीत पंद्रह अब्दतें श्रियद्वारकाय थजे
 रह्यो ॥ अवरान बुल्लि बहोरि हतिहिं पुरव्यसंनि
 यकें चह्यो ॥ ६१ ॥ दुकअंकसत्रह १७६२ मानसं
 वत पकर उजलपोसमें ॥ निजबंधुसूपअसा
 नमलिनायन उपफनिरोसमें ॥ वनपंति दुद्धरबं
 १ ॥ अकारेण साहिपुरावयो ॥ ६२ ॥ तवरा
 सजावुं वनघोर तोपनमें दय्ये ॥ ६३ ॥ तवरा
 नसम्यलिहोनकौं जयसिंह जयपुरसौं चढ्यो
 ॥ पुनिराहसाहिपुरेसकौं अतिसोकदूरमकोब
 द्यो ॥ तबदेडरुणयलकरवसाहिपुरेसअणिय
 सनको ॥ कारेकुं वरानहुओउदैपुररखिदेवधुव
 मानको ॥ ६३ ॥ इहिं सालकेवकसायमें दबिरो
 अदुसहतेगस्यो ॥ निजनैनवापुरसां हिंअंधसु
 मंदसालमहमस्यो ॥ गरुषुपदिल्लियआयइत

युजरात जित्ति उबाहसों । अरजी करी कर
जेरि बुद्ध हिं देन बुंदिय साहसों ॥ ६४ ॥ तहं
खान दोरह जो न बाबु जबाब पेसन हो न दे । जय
सिंह को मलि मित्रयो अरजी सु लगान जो न दे
भनव मास बुंदिय काजयो मरु भूपदि ह्यिय मै
रह्यो । बरवसीस किन्न विसेस पै यह तो न साह
कस्यो कह्यो ॥ ६५ ॥ तब कुषिके बिनु साह आय
ससेन थन्व पसज्यो । सब देस लुटत साह को
मरु देस गबित ह्ये गयो ॥ दुव अंक सत्रह १७६२ सा
क्यो सित पकर वफगुन मै भई । इत साह दकिव
न मै मिल्यो यह जानि कूरम की लई ॥ ६६ ॥ तब ही
नबाब उमीर खां बुगली सु दो उनकी करी । प्रभु
खान दोह कुम मोरह्यो हरामिय अहरी ॥ मिलि
सत्रु सेन नसों गये अरु लाभ दकिवन तै लयो ॥ दु
वको टि स्यय देस मालव मंडिसाहु वकों दयो ॥

॥६८॥ चुगली सुजानिरु कुम्हू । पुनि एनद
 किनेन सुक ल्यो ॥ श्रियमत अचुके ग ह्यो ह म
 दोर दिल्लीको द ल्यो ॥ श्रियमत ह नृप साह मनि
 यव चिपन जु दे ग लै । दल दर्य दुहर बं धि कै ग ति
 कालकी लिय ते ग लै ॥६९॥ दोहा ॥ नृप सा
 हुवन व ल व र व द ल । नगर सिलारा नाह ॥ स जि
 त मो ता को स चि व । बजे राय दु बा ह ॥ १०० ॥
 षट् प दी ॥ बाबा पंडित राम चंद्र कुलकर म ह्वा
 रहारा एंजिय संघ्या रु प्रथित आन द प मार ह
 । अ ब हु सुख्य करि इ न हिं च ठि रु श्रिय मत च ला
 य उ ॥ साल म सुवन प्र ताप सो हु संग हि म ट अ
 य उ । कूर म हिं जानि आ ह्वा न कर इ म इ लि व न
 मन उ प्परिय । त दि न अ पार द ल मार त कि फ न
 पति फे न न फुं करिय ॥ १०१ ॥ गर द गै न बि थ रि
 य जर द ज म जन करंग किय । मर द मं त्रि उ म्म दि

यदरदभूदारहृदिय। पंचप्रयुतपकरिय
 सहंसदंतावलसज्जिय । दलपदातिदकिस्व
 नियगरविद्वलकरगरज्जिय । बद्धविधिनि
 सानभेरिय वजियवलनकीबृहंकालबुद्धिया
 पेसवाप्रथितविप्रसुबलियचामरवर जीतर
 चढिय ॥ १०२ ॥ इतिश्रीवंशभारकरे महावं
 पूरुवरहपेदक्षिणायमे नवमराशौ बुद्धसिंहव
 रिते चत्वारिंशो ऽऽंशः ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥
 दोहा ॥ कटकविप्रदरकुंचकरि । आयुर्लौना
 वाड ॥ सुसबरानजगतेसमुनि । लग्गिबधा
 वनलाड ॥ १ ॥ जबकाकानिजजनकको । बु
 द्धितरवतप्रमिधान ॥ बद्धरिसल्लमरिनाहवि
 य । पढयेप्रेमप्रमान ॥ २ ॥ मिलनगयेश्रीमंत

सौ । तव वह सम्मुह-आय ॥ सुरव्यसनभटमनि
के । विवलय-अगबढाय ॥ ३ ॥ प्रथमलिखि
कथीमंतमति जिपुरवृपद्वजोर ॥ सजिमि
सापदुमशनसन । आनुहुपुनिहम-प्रोर ॥ ४ ॥
यतै उपरिपेसवा । प्रथमउदैपुरपत्त ॥ सम्मुह
आयुकोसदस । रानहुहित-अरत्त ॥ ५ ॥
सिरवाहहि-अगमयह । सिरवलोपुमरत्वसं
केनमिहै-अरानप्रति । विवसलापश्रिय
मंत ॥ ६ ॥ सवगमम् ॥ रानहुचिरचिप्रनाम
मित्योप्रतिमोदसूं । बाजिरायहैलायवधाय
दिनोदसूं ॥ आहडग्रामसमीपसिदिरइल
कोकस्यो । होजहेंचंपकवाग-अप्यतहेंउत्तर्य
॥ ७ ॥ पुनिपडईमहिमानिरानबहुरीतिसौं ।
रुप्यपंचहजारवसनगजवीतिसौं ॥ दूजेदि
नश्रियमंतसभारचिबुल्लयो । विप्रहुगोलव

बेगनिह विषख्योनयो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तबहुद
रप्रच्छन्नतक । प्रायउसम्मुहरान ॥ दूजीगहि
यचिप्रहित । बिब्वार्इसुविधान ॥ ८ ॥ तिहि
उठवायरुपेसवा । बिनुगदियगयवेरि । रच्यो
अदबयहरानको । प्रीतिप्रतुलहियपेरि ॥
१० ॥ गदियपरशानारह्यो । सिरदुवचमरठ
राय ॥ चमरइकहुवबिप्रसिर । बलिहितबत्त
बढाय ॥ ११ ॥ शनकहियनमनीयतुम । तबदि
जकहियसचाव ॥ मोहिगिनहुनृपरावरो । जि
मसोलहउमराव ॥ १२ ॥ शानतबहिजरजीभ
जुतहयचउहत्थियएक ॥ नगजरायभूरवनन
वल । बिप्रहिदियसबिबेक ॥ १३ ॥ सडुलकरव
इकसालप्रति । स्वीकरिदकिवनदम्म ॥ दियउ
परगानबनहडा । तिनमैलिखिहितकम्म ॥
१४ ॥ तालमध्यइकरानकै । जगमंदिरप्रासाद

॥ ताहि दिखावनकीकही। वासरदूजेबाह ॥ १५
 रानपिसुनवनिकोउतब। वाजेरावहिंअकिये
 ॥ लैजावलमारततुमहिं। रानकपटहियरकिये
 ॥ १६ ॥ इकियेनमंनियएहद्विजा। होतथापिसु
 निएह ॥ पूरखसञ्जीमनिके। कियरोरवारुनदे
 ह ॥ १७ ॥ पठइयेकहिरानप्रति। मिंछलघात
 मरौंन ॥ कलहिमंडसज्जहुकटक। करहिंसाय
 अबकोन ॥ १८ ॥ पज्जटिका ॥ यहसुनतरा
 नहुवसेकलीन। पठयेपुनिदुवमठवेप्रवीन ॥
 तरवतेसरुकेसरिसिंहतत्य। जोअरुद्विजबदि
 यजोरिहत्य ॥ १९ ॥ कहिरानअधिकसनमान
 कीन। अपुननहोहुअमरखअधीन ॥ किहिं
 मूठकहिययहदोहकत्य। सिकहुहुअपुसबदि
 धिसमत्य ॥ २० ॥ जोकहुहुनाहिंतजिदेहुरो
 सा। नाहकनदेहुअमिसापदोस ॥ श्रियमतलव

पिभोनहि प्रसन्न। तव सत्तलकवदियदमच्चन॥
२१ ॥ संश्रामरानकीमातश्रगग। चद्रुवानिम
रीनिजमुग्गिभम्म ॥ तव द्रुवत्रिलकवमितक
नकदान। सेरानदयोविप्रहिंसयान ॥ २२ ॥
दलकुंचकिमुलेविप्रदान। श्रियद्वारप्रायकि
यप्रभुमनाम ॥ सतपंचरम्भकियमेदतत्त्व। व
ल्लमकुलपेदपुत्रितमव्य ॥ २३ ॥ विज्जवि
नामगाइहेम ॥ विरचियविमअण्डुनति
विसस ॥ तिनकोद्रुदमसतपंचप्रपि। मर
हद्रुचलियदलकुंचनपि ॥ २४ ॥ पुनिहोच
जाजपुरवमरपासा। बलकियउकेकडियद्वंग
वास ॥ उतते सुनिकूरमभूपप्राय। चतुरगच
काडुइरबलाय ॥ २५ ॥ धमिनेरदृष्यागढनि
कटयाम ॥ मिटियदुवमंभोलावआम ॥ पठई
तवकूरमएहअकिव। इममिलदिरानधरी

तिरक्वि ॥ २६ ॥ पठईकहि विप्रहुनहि प्रभा
नहेरानसुपहुसाहसमान । जेकबहुनिच्छ
अनुचरवनेन अनुचरसदाहितुमलोभअ
न ॥ २७ ॥ जिहिहेतुमोदुकोअधिकजा
निपेमिलहिअज्जसमताप्रमानि । लुमजा
नतगदियदेउठायपैवेदहिंदुवइकपीरपाय
॥ २८ ॥ हमतत्यहुदक्खिनअरहीयदेवा
मतुमहिंदममिलहिंदोय । जयसिंहहुय
हसुनिप्रबलजानिइकआसनस्वीकारिमि
लियअनि ॥ २९ ॥ चढिउभयवक्कहुव
सज्जआयतिनवीचइकपटगृहतनाय ॥
तामाहिंमिलेदुवगजनओरिबैठेइकआस
नजानुओरि ॥ ३० ॥ द्विजकियलहेइक
जंत्रपानलगिधुम्मकुम्ममनविचरिसान ।
पुनिसुभटमुख्यनिजनिजबुत्तायबैठारिमि

सल-आयतवनाय ॥ ३१ ॥ दक्षिणमहत्वा
जरिसबहिलत्यइकनमलार-आयउसमस्थ
। संधाजिहिं बुंदियलेनलिनद्विजबाजेराय
द्रुवचनदिन ॥ ३२ ॥ श्रियमंतयहांमिलि
पलटिपोनकछवाहबुंदिछोरद्रुकह्योन ।
सालमसुतसजुत-आसुउदिइहिंकारनद्रुल
करचलियरुदि ॥ ३३ ॥ श्रियमतकुम्म ॥
इमसुभाय-अवनिजनिजडेरनउभय-आय
आहंसुनियविप्ररुदियमलारगायतवहिनि
होरनप्रकटिप्यार ॥ ३४ ॥ अकिरियतल
द्रुलकर-अत्य-आयतुमबुंदिअलेननकिय
उपाय । करिसपयलेनपुनिदिद्रुलेनतुमसंग
वती-अवहमचलेन ॥ ३५ ॥ नृपसाद्रुस
पअलवविप्रबुल्लिलेहों-अवबुंदियलेगतु
ह्नि । विषमैककुवासरजानदेहदोउनमनां

५

दूरमरुविप्रपुनि मिलनकीनलहि कूर्महार्द
 रविर्मन्लीन । उल्लैदलनकरवनतुमवनाथ
 न्नावहुइतजेपुरहेसहाय ॥ ३७ ॥ प्रबही
 जलरनप्रवकासप्रच्छदकिरेनप्रमात्यतु
 मनीतिदच्छ । मिलिबहुरिहैहिंमिच्छनमि
 वायजवकारिहलसज्जहुगेहजाय ॥ ३८ ॥
 दूरमवयजेपुरप्रद्विपराहप्रियमंतमुखी
 दकिरेनसनेह । दुवप्रकसत्तइक १७६२
 सकदुरतयहमयउमासफगुनउदंत ॥ ३९ ॥
 दारुंयतदनुकारिद्विजप्रयानवेधमदिगन्ना
 यरुदियमिलान । यहेमदप्रतापहइसुअमं
 मप्रियमसचरहुलैइकासंग ॥ ४० ॥ कुंही
 रुनिकदमायवमिअवीरसजयइउल्लजपि
 मसधीर । कयवेसवाहुयहतवकहायतुन
 तेनजुदेहमजुदिराय ॥ ४१ ॥ प्रबलीहम

प्राये लोभठानिलैहै पुनिबुंदियलेहुमानि
 बुंदीसामिलनहितकच्छुकहायदारीसुविप्रइ-
 मदल्लिरवाय ॥ ४२ ॥ तदनंतरदक्खिनहि
 जम्भपत्तगोहडुप्रतापहुसंगतत्त । इतदिल्लि
 मकूरमकुजसउहिश्चियभित्तमित्तनसुनिसा
 हरुहि ॥ ४३ ॥ तवसाहनिजामनमुत्तकच्छु
 ल्लिप्रायउनवावसुनितेगदुल्लि । होयहकली
 जरुत्तामवीरगाजुद्धीरवांसुतरनगभीर ॥ ४४
 ॥ बहभदुत्तदिल्लियनेरप्रायवलिसाहहितु
 सिज्जहाविधाय । जवनेसहिं कूरमकुपितजा
 निपुनिलिरियपदक्खिनप्रमानि ॥ ४५ ॥
 अप्रवसरप्रवप्रायउभुम्मिलेनश्चियमंतवे
 गप्रावहुससैम । यहसुनतवज्जिजिततित
 निसानउमडियअनीकसागरउफान ॥ ४६ ॥
 एहशय्यहुइत्थिनफरकिभहरायभज्जि

भीरुकभरकि । सज्जतभटबाहुलकवचहो
 पप्रतिकायचरकरुनचढततोप ॥ ४७ ॥
 खुरसानधारआयुधखनंकिपावकप्रचंडजा
 रतजनकि । इकिवनअनीकगज्जियदुरंत
 इहिरीतिवीरसज्जियअनत ॥ ४८ ॥ संब
 लमिअकहयइक १७ ६३ मानइसमासवि
 जयदसमीउफान । सकमियसिताराधीलसे
 नअियमलधुकरचलमिभुमिलेन ॥ ४९ ॥
 अतिकायबाजिफांदलअकासमिटिजा
 तदुगापद्धरमबास । रबिलियउढकिरवुर
 तारदेहमडियकिधइआसारमेह ॥ ५० ॥
 किलकिलतरंगकमलियकरालरिबलरिबल
 तमलमलरिबल । जुमिनिजमातेजय
 जयतिजापेअपटतमुकंतवेतालनऊपि ॥ ५१ ॥
 वकअकतसंगअअनअमतरकसकतमिइ

स्तिरहोतच्चत्त । उमरूकडक्कडाहलडमंकि
 बहनायहूरनूपुरठमकि ॥ ५२ ॥ सजिचलि
 यसंगभैरवनिस्सूनफर कियसिचानहियअ
 सनफूल । आतापिअोधठंकतअकासफेरं
 डफलंगतगिरननयास ॥ ५३ ॥ इमचलिय
 संगफलचूरअनेक कटकटविरावप्रेतनकि
 तेक । लमिअतलवितलसुतलनलचक्क
 पुरकतबराहइंतुलिमचक्क ॥ ५४ ॥ ग्रावन
 सुपुरतालनअरतअग्गिजिहिरवसमाधिअ-
 म्मेसजग्गि । अकवकतसेतुसागरउमंमि
 धुल्लतदिसाननरमदकिभग्गि ॥ ५५ ॥ लरर
 किभुम्भिचेकलतुरवारदररकिदेतपच्चय
 द्दर । रननकिरावककडकरीनछननकिहो
 लललनदनधीन ॥ ५६ ॥ उडिजातउपल
 चूरनअनलमडिजाततिमिरधूरनदिगत ।

इमराजप्रंदुप्रैचतप्रभंगरज्जुकिरवेत्र
 फलमपनरंग ॥ ५७ ॥ बहिचलियधातुप्र-
 द्विनप्रनेकसलसलियपंथगजदानसेक ।
 इमहलियसेनदकिवनप्रनंतदिल्लीसमुलक
 दधतदुरंत ॥ ५८ ॥ सुनिसाहसेनसज्जिय
 सितावबलमुख्यउभयरकिवेयनवाव ।
 इकरवानकधरदीनिजदजीरबलिसंगनिजा
 मनमुलकबीर ॥ ६० ॥ बुवचलियसेनह
 रवल्लहंकिघनघोरघंटपक्वरधमंकि । कु
 लटाकनीनिविधितरलधाजिउडुतमलंगि
 आगामिआजि ॥ ६१ ॥ मनकेरुपवनकेजे
 मित्रचलतरसधावमंडतविचित्र । खंधनपि
 नम्रचहतखलीनमखतूलबगज्जरजिल
 हजीन ॥ ६२ ॥ विरचतनिकमभनभिजेर
 हजातमंपितउसदृशखंध । दक्षम-

अथ यत्नद प लुटन दिखात ति मिम च्छ मन
 हुं अर्धवतिशत ॥ ६३ ॥ भुवकोति प्रबलव-
 ल्पन भरंत कामिनि गरत्व गल जानिकंत । सा
 दिन सुखसाधित सहज सध्य फिरि जात च्छ
 की छों हं मध्य ॥ ६४ ॥ असवार चहत जिहि
 रूप ह्म अन्धि रु दिखात सु हि रूप नव्य । रन
 अजिर ल्प अजिन केर काव हर खात चढा कन
 मन हि साव ॥ ६५ ॥ इम च लिय अह थे इन
 थर क हं किय अनेक हत्थिन हल क । चं च
 लल दिव पच्छिन करत चोट जिन अगग अंबु
 इ करवत अगोट ॥ ६६ ॥ अति वीत पायरो
 पल अडोल ल गि बहुरि डा क व डि जात लो
 ल । जं जीर लं व अचत स जीर सिर च्छ लो
 रं जा र सोर ॥ ६७ ॥ आथोर नर करवत बहु
 विरासि हं कत लया पि उइत हु लासि । इम

हलियसाहपृतनाअभंगदकिवनदलसम्मु
 हरचनदंग ॥ ६८ ॥ सुनिइनहिंप्रातदकिवे
 नदलेसद्रुतबढियबिगारतसाहदेस । खटमा
 सबहुंप्रावतवितायचक्रसुअबदिल्लियसि
 रचलाय ॥ ६९ ॥ ग्वालेरलुटिबहुअरिनगं
 जिअबचलियअगारसबीरंजि । मगचुकि
 अगमाकहिगयउमिअइनअनिलईदिल्लि-
 यरवइअ ॥ ७० ॥ सकवेदअंकसत्रह१७६४
 सुभायअष्टमिबलअमधुमासअप्राय । दि
 ल्लीपुरबाहिरपृथुलदोरअतिरुचिरशिल्प
 विविअप्रोरअप्रोर ॥ ७१ ॥ थितइककालिका
 देअथानमेलातंहंतदिनहोमहान । बढिर-
 हियतत्यलकरवनबनिज्जजिन्हलरवतहोत
 धनदहिंप्रचिज्ज ॥ ७२ ॥ दकिवनदलअ
 यरुखगनखंडिमैलावहलुहियजुलमअंदि

कदिकठितब विब्रलबनिजकारतजिद्र-
 व्यमजियकालिदिपार ॥ ७३ ॥ कोदिनध-
 नदिल्लियकहर कुपिलुदियमरहदनका-
 निलुपि । बहुजलजहीरमानिकविथारि
 अतिमुह्यतालमरकतप्रपार ॥ ७४ ॥ इत
 मरुतद्वनरुपयप्रनंतधूरवनजरायकुंडल
 सुंलंत । कोडीरतिलकप्रपीडकेकप्ररुता
 डपयतपुरप्रनेक ॥ ७५ ॥ सिरपेचहारके
 यूरसचञ्ज ऊमिकप्रवापकटिसूत्रप्रच्च ।
 बहुमारिहृदलुदियविजाजसनसूत्रमयरु
 संकवसमाज ॥ ७६ ॥ कोसेयपग्घसाटिनक
 लापनीसारनव्यथुरमोप्रमाप । प्रत्तारवि
 पनि लुदियप्रनेककरदीरुबीतिपुनिभक्ष्य
 केक ॥ ७७ ॥ हारवद्वदिल्लियहंतहंतद
 लकदियतल्यपुरतेदुरंत । इतरचतवृद्ध

किवनअनीकश्रियमंतसज्जचाहतसमीक
 ॥७८॥ यहसुनियकमरदीरवांवजीरबलि
 कहियनिजामनमुलकबीर।अप्रप्यनमगपु
 क्किरुअगगाअप्रायदिल्लीरवलपत्तेलैन्नदाय
 ७९॥ यहअकिदेमुरेलेदलअभंगपहुंचेअ
 थारहिंजिमपतंग।उतलैदलपत्तनसोडु-
 अप्रायइततैजबाबदुवहयउडाय॥८०॥
 मरहठलहेलुदुदतप्रमत्तप्रतिमहमिच्चदुहु
 अप्रारपत्त।मचिसमरघोरसमसेरमारबजि
 निनदवंबत्रंबकविशार॥८१॥ धरधुक
 तधुज्जेधावनधसक्किकुंडलिकपालदरकि
 यकसक्कि।करिपरतमोन्नदअधरकंधमि
 लकिलतमुंडनअतकबंध॥८२॥ इअरुदक
 महुडाहलडमंफिधइरानडोलपकावधम
 कि।ववकारिकरतवावनविलार।रइत

जहं जुगिनिकेलिरास ॥ ८३ ॥ जितति
 तहिपत्य उडिपरत जत्यतुंबाकितरलप्र
 कथूतहत्थ । चहिगगनटोपचमकहिंप्रने
 कलुडिजगरजाततननंकितेक ॥ ८४ ॥ सप्र
 गिरतमिन्नबाहुलसमेतप्रहिपंचफनकिं
 कुकउपेत । जिरहनलिचकडिदृगफरकिजा
 हिमानहुंजरवदारानजादिमाहि ॥ ८५ ॥
 कदिदादिगिरंतकहुंमुच्छकंदरंगेमृगनामि
 किदोजिचंद्र ॥ नागोदफटिकहुंकठलगल
 येचातरुतैजिमगर्मपत्त ॥ ८६ ॥ कंकटवि
 दारिप्रविसतकठारविलबीचपन्नयाकिमच्छ
 वार । रंजरकडिपंजरपारजातसेनितसन्धि
 सुप्रतिलुविसुहात ॥ ८७ ॥ मानहुंगवादा
 रजदिनदिरवानकरपदुक्रियाकिजायककु
 चान । द्विपिगुरजप्रत्यपारलदरारकीरकित

रञ्जनमुद्दिमार ॥ ८८ ॥ चलन्प्रसिनहोत
 गजकुम्भवीरजगदीसभन्तजुत्तकिकरीर । स्तो
 निततिरातधमनिनसमूहजलअरुतजानि
 अलगर्दजूह ॥ ८९ ॥ सरघासमबुहलवि
 सिखव्रातमधुजालच्छतमत्यनवनात । खि
 षिजातसरासनकरनकानिजमराजत्वपन
 जमुहातजानि ॥ ९० ॥ मिलिजातकोदिल
 स्तकमचकिमुकुमारनारिलंककिलचकि
 । तुलीरतुद्धिउद्धतप्रमापकेकीनकेकिच
 क्रमकलाप ॥ ९१ ॥ संघतसमधनुविचयो
 मुहातदडुकिकालअननदिखात । रवम
 करतफूलधारनखनकितुटिपरतचापचिल
 वतनंकि ॥ ९२ ॥ हातनपरपयकदिबहरीज
 तकअपपरमंदरसममुहात । हलिजातक
 हिरघायनचचकिचुटिजातप्रानकहुला

हृदि ॥ ६३ ॥ जिनबदनइकनारिन
 उद्विहृद्युं बत मृगालतिन उदितइह ॥ मनि
 कलकर्मचलिंदकप्रमानतेस्तरधूरिसज्जा
 स्यात् ॥ ६४ ॥ बहुवीरवैरिप्रच्छरि विमा
 नतांडवउपेतमुनिगानतान । चितमुदित
 डारिगलबाहचाहिस्वकबंधलरतपिकवत
 सिद्धि ॥ ६५ ॥ हियतिरतप्रत्रजुत निष्क
 सिहालमानहुं सनाललोहितमृनाल । उर
 गिद्धवपाहितधसलप्रायवेठेगृहीकिबल
 भीबनाय ॥ ६६ ॥ भटगिरतपायप्रटकत
 रकाबधुम्मतधने कि उद्धतसराव । तुदिजा
 ततंगप्रजरतपलानकादि परतवाजिगलप्रो
 लकान ॥ ६७ ॥ कदिजातकुंतपकवर वि
 दारिवादिजातरुहिरजिमजंत्रवारि । कदि
 क्कसिनकेतु उद्धतप्रकासमानहुं मयूरगन

भद्रमास ॥ ६८ ॥ इमपरतरवगबहुमत्नञ्च
 गभ्रमतकिपटीरतरुपरभुजंग । इममचिय
 घोरप्राहवप्रनूपबहुकटिदक्खिनभट्टुव
 बिरूप ॥ ६९ ॥ उडिचलियप्रग्गिज्जिहो
 रप्रोरजमुनाजलसुकियतापजोर । सकुलि
 यमच्छखलभलिसुमारपन्नगकिआहितुं
 डिकटिपार ॥ १०० ॥ यहंभयउदेवदिह्नी
 सप्रोरघनकटियजंगमरहदघोर । लूट्टु
 समस्तलिनीचुरायदक्खिनबिहाल । कय
 बलदाय ॥ १०१ ॥ श्रियमंतभीतगतिमनि
 बिसारिभज्योसुक्योनवंभनभिरवारि । इहि
 भजतभज्योदक्खिनप्रनीकघनबिकल
 हाकहियेघनीक ॥ १०२ ॥ मूरखनमिच्छुसो
 ध्योनमत्थवनिकांदिसीकभ रिजियनब-
 त्य । उद्वावतावबिबलप्रनेकरुचिभरिय

भावुजागलनिकेक ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ मन
 तैमूह जुदेन हेजियनमरनरुतजानि । सघ
 नपकगडिमरियसबअछसुताविचआनि
 ॥ १०४ ॥ मनोहरम् ॥ सुनोरैसयानेत्रिगु
 ननकोतमासोजाहियरुतेविचारेज्ञानज्व
 लनपजारैहैसिद्धकीनसाधनकहोमैकोन
 शीलियहैकारननकाजअधुनमेधुरधारैहै।
 बाहिजेतजानेबाहिसखकारिमनेआतेमू
 हेसुरबहुःसदमानिलेदुकोविसारैहैजानेअ
 नजानेकीपरिच्छाकारकेकीजानिडारिकेकी
 दोरधीरवीरदेहडारैहै ॥ १०५ ॥ बटपदी ॥
 इमलेबाहैमरबायपरकिभजिगद्विजका
 तरअदशेसनसाजिरस्यमुदिगप्रतिभुरबभ
 यमच्छर । विक्रिदसिंहकोस्यारपदकिउच्चा
 रपतायउकिरिबसेगहनकाजअनरिबकी

टापर प्रायुः । चालीस दिवस तोसन तरकल
 रिरुप्यय देरत करन १०००००० लिख डरपा
 तप्रतपसत्वन दुयाते द्विजवह दक्षि वनसं
 चरिय ॥ १०६ ॥ इति श्रीवंशभाकरे दक्षि
 रानने नवमराशो बुधसिंह चरित्रे एकच-
 त्तारिंशो ४१ मयूखः । ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 पट्पदी ॥ इति श्रीजीरजिनि संगर मर-
 हदन हरविंशो उहजूरसाह बहुदियउरी
 जिन । इकइक प्रतिआज्ञाब उचित सबलि
 यरलामकारे । दूजे दिवस फलीजरवानहु-
 बल्यो तहं हाजरि । माकोहु इतबौ मय अतु-
 ललिय सब पृथक सलामनत हरिताहिरव
 नदोरां कहिय बुद्धा बंदर वरनचत ॥ १ ॥
 दोहा ॥ सुनिआइरु परि रववरा कल सुसंनि

यथासकमत्त । अष्टादशकतिकनकरिय
 अथानरकिवयत्त ॥ २ ॥ खानकलीजन-
 वाक्यहयथायावनीजीम । जिहिअगैंग
 जसिहजुलभरवेदलावरभीम ॥ ३ ॥ जिहि
 अकिवययह बुद्धिजोरहिहेसाहतिहारवि
 गहिबंदरनजिहेपुरदिल्लियप्राकार ॥ ४ ॥
 यहसुनिसाइसिराहिकछुपच्छोपारियरोस
 पिंसापिनजिगरखोसमयसोनलरवेअपसोस
 ॥ ५ ॥ भोजदीनसोइकसेभयेपंचदिल्लीस
 । यलकापिसायनमुदितहियइच्छतरतही
 स ॥ ६ ॥ मनोहरम् ॥ गानमैगडेजेवाल
 कालमैबडेजेवालनीकलइकायेतेधुमंडन
 छनेलंगे । रिअतकीरमनिरजीलीजेनिहारे
 लाहिलकनबुलावरख्यातइहेचारवनेलंगे ।
 कथितकुराणकीबिसारिवेठेवालिसभने

जोरीतिकीतो चुपमूढभारवनेंलगे दिह्नीके
 घरानेंउतटीकरिइलाहसोंबबुलिकेठिकाने
 पंडपायुरारवनेंलगे ॥ ७ ॥ दोहा ॥ जुमांस-
 हज्जतजातननसुरामत्तसठसाह। रहेसुधि-
 नदिगरत्तिकीलहेसुरतरसलाह ॥ ८ ॥ इक
 दिनकाजिद्यदियअरजउचितमहज्जतप्रा-
 न। कोऊबिधिबेठीसुचितजत्यविचारियज-
 न ॥ ९ ॥ षट्पदी ॥ तद्दिनरचिप्रापानअ-
 धिकप्रासवबनिउद्धतसंगहिलेसंडगनमत्त
 सबपत्तमहज्जत। बिरविबिरचिगत्वबोह
 साहजुतरबहिंनमेसब। यहकोरीतिअपुञ्ज
 तरकिजंपियकाजीतब। सुनिहसिलरहअ-
 किवेयसबनरेनाहैतुजानतरुचितमासक-
 जननप्रासिकमित्तनप्रादिरीतिसुनियत
 उचित ॥ १० ॥ दोहा ॥ काजीतबहिबुरान

कीं प्रायने सिर दिज उद्धि । प्राय उन्प्रालय
 सवनसहरं चकसाह दुद्धि ॥ ११ ॥ नीतिर
 हिन रिहियन अरुम मच्चिग अणे । कोऊ सु
 नतन काहुकी धर धर हार बधेर ॥ १२ ॥ क-
 दुकरवाने शेरों कहिय साह धुनिज हाकि सीस ।
 तातै खान कलीज अजर चल दुहुने पर शीस ॥
 ॥ १३ ॥ तिहिं ज जीर पलदाय लिय खान कपर
 कीतत । बहुरि सहा दतर खान प्रति पठ सोहर ब
 येस ॥ १४ ॥ खान सहा रत हो अहे दुद्धर पूर बदे
 स । हाजि रि सखा अरि हे पूर बके जिहिं येस ।
 ॥ १५ ॥ तायति खान कलीज के पते सत्पर फल
 ह हो सुकस क सुकोर मो अवावहु के उन अरस ।
 ॥ १६ ॥ सोरहा ॥ विज उज जीर अिल अरु प्रप
 वती न हि स अहिं । सेव साह र दु अरु ह न हि
 स न सोरहिं अरु ॥ १७ ॥ अरु निरं दु स होय

पठकिजोरक छु साहपर । सेनापति तुम सोयहम
 वजीर अबइ कहुव ॥ १८ ॥ षट्पदी ॥ हम तुम
 सम्मलिह नहिं खानदोरों कपदीखल । तब सेनाप-
 तितुमहिं साह करि हे गिनिसखल । सुसुनिसहा
 दतरवानसेनसजित पूरवसन ॥ लगिसिनाप-
 तिलोभ आयदिलियचहिं प्रपन । अठस
 त्त ८०० तोप जिहिं बसि अतुल दगतवेर को
 सनदहत । लहिं यह हेतु ताकें हरवलककहर
 भाडभुंजाकहत ॥ १९ ॥ दोहा ॥ आयस-
 हाद तरवानवह मिलिकलीज सहसोद । इह
 वजीररुप्रपहै बिरच्योकपठविनीद ॥ २० ॥
 षट्पदी ॥ नादरसाहसुनामतपतईरानजिद
 नइत प्रबलसखहिं प्रत्यंत जाहिं ममत जित
 हीतित । गाजुदीजकलीजभाडभुंजतचुत
 भाये ॥ बुलननादरसाहसत्तईरानपहाये ॥

चहुनिमंकसुलतानइततियदिल्लियतुम
 कांचहत । समुहचलाककोउनसुमठमचत
 दंद दिनदिनमहत ॥ २१ ॥ पद्धतिका ॥
 यहसनियवत्तपुरइस्थानप्रतिबठियसो
 रजनपदद्वान । प्रत्यंतमुख्यबुलवायपंचप
 दुरवियसाहनास्त्रप्रपंच ॥ २२ ॥ तामाचकु-
 लीनामकवजीरबलिमिलियप्रतीनिसुरत
 प्रवीर । सम्भवधुनिकम्पनकुलबसूरगाजीहु
 सेनहाजीगर ॥ २३ ॥ रुस्तुमसलेमसेरनर-
 हीमकालनकमालरोसनकरीम । मारुफमलि
 कमहमूदमीरअलमतअलीसय्यदसधीर ॥
 ॥ २४ ॥ दारुदसेरबइसहाकदीनमेंहंदीरुमुहु
 म्मदमोनदीन ॥ अहमदकियाजिससुऊदआ
 यसादीकुरेसमीरनसुभाय ॥ २५ ॥ गालिब
 हबीबलालनगुमानपीरोजफतेनसियबपदा

न ॥ २६ ॥ प्रारासहसनयूसफअलीहुदरि-
यावरवानपुनिमोजदीहु ॥ २६ ॥ याकुबअ-
लीरुअम्मनइमामनोसेरअसदपुनिलूरना-
म । इत्यादिसाहभटवरअत्रस्तसहसचिचकि
नइकृतसमस्त ॥ २७ ॥ सबभटनसाहनाद-
रसुभायदियलवकलीजकगारदिरवाय । कहि
अबनजोरमुगुलननिकेतदिहिनियकटाक्षम-
मअोरदेत ॥ २८ ॥ अवरंगजेवमिरजामरेत
धरहिहुधवनधारकधरंत । सचिवननबावभ
ठसानुकूलमिदिगयरसूलमजहबसमूल
॥ २९ ॥ गायकहन्योहिअालनअजानपुति
मोजदीनअलिमसपान । मिलिबडोरहिहु
सअदविमंदफूरकगहिमास्त्रीवासिफंद ॥
३० ॥ मुगलेसदोअपुनिरालमइजाहलन
हगेजेइनअबद्ध । सयदअधीनपुनितपन

सायं विरजा सुदु दुम्मद पदपाय ॥ ३१ ॥ स-
 न्यायिणी विर दुनिती मसीर तरानि मुदुम्मद मोव
 जी । मसीर इक वं न पद कि जीर हिंदुन कर वो
 लीन व हिलीर ॥ ३२ ॥ जित तित विनी म द व
 क मीन क ड क न व हिलीर व म म ल कीन । म प्र व
 ल र व क म र वी क व व जीर स ल ल क ली ज न य वि
 दु र सीर ॥ ३३ ॥ र व ली न य व रिस र र ति दी ह लु
 रि व व त व री न य व ल व जी ली ह । च व क र च ह त मा
 रि क म ति न न ह ति इ च्छ त म लिक म नु ग हान ॥
 ३४ ॥ विर जा सु दु दु म्म ह ति न स मे त जी क ह त
 जा हि की न नि ले त । न हिल र व त म्प्र थ कि म व
 इ क्क ले क क रिसि प्र मा द म्पे सि किते क ॥ ३५ ॥
 म लिक म नु म र म्पे लिक म्पे त ही स न जि नां
 लु व त ह त ह त । म्प्र थि क र गाय क न दि य म्प्र
 वी ति म्पु व र म्पे व न हि ने क प्री ति ॥ ३६ ॥

याज्ञनीभाषा ॥ मस्तदिलौ अजा मेशरावेदि
 ली अकुन द्वसुवेरुवाब सुहवत बदाव
 दाता दिलौ न ताजी मतह मुल मुकु बिलौ न
 ॥ ३७ ॥ गह दर न गुजार द शहर बाब शैला प्र
 न जी न द ह स वाब । अफ वा जि द व न अ
 म द व जी न गुजरा य कलांगर दी द कोर ॥ ३८ ॥
 किश मुल कला रा पास जो न मर द सुव ज मा
 नै दर अमान । इ नू ला फ अ द त र कृत ह व
 ज्यो अ प्र जू र दा सु अ म अ म द व शैर ॥ ३९ ॥
 प्रायो देशी प्राकृता मिश्रित भाषा ॥ रो जा नि
 माज कल मान रत्न म हरी न संग जा ड र त ल म
 त्त रि वारु अ द क वि च पृ थु ल रा ज र व न य
 बि ही न वि ग र त स मा ज ॥ ४० ॥ माल व ति
 य अ कि व न द ल न अ य दि ली ल ग लु द्वि व दु
 सह दाय । वि नु चै त मु ग ल वा र र वि र अ र द

लसज्जुद्धानरौधक दिग्वात ॥ ४१ ॥ तामाच
 कुलीय हसुनिवजीर बुद्धिय सिराहि भुजठो
 विवीर । जलिकरनसिकंदर अगगजाय जि
 त्तिय जमीन हिंदुन हराय ॥ ४२ ॥ तैयूर व-
 हुरे गोरी पठान हत्यन सब जित्तिय हिंदवान
 । नहु पुरन पठान नरहिय राजसोलिय बहोरि
 सुरातन समाज ॥ ४३ ॥ अगौ गुमाय दिल्लि-
 य नदी तिकु यो जु हार्यो मुगल भीति । आ
 यो सुहर्षो सुहर्ष हान सुरतान मदति दिनी स-
 मान ॥ ४४ ॥ ईरान कल कल बजाय संगलै दि-
 य उरा जजुरि जीति जग । सुरतान हितु इम क
 रन जोरि दिल्ली सुहर्ष जो लिय बहोरि ॥ ४५ ॥
 पुनिता सुत अजक वल वाय सो निवतर होरि
 उपर सहाय । ताके सुत सुती का सुत बहोरि अज
 त्वपद हितिय जंग जीति ॥ ४६ ॥ ताके हुत नय

अकलरसनाप्रायोसुसरनअत्यहिअधा
 म। पुनिगरिअअत्यकलुरोगपायदिल्लीहन
 लोदिलेभिलाय ॥ ४७ ॥ योमुगलयहिअक
 सुलामदिनीसुरकिबेनहिसकतधाम। तोअ-
 वजमीनअप्यनसहारिबंधहिप्रपचअप्रस
 बिलारि ॥ ४८ ॥ गोगनसकेनजोग्वातरकिवे
 अवरहितवअयतस्वामिअकिवे। करिबग-
 नसेकारिकजोकरेनलोभुजियापदुनउचित
 देन ॥ ४९ ॥ जोरकिवसकहितुमद्रुवमजोरि
 अहेलोदिल्लियदेबहोरि। तामाचकुलीयह
 कहियतत्यसुनिसजियसाहनादरसमत्य
 ॥ ५० ॥ इतिश्रीवशभास्करेदक्षिणायनेन
 वसराशोबुधसिंहचरित्रेद्विचत्वारिंशो ४२

मसूरवः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
 ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

५

निःशाणी ॥ नादरसाहइरानकेअबरेनस-
जायालगायायायनिसानपैघनजानिधुराया
।उरअहौदिकपालकेनदसालरबुभायाहाक
नकीबोहएकौदरकुंचसुनाया ॥ १ ॥ जंगी
डेरुडमंकियाअबकअहकायाइरानीभटउफ
नेबपुरजजाबनाया । दोपबकतरजालिकार-
नअपौरचायाबेलेतुमसबधिकैकदिस्वगा
कलाया ॥ २ ॥ बिडेचापबहादुरोफटकारिव
जायालहिनेइसइरानमैनरबाजिनयाया । के
अफगानपडानकेमुगलानमिलायाबलकीक
जालवासकेबोहेककचाया ॥ ३ ॥ अरबी
रसीउजबकीहररबाअहकायाखबसीरुमी
खवहीरनरजसुहाया । अतसबासीअफ-
रसीकामवाहकहायाअप्रमनीसीबोइतेआ
देरअहाया ॥ ४ ॥ फारसइसलिरुउफनेसम

सेर सजाया खधारी जागी रवेर बहती मबुला-
 या । श्री लंदे जी लज्जले कर मुच्छ मिलायारन
 तिबत तातार के दातार दिरवाया ॥ ५ ॥ बीर-
 बुरवारी का बिरीर खीर चाया का बेनी प्ररु
 का सिदी लरने नि लुभाया ॥ सुना नीरु यह
 दिया सब संग सि प्राया मलीली प्ररु गिंगिनी
 धर लैन ख का म ॥ ६ ॥ जइ के प्ररु बी जिते
 म क्का मन लाया का जिद के प्ररु का वली सर
 सेन सजाया । लरान रु हीरात के भीरात मिरा
 या निगरी के रु नि दोर के लक जोर क लाया ॥
 ७ ॥ लने लुरु का नि धोरने के वत्ते क सि प्राया
 हले इ म ल क्खों जवन दिदी करि जाया । पंच
 निमाजी पूत जे बल ध म जहाय किन महु म्द
 निजन श्रीरु के न राया ॥ ८ ॥ क बु लो इ-
 सहाक श्री दा एद दिपाया के या लु म्द हिले न

कों ब्रह्म कर्षे बल आया । अमीनादवके प्रर
 ममतने बलनायाके दोखम आहसकहे सल-
 मोव मुहाया ॥ ९ ॥ किओपरस ओबिद कोंचि
 नोचितताया सुलेमानमतके कितेहिं दवान
 हकाया । इत्यादिक अलिगढके चढि मिच्छ
 अलाखानादरशाहसनाहके विनुदेहहि पा-
 या ॥ १० ॥ चीलाकालबनातकासुहिदोप
 सुहाकाकरने कुन कुरानले मननेन लगाया
 जिसरके रजदबबडे चढिबेग चलाया हाकन-
 कीचीं हल्लके दलडाकडगाया ॥ ११ ॥ उग्र-
 विडाली अरिबके बहु मिच्छ बढायाके क-
 अरधीकारसीबुहो विकसाया । पंचकलकी
 चापओर कर्वे भुजमाया चक्रे वक्रर राकजे
 मगररनमाया ॥ १२ ॥ ताजीरकरसुजा
 केबाजीदलबाया ईरानी अरबी कितेजर

जीनसजाया । बैडेहत्थिनमुंडकेधुजदंड
 मुकाथानादरसाहउछाहकैसहसेनचलना
 या ॥ १३ ॥ सत्यलोकलगथौरुथौपाताल
 पचायाफहारीढकसेसकाफनमात्मफिरा-
 या । हल्लीजुगिनिसंगहीथेईथरकाथाफाल
 फलंगीडाकिनीकरतालबजाया ॥ १४ ॥ का
 बलसीमाहैकटकप्रबभटकनिरायाहाक
 परीहिंदवानमेंसबसोकप्रया । लंघिअटक
 पंजाबकाथानांघनघायासूबानायकसाह
 कासबफोरिमिलाया ॥ १५ ॥ आनचलना
 याअप्रपनांमुगलानमिठायासूरइरानीसंचरे
 मगरूमचाया । थौंनादरअतिबेगसौंदिल्ली
 सिरआयापानीपथकिरनालपैमंडालमुका
 या ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सोरमचिंगदिल्लीसहर
 जोरइरानिनजानि । साहमुहम्मदअबसुनी

यद्यप्यस्योमानि ॥ १७ ॥ मोरदा ॥ डंगन-
 प्रसुनिआतसरप्रसन्नसवहीमचिब । सोक्रन
 तदपिसमातइकरवात्तोरोंउदग ॥ १८ ॥
 षट्पदी ॥ कृमप्रतिजयनेरखानदीरां पठये
 दलतुदुइरकक्वाहसाहलोहोतोसङ्कल आ
 कतदलईरानर बहुदेखियसहायन । हमतु
 महकृत होय सुखिकारहि वास मुगनि मम
 सोरमारअप्यउअमिन्सोतोसनअबउतर-
 हिंतिरथारि कुरानकरियतसपयजो उपकृत
 यहवीसरहि ॥ १९ ॥ दोहा ॥ तेरीहीयहबे
 रहैआवहुसंदत उबाह । तोहिदुरगरनयम
 अजरीकिसाप्यहिसाह ॥ २० ॥ इहअनेक
 कप्रान खिरवेसाह चमपतिशूर । सईकरिके
 सरथसोकसतिनेबहिकर ॥ २१ ॥ अंआव
 तलुमसाह जतवा । हरकरइमुकाम । यौले

रिव लिग्विदलम कुलकुरम कलुरव दुकाम ॥
 २२ ॥ षट्पदी ॥ इम जवनन विश्वास टैरुकर
 मचल किन्नी अन्न ह पुरान ज अरिदल अदश
 पुर सुकालिदि च सावधान सहसत्पर खोजे पर
 क्रम पाते । यह भावे जलि रिव अल होल मर
 नव किन्नी लसि अन्न ह नरेश । ह दुव अरिदल
 यह जय गि ह उदल लनि को कुन गय उदि डिने
 यकल ह मयल का लया वि अ पर रवे ॥ २२ ॥ दो
 हा ॥ वारी इम कुरम किल ज ह त दि ली ल अन्नो क
 । सवल रवान दोरो ल जिय ससु ह ह त समो क
 ॥ २४ ॥ इहि च अर पर वा पव व जे हो साल म न
 द । दि ह्री आय ह दा ल म । ह त जवन अत ह
 ॥ २५ ॥ पानी प ह अया ल नी ह स दिन ली जे
 अय साद । सना पति के वा अल म म ग पय कु
 चर ल न ह ॥ २६ ॥ लोठ क म ॥ क उ के ल प ल

सबसज्जकरीप्रतिहारनकीबनहाकपरी।बल
 पायनिसाननचायबजेलखिजेघनभइवनइ
 लजे॥२७॥खुरसाननफूलहूपानखिरेचमका
 तचिनंगिनबाढखिरे।अननंकिहुतासनधारऊ
 रीघननकिबजीगजघंठधरी॥२८॥परबरेत
 पंटेतघनेउमहेकमनेतकटेतनजातकहे।ब-
 हुवाजियलाजियसज्जघनेजबजानमनोपब
 मानजने॥२९॥ककचच्छदकनमनोकलि
 काकचयाललरवेकुजागवलिका।सहनाइमु
 खेजिनमोथसदापयलोतमनोगनिका।ममदा
 ॥३०॥कलिजितनकंधरबंककसैकुतदाकि
 क्रियापटुलंककसै।हरिजातउडातकरीदका
 रीसकरी।दिसिखानबनेचकरी॥३१॥विचुरे
 गजगाहनवीजितजेजबकेबलराहनवीजित
 जे।परबरेजरजीनसजेसखेनचिमंडतचेरिन

केमखरी ॥ ३२ ॥ धरि धोरित बलिगत धावधपे
 मनकी गति जे छिन मां हिंमपै । छलिगात चला
 नाल छिती किलकोट पदी बिचवत्तकिती ॥
 ३३ ॥ भटके मनभाय फिरे तटके धटके निपजे कि
 वलानटके । हुलसै करि बिजुलि की हसनारज्यमै
 नभुत कित्यकी रसना ॥ ३४ ॥ खुरराजतराज
 तपत्तरवे जिनेपकमहायसनालजरे । लगि-
 यों खुरसों खुरताल तसै गहि के खुरभानु किचं
 दग्रसै ॥ ३५ ॥ चलबोधितरु छइसे चमकै ऊ-
 पदातकनी नियज्यो ऊमकै । असवारचहै सुकरै
 अनुठी मलपै बनि फाल गुलाल मुठी ॥ ३६ ॥
 परिसंग कुरंगन जे पकरै छिति चोकर मै पलदा
 छकरै । बपुजोर उऊकत प्रोथबजै सफरी पल
 दान उडानसजै ॥ ३७ ॥ रसले हरवलीन प्रथी
 लहै गति मै भरि बल्यन धुमिगहै । करि मधव-

रा.
५

हैं नटकीन कलाचलिजातदिरवातमनोंचफ-
ला ॥ ३८ ॥ प्रतिमल्लबनेनभपच्छिनपेबद्द
रैउडिदोयवरच्छिनपै । कूलजातेबनायुज
आदिकेतजकमैपवमानउडानजित ॥ ३९
॥ कुलदेउलटेउकटातकरीपलदेमनपातरि
कीपतरी । इकलकृत ४००००० तरगमया
जातेकेकरठीरुहजार २००० भलोभातेके ॥
४० ॥ करनीराखदीनकदीनहरेकायेनारुन
एच्छनचोटकर । अउतगारअच्छतअप्रेद
भतेरिवाजरवनभरकाकजातरवर ॥ ४१
डगदितडरावतडाकनतेपलठारिविजिठाह
प्रताकनने । अत्रवदापककडतकतरककमस्य
दिलंगानलखद ५॥ ४२ ॥ धनवालस्यसवित
सत्यरुहप्रतिरसतानसुविनजवकर । फदकार
तरगडिनतेवसकामदिरमापंभनकनभारमको

॥४३॥ बद्धरवाव नरावनभ्रानवने जलत्रैच
 नकाजप्रगस्तिजने । मखल्लनकलापकक्रं-
 धकसेलगीगन्तवरत्नननुद्वलम । ४५॥ भन्क
 जगियहोदनसजुभयबलमचरयेनहिपैपठ
 ये । कटसुंडिकलापकरगिरचेबद्धचित्रचिते
 रनकेविरचे ॥ ४५ ॥ बद्धअदिननिदत्तउच्च
 पनेमजजुलरुपैजमदुलमनो । बलकेस्विरत
 जमहाबलजेरालिसादुलमोगनसामलजे ॥

मदद्याव नद्युमतपैडमतेबलबाहहि
 माचलसौबदते । तृनमानबडेतरुतोरतजेम-
 ननेरविकेतुमरोरुतजे ॥ ४७ ॥ कनकाचल
 लडुवगोटगिनैरदिचदमलोदनरोटगिदि
 किलेकारततारनपैकरेचलसुडिचलातधले
 चरे ॥ ४८ ॥ कटपैकरुविंदप्रकासकैसनि
 भोमभिरजजुलगिगरे । हरितालसु

हालकस्योगुरुजानिबिधुंतुदपासिपरयो ॥

४६ ॥ चरवीनचिकेनचटाहटपैउडिजात

अचानकग्राहटपै । कतिबीरनकुंतलगेक

दसोंनलिनदिबहोरतउखटसों ॥ ५० ॥ ज-

नकोनियरायरचैजवरीबदिअैचतबगधन

कीबवरी ॥ जनलगरपायधरैजितनेजमकी

इकरजुवबद्धबने ॥ ५१ ॥ सिरपैमनिहाटक

जातसिरीभरमाचलसोंभततीकिमिरी । इमइ

इहजारबडेइभजेनिकसेसजिवइलकेनि

भजे ॥ ५२ ॥ तुरकानतयारभयोरनपैफरके

भुवरबंडफनीफनपै । खगउद्धतसय्यदसेरव

खिलेधिरजामुगलानपदानमिते ॥ ५३ ॥

भुजदंडकमाननकेकधरैरालुलायपरवालन

बेयकरै । बहुवीरबंदकनदावरचैलसिस्तजु

रैअएनाहिबचै ॥

रिकेकभिभागन

तैरवुरलीबहि थावनदाववचातबली। तर-
 वारिनवार करै कितने घम कावतसगिनल-
 च्छय घुने ॥ ५५ ॥ सबदिल्लियभीर उमीरस
 जेरनमैभटभीमरहीमरजे। प्रतिबासरपचनि
 माजपढैकलमांविचगुतबयानकढै ॥ ५६ ॥
 बिरचैबहुनेकतजैबहुको मनचितिरसूलमु-
 ह्मदको। सलिकंठकुरानसिरीफरहैबलउच्च
 रुडडिअकुच्चबहै ॥ ५७ ॥ लखिमुच्चनलं
 बसिरवाजिनकीबिधिछिन्नियरीतिप्रतीपि
 नकी। छबिकेबपुमुद्गरदंछदेप्रतिमल्लघु-
 मावतफैकिपढे ॥ ५८ ॥ बदेकेककितेकत
 जैकपढैरवपीरवलीनअलीनरहै। असिठ
 लनमल्लअपुछअरैकतिबानबिहंगनबेध
 को ॥ ५९ ॥ रदठंककमाननरवैचतजेअ-
 तलोपयतंअचतजे। बदर्वानकलीजस

हादतारेबलिमुहवजोरमुहबतसे ॥ ६० ॥
 मद्रुरसुमरवानचमुपमलसजिकेदलदिधि
 यलोनिक्ले । बहिफीलमुहसदसाहचढ्यो
 वजिहकानिसाननश्चानवढ्यो ॥ ६१ ॥ बल
 केहरवज्ञनकेबढनेकरटीपुरतीरनकेकढते
 । नजंठारप्रलप्रसुतुहिपरोकजिमंडलमडल
 कककरी ॥ ६२ ॥ विनामुहउरुलनहुकदई
 खेसिख्योप्रमथानकरेहखई । अपसोनर
 पशुसिगिदि । डीक-वककरजीवतेदिदिक
 ही ॥ ६३ ॥ उनमलकमलकप्रालतरब्योरु
 दिगवरदलदिरवातनव्या ॥ चिरमेहिलरना
 यमिलेरसुहेकडिल्यालकरालबिडारनकडे
 ॥ ६४ ॥ इमगानकुसनिक्कदिउनेजनउहुन
 वीरनजेनमने । जिमवदिरचनकसुवतेम-
 नज्योगिरजसजायकरप्रती ॥ ६५ ॥ जिम-

जान्हवि अंडकटाहक तैं करवाकि उदीचि
 बलाहक तैं । रचनाकि गुनत्रय तैं विकसी पृत
 नाइमदिल्लिय तैं निकसी ॥ ६६ ॥ इवहाक
 नकी जहजार नकी हलकार बढी प्रतिहार न
 की । मग डोहि न मपत फोज चली उर मी जि-
 मसागर तैं उरली ॥ ६७ ॥ उम डाल डवाल
 बली बलको धमकात धुजातर सातलको ।
 इक अकर वहि नादरको गहि है इक अकर न-
 हिहर नमै रहि है ॥ ६८ ॥ इक अकर वहि जि-
 त्तिइरान लई इक अकर वहि मन्दिन साह मई
 । इक अकर वहि खान कली जफरयो रुव जोर
 सहादत पै पलक्यो ॥ ६९ ॥ इक अकर वहि
 अप्पन सेनपती सब जित्तहि तोरि इरान ल-
 ती । इक अकर वहि जित्तहि नादर ही प्रति वि-
 ल्लिय बुद्धि प्रमादरही ॥ ७० ॥ इक अकर वहि

दलदिल्लियकोहठजानिहरामिनकेहियको
 । क्रमिभारगसत्तमुकामकरेपथपानियसौब-
 समीपपरे ॥ ७१ ॥ खठकोसइरानअनीकर
 ह्योक्रमलत्थचमूपमुकामकह्यो । असवार
 हजारअसी ८०००० उतरेअरुबीस२००००
 खबीननसजअरे ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ दिल्ली
 यपतिअबउत्तरियपरियअनीकप्रपात ।
 रहसिरखानदोरांरदियबदनइरानिनबात
 ॥ ७३ ॥ दलइसरखानदोरांलिरिपत्रपठा-
 याइरानइसअगौंयुनसीससुनाया । तुमतो-
 रकेतरारेचतुरगचलायालाहोरअदि सूबा
 बदेफैलफटाया ॥ ७४ ॥ पंजाबपेसअनांनि
 जअननमायाहिंदूसबैहसामीसीनेसुतगा
 या ॥ दिलदोरअोरअोरैकरजोरबजायागिनि
 इरयहानबुड़ीपरलोमलुमाया ॥ ७५ ॥ अोर-

तन्नूपदिल्लीलिरिदावचलायाजानीय-
 हैनकोऊबरतासबनाया। सैतानकेसिरुवाये
 मगरूमचायादिल्लीससौनसंकेदिलमस्तदि
 रवाया ॥ ७६ ॥ सुलतानकीजमीपैसमसेरस
 जायाकरगीरकीफतैकेसुलतानलुटाया।
 दरियावकौदगासेलहिनावलघायापाया
 पुकारसेपैसुलतानपचाया ॥ ७७ ॥ चाही-
 सुलाहजोतोकरिजाद्रुपयानोंजोजगकीज-
 रूरीतोदेरनजानों। दिल्लीसकीगुलामीप्रति
 रोजप्रमानोंसुलतानदरजमानेंबरनायवभा-
 नों ॥ ७८ ॥ इमपत्रखानदोरांपठयेतिपहाये
 ईरानसाहमंत्रीउमरावबुलाये। एकाल्लेइ-
 जांकेअहवालसुनायेभेजेतिखानदोरांदल
 खोलिदिरवाये ॥ ७९ ॥ ईरानसाहअकरी
 माताचकुलीसोंतैहीवजीरअनेअकवाजि

खुलीसों । एतो नंहीं निहारे ततबीर दुली
 सों आलाब जोर आयिसमसे तुलीसों ॥ ८० ॥
 हिंदूज राक आया सब सोर डरानें तो हु बला-
 र १००००० ताजी परवरै तपलानें । हथी
 हजार मते घन रूप घुमानें लकड़ों सबार अ-
 च्छे वर डूर लुमानें ॥ ८१ ॥ तोपै हजार दीपै
 नीसान फिरानें छोहै लगे छवीनां मदधीर मि-
 रानें । लकड़ों पर्याद जंगी समसे सजानें खुद
 मोजरवान दोरा बर फेजर वजानें ॥ ८२ ॥ एतो
 कृष्णी जरबो काना हक फरे बहै गाफिल जर
 ताहि ह्मी जर जोर जेव है । सबही सुता हमंडे
 करनो कि जंगनां उनतो यहै कहई हमको दि
 रंगनां ॥ ८३ ॥ इरान साह अकवी सबको सुना
 यकै उमराव बीर बीले मनसंन लायकै । निसुर
 त अलीक हाजीका जीकरी ममे गाजी हुसैन

रुस्तुमरोसनरहीमसे ॥ ८४ ॥ बुल्लेकलीजरवाँ
 पैँप्रहवालपठावैँपाजीसुक्यौँबुलायेवरजो
 रसुनावैँ। जाहिलदगाजनायोनाँकिसून
 नाकहैँहमहूँहरामतोपैँकातिलकजाकहैँ
 ॥ ८५ ॥ ईरानसाहरोसैँलिखिपत्रपठाया
 प्रायाकलीजरवाँपैँइनमंत्रउपाया। जुरि-
 मेतरवाँकमदीँदिल्लीवजीरजोदूजोसुभाड
 भुंजाजालमूसरीरजो ॥ ८६ ॥ मिलितीन
 मंत्रकीनोंँप्रपनीजमीनहैँप्ररुसाहपैँभुहु
 म्मदप्रपनेँअधीनहैँ। इनसौँकरवानदीरौँ
 दुसमनमरायकेँकहुदंडदेरुपेयेदेहैँपुख-
 यकेँ ॥ ८७ ॥ इममंत्रमंडिपच्छोतैँहंपत्रपठा
 योडरियेइजरनाँहोहमकामवनायो। सब
 राकरेरजहैँतुमसौँनरारिहैँइकनाँजरवानदी-
 राँपदाहिमारिहैँ ॥ ८८ ॥ तुमजगकीकहा-

वोनकबूलमामलैतबसजुरवानदीराँअप्रे-
 हैतमामलै। हमराबरेभदोंसैमिलि
 रिहैईरानकीदुहाईबजमाँविथारिहै॥८६
 ॥ सुनिएहसाहनादरबरजोरकहाईपर्दाहि-
 रवानदीराँतुमसोंबलराई। सुनिएहरवानदो
 राँसबसेनसजाईदुहुँअप्रेरहोतअप्रेसैवहर-
 त्तिबिताई॥ ९० ॥ अबप्रातकालआयाक
 कबाकुकुकानेँअरबिंदतैँउडेकेअलिरत्ति
 रुकानेँ। परदारकोरिछातीनरजारपत्नाया
 गिरिराजकीगुफामैँतमतोमचलाया॥ ९१॥
 दरघंटदेहरोंमैँबरनादबजायाचहिभोगच
 कचकीसुरवमेलसजाया। तारेनमंदतेजी-
 दबिब्यंबदुरायामंथानगवालगेहोंघनघोरघु
 राया॥ ९२ ॥ तजिपंथचोरतकेछिपनोंदरी
 नमैँगाहिमोनघूकबैँठतरुकोदरीनमैँ। उदया

द्विपैँअनूठीइकरोचिलरवाईचलचाटकेर
 चौकेचहकानिमचाई ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ सेन
 खानदोरांसजियस्वामिधरमधरिसीस । अ-
 नयसहादतमंडिइतरचिमसाहपरसीस ॥
 ६४ ॥ षट्पदी ॥ कहियसहादतकजलवा-
 सलेमवममलुहृतदेहुसाहआकेसनरननाह-
 करिरतुहृततखनअप्रकियसाहपुथकलर
 नोनउचितअब ॥ इकहोयअंकुरहिसज-
 हिंतुमहमकलीजसब कहितरपिभाडभुंज
 ककुटिलसबकातरदिल्लीसदलपिकरव्योन
 जातहमतैप्रबलबिरचतलूटइरानबल ॥ ६५
 ॥ यहसुनिअकियसाहपुथकलरिमरहु
 सहादतअधमसुनतद्रुतउहिभाडभुंजकअ
 तिउद्धतचठिनजदललेचलियखानदोरां
 प्रतियोकहि । दीजेहमहिसहायचमूअधिरा

जजिजयचहिइमअकिविजायईरानदलमि
 ल्योमूहलवहुनलस्योसबभेदसाहनादरस-
 मुमिअधमसहादतउच्चस्यो ॥ ६६ ॥ दोहा ॥
 मूहसहादतजोमिल्योचहिईरानअधीस।प-
 च्छीयो कहिमुकलीअतुलभारममसीस ॥ ६७ ॥
 सुनिएहरवानदोराचहिबेगचलायावाकोस-
 हायदेवेककोहकलाया।दिल्लीसकीच
 एकोअधिराजजीरजोहरवलदूरेहंकयोध-
 मचकूथीरजो ॥ ६८ ॥ अच्चेसिपाहलेके
 अचअचउडायेमानीघटाउदीचीआसारम
 चाये।धरनीधमंकिधूजीसिरफूटिसेसकादि
 नचंदसादिरवानांदिपनांदिनेसका ॥ ६९ ॥
 दलभारमारदहावरकीवराहकीकमठेसपिहि
 फहीबलआहअहकी।कालीतथाकपाली
 आयेउडाहसोबेतालप्रेतनच्चेचतुरंगचाह

सौं ॥ १०० ॥ गनसेनलंकगिरीगोमायुगहके
 जंजीरतोपजालीगजघंटहके। बेंडेहजा
 रहथीबढिलेनविशारेताजीतुरंगतत्तेनभ
 लेलतरारे ॥ १०१ ॥ चकिबीरखानदोरांइससे
 नचलाईईरानकीअनीपैअबजगउबाई।
 उतलैइसेनअयोपुनियहिआतहीपाताख
 लोपुकारैपहुंचीअताही ॥ १०२ ॥ सकला
 नअंकसअह १०१५ बदिफगुनभारि-
 बिदेरनेरुकानोतरवारितमसे। दुहुंअेर
 तोपदगीधामिधूलधोलीकानेबिसानकारे
 अतिगाजउफनी ॥ १०३ ॥ डगमरिगमेदिली
 केगिरिदुदगिरानेसारेतातडामलिजोपहुप-
 च्छिपिराने। अथासअअरैकेगलमानम-
 चायोडकेसुडाकिनीकोरसाराअयो ॥ १०४ ॥
 गोलेगकरगंजेहथीनहलकेअरतदमारअमे

संपादिसलकै । आवाज तोप उडुं जिमसंख-
 सातुसों ज्वालकरालजगैबढिचंद्रभातुसों
 ॥ १०५ ॥ आकासतूटिऊं उडिजातओरसे
 सभसेरमेहनजैनभमत्तमोरसे । कठकूठका-
 दिडारैगोलैअरातिकीमानोंपिछानिपारैग-
 जभद्रजातिकी ॥ १०६ ॥ हुसियारखानदी-
 रांसभसेरचलाईपहुमीसुरंगपिक्खीलगिर
 चललाई ॥ फूटैकपालभेजेतरवारितरकैकै-
 कुलकैकटोमैगतसालगरकै ॥ १०७ ॥ केतेतु
 स्वारकहैअसवारउलहैकहैकटारभूरवेहिय
 कालिकचहै । नागोद्वानफुहैनरकातरनहै
 टंकारआपजजैचिह्नासुचहै ॥ १०८ ॥ आ-
 यतैअचेतयुमैलकैकराखसोमानोगानारम
 लोसरसेसराखसों । कालिफिफरेकतेजेफरिफां
 कफुाराविदोसारचमोहिकेरुजिमजेबबनदि

॥ १०८ ॥ सुंडा करी न कहैं जिम पन्नग करि भं
भं मया न बज्रै भट भिन्न नगारे । आकास अग्नि
परी सुर लोक उजारे महारादिलोक वारे जन लो
क सिधारे ॥ ११० ॥ विनु चेत वीर बक्के बहु दुं
त बजा विद्यारे अनेक युग्म सुर पद्म गहल वि ।
धार लबाड बज्रै प्रति वीर बकारे समसेर को सि
रा है दुख मार उजारे ॥ १११ ॥ पंचास दीय पर
भैरौ ललकार लगावै लै लै ललाम लो ही च उर
दि ६४ चढवै । केसी सई सलै के गल भेद भिर
वै के अचरी अनूठी बर माख गिरावै ॥ ११२ ॥
षट्पदी ॥ तीन पहर तरवारि खान दोरां बर ब-
ज्रिय अनिय मोरि ईरान सब लदि लिय जय
सजिय ॥ रवि अत्यंतर नरु किय धाय ल गिय
अडारह ॥ खेत सहाद तरवान लखन हेरिय ब
हुवारह पापिय कहौ न पायो तदपि देर च्यो सब

ईरान-दल-यह-जानि-भाड-भुंज-क-अध-म-दूत-प
 काय-उ-कु-द-क-ल ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ खान-स-हा
 द-त-दू-ल-द-ल-प-द-या-च-मु-प-ति-पा-स । मो-हि-द-रा
 नि-ज-जि-सि-कै-ग-हि-द-िय-का-रा-बा-स ॥ ११४ ॥
 अ-ब-प्र-दो-स-अ-ग-म-अ-धि-क-अ-र-तु-म-घ-र-य
 ल-अ-ग ॥ क-लि-ह-कु-रा-ब-हु-म-द-लि-क-रि-जा-न-हु
 दु-ग-म-ज-ग ॥ ११५ ॥ ब-द-लि-सु-ह-ई-रा-न-बि
 च-र-ल-सु-र-हा-द-त-ख-ान ॥ यह-फ-रे-ब-क-हि-दु-क-क
 ल-यो-अ-नि-स-ह-क-दो-द-ान ॥ ११६ ॥ से-ना-प-ति
 अ-ह-सु-नि-ग-के-र-यो-ज-य-ज-र-क-कु-क-उ-ध-रि-सो
 लि-र-अ-र-घ-र-य-द-भ-द-न-च-ल-यो-नृ-जा-न-न-ड-रि
 ॥ ११७ ॥ प-द-प-दी ॥ इ-त-दि-ली-स-प-जी-र-खा
 न-दो-र-हि-सु-नि-अ-व-त-क-र-न-त-क-ह-हु-ह-इ-रु
 व-हु-व्या-ज-उ-प-द-त-क-हि-य-सा-ह-सो-जा-य-अ-
 जि-ग-का-त-र-से-ना-प-ति । क-ज-ल-या-स-ल-गि-पि-

हिंसातडारनइतआपतिसेअबहिदेनवर
 पातेमदतितोपनबलरोकतनिनहिंसाअप्रभु
 तअप्रिदगो जमगजबगजर विद्यासि का
 गिनहिं ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ यहवजोअप्रत
 धोर कियरवतीकमरदीरवान सिनर
 सेनेसकोपिन्तोपनप्रान ॥ ११९ ॥ दुबुहि
 खानदीरहचरनगोरन उडुमगेना अति
 धायलइवतदपिद्रुतअस्यउडेइअयेव
 १२० ॥ अतिधायखानदीराइअइअअ
 याखूनीकलीजरवांकोसबजीरबुलाया
 मनमंत्रनीतिमंडीसबकोहिमुनायाहोत
 सुतोहुवाज्योहमज्यांनगुमाया
 अखतीनमनअकस्यहमसोतुमक
 सोलराईइकहोननदोजे । दिल्लीसहिबु
 जेअदरनमिलावोतीजेननाहिंदिलीतुम

६

जायदिरावो ॥ १२२ ॥ मंगो सुदेरुपैये प्रति
 गोनकरावो कीनी तुम्हें जु मोसों क्यों सोवक-
 दावो । यों अकिरवान दौरां वपुसच बिहा-
 यो सुनि साह पै मुहुम्मद प्रति सोक अधायो
 ॥ १२३ ॥ अब रवां कली जकों हीं सेनापति
 की नो पै अत्य भाड भुजक के अत्य नदीनों
 इत कों दुसाह नाहर अकुलाय विचारी उ-
 मराव इह किनी मम सेनदुरवारी ॥ १२४ ॥
 तव ही कली जरवां पै लिखि पत्र पठाया लै दं
 डके रुपैये हम गोन उपाय । सुनि सो कली
 जरवां अति मोह बहायार कात साह अ-
 गों अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ क-
 हे कली जरु कमर दी साह अग कर जोरि ।
 सेनापति माखी समुजि देहु लखन अब छो रि
 ॥ १२६ ॥ इह को टि दमद मले नाहर पच्छो

जात ॥ सोहि बल प्रवसीकर दुलरे न पुग्ग
 हिंतात ॥ १२७ ॥ मनि साहय ह मंन तब नाद
 र प्रति लिखवाय । दम को दिले जा दुल्ल प्ररु
 न न मिलन उमाय ॥ १२८ ॥ इक माग प्ररु
 ही लह दुइ क जाय ना होर । इका गिन दुल्ल अ-
 त अद क इ मली जे दम तोर ॥ १२९ ॥ यह सु
 नि नाद साह अद कर न बिचारिय दुइ । खान
 सह दत जानिय ह अथ म जरखी अथ उअ ॥
 १३० ॥ पादा कुत कम् ॥ खान सह दत रह
 बिचरी नाहिं अवर को कम द भारी । प्रान रवा
 न दोरां जब देहे सेना पतित ब मोहि नने है ॥
 १३१ ॥ यहै बिचारिय जीर मिलायो मूढ सुअ
 आचरु पमरायो । साह कली ज किच दुसे नाप
 तियाते जरखी सह दत अ व अलि ॥ १३२ ॥
 नाद प्रति इससे नरु चये प्रथा कली ज लुद-

हिं बह काये । द्विलियसजदयो तुमकार बक्ये ।
 नाहे ले तरु जान कहत अह ॥ १३३ ॥ रवान
 कलीज मिलन मिस बुझहु पुनिकारि के दरवी
 जो सिर बुझहु । तब तुमरे बसि साह बुझु म-
 दहे हेहु तहि तजहि साह सह ॥ १३४ ॥
 तब हुन रवान कलीज बुलाय उकरन मय वह
 सह बुत आयु उ । तब हि मकारि कारा पि चडा
 सो अजना दर अलि गह स महारथी ॥ १३५ ॥
 अजिके मय सुनहु कलीज कहवहु दिल्ली स-
 हिये हे मिलन बुलावहु । सिर कुरान धरि सप-
 थ उचारत ए कारन बेठहिं हित सम्वत ॥ १३६ ॥
 तब हि कलीज पत्र लि रि प्रेरिय आषु मिला न
 इनहु हित हेरिय । यह सुनि तब तरवान अशरी
 हिय । चलत साह बुझु वीर नरो हिय ॥ १३७ ॥
 कोक कहत जाहु न न हजरत कोक कहत अ-

लधेनुहयकुंजरएडकअजरुमहिरदंवरवेसर
 ॥ १५९ ॥ कठेकहरकोगिनेअनंतनप्रसवम
 ज्योत्रयजामदोरपन। यहसुनिरवानकलीज
 अरजकियलदनादरयहरुक्किअभयदिय
 ॥ १६० ॥ फरगुनमासविसदद्वादसिदिनइमपु
 रकालतकियउइरानिन। नादरदत्त- मयअ-
 वजानियतवलसभदनकोसअसिठानिय॥
 १६१ ॥ रहिनादरदुवमासवितायउदिल्लीप
 तिसनलिरितलिरवायउ। होमैसाहजुहिंदु
 वानपतिसोजित्येनादरइरानपति॥ १६२ ॥
 ज्यानमातनबरवलीसकियउसवसोमेलियउ
 अधीनभयउअव। इमलिरवायनादरदरालि
 नोंकचुनमुहुमदअदर किन्नो॥ १६३ ॥
 छिनिविभूलिलइसबवरवरसमहमन १७
 अनमोलजवाहर। हीराइकअयतचतुरय

लज्जो बुंदीसमोज कियबाहुल ॥ १६४ ॥ सो
हीराहु विनिलियनादर तरवल दम्मनवकोटि
६००००००० मुसुवर । आयुध अतुलवसन
परवनप्रिय अछे सब इत्यादि विनिलिय ॥
१६५ ॥ रहिहु मासदि स्त्रिय इमनादर करि गय
कुचरेन सहसादर । अब इतरवानसहादतजा
नामैहरामयहसाहपि चानी ॥ १६६ ॥ जिय
तनाहिं शेरहिं जरता हयह बिचारिजिसरवा
यनस्योसठ । साह सुहुम्हाइते जनसाथो लागि
कुमयासखनिभवतुदायो ॥ १६७ ॥ दिस्त्रिय
निवलसखन अब जानिय पुनि मरह हनहस
प्रमानिय । इत बुधसिंहदेह अब शैखोबुं
दियराज उदधि विचवीस्यो ॥ १६८ ॥ दोहा
॥ पुरबे अमसनकोसत्रय ३ नामबाघपुरग्राम
। तस्य देह संभरत जियनिज विथारि जदना-

म॥ १६६ ॥ संबतरवटनवसत्तइक१७६६
 अमा३० रुमाधदमास। इमसुबुद्धअनिरुद्ध
 सुवकियपरलोकनिवास ॥ १७० ॥ प्रेलकरम
 सबविधिसाधियभोनभूमिगजदान। बसुधा-
 विनुकिहिंघरबनेबैदिकमृतकविधान ॥
 १७१ ॥ रम्यमहल १सर २बाग ३रचिकरन
 नामवयकाल। सेवनआलमसाहकोप्रविलो
 बुद्धनृपाल ॥ १७२ ॥ कछवाहीरानीकियउ
 पुरविरचनप्रारंभ। जयनिवासअमिधानक-
 रिथप्यनमुक्जसथंभ ॥ १७३ ॥ विद्वन्प्रभु
 तमंदिरविरचिपुरताकेबहुपास। रानीरचन
 विचारिकियजेपुरउपमितिजास ॥ १७४ ॥
 हैगनेसधंटीविहितताकेवाहिरतथ्य। हिस
 उत्तरकेदारतैलग्योबसनअतिअत्य ॥ १७५ ॥
 विचवत्वरतहैवनिसक्योपहुपहुआलयय

ह । विनुबुंदियरुकिबोवद्वरितुंगनभोनभ-
 लीह ॥ १७६ ॥ निलयजोधरहिनृपप्रनुज
 व्ययविरत्तरिवसुवार । पुरतैपच्छिमकोसपर
 कामनरच्योकासार ॥ १७७ ॥ नामजोधसा-
 गरसररुनिबसथरचितनवीन । वागमहत्तर
 रसेतुविचप्रमुमंदिरडियापीन ॥ १७८ ॥ भूप-
 तिधावरगंगभोजिहिंपुरपूरवजत्थ । विरचे
 उपवनवापिकाअधिहजारनअत्थ ॥ १७९
 ॥ कोदवातनृपकोकथितरामचंदअभिधान ।
 विरचेवापीवागजिहिंपुरविचपच्छिमथान
 ॥ १८० ॥ गजपुरवभूपपुरोहितद्रुपच्छिमदि
 सपुरपास । वधिमतिदेवीकोसहनविरच्यो
 विभववितार ॥ १८१ ॥ तत्थहिवेतरुवा
 पिकाअग्नीकियजिहिंसीव । पुरकेदकिरेवन
 प्रातपुनिअचेमहलअतीव ॥ १८२ ॥ नृपदा

बहुदलबलवत । हैहाजरिभटलकरवकटारे
 पैहोमिलिनभलोफलप्यारे ॥ १३८ ॥ काहू
 कीनसाहश्रुतिकीनीचल्योमिलनसेनहुन
 हिलीनी । संगसुलेयपंचसत ५०० सादीपानी
 पथइमगयउप्रमादी ॥ १३९ ॥ पावकोरदग
 नादरपुलहगयसमुहबेसररथजुतह ॥
 इमईरानअनीकगयोयहडोढीलगाअथ
 उसमुहवह ॥ १४० ॥ जायसभाबैठेइकथा
 सनभाईकहिहुवदुवसंभासन । तबनादरदि
 लीसाहिंप्रकरबहिंसचिवहुसचिवमिलेहि
 तरकरहिं ॥ १४१ ॥ तुमवजीरबुल्लहुय-
 हंयातैहमवजीरकरबहिंहितततै । तब
 इलीसपत्रलिरिवनिजकरबुल्लोरीचीयवजी
 रपापकर ॥ १४२ ॥ यहकठगरनादरकरअ-
 पियनादरताहिबुलावनअपिय । तबपची

सञ्जसवारपठयेचंडतिकगरलेरुचलाये
 ॥ १४३ ॥ तेउद्धतत्रायेदिल्लियदलवदतव
 जीरवजीरकुजेबल। यहसुनिखानकमरदी
 कंषिगनिनसहचल्योनाहिककुजपिग ॥
 १४४ ॥ तबहिमंत्रअक्खियउमर वन्जंग
 यजीरचक्रु वहुनन। पापीजननसुनाह
 पिछानैविरीतहिअनकूलवरवानै ॥ १४५ ॥
 काहियनजीरतरहुनिनकोऊकरिहैसामसा
 हहमदेऊ। इमकाहिलेद्वैसतअसवागगी
 वजीरचितमंत्रविचारन ॥ १४६ ॥ सोहुनज
 रिबेदीकियनादरदिल्लियदलसुनिभजिगार
 हार ॥ अत्रप्रथानईरानसाहकीअयउ
 पुरदिल्लियउद्धतअरि ॥ १४७ ॥ सकसरअ
 कसतइक १७ ६५ हायनपरिफगुनरिल
 दसामि १० फलायन। इमनाह दिल्लियपुरा

आयउ होय निरंकुस तोर चलायउ ॥ १४८ ॥
 साह मुद्रुम दरवान सहा दत बहु रि व जीर रु र
 कली जबत । र च्यारि हि कै दी करि अनि ईर
 नी दिलिय प्रबिसाने ॥ १४९ ॥ अथ मुर
 महलन निवास किय दल मिलान नगरी अतर
 देय । तत्था हल निस दोय बिताई पैरेना अ
 नसन अकुरताई ॥ १५० ॥ कोउन बनिकह
 दूरबोले बैठे रीगेहनननबोले । दलना दर प्र
 तिअरजदई तब अत्य बनिकबेचैन अन्न अ
 ३ ॥ १५१ ॥ अहं किय अरजम हबदी जनरा
 ग जुगल किंगोर प्रीतिपन । दल इरान दहसति
 गन डोलतया मैबनिकबजारनखोलत ॥ १५२ ॥
 तबना दरपठई कहि जाहरबसहु जाथम मर
 पुरबाहिर । त्वअदि सअधीन कठक चढि
 हिरपुरके जालगयो बढि ॥ १५३ ॥ तिहि

स्थितपुर उदघोस विथास्यो महलनमैनाद्य
 हनि डारुणी। वाको कटक भजत प्रवयार्त्तं पद्य
 रुक्मिण्युज्ज्वलननिपातौ ॥ १५५ ॥ अद् सुनि
 जनन सुरे दरवाजे बहु बंदूकरु पद्यरवाजे। प
 हर दीयलससेन पचाई प्रवनाक्षर प्रतिप्ररज
 रचाई ॥ १५५ ॥ हुकम अधीन जल बाहिर ह
 मपुर जन जानन देल कुटिल क्रम। बंदूकन आ
 यन युनियारत हमपुरा करी कथित निहारत ॥
 १५६ ॥ निज दल प्रजन मन्त्री वसा दर प्रप
 हितरवन च ल्यो प्रन प्रार। मंदे मल द पिना हि
 जन सारे याहु पर पद्यर बहु मार ॥ १५७ ॥ नाद
 रको हुसत्य तवभासी कहुहु हिनि किर जिनिका
 सी। व्यजन ताहि उच्ची करि बुल्लो। ईरानि न च ह
 सुनिरयग तुल्यो ॥ १५८ ॥ भयो कतल दिस्ति
 यपुर भारी लकहन कडे बालन सारी। स्वान बिड।

